श्रीः

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

रजत जयन्ती अंक

कार्तिक
२०३८
सं. वि.

वर्ष
२५
संख्या २
अंक



पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी

वार्षिक मूल्य
१५/- पन्द्रह रु०

इस अंक का मूल्य
रुपये ७/-

विषय-सूची

[शेष अन्तिम आवरण पृष्ठ—टायटल पेज ३—पर]

❀ श्रीः ❀

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

संरक्षक

भू०पू० हिज हाईनेस महाराजा श्री १०५ गर्जसिंहजी बहादुर, जोधपुर (राजस्थान)।
स्व० श्री हरिरामजी साबू, अशोकनिवास, महावीर मार्ग, जयपुर (राजस्थान)।
श्री प्रभुदयाल अग्रवाल, चेयरमेन ट्रान्सपोर्ट कार्पोरेशन आफ इण्डिया लि० कलकत्ता।
श्री सी. धर्मीचन्दजी जैन, हिमाचल कण्डक्टर्स, सोलन (हि०प्र०)।
श्री द्वारकाप्रसादजी साबू, प्रमुख उद्योगपति, पटना—१ (बिहार)।
श्री डा० अमरनाथ जैन, मालरोड़, सोलन हि० प्र०)।

सहायक

श्री एच. आर. ली, ३३ मेल बोर्न रोड़ इलफोर्ड एसेक्स (इङ्गलेण्ड)
श्रीमती अ० सौ० तारामणि, धर्मपत्नी श्री बनवारीलालजी बंसल, फर्म-देवीसहाय—बनवारीलाल, (आयुर्वेदिक यूनानी औषधियोंके विक्रेता) कटरा तमाखू, देहली।
श्रीमान् शाह तेजराज कस्तूरचन्द जैन, जमखण्डी (बीजापुर-कर्नाटक)।
श्री ला० सीताराम गर्ग, फर्म बैजनाथ अशर्फीलाल, अम्बाला कैण्ट।
श्री बनवारीलाल प्रेमचन्द, कूचा महाजनी, चांदनी चौक, दिल्ली।
श्री नागरमल गोयल, नागरमल एण्ड सन्स, सोलन (हि०प्र०)।
श्री रामनिवास लाखोटिया, अरांई (किशनगढ़ राजस्थान)।

सम्पादक एवं संचालक

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)
अध्यक्ष—हिमाचल-प्रान्तीय विश्वहिन्दू-परिषद्, सोलन (हि०प्र०)

व्यवस्थापिका

श्रीमती गोविन्दी देवी एवं श्रीमती शिक्षा त्रिवेदी

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

Telegram—'Jyotishmati'

Telephone—696

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन संमान्य सदस्य और जो १५१) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १५.०० पन्द्रह रुपये और एक प्रतिके ४.०० चार रुपये मात्र हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजनी चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं—चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरदपूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें। इस विशेषाङ्कका मूल्य सात रु० है।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

महापुरुषोंका स्नेहाशीर्वाद

महामायाकी महती कृपा और महापुरुषोंका आशीर्वाद 'ज्योतिष्मती' का सम्बल है। प्राप्त मंगलाशीर्वादोंमेंसे दो विश्वविख्यात वन्दनीय विभूतियोंके पत्र यहां अक्षरशः प्रकाशित कर रहे हैं—

श्रीद्वारका-शारदापीठाधीश्वर परमपूज्य अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीमदभिनवसच्चिदानन्द तीर्थ स्वामिपादका गत १०-९-८१ को भिजवाये आशीर्वाद पत्रकी प्रतिलिपि—

From :
The Secretary to
H H The Jagadguru,
Shankaracharya Maharaj

श्री द्वारका शारदा पीठम् । द्वारका ।

Shri Dwarka Sharda Peetham

DWARKA (Gujarat) INDIA

Ref. To. Dt. 10-9-1981

Camp

पं॰ हरदेव शर्मा त्रिवेदी महोदयाः, सोलन।

भवन्निवेदनमुपहिण्वतां श्रीजगद्गुरु श्रीशंकराचार्य श्रीद्वारकाशारदापीठाधीश्वर श्रीमदभिनव-स[illegible]नन्दतीर्थ स्वामिश्रीचरणानां शुभाशीराशिमिमं सादरं प्रहिणुमो वयं यत् भवदीया ज्योतिष्मती पत्रिका रजतजयन्तीमहोत्सवेन सनाथा समलंकृत्ता स्यात्, तथा पञ्चाङ्ग जनोपकृतिमातनुतात्, श्रीद्वारकाधीशश्रीचन्द्रमौलीश्वरयोः कृपाकटाक्षानुग्रहेण, इतिशम्।

एक सुप्रसिद्ध रामभक्तका शुभाशीर्वाद

अफ्रिका, यूरोपादि विदेशोंमें भारतीय संस्कृति और रामभक्तिका प्रचार करने वाले अन्ताराष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त मानस-मर्मज्ञ रामभक्त पं० श्री कपीन्द्रजी महाराजके गत दिनांक ७-५-८१ का आशीर्वाद पत्र।

★ श्रीराम ★

रामभक्त कपीन्द्रजी
संस्थापक
श्रीरामायण विद्यापीठ
श्रीरामायण सम्मेलन
नई दिल्ली

१२२, सुन्दर नगर
नई दिल्ली
वैशाख शु० ४ गुरुवार
संवत् २०३८ वि०
(दि. ७-५-८१)

आदरणीय श्री त्रिवेदीजी !

सादर अभिवादन।

आपका भेजा हुआ पञ्चाङ्ग 'ज्योतिष्मती' के साथ मिल गया। प्रसन्नता हुई। आपके पंचाङ्ग और 'ज्योतिष्मती' ने भारतवर्षको गौरवान्वित किया है। विश्वविजयपञ्चाङ्गका प्रचार प्रसार इस कारण ऊँचा हुआ कि इस पंचांगका गणित और फलित अक्षरशः सत्य और शुद्ध हुआ है। आपने अपनी इस विद्याको दुकानदारीके रूपमें नहीं रखा, अपितु जन समाजमें उस ज्योतिष विद्याको प्रमाणित करनेके हेतु देशको बता दिया है कि ज्योतिष-शास्त्र भारतवर्षका गौरव है। जितनी भी भविष्यवाणी आपने लिखी, वह सब सत्य उतरी। आप एक उदार व्यक्ति हैं, परोपकारी हैं, साथ-साथ आपमें त्यागकी भी शक्ति है।

'ज्योतिष्मती' में सम्पादकीय व दैवज्ञकी दृष्टि तो अपना विशेष स्थान रखती है, जैसा आपके पञ्चाङ्गका नाम है वैसा ही पञ्चाङ्ग है। आप इस आयुमें भी कितना परिश्रम करते हैं, यह सराहनीय हैं।

'श्रीगजेन्द्रविजय-पञ्चाङ्ग' यद्यपि आकारमें छोटा है, तथापि समस्त समाचार उसमें भी देखनेको मिलते हैं। मैं आशा करता हूँ कि कठोर परिश्रम करनेकी शिक्षासे श्री सुधाकर त्रिवेदीजी अपने पिताकी नीति पर चलेंगे।

आज 'विश्वविजय-पंचाङ्ग' का विकल्प देशमें नहीं है। मैं काशीके पंचाङ्ग भी कभी-कभी देखता हूँ। किन्तु कहीं न कहीं त्रुटि उनमें मिलती है, पर आपके पंचाङ्गमें नहीं। 'श्रीविश्वविजय-पंचाङ्ग' 'ज्योतिष्मती' 'श्रीगजेन्द्र-विजयपंचाङ्ग' तीनोंको और भी अधिक उपयोगी देखनेकी अभिलाषा रखता हूँ। परिवारमें मेरा स्नेह कह देना, स्वास्थ्यका ध्यान रखें। पूरे १०० वर्ष आयुको प्राप्त करें, इसी प्रकार प्रचार-प्रसार करते रहें।

मंगला कांक्षी
कपीन्द्रजी

[इनके अतितिक्त और भी अनेक धर्माचार्यों राजपुरुषों एवं स्नेही सन्मित्रोंके मंगल कामनामय पत्र प्राप्त हुए हैं उन सबके हम आभारी हैं।
—सम्पादक]

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[रजत जयन्ती अङ्क]

(कार्तिक-मार्गशीर्ष-पौष, दि० १४ अक्टूबर ८१ से ९ जनवरी ८२ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ।।

वर्ष	सोलन, आश्विन शु० १५ मंगलवार, सं० २०३८ वि०	संख्या
२५	२१ आश्विन, शाके १९०३ (१३ अक्टूबर १९८१ ई०)	१

ज्योतिष्मती राजते

मातस्तावक-पादपद्मयुगले श्रद्धावतां सन्ततं,
सर्वा विघ्नततीर्विनाश्य कुरुषे रक्षा सुदक्षा सती ।
श्रद्धाबद्धमतौ तथैव परकीयाशा-निराशाधरे,
शीघ्रं देह्यनुकम्प्य देवि ! शरणं नास्त्यन्यदालम्बनम् ।। १ ।।
निर्विघ्नं परिपूर्य याऽत्र शरदां साध्वीं चतुर्विंशतिं,
भूयोऽग्रेऽप्यथ पञ्चविंशतितमे वर्षे पदं न्यस्यति ।
तत्रास्ते महती कृपा मयि महामायाऽम्बिकाया, यतः
सैषा निर्बल-हस्त-साधिततनु-ज्योतिष्मती राजते ।। २ ।।
लेखैर्नव्यतमैः सुशास्त्रमथितैः साहित्यतत्त्वान्वितै—
ज्योतिः शास्त्रकरम्बितैः फलितजैः सैद्धान्तिकैश्चोत्तमैः ।
तन्त्रैर्मन्त्रयुतैर्नवीन-कविता-यात्राकथाऽऽख्यानकै—
र्जुष्टां पाठक-पाणि-पंकजपुटे 'ज्योतिष्मती'-मर्पये ।। ३ ।।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

★ तीसरे युगमें पदार्पण ★

त्रिगुणात्मिका महाशक्ति राजराजेश्वरी भगवती श्रीत्रिपुरसुन्दरीकी कृपासे 'ज्योतिष्मती' तीसरे युगमें (अपने उल्लास-मुखरित चौबीस वर्षोंको पूर्ण कर प्रस्तुत अङ्कसे पच्चीसवें वर्षमें) पदार्पण कर रही है। भारतीय ज्ञान-विज्ञानकी विकासोन्मुख प्रवृत्तियोंके साथ ही प्राचीन ज्योतिष और मन्त्र-तन्त्र शास्त्रके अभिनव दायको नवीन परिप्रेक्ष्यमें प्रस्तुत करते हुए 'ज्योतिष्मती' निरन्तर प्रगतिपथ पर बढ़ रही है, यह प्रत्येक पाठकके लिये गौरवकी बात है। जगदम्बाकी अनुकम्पासे 'ज्योतिष्मती' का प्रत्येक अङ्क अपने अङ्कमें वैविध्यपूर्ण साहित्यको पुरस्कृत करते हुए पाठकोंके सौहार्दका पात्र बनता है, उत्तमोत्तम लेखक बन्धु अपने साहित्य-नवनीतसे इसकी अर्चना करते हैं, तथा ग्राहक महानुभाव अपनी गुणग्राहकताको सार्थक करते हुए इसकी उत्तरोत्तर अभिवृद्धिमें सहयोगी बनते हैं। इस प्रकार आज रजतजयन्तीरूप नवीन वर्षारम्भके अवसर पर हम ज्योतिष्मती' के विगत चौबीस वर्षोंमें साहित्य द्वारा सेवा करने वाले साहित्यकारों, ज्योतिर्विज्ञानके माध्यमसे भविष्यफल एवं अन्यान्य विषयों पर लिखने वाले महानुभावों तथा आर्थिक अनुदान अथवा ग्राहक शुल्क देकर इसका पोषण करने वाले सभी पाठकोंके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, तथा भविष्यमें भी इसी प्रकार—इससे भी अधिक सहयोगकी कामना करते हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र—'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं' की सिंहगर्जना सूर्य और चन्द्रकी साक्षितामें सदा समुन्नत होती रही है। चाहे कोई माने या न माने, भारतीय मानव ज्योतिषकी सत्यतामें सन्देह नहीं करता। किन्तु, धर्म निरपेक्षताके समान ही ज्योतिषको न माननेकी घोषणा करना एक प्रकारका फैशन बन गया है। बाह्य दृष्टिसे उपेक्षा दिखलाते हुए भी हमारा नेतृवर्ग बिना ज्योतिषके (गुप्त रूपमें ही सही) कोई कार्य नहीं करता। ज्योतिषी वर्ग भी अब अपने आपमें उतना स्पष्ट नहीं रह गया है। पढ़े लिखे वर्गमें अधिकांश व्यक्ति स्वयं पढ़ लिखकर ज्योतिषके लाभसे वञ्चित नहीं होते। इस दृष्टिसे 'ज्योतिष्मती' उनका मार्गदर्शन करती है। 'ज्योतिष्मती'में प्रकाशित भविष्यफल अधिकतर सत्य प्रमाणित होता है, वर्षोंसे इसकी भविष्य-सम्बन्धी घोषणाओं एवं निर्भीक सम्पादकीय टिप्पणियोंने विद्यानुरागियोंके हृदयमें घर जमा लिया है।

तन्त्र शास्त्र एवं अन्य साहित्य—वर्तमान युग बुद्धिवादका युग है। बुद्धिवादने विज्ञानके आलम्बनसे मानवीय मेधाको चरमोत्कर्ष तक पहुंचानेका अवसर दिया है। विज्ञान भले ही चन्द्रमा तक पहुंचकर वहांसे कुछ मिट्टी-पत्थर ले आये और विश्वके बुद्धिजीवी वर्गको अपनी ओर आकृष्ट करे, किन्तु आत्मज्ञानकी यात्रामें वह सदा पीछे ही रहा है तथा रहेगा। जब तक मानवताकी अवहेलना होती है, सामाजिक-सन्निपात उथल-पुथल मचाता रहता है और सौजन्य, सौशील्य और सौमनस्य किसी कोनेमें बैठ सिसकियां लेते रहते हैं तब तक विज्ञानका साफल्य नगण्य ही रहेगा। इस दृष्टिको ध्यानमें रखते हुए भारतीय महर्षियोंकी उपासनापद्धतिको उर्वरित बनाये रखनेके लिये हम तन्त्रशास्त्र एवं आयुर्वेदके कतिपय लोकोपयोगी विषयोंका भी प्रकाशन करते रहते हैं, और हमारा विश्वास है कि उससे हमारा पाठकवर्ग लाभान्वित हो रहा है।

साथ ही कहानी, कविता तथा अन्यान्य मनोरंजन-सामग्री प्रकाशित होनेसे 'ज्योतिष्मती' हिन्दीकी पत्रिकाओंमें अपना एक अनूठा स्थान बनाये हुए हैं। इन सब कार्योंके लिए जगदम्बासे दीर्घायुष्य एवं सम्पन्न-जीवनकी कामना करते हैं और हमारी यह भावना है–

ज्योतिश्शास्त्रपरम्परामतितरां सञ्जीवयन्त्यामृतैर्लेखैर्लेखविदां समुन्नतिर्तति संवर्धयन्ती सदा।
नानाशास्त्रकथाप्रथाप्रथितिभिः पथ्यं पुरस्कुर्वती, मातस्त्वत्करुणाकटाक्षमुदिता 'ज्योतिष्मती' जायताम्॥

रजतजयन्ती-अङ्कके सम्बन्धमें

गत २४वें वर्षके प्रथमाङ्कमें 'सम्पादकीय हृदयोद्गार' शीर्षकसे आठ पृष्ठोंमें अपने विचार व्यक्त किये थे और २५वें वर्षका प्रथमांक 'रजतजयन्ती-विशेशाङ्क' के रूपमें प्रकाशित करनेका आश्वासन भी दिया गया था—उस सूचना पर विद्वान् लेखकोंने अपने निबन्ध भेजे, दो सन्मित्रोंने ग्रीष्मावकाशमें सोलन आकर विशेषांक सम्पादनकार्यमें सहयोग देनेका आश्वासन भी दिया, उससे मुझे विश्वास हुआ कि मेरी अशक्तावस्थामें भी महामायाकी कृपासे इन विद्वान् सन्मित्रोंके सहयोगसे 'रजतजयन्तीअंक' विशेष सुन्दर रूपमें प्रकाशित हो सकेगा। परन्तु, परिस्थितिवशात् दोनोंमेंसे एक भी विद्वान् सहयोगी सोलन न आ सका और मेरा पुराना रक्तविकार—दद्रुरोग—उग्र रूपमें उभर आया, साथ ही ज्वरने भी आ दबोचा, इससे एक बार तो निराश हो गया कि अब रजत-जयन्ती अक नहीं निकल पायेगा। दूसरे दिन ही अन्तःप्रेरणा मिली—"गत २४वें वर्षके प्रथमांक में पृष्ठ १२ पर लिखी पंक्तियां 'दैवीबलका सहारा' पर क्या अब विश्वास नहीं रहा? सम्पादन कार्यमें किसीका सहयोग न रहते हुए भी गतवर्ष निर्बलावस्थामें भी जिस महा अव्यक्त शक्तिने वह अंक पूर्ण कराया वही महामाया अब रजतजयन्ती अंक पूर्ण न करायेगी क्या।" महाकवि रवीन्द्रकी 'एकला-चलोरे' पंक्ति और 'चरैवेति चरैवेति' मंत्रने आत्मबल भर दिया। किसी अव्यक्त शक्तिकी प्रेरणासे उत्साहित होकर अहर्निश लेखोंके चयन सम्पादन कार्यमें पूर्ववत् जुट गया। प्रारम्भिक सम्पादकीयके दो फार्म—१६ पृष्ठ—छोड़कर १७वें पृष्ठसे ५ फार्म (४० पृष्ठ) की सामग्री मुद्रणार्थ प्रेसमें दे दी। उन्हीं दिनों अ० भा० पंचांगकार सम्मेलनमें अहमदाबाद जानेका आमंत्रण आ गया। सन्मित्रोंके विशेष आग्रह एवं आगामी वर्षमें आने वाले (क्षयमास) त्यौहारोंमें महत्वपूर्ण निर्णयके लिये निर्बलतामें भी जाना पड़ा। सम्मेलनके बाद अहमदाबादमें पुनः ज्वरग्रस्त हो जानेसे अधिक रुकना पड़ा। वायुयानसे दिल्ली पहुंचकर ४ पांच दिन चिकित्सार्थ रुका। दो सप्ताह सोलन से बाहर रहनेके कारण इस रजतजयन्ती अङ्कके प्रारम्भिक लेख 'चिन्तामणि मन्त्रका स्वरूपान्वेषण' के आठ पृष्ठ १७-२४ के तीसरे फायनल पेज प्रूफ मैं नहीं पढ़ पाया। अनुपस्थितिमें छप जानेसे इस लेखकी टिप्पणियों (फुटनोटों) के अंकोंमें गड़बड़ हो गई, और मूल श्लोकमें भी चार पांच स्थानों पर अक्षर मात्रा गलत छप गई, इसका मुझे खेद है। विद्वान् पाठक सुधार कर पढ़नेकी कृपा करें।

अगस्त मासमें सोलन पहुंचनेके बाद भी कई दिन तक मैं अस्वस्थ रहा, परंतु इस रजत-जयन्ती अंक सम्पादन प्रकाशनके प्रारम्भ किये हुए कार्यको पूर्ण करनेकी लगनने अहर्निश लेखनी चलानेका बल दिया, परिणाम स्वरूप जैसा भी बन पड़ा २५वें वर्षका यह प्रथमांक-प्रसून उसी आद्यामहाशक्तिके श्रीचरणोंमें सादर समर्पित है। "त्वदीयं वस्तु देवेशि! तुभ्यमेव समर्पये"

[शारदीय प्रथम नवरात्र २०३८ वि०] —हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सम्पादकीय विचार—

राष्ट्र-चिन्तन

'ज्योतिष्मती' के ३ मुख्य उद्देश्य हैं—(१) भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन। (२) भारतीय संस्कृतिका प्रचार। (३) ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति। इन तीनों उद्देश्योंकी पूर्त्तिके लिए ज्योतिष्मतीने विगत २४ वर्षोंमें यथाशक्ति प्रयत्न किया है और आगे भी करती रहेगी। दूसरा उद्देश्य है भारती-संस्कृति। हमारी संस्कृति और मातृभूमि कितनी गौरवमयी विश्व-कल्याणकारिणी है, इसका दिग्दर्शन आज हम रजतजयन्ती अंकके पाठकोंको करा रहे हैं—

भारती-संस्कृति

भारत राष्ट्र १९७ करोड़ वर्ष प्राचीनतम देश है। विश्वके प्राचीनतम देश एवं विश्वकी प्राचीनतम भारतीय आर्य जातिकी संस्कृति विश्व संस्कृति है। संस्कृति नदीकी धाराके समान है। संस्कृति राष्ट्रीय-जीवन धारामें प्रवाहमान रक्तधारा है। 'सृगतौ' से संस्कृति शब्द बना है। जल-प्रवाहके समान संस्कृति गतिशील है। भारती-हिन्दू-संस्कृति विश्व-संस्कृति है, क्योंकि भारतीय आर्यजातिने विश्वसाम्राज्यकी स्थापना की थी। प्रमाण है दक्षिण अण्टार्टिक महाद्वीपके द्वीप यालूमें एक-मात्र जीवित बची भारतीय नारी है। युरोपियनोंसे पराजित अमरीकी भारतीय आज भी सघन कान्तार आवृत्त अमेजन घाटीमें विद्यमान सोनेकी खानोंके स्वामी भारतीय कुल है। पेरूकी राजधानी लोमासे लगभग सौ मील दूर एण्डेज पर्वत-शिखरोंके मध्य सघन मेघावृत खड़ा सूर्यमन्दिर इस बातका साक्षी है—भारतीय आर्य जातिके स्थापित विश्व-साम्राज्यकी यह बात और एक सत्यकी ओर इंगित करती है कि विजयी देश व राष्ट्र ही संस्कृतिका निर्माण और विकास करता है।

अतः दसवीं शती तक भारतकी यह परम्परा थी जैसा जैनाचार्य सोमेन्द्र सूरीने लिखा है—

'अथ धर्मार्थ फलाय राज्याय नमः।'

(नीति वाक्यामृत)

भारतका आद्य विधि-निर्माता मनु भी यह मानता है और कहता है—

"धर्म शास्त्राद् तु अर्थशास्त्रः प्रथमः।"

इस भारतीय परम्पराका कारण क्या है? वेदव्यासने इसका उत्तर इस प्रकार दिया है—

मज्जेद् त्रयी दण्डनीतौ हतायां
सर्वे धर्माः प्रक्षयेयुः विवृद्धाः।
सर्वे धर्माश्चाश्रमाणां हतास्युः
क्षात्रे त्यक्ते राजधर्मे पुराणे॥
सर्वे त्यागा राजधर्मेषु दृष्टा
सर्वा दीक्षा राजधर्मेषु युक्ताः।
सर्वा विद्या राजधर्मेषु चोक्ताः
सर्वे लोका राज धर्मे प्रविष्टा॥

(महा. शान्ति. ६३।२८-२९)

इसका मूल औशनस-अर्थशास्त्र और उशनस स्मृति है। यह इस समय अप्राप्य है। इसके उद्धरण यत्र-तत्र मिलते हैं। उशनसके अनुसार राज्य मोक्षदाता है।

नमोस्तु राज्यवृक्षाय षाड् गुण्यानय प्रशाखिने ।
सामादि चारु पुष्पाय त्रिवर्ग फलदायिने ।।

संस्कृति एवं सभ्यताका आधार धर्म मजहब मत पंथ नहीं है । संस्कृति एवं सभ्यता का आधार भूमि-देश व राष्ट्र है । क्योंकि प्रतिष्ठा और श्रीका आधार भूमि व राष्ट्र है । भारतके महान् आदि पूर्वज अथर्वा ऋषिने इस सत्यको कहा है । भारतीय ऋषिकी पवित्र अमर वाणी है :—

भूमे मातर्निधेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम् ।
संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम् ।।
(अथर्व० १२-१-६३)

भूमि माता जब/द्युलोकसे एकचित्त होती है तब ऐश्वर्य विभूति प्राप्त होती है और व्यक्ति एवं राष्ट्र भाग्यशाली होता है ।

इसलिये आदि पूर्वज भारतको नमस्कार करते हुए कहता है—

इदं नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः
पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः ।।
(ऋ० १०-१४-१५ अथर्व० १८-२-३)

भारत ही एक देश है जहां यह आशीर्वाद दिया जाता है—दूध पीते हुए बढ़ो, राष्ट्रके बढ़नेके साथ-साथ आगे बढ़ो एवं उन्नत हो । सदा तेजस्वी व वर्चस्वी रहो । ऋषिकी पुनीत वाचा है—

अभिवर्धतां पयसाभिः राष्ट्रेण वर्धताम् ।
रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनु पक्षितौ ।।
(अथर्व० ६-७८-१)

यज्ञ पारायण भारत राष्ट्रका जीवन सामूहिक था । यज्ञोंमें सहस्रों व्यक्ति सम्मिलित होते थे । ऋषिका निर्देश है ईश्वरकी स्तुति सौ हजार एक साथ मिलकर करो । पूर्वजोंके प्रति श्रद्धा प्रकट करो ।

स्वराज्यकी रक्षाका एक यह साधन है । मंत्र है :—

सहस्रं साकम् अर्चत, परिष्टो मत विंशतिः ।
शतां एनम् अन्वनोनवुः इन्द्राय ब्रह्म उद्यतम्
अर्चन् अनु स्वराज्यम् ।। (ऋ० १-८०-९)

भारती संस्कृति सामूहिक जीवन प्रणाली की है । बुद्धसे लेकर गांधी-नेहरू तक हुए (ऋषि दयानन्द एक अपवाद है) मत-प्रवर्तक धर्म संस्थापक, सन्त महात्मा, कवि, महन्त, मठाधीश आदि सब व्यक्ति-पूजक थे । पर यह भारतीय परम्पराके त्यागका परिणाम है । इसी कारण भारत आज भिखारी है । दीन, दरिद्र और ऋणी है । विश्वकी पूजित एवं सम्मानित शक्ति नहीं ।

जहां तीन ऋणोंको उतारनेका प्रण किया जाता है, जहां इसकी अहोरात्र स्मृति सदा नवीन रहे इस विचारसे धूमधामके साथ यज्ञोपवीत पहनते समय यह पढ़ा जाता है—

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं
प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।
णायुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

व्यष्टिवाद ब्रिटिशकी देन है । भारत एक राष्ट्र है, उपमहाद्वीप नहीं, जैसा ब्रिटिश भक्त कहते हैं । यह भारत प्रायद्वीप कहते घबड़ाते हैं । इसने व्यष्टिवादको जन्म दिया । ब्रिटिश-भक्त कांग्रेसने इसको बढ़ाया । प्रसिद्ध वैष्णव कवि नरसी मेहताकी प्रार्थना है ।

"हे प्रभो ! यदि पुनर्जन्म दे तो भारत भूमिमें देना यही विनती है।"

भारती संस्कृति भारतीय जीवन प्रणाली की प्रतीक है। भारतीय जीवन-यापन और जीवन-व्यवहार किस प्रकारका हो, कैसा हो, यह संक्षेपमें कहना हो तो मनुको स्मरण करना उचित होगा।

दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं, वस्त्र पूतं जलं पीवेत्।
सत्यपूतां वदेद्‌ वाचं, मनः पूतं समाचरेत्॥

आखें-चर्मचक्षु-एवं ज्ञान-चक्षु—खोलकर चलो, जीवन-व्यवहार करो। कपड़ेसे छानकर जल पीओ, इस प्रकार आरोग्यकी रक्षा करो। सत्यं वद, असत्य कभी न बोलो। पवित्र मनसे शुभ संकल्पके साथ काम करो।

मन पवित्र और शुभ संकल्पों वाला क्यों होना चाहिये। यह शिव संकल्पसे स्पष्ट है।

यज्जाग्रतो दूर मुदैति देवं तदु सुप्तस्य तथैवेति दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ १॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु॥ २॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु॥ ४॥

यस्मिनृचः साम यजू ँ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिश्चित्त ँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु॥ ५॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं अविष्ठं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु॥ ६॥
यजु० ३४-१-५)

(अनुवाद दैनिक यज्ञ-प्रकाशसे)

"प्रभो जागते हुए सदा जो, दूर-दूर तक जाता है। सोतेमें भी दिव्य शक्तिमय, कोसों दौड़ लगाता है। दूर-दूर वह जाने वाला, तेजोंका भी ज्योति निधान। नित्य युक्त शुभ संकल्पोंसे वह मन मेरा हो भगवान्॥ १॥

जिसके द्वारा बुद्धिमान् सब, नाना कर्त्तव्य करते हैं। सत्कर्मोंको करें मनीषी, वीर युद्धमें मरते हैं। पूजनीय अतिशय जिसका है, प्रजावर्गमें अद्‌भुत मान। नित्य युक्त शुभ संकल्पोंसे वह मन मेरा हो भगवान्॥ २॥

जिसमें धैर्य शक्ति चिन्तनकी, यथा ज्ञान महत्ता भरपूर। प्राणिमात्रमें अमृतमय है, या प्रकाशका बहता पूर। जिसके बिना नहीं चलता है, निश्चय कोई कार्य विधान। नित्य युक्त शुभ संकल्पोंसे, वह मन मेरा हो भगवान्॥ ३॥

अमर तत्व जो त्रयकालोंका भेद यथावत पाता है। बुद्धि ज्ञान पांच इन्द्रियां, अहंकारसे नाता है। इन्हीं सप्त ऋत्विजका फैला, जिस में निशि दिन यज्ञ-वितान। नित्य युक्त शुभ-संकल्पोंसे, वह मन मेरा हो भगवान्॥ ४॥

चार वेद निगमागम सारे, ईश ज्ञानके सुन्दर स्रोत। रथके पहियेमें ज्यों आरे एवं रहते ओत-प्रोत॥ जंगम जगका चित्त अचल

हो जिसमें निष्ठावान् । नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान् ।। ५ ।।

जो जन-कुलको बाग डोरसे इधर-उधर ले जाता है । चतुर सारथी ज्यों घोड़ोंको इच्छित चाल चलाता है ।। सदा प्रतिष्ठित हृदय देशमें विपुल तीव्रगति अजर महान् । नित्य युक्त शुभ संकल्पोंसे, मन मेरा हो भगवान् ।। ६ ।।"

प्रश्न हो सकता है, मनको इतना महत्त्व क्यों दिया गया ? आर्य जाति व भारती जातिके अतिरिक्त और किसीने मनका गुणगान नहीं किया । बात बहुत साधारण है । भारत राष्ट्रके निर्माता हमारे महान् आदि पूर्वजों का दृढ़ विश्वास था, मन ही बन्धन और मोक्षका कारण है :—

"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।"

अंग्रेजीकी प्रभुताका विस्तार करते हुए भी कहा जाता है, भारत स्वाधीन देश है । भारतमें लोकतंत्र है । यह कांग्रेसके मिथ्या प्रचारका ही परिणाम है न ? लार्ड एलफिस्टन और मेकालेने इसके सिवाय क्या कुछ और चाहा था ?

भारती संस्कृतिका आधार पवित्र मन है ।

यह आधार सूक्ष्म है । राष्ट्रका मानस क्षितिज पवित्र रहना चाहिए, कभी दूषित नहीं होना चाहिए । इसके लिए हम क्या करें ? सत्यसे पवित्र वाणी बोलें । 'सत्यं वद' यह विद्या-स्नातकको आचार्यका अन्तिम उपदेश है । अथर्वा ऋषिने पृथ्वीको धारण करने वाले तत्वोंमें सत्यको पहला स्थान दिया है 'भारत राष्ट्रके द्रष्टा अथर्वाकी परम पवित्र वाणी है—

सत्यं वृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो
ब्रह्म यज्ञः पृथिवी धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्यु-
रुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ।।
(अथर्व० १२।१।१)

सात तत्त्व व गुण हैं—१ सत्य, २ वृहत् ऋत—सृष्टिके चालक नियम, यह बड़ा सत्य है, ३ उग्रपुरुषत्व-शूरता वीरता, ४ दीक्षा-दक्षता, कार्यक्षमता, योगः कर्मसु कौशलम्, ५ तप-शीत-वर्षा-ग्रीष्म व द्वन्दोंको सहनेकी शक्ति, ६ ब्रह्म-ज्ञान-विज्ञान, आधिभौतिक और आध्यात्मिक दोनों, ७ यज्ञ-दानपूजा संगठन मान्यों का सम्मान पूर्वजोंका श्रद्धापूर्वक स्मरण अतः दैनिक होम । भारत-विभाजनको आत्म-समर्पण न कहकर स्वभाग्य-निर्णय कहा गया । सत्ता हस्तान्तरणको स्वाधीनता घोषित किया गया । इस असत्य पर पर्दा डालनेके लिए क्या नहीं माया रची गयी । फल सामने है । नई पीढ़ी कम ऊँचाईकी पैदा हो रही है । नवजात शिशु का भार पहलेसे कम होता है । सामान्य जनता मानती है, 'साठा सो पाठा' । पर इस विखण्डित भारतकी सरकार ५८ वर्षकी आयु के व्यक्तिको सरकारी सेवाके योग्य नहीं मानती ।

पर, भारतका आदि पूर्वज कहता है, जरावस्था ९० सालके बाद प्रारम्भ होती है, विश्वास न हो तो देखिए—

दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे ।
अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः ।।
(ऋ० १-५८-६)

ऋषि दयानन्दका मत है, १०० सालके

बाद जरावस्था प्रारम्भ होती है। ऋषिका मत चरकके आधार पर है। विवाहवयके अनुसार चरकने युवावस्थाका अन्त ७०-७५-९० माना है।

नववधुको आज भी सासें, बड़ी-बूढ़ी स्त्रियां आशीर्वाद देती हैं।

'दूधो नहाओ, पूतों फलो।'

यह अंग्रेजी राजने निरर्थक बना दिया है। अब तो आशीर्वाद हो गया है—'खूब चाय काफ़ी पीयो।' सत्यका आश्रय छोड़नेका कितना भयंकर परिणाम होता है व हो सकता है, क्या अब भी बतानेकी आवश्यकता है।

शरीर नीरोग रहना चाहिए। भारती संस्कृति और राष्ट्रका गायक कवि-श्रेष्ठ कालिदास कहता है, धर्मका पहला साधन शरीर है।

'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।'

पानीके माध्यमसे नाना कीटाणु शरीरमें प्रवेश कर नाना रोग उत्पन्न करते हैं। अतः जल छान कर पीना चाहिए। दिल्लीमें नलों के साथ इसी बातका विचार कर एक लीर लटकी रहती है। यह केवल रस्म पूरी करना है। दिल्लीके पानीमें विकार आनेसे ही पीलीया संक्रामक रूपमें फैला था।

'आंख है तो जहान है' यह उक्ति प्रसिद्ध है। ज्ञान दृष्टिके अभावमें कितना बड़ा अनर्थ होता है, इसका उदाहरण इस देशमें वैज्ञानिक खेती को देखा जा सकता है। कहां किदवई कालमें १ रु० का पांच सेर गेहूं और आज कहां १.९० रु० में १ किलो आटा। मनुने जो कुछ कहा है, वह इस देश व राष्ट्रके महान् निर्माताओं की कही बातको दुहराया भर है। उनकी बातको सरल करके कहा है। भारती संस्कृति तीन स्तम्भों—तीन देवियोंकी उपासना, स्तुति पूजा पर आश्रित है। इन तीन देवियोंके अन्तरतम प्रदेशको हृदयमें सदा स्थान देना चाहिए। इसमें किसी प्रकारकी भूल न होनी चाहिए। ये देवियां हैं—१—इडा-मातृभाषा, २—सरस्वती-मातृसभ्यता, भारती सभ्यता, ३—मही-भारत मही। मातृभूमि। हमारे पूर्वजका निदेश है—

इला सरस्वती मही तिस्रोदेवीर्मयो भुवः।
बर्हिः सीदत्वं स्रिधः (ऋ. १।१३।९)

अपि च—

तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तामिडा सरस्वती।
मही भारती गृणाना॥ (अथर्व०)
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तन्त्विडा सरस्वती।
भारती मही गृणाना॥ (यजु० २७।१९)

इन तीन देवियोंका गुण गान क्यों करना चाहिए? ऋषिका उत्तर है—क्योंकि—सरस्वती बुद्धिको साधती है, इडा वाणी है, भाषा आत्माकी अभिव्यक्ति करती है, भारती मही विशेष रूपसे विश्वमें महनीय और गौरव शाली है। ये तीनों देवियां यज्ञ भूमिमें सदा रहें, ये हमारी अपनी धारणा शक्तिसे रक्षा करें।

विद्या, भाषा और भारतभूमि-मातृभूमि ये तीन महाशक्तियां हैं। इनकी आजीवन भक्ति करनेसे मानव, देश व राष्ट्र सदा पूर्ण काम और पूर्ण मनोरथ होता है।

अपिच—

भारतीय जनोंके साथ भारती मही, दिव्य विद्वानोंके साथ मातृभाषा-इडा, ज्ञान प्रेमियोंके

साथ सरस्वती ये तीनों देवियां सानुराग हमारे हृदयमें स्थान पाएं। महान् पूर्वज ऋषि का कहा यह अमर सत्य है—

सरस्वती साधयन्ती धियं न
इडा देवी भारती विश्वतूर्तिः।
तिस्रो देवी स्वधया बर्हिरेदम–
च्छिद्र पान्तु शरणं निषद्य ॥
(ऋ० २।३।८)

अपि च—

आ भारती भारतीभिः सजोषा
इडा देवैर्मनुष्येभिरग्निः।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक्
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥
(ऋ० ७-२-८)

भारतका नाम कितना अति प्राचीन है :—

श्रेष्ठं यषिष्ठं भारताग्ने द्युमन्तमाभर। वसो पुरुष्पृहं रयिम् ॥ (ऋ० २-७-१)

य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम्। विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम् ॥
(ऋ० ३-१३-१२)

भारतीले सरस्वती यावः सर्वा उपब्रुवे।
तानश्चोदयत श्रिये ॥

भारतका शासकवर्ग 'एंग्लो-इस्लाम-रूस युति' का एजेण्ट है। इसका इससे बढ़कर दूसरा और क्या प्रमाण हो सकता है—वह इस विभक्त प्रायःद्वीपका भी नाम भारत घोषित करनेको उद्यत नहीं। भारत महीको "विश्वतूर्ती" कहा है, क्योंकि भारत "यविष्ठ" चिरयुवा है और सृष्टि संचालक शक्तियों संयोजन-वियोजनसे युक्त है। भारत भरत-जन का देश होनेके अतिरिक्त सम्पूर्ण मानव समाज का भरण करनेमें समर्थ है। "अथर्वा" नामक महान् राष्ट्र नेताने इसको 'विश्वरूपा" कहा है। ऋषि कहता है, इस समस्त वसुधा पर अजित, अहत-अक्षत, रहकर हम शासन करें।

"गिरयस्ते पर्वतो हिमवन्तो-अरण्यं ते पृथिवी स्योन मस्तु। बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमि पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्। अजीतोऽहतो अक्षतो अध्यष्ठां पृथिवीमहम् ॥
(अथर्व –१२-१-११)

भारत भूमि कैसी है—

इसमें छः ऋतुएं नियम पूर्वक क्रमसे आती हैं। ऐसी हमारी भारत माँ दूध और अन्न देवे—

"ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद् हेमन्तः शिशिरो वसन्तः। ऋतवस्ते विहिता हायनीः अहो रात्रे पृथिवी नो दुहाताम् ॥
(अथर्व १२-१-३६)

और कैसी है—

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्य व्यैलवाः।
युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः ॥

सा नो भूमिः प्रणुदतां सपत्नान्।
असपत्नं मा पृथिवी कृणोतु ॥
(अथर्व० १२-१-४१)

भारत माँ हमें शत्रु रहित करे। भारत का आकाश नूपुरोंकी झंकारों वाद्योंके निनादों और हर्ष उल्लास पूरित किलकारियोंसे अहो-रात्र गूंजता रहे।

भारत भूमिको मेरा नमस्कार है। मैं उस भूमिकी वन्दना करता हूँ जो चावल-जौ आदि अन्न-धान्य उपजाती है। जिसमें पांच महाजन निवास करते हैं। वर्षा इसका पति है और वर्ष भेद हैं।

यस्यामन्नं ब्रीहियवौ यस्या इमाः पञ्च कृष्टयः।
भूम्यै पर्जन्य पत्नयै नमोऽस्तु वर्ष मेदसं॥
(अथर्व० १२-१-४१)

भारत भूमिकी वन्दना सभा-समिति गांव, जंगल, संग्राम, न्यायालयों पंचायतों आदि सब स्थानों संस्थाओंमें सदा करनी चाहिए।

ये ग्रामा यदरण्यं या सभा अधिभूम्याम्।
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते॥
(अथर्व० १२-१-५६)

भूमिका स्वरूप क्या है : -

पत्थर, भूमि शिला-चट्टान, धूलिसे पूर्ण है। ठीक रीतिसे धारण करने पर उत्तम रीतिसे रक्षा करनेसे सोना देती है। ऐसी भूमिको बार-बार नमस्कार है।

शिला भूमिरश्मा पांशुः सा भूमिः संधृता-धृता।
तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः॥
(अथर्व० १२-१-२६)

भारत भूमिकी महिमाका भाव-विमोर होकर हमारे आद्य महान् पूर्वजोंने इस प्रकार स्तुति गान किया है : -

भूमि मातामें मीठा-मीठा दूध बहाती है, द्यौ और मेघ जहां अमृत जल बरसाता है। भारती जन स्तुत्य है, बलवान् है, नियम पालक है, शुभ कर्म करने वाले हैं। हम अदिति (भारत मही) के पुत्रोंको सुख प्राप्तिके लिए उत्साहित करें॥ १॥ साम्राज्य सुखसे जो भारतजन सुखी हैं, ज्ञानवान् एवं कर्मठ व महान् है, यज्ञमें पधारते हैं। वह अजेय हैं, अदम्य हैं और ज्ञान-ज्योतिसे आलोकित लोकके निवासी हैं, उन गुणी व महान् भारतपुत्रों व भारत भूमिको सुखार्थ स्तुतियोंसे नमस्कार करते हैं॥ २॥

ऋषियोंका स्तुति-गीत है—

येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः
पीयूषं द्यौ अदिति अद्रिबर्हा।
उक्थ शुष्मान् वृषभरान् स्वप्नसः
तान् आदित्यान् अनुमदा स्वस्तये॥
(अथ० १०।६३।३)

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाय युः अपरिव्हताः
दधि रे दिवं क्षयम्।
तामाविवास तमसा सुवृक्तिभिः,
महो आदित्यान् अदिति स्वस्तये॥
(अथ० १०।६३।५)

इससे एक बात प्रकट है। भारती संस्कृति या भारती आर्य जातिकी संस्कृतिमें व्यक्ति-पूजाका चाहे वह धर्म संस्थापक हो, पैगम्बर हो, महात्मा हो या अवतार हो या महान् विचारक हो, इनको जब स्थान दिया गया, इनकी पूजा की गई तब भारत माँ व भारत मही विस्मृत हो गई। फलतः वृहत्तर भारत कट गया। मन पवित्र हो, शुद्ध हो, परिष्कृत हो, इसके लिए ज्ञान आवश्यक है। सदसद् विवेक जन-जनमें उत्पन्न हो इसके वास्ते ज्ञान होना चाहिए। इस वास्ते इस देशके महान् आदि पूर्वजने सरस्वतीकी अहर्निश उपासना करनेका विधान किया। [शेष अगले अङ्कमें]

श्रद्धाञ्जलि

गत दि. ६ सितम्बर सायंकालको पटियालासे अपने घर जालन्धर जाते हुए लुधियानासे कुछ आगे राजमार्ग पर मोटरकारमें गोली चलाकर समाज विरोधी गुण्डोंने ला० जगत्नारायणजीकी निर्मम जघन्य हत्या कर दी । इस दुःखद समाचारसे सारा राष्ट्र सहम गया । लालाजी खालिस्तान-विरोधी पंजाबके वयोवृद्ध लोकप्रिय नेता थे । पंजाबने पहले पराधीनतामें हिन्दुत्वके प्रबल समर्थक राष्ट्रीयस्तरके महान् नेता लाला लाजपतरायका बलिदान दिया और अब स्वतन्त्र-भारतमें पंजाबके भीष्म पितामह लाला जगतनारायणका बलिदान दिया है । लाहौरमें ला० लाजपतरायजीने कहा था—"मुझ पर पड़ी ब्रिटश सरकारकी लाठीकी कील ब्रिटिश साम्राज्यके कफनकी कील बनेगी ।" वही हुआ । अब लाला जगत्नारायणकी हत्या जिन धर्मान्ध खालिस्तानी व्यक्तियोंने की है—उन्होंने अपने पन्थ पर कुठाराघात किया है । लालाजी स्वतन्त्रता संग्राममें कई बार जेल गये, वे पंजाब सरकारके शिक्षामन्त्री और राज्यसभाके सदस्य भी रहे । आप सफल निर्भीक पत्रकार एवं दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे । ऐसे महान् व्यक्तित्वकी पूर्त्ति शीघ्र होना असम्भव है । राष्ट्र के लिए जो अपना बलिदान करते हैं उनके चरण वन्दनीय हैं । 'श्रीराष्ट्रालोक' में लिखा है—

तर्पयन्ति स्वराष्ट्रं ये शोणितैरुन्निनीषवः । धन्यास्ते कृतपुण्यास्ते वन्दनीय पदाम्बुजाः ।।

ज्योतिष्मती-परिवारकी ओरसे लालाजीको हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित है ।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

अक्टूबर १९८१ ई०

ता. १३ मंगलवार–सत्यव्रत, शरत्पूर्णिमा, बाल्मिकि जयन्ती, जैन आ. ओली समा.
१६ शुक्रवार–श्रीगणेश४ करवाचौथ व्रत चं. उ. २०।३५
१७ शनिवार–तुलामें सूर्य संक्रान्ति पुण्यकाल
२० मंगलवार–अहोई अष्टमी व्रत।
२३ शुक्रवार–रमा ११ व्रत सभी सम्प्रदायका
२४ शनिवार–गोवत्सा १२
२५ रविवार–प्रदोषव्र. धन १३ धन्वन्तरि ज.
२६ सोमवार–नरकहरा रूप १४ श्रीहनुमज्ज.
२७ मंगलवार–दीपमाला श्रीमहालक्ष्मी पू. महावीर निर्वाण दिन (जैन) कमला ज.
२८ बुधवार–अन्नकूट, गोवर्द्धनपूजा, बलि पू.
२९ गुरुवार–यम२ भय्यादूज, विश्वकर्मा ज.

नवम्बर १९८१ ई०

ता। ५ गुरुवार–गोपाष्टमी।
६ शुक्रवार–कूष्माण्ड ९ अक्षया ९
८ रविवार–हरिप्रबोधिनी ११ व्रत सबका भीष्मपंचक प्रारंभ, तुलसी-विवाह, ताजिया मोहर्रम, चातुर्मास समाप्त
९ सोमवार–सोम प्रदोषव्रत
१० मंगलवार–वैकुण्ठ १४
११ बुधवार–सत्यव्रत, कार्तिकी पूर्णिमा, मेला पुष्करराज, गढ़गंगा, रेणुका कपालमोचन तीर्थ भीष्म-पंचक समाप्ति, श्रीनिम्बार्काचार्य जयन्ती गुरुनानक जयन्ती
१४ शनिवार–श्रीगणेशचौथव्रत चन्द्रोदय २०/१३, बाल दिवस।
१६ सोमवार–वृश्चिकमें सूर्यसंक्रांति पुण्य.
१७ मंगलवार–श्री ला. लाजपतराय निधन
१८ बुधवार–श्री महाकाल भैरवाष्टमी।

ता. २२ रविवार–उत्पन्ना ११ व्रत सबका।
२३ सोमवार–सोमप्रदोषव्रत, मल्ल द्वादशी।
२५ बुध–मेला पुरमण्डल काश्मीर, देविका स्ना
२६ गुरुवार–अमावस्या पुण्यकाल।
२८ शनिवार–चन्द्रदर्शन मु० ३०

दिसम्बर १९८१ ई०

ता. १ मंगलवार–श्रीगुरुतेगबहादुर बलिदान दि.
३ गुरुवार–स्कन्दषष्ठी चम्पा ६
७ सोमवार–मोक्षदा ११ व्रत स्मार्त्त. श्री-गीता जयन्ती।
८ मंगलवार–मोक्षदा ११ व्रत वैष्णव सं.
९ बुधवार–प्रदोष व्रत।
१० गुरुवार–त्रिपुरभैरवी जयन्ती, सत्यव्रत
११ शुक्रवार–श्रीदत्त जयन्ती, अन्नपूर्णा ज.
१४ सोमवार–गणेश४ व्रत चन्द्रोदय २०।५८
१५ मंगलवार–धनुःमें सूर्यसंक्रान्ति मु. १५
२० रविवार–श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती
२१ सोमवार–सफला ११ व्रत स्मार्त्त वैष्णव।
२२ मंगलवार–सफला ११ व्रत निम्बार्क सं.
२३ बुधवार–प्रदोषव्रत।
२५ शुक्रवार–क्रिसमिसडे (बड़ा दिन)
२६ शनिवार–शनैश्चरी अमावस्या।
२८ सोमवार–चन्द्रदर्शन मु. ४५

जनवरी १९८२ ई०

ता. २ शनिवार–श्रीगुरुगोविन्दसिंह जन्मदिन।
३ रविवार–श्री दुर्गाष्टमी।
६ बुधवार–पुत्रदा ११ व्रत सभी सम्प्रदायका
७ गुरुवार–प्रदोषव्रत।
९ शनिवार–सत्यव्रत, शाकम्भरी जयन्ती, पौषी पूर्णिमा, खग्रास चन्द्रग्रहण, माघ-स्नानारम्भ।

श्री हर्षका आगमशास्त्रीय वैभव एवं उनके

चिन्तामणि मन्त्रका स्वरूपान्वेषण

[डा० शशिधर शर्मा वाचस्पति (डी० लिट्) प्राध्यापक, पञ्जाब विश्वविद्यालय
श्रीसाहित्यसुधा सदनम्, ई २८, सैक्टर १४, चंडीगढ़ १६००१४]

श्रीहर्षके काव्योंमें संस्कृत कविताका चूड़ान्त परिपाक दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत काव्यरचनाके लम्बे वैभवकालमें श्रीहर्षका स्थान अन्य कविके लिए अछूता ही रहा है। इस आश्चर्यजनक उपलब्धिके पीछे उन्होंने ही वागीश्वरीके चिन्तामणि मन्त्रको माना है। आश्चर्यकी बात तो यह है कि इस अद्भुत शक्ति-सम्पन्न मन्त्रको महाकविने अपनी रचनामें गुप्त रूपमें रक्खा है। निश्चय ही इस गोपनमें उनका ध्येय यही रहा होगा कि अनन्त शक्तिके भण्डार इस परम पुनीत मन्त्रको अनधिकारी वर्ग द्वारा विडम्बित होनेसे बचाया जाय। किन्तु, कालक्रमसे इसके लुप्त होनेके भयसे भारतके अनेक प्रौढ़ विद्वानोंने इसे खोजनेका भारी प्रयास भी किया। आज स्थिति यह है कि विद्वानोंके अनेकान्त निर्णयोंकी धुन्धमें इस मन्त्रकी वास्तविकता और भी अधिक छिप गई है।

'चिन्तामणि-मन्त्रराज' की अनवरत खोजके इतिहासमें एक ठोस एवं विश्वसनीय कड़ी प्रस्तुत लेखके विद्वान् लेखक डा० शशिधर शर्मा वाचस्पतिने जोड़ी है। डा० शर्माका सर्वशास्त्रावगाही अद्भुत पाण्डित्य इस लेखमें पदे-पदे प्रस्फुरित है। इन्हें आचार्य गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, महामहोपाध्याय श्री परमेश्वरानन्द तथा शंकराचार्य जैसे भारत-प्रसिद्ध गुरुओंके सान्निध्यमें अध्ययनका गौरव प्राप्त है। तान्त्रिक परम्परामें जन्मना तथा विधया उभयथा आनुवंशिक प्रौढ़ प्रवेश एवं इनका पूर्ण सदाचारनिष्ठ जीवन यदि इस मन्त्रराजकी अद्भुत शक्तिकी विलास-स्थली हो तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। इन्होंने इस लेखमें पूर्व विद्वानोंके अन्विष्ट मन्त्र रूपोंको जिस वैदुष्य तथा सूक्ष्मताके निकष पर परखा है तथा अकाट्य निष्कर्ष निकाल कर मन्त्रराजके जिस निरवद्य शुद्ध रूपको प्रकट किया है वह अवश्य ही विद्वानोंकी सचक्षुर्विस्फार आकांक्षा-निवृत्तिका विषय होगा—इस विश्वासके साथ हम इस लेखरत्नको 'ज्योतिष्मती' के 'रजत-जयन्ती' के शेखरमें अलंकृत कर प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक]

महाकवि श्रीहर्षकृत 'नैषधीयचरितम्' संस्कृत साहित्यकी एक अनुपम निधि है—यह कहने सुननेकी वस्तु नहीं अणुरूपतासे खचित किए शास्त्रीय सन्दर्भोंके कारण विद्वत्समुदाय इस पर सर्वात्मना विमुग्ध है। अन्य शास्त्रोंकी भांति आगम शास्त्रके चमत्कारको भी इस महनीय महाकाव्यमें चरम परिपाक प्राप्त हुआ है। शास्त्रान्तरोंकी तुलनामें अत्यल्प होने पर भी इसमें आए आगम शास्त्रीय सन्दर्भ बहुत प्रौढ़ हैं। सरस्वतीका चिन्तामणि-मन्त्र आगम शास्त्रका एक निगूढ़ रहस्य तत्त्व है। श्रीहर्षने इसकी सम्यक् आराधना की थी और उसीका फल उनका रचा परम विस्मय और आनन्दका स्रोत यह महाकाव्य है। उन्होंने इसे स्वयं चिन्तामणि मन्त्रके चिन्तनका परिणाम बतलाया है—

'तच्चिन्तामणिमन्त्रचिन्तनफले'[1]

अधिक आश्चर्यकी बात तो यह है कि प्रौढ़िपरवश होकर लिखे गए इस ग्रन्थमें दोषों प्राचुरताकी भी प्राचीनकालसे ही सहेतुक घोषणा होती रही है। मम्मट्ट—सम्बन्धिनी उस किम्वदन्तीको, जिसमें उन्होंने इसे 'सर्वविध-काव्य दोषोंका भाण्डारगार' बताया था—यहां

१—नैषधीयचरित १

उल्लेख करनेकी आवश्यकता नहीं। पर, 'दोषों की आकरता' पर भी सुधी समुदायने इस पर दोषाकर (चन्द्रमा) की भांति स्नेह और सत्कार बरसाया, बल्कि दोषमयताको इसका विशेष गुण ठहराआ[२] और प्राचीनोंकी भांति नवीन समालोचकोंके हृदयमें भी यह उतरा-जैसा कि निम्नाङ्कित उद्गारोंसे स्पष्ट है, जो असंख्योंमेंसे केवल दो हैं—

'अनलमुखानास्वादित—
मतमोगम-मन्दरसजनकम्।
पत दधिपानपहार्यं
नैषधमक्याम्यपूर्वपीयूषम्।'[१]

अर्थात् नैषधीयचरित तो अमृत है और वह भी विलक्षण। प्रसिद्ध अमृत (अनलमुख) देवताओं द्वारा आस्वादित है, पर इस अमृत का आस्वाद अनलमुख (नल जिनके मुखमें नहीं है, वे नहीं ले सकते। पूर्व अमृत तम (राहु) के पास पहुँच गया था पर यह तम (अज्ञान) की पहुंचसे बाहर है। उस अमृतका मन्दराचल सहोदर है, पर यह मन्द रसका नहीं अपितु अमन्द (सान्द्रतम) रसका जनक है। प्रसिद्ध अमृतका पक्षिराज गरुड़ने अपहरण कर लिया था, पर इसका अपहरण अधम जन द्वारा शाक्य नहीं। अतः पूर्व अमृतसे यह कहीं बढ़-चढ़ कर है।

एक पाश्चात्य विद्वान्‌की भी सम्मति जरा देखें। उनकी दृष्टिमें—

"It is diffuse, deseriptive, figurative, often playful and occassi onolly interspesed with excellent remarks and moral reffections."[२]

अर्थात् यह महाकाव्य विस्तीर्ण, वर्णनात्मक, आलङ्कारिक, प्रायशः (शब्द) क्रीड़ापरायण और अवसर अवसर पर उत्तम उक्तियों एवं चारित्रिक विचारोंसे परिकीर्ण है। इस प्रकारकी उपलब्धियां, निस्सन्देह सरस्वतीके प्रसादके बिना दुर्लभ हैं। सहृदयोंने क्या ही उत्तम कहा है कि जिस व्यक्तिने चिरकाल तक माँ सरस्वतीके कवित्व और पाण्डित्य रूप पीन कुचकुम्भोंका पान नहीं किया, वह सर्वतः परिपूर्ण कमनीयताको प्राप्त कर दिन प्रतिदिन असामान्य प्रौढ़ताको कैसे पा सकता है?

सरस्वतीमातुरभूच्चिरं नयः
कवित्वपाण्डित्य घनस्तनन्धयः।
कथं स सर्वाङ्गमवाप्तसौष्ठवो
दिनाद्दिनं प्रौठिविशे षमश्नुते।[३]

श्रीहर्षके सम्बन्धमें यह सूक्ति खूब सटीक बैठती है।

दर्शनके क्षेत्रमें तो उनके 'खण्डन खण्ड-खाद्यम्' ने 'नैषधीय चरितम्' से भी अधिक प्रतिष्ठा पाई। 'खण्डनखण्डखाद्यम्' का निर्माण 'नैषधीय चरितम्' के अनन्तर हुआ अतः वह

२—द्र० महामहोपाध्याय परमेश्वरानन्द शास्त्रीजीका निबन्ध—'दोषाकरत्वं नैषधस्य षष्ठो गुणः'

१—आर्यासप्तशती, विश्वेश्वरपर्वतीयकृता, ५म पद्य

२—W. yates—Asiatic Researches, Vol. XX.PP. 323

३—श्री कण्ठ चरित २२७

भी चिन्तामणि मन्त्रका ही प्रसाद है।

शास्त्र और काव्य दोनों क्षेत्रोंमें ये दोनों ग्रन्थरत्न सहृदयोंको चिरकालसे प्रमोद पुलकाञ्चित करते आ रहे हैं, जैसा कि विश्वेश्वर भट्टने कहा था—

एतैः खण्डनखण्डखाद्यसहज—
स्पन्दैरमन्दैः शुचः
कुल्यावर्त्म विसृत्वरैं सुमनसा—
माप्लाविताना मुहुः।
उन्मीलत्पुलकावलीविकसन—
व्याजेन जानीमहे
सर्वाङ्गीणतया स्फुरन्त्यविरला
ङ्कुदाः प्रमोदाङ्कुराः ॥[१]

जिस मन्त्रराजका ऐसा प्रत्यक्ष चमत्कार है—उसका स्वरूप क्या होगा ? यह जाननेकी इच्छा किसकी न होगी ?

अनेक चिन्तामणि मन्त्र

किन्तु, चिन्तामणि मन्त्र कोई एक नहीं अपितु अनेक हैं, बौद्धोंके यहां एक चिन्तामणि मन्त्र' मिलता है—जिसे 'चिन्तामणिरत्न मन्त्र' भी कहा गया है, यथा

समन्त्रो पात्रभूतस्थः,
त्रिषु चिन्तामणिस्तथा।
करोति कर्म वैचित्र्यम्
ईप्सितं साधकेच्छया॥

मन्त्रं चाऽत्र भवति—"नमः सर्वबुद्धेभ्यः ॐ तेजो ज्वाल सर्वार्थसाधक सिध्य सिध्य सिद्धि चिन्तामणि रत्न हुं"।

चिन्तामणि रत्नमन्त्रः
सर्वार्थसाधकम्।
ईप्सितां साधयेदर्था
मन्त्राश्चापि सविस्तराम्॥[२]

(कहनेकी आवश्यकता नहीं कि मन्त्रोंमें व्याकरणनियमबद्धताका अपवाद सा होता है)

बौद्धोंकी श्वेतमूर्ति एकजटा तारादेवीका मन्त्र 'चिन्तामणि मन्त्रकल्प' कहा गया है, जो एक अक्षरका है और मन्त्रोंका राजा है—

'एकाक्षोऽयं मन्त्रराज श्चिन्तामणिकल्पः[३]।

मन्त्रोद्धारके अनन्तर इसका स्वरूप बनता है—ह्रीं[४] महाकवित्व वाग्मिता, महाधन, दीर्घायु, सर्वशास्त्रवैशारद्य और सर्वविषघन्ता आदि) इसके लाभ हैं।[५] 'अहिर्बुध्न्य संहितामें

१—वड़ोदरीय प्राच्यविद्यामन्दिरकी मातृका ९८५०, १०म सर्गान्त

२—आर्यमञ्जु श्रीमूलकल्प, त्रिवेन्द्रं प्रकाशन, भाग २, पृ. ३९३

३—साधनमाला, गायकबाड़ प्राच्य ग्रन्थावलीप्रकाशन भाग १, पृ. २६८

४—'तत्रायं मन्त्रोद्धार :—सप्तमस्य चतुर्थं वह्निसंयुक्तं ईकारभेदितं अर्धेन्दुबिन्दुविभूषितं इत्थं जपेत्। नाभिमध्ये अष्टदलकमलोपरि देदीप्यमानं ह्रींकारजिह्वोपरि चन्द्रमण्डलं तदुपरि ह्रींकारं पश्येत्'—वही

५—लक्षजापेन महाकविर्भवति श्रुतिधरो वाग्मी च, वज्रवाणीं च लभते। महाधनो दीर्घायुः सर्वशास्त्रविशारदो (गरुड़ इव त्रिभुवनं निर्विषंकरोति। शीघ्रं च बोधिमभिसंभोत्स्यते नास्ति अत्रसन्देहः) पूर्वोक्त ही पृ. २६९—७०

एक अर्धनारीश्वर दैवत्य चिन्तामणि मन्त्रका उल्लेख आया है जिसका फल है वशीकरण, न कि कवित्व इत्यादि।[१] 'ईशान शिवगुरु देवता पद्धति'मे भी एक चिन्तामणि मन्त्रका वर्णन है। पर, उसके देवता हैं महारुद्र—

बीज चिन्तामणिर्नाम
महारुद्रोऽस्यदेवता ।
ऋषिस्तुम्बुरु सञ्ज्ञो
छन्दो गायत्रमेव हि ॥

पद्मपुराणमें भी एक 'मन्त्रचिन्तामणि' प्राप्त होता है, जिसके अधिष्ठातृ देवता श्रीकृष्ण हैं।[२] इसके अतिरिक्त एक चिन्तामणि मन्त्रका उद्धरण ललितासहस्रनामके भास्कररायकृत भाष्यमें भी मिलता है।[३] श्रीहर्ष द्वारा चिन्तामणि मन्त्रके स्वरूप एवम् उपासनादिका विवरण—

प्रतीत होता है कि मन्त्रराजके प्रति उमड़ती कृतज्ञता लोककल्याणकी भावनासे महाकवि श्रीहर्षने अपने द्वारा सिद्ध किए गए चिन्तामणि मन्त्रके स्वरूप, उपासना विधि और फल सभी पर संक्षेपमें प्रकाश डलवाया है और वह भी स्वयं सरस्वतीसे ही—

अवामा वामार्धे—
सकलमुभयाकारघटितं
द्विधाभूतं रूपं
भगवदभिधेयं भवति यत् ।
तदन्तर्मन्त्रं मे—
स्मरहरमयं सेन्दुममलम्
निराकारं शश्व—
ज्जप नरपते सिध्यतु स ते ॥[४]

पर यह अपने आपमें एक ग्रन्थि बन गया। आगे उन्होंने लिखा कि 'हंसारूढा' मन्त्ररूपा मुझ सरस्वतीकी सुन्दर पुष्पों और गन्धादिकसे अर्चना कर मेरेमें ही बुद्धिको दृढ़ स्थापना करके, मेरी ही भक्तिमें डूबा जो व्यक्ति इस मन्त्रको जपता है, एक वर्षके बाद जिस किसी के सिर पर वह हाथ रख दे, वह एकाएक ही श्लोकोंको बनाने लगता है—इसका यह चमत्कार अवश्य देखने योग्य है—

पुष्पैरभ्यर्च्य गन्धादिभिरपि रुचिरै—
श्चारुहंसेन मां चेन्—
निर्यान्तीं मन्त्रमूर्ति जपतिमयि मति
न्यस्य, मय्येव भक्तः ।
तत्प्राप्ते वत्सरान्ते शिरसि करमसौ
यस्य कस्याऽपि धत्ते
सोऽपिश्लोकानकाण्डे
रचयति रुचिरं कौतुकं दृश्यमस्य ॥[५]

इतना ही नहीं, आगे सरस्वतीके श्रीमुख से श्रीहर्ष कहलाते हैं कि 'जिस पुण्यात्माने इस चिन्तामणिमन्त्रको हृदयमें रख लिया है वह शृंगारादि नवरस सान्द्र वाणीसे साक्षात् बृहस्पति लगता है, उसका स्वरूप स्वर्गकी सुन्दरियोंको भी वशीकरणमें कामदेव बन जाता है, और अधिक क्या—वह जो ही चाहता है, मेरे इस चिन्तामणि मन्त्रसे पा लेता है'—

१—अहिर्बुध्न्य संहिता २३।९६—९७ अडयारपुस्तकालय (मद्रास)।
२—त्रिवेन्द्रम् प्रकाशन, भाग २, मन्त्रपाद, पृ. १७९
३—पद्मपुराण पाताल खण्ड, अध्याय ५०
४—ललिता सहस्रनाम ८७
५—नैषधीयचरितम् १४. ८८

सर्वाङ्गीणरसामृतस्तिमितया
वाचा स वाचस्पतिः,
स स्वर्गीयमृगीदृशामपि वशी—
काराय मारायते।
यस्मै यः स्पृहयत्यनेन विधिना
प्राप्नोति किं भूयसा,
येनायं हृदये कृतः सुकृतिना
मन्मन्त्र चिन्तामणिः ॥[1]

किन्तु जिस महामन्त्रकी यह सारी महिमा है, उसका ज्ञान कोई कम समस्या तो नहीं।

चिन्तामणिमन्त्रका स्वरूप और पूर्व टीकाकार

यहां पर यह वाञ्छनीय होगा कि चिन्तामणि मन्त्रके स्वरूपके सम्बन्धमें नैषधीय चरितके विद्वान् टीकाकारोंने क्या कहा है?—इसका प्रथम भलीभांति मनन कर लिया जाए। देश विदेशमें प्रस्तुत विभिन्न प्रामाणिक पुस्तक-पंजियों, स्फुट सन्दर्भों एवम् अन्य विवरणोंके आधार पर 'नैषधीयचरित' की पचास टीकाओं का परिचय प्राप्त होता है।[2] प्रस्तुत पद्यके सम्बन्धमें इनमेंसे कतिपय उल्लेखनीय टीकाओं की दृष्टि कालक्रमसे द्रष्टव्य है।

कर्तृवैशिष्टच द्वारा टीकाका वैशिष्टच स्फुटतर हो सके, इस निमित्त आरम्भमें टीका-कारका संक्षिप्त परिचय उपादेय रहेगा, ऐसी हमारी धारणा है।

साहित्य विद्याधारी—

सूर्यभक्त विप्र-वंशावतंस, श्रीरामचन्द्र भिषक् और सीतादेवीके सुपुत्र 'साहित्य-विद्याधर' विरुदधर श्री विद्याधर द्वारा निर्मित[3] और उन्हींके नामसे प्रसिद्ध साहित्यविद्याधरी 'नैषधीय चरित' की उपलब्ध प्राचीनतम टीका है। व्याख्येय महाकाव्यके गूढ़ भावोंकी सहज अभिव्यक्तिने इसे कान्तिसे महिमान्वित कर दिया है।[4] विद्याधरका समय त्रयोदश क्रिस्तु

१— ,,

२—नैषधीय चरितम् १४.८९

3—A Critical Study of Sriharsa's Naisadhya cartam : Jani A. N. (1957) ch

४—श्री सौरद्विजवंशभौतिक मणि श्रीरामचन्द्रो भिषक्
श्रीसीता सुपतिव्रता गुणवती सीतेव माता च यम्।
श्री विद्याधरमात्मजं प्रसुषुवे साहित्यविद्याधरं
तस्यायं विगतः प्रबन्धविषये सर्गो द्विसंख्यायुतः ॥
BORID P. 464

५—लीलाद्योतितगूढ़भावसुभगालंकारवृन्दान्विता
संसेव्या सुमनोवरैर्नवरसप्रोल्लासिनी शोभना।
चित्तासेचनके नलस्यचरिते बद्धास्पदा या सदा
टीका कान्तिगुणान्विता जयति सा साहित्यविद्याधरी ॥

शतीके उत्तरार्धका आदि अंश माना गया है। यह उपलब्ध प्राचीनतम टीका है[1] और चाण्डूपण्डित[2] सदृश सर्वशास्त्र पारङ्गतपण्डित के लिए भी स्तुत्य और आदर्श बनी है, अत: इस टीकाके विचार, विचारकोंके लिए अवश्य ही ससस्पृह ज्ञातव्य हैं।

तदनुसार शारदा द्वारा उपदिष्ट मन्त्र ईश्वररूप और ईश्वर सदृश है—साथ ही हकार और रेफसे घटित हैं। मन्त्र और ईश्वरमें सादृश्य है कि ईश्वर (शिव) इन्दु सहित हैं। क्योंकि उनके मस्तक पर चन्द्रकला है तो इस मन्त्रमें भी चन्द्रकला "ँ" रूपमें विद्यमान है। मन्त्र यदि निष्कीलित होनेसे निर्मल है, तो ईश्वर भी निर्मल है—शुभ्रतम। ईश्वर निराकार है तो यह मन्त्र भी, क्योंकि निरयन शब्दोंसे सङ्घटित होनेके कारण इसमें आकार नहीं। ईश्वर और मन्त्र दोनों ही द्विरूप हैं, क्योंकि ईश्वरविभूति स्त्री और पुरुष इन दो स्वरूपोंसे ही विश्वको व्याप रही है। सारा संसार लिङ्ग और भगसे अङ्कित है, वज्रचक्र या कमल आदिसे नहीं।[3] अत: परमात्मा द्विधा भूत है। तो चिन्तामणी मन्त्र भी ओ+म् या ह+र से उभयाकार घटित और द्विरूप बना है। पद्यस्थ 'वामा' शब्दका अर्थ है 'ई' अत: 'ह और र' वामा योगसे 'ह्रीँ' बन जाते हैं।

उनकी मूल्यवती शब्दावलिका अविकल रूपमें अवलोकन करें—

'कीदृशम्—हरमयम् ईश्वरस्वरूपम् ईश्वरसदृशमित्यर्थः। अथ च हकार रेफमयम्। अधुना ईश्वरस्यमन्त्रस्य च साम्यमाह। सह इन्दुना चन्द्रेण वर्तते इति सेन्दुः तम्। मन्त्रोऽपीन्दुकलायुतोलिक्ष्यते। तथा कीदृशम्—अमलं कीलित नाददोषवर्जितम्। ईश्वररूपमपि अमल शुभ्रम्। तथा निराकारं नीरूपमव्यक्तम्। नहि शब्दरूपस्य मन्त्रस्य आकारोऽस्ति निरवयवत्वात्। तत् किंरूपमित्याह—यत् सकलं ममग्रमीश्वररूपम्। द्विधारूपं द्विस्वरूपं भवति। हेतुमाह—उभयाकारघटनादाकृतिद्वययोगात् स्त्रीपुरुषाकारेणयुक्तत्वादीश्वरस्य। यतो वामार्ध अवामा पार्वती देवी विद्यते। अत एव अर्धं रूपं स्त्रिया अर्ध च पुरुषस्येति द्विस्वरूपं भवति। समग्रं विश्वरूपम् आकारद्वयोपेतमेव। ईश्वरस्य तृतीय लक्षणं नास्तीत्यर्थः। यदुक्तं व्यासेन—

4—It 'Sahityavidyadhari' is the earliest known commentary on the Naisadhacarita, and its author has the distinction of being first commentator to grapple with the difficulties of 'Sriharsa's poem. Chandu Pandita praises Vidyadhara's commentary in the beginning of his work and other commentators have borrowed from him.

Naisadhacarita: Prof. Handiquri Intro. pp. XXVI

चाण्डूपण्डित विद्याधरकी टीकाको उपपत्तिमती बताते हुए विद्याधरको दिक्कूलङ्कष अम्मोदकदम्बके सदृश मानते हैं—

टीकां यद्यपि सोपपत्तिरचनां विद्याधरो निर्ममे

न वज्रचक्राङ्कसरोरुहाङ्क
लिङ्गाङ्कितं पश्यजगद् भगाऽङ्कम्।
हस्तप्रबद्धेन हि कङ्कणेन
पश्यन्ति मूढाः खलु दर्पणे न ॥

मन्त्रपक्षे व्याख्यायते—यन्मन्त्ररूपं द्विधाभवति । उभयाकारघटनात् अक्षरद्वययोगात् सकलं समस्तं मन्त्रम् अक्षरद्वयस्वरूपम् जानातीव्यर्थः। अथवा सकलमूर्ध्वस्व (र) म् (?) इत्यागमिभाषा । अक्षरद्वयमित्याह—यतः अवा ओकारेण मा मकारेण प्रणवेन युक्ता अर्धवामा देवी वर्तते । वामा शब्देन व्यञ्जनरहितम् ईमित्युच्यते। एतच्च हकाररेफमयं क्रियते। तदा प्रणवपूर्वको ह्रींकारो भवति। अयं च सारस्वतो मन्त्रः सर्वेषु आगमेषु प्रसिद्धो दृष्टस्वभावश्च। भो नृप ! तं मन्त्रं शश्वदनवरतं जप। स मन्त्रस्ते तव सिध्यतु निष्पद्यताम्।[1]

आगे उन्होंने अलङ्कार एवं छन्द पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए उपसंहार किया है—
'अत्रानुप्रासश्लेषालंकारौ। 'शिखरिणी'।[2]

चाण्डूपण्डितकी नैषधदीपिका

इस प्रसङ्गमें अहमदाबाद समीपवर्ती धोलक ग्राम निवासी नागर विप्रप्रवर श्रीचाण्डू पण्डितकी 'नैषधदीपिका' टीका सर्वप्रथम हमारे सामने आती है। श्रीचाण्डू वैदिक, दार्शनिक और साहित्यिक विद्याओंके अनुपम विद्वान् थे।[3] कोशों, धर्मशास्त्रों और स्मृतियोंके अतिरिक्त पाणीनीय और कातन्त्र दोनों व्याकरणों पर भी उनका समान अधिकार था[4]। ऋग्वेदसंहिता पर भी उनके एक भाग्यका उल्लेख मिलता है—पर दुर्भाग्यवश वह अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। अथापि, इनकी वैदिक व्याख्याके जो फुटकर संकेत 'नैषधदीपिका'में उपलब्ध होते हैं, वे महत्त्वपूर्ण हैं।[5] इन्होंने बाजपेय, बृहस्पतिसव और द्वादशाहयागों को सम्पन्न कर क्रमशः सम्राट्, स्थपति और अग्निचित्' उपाधियोंको पाया था—

यो बाजपेययजनेन बभूवसम्राट्
कृत्वा बृहस्पतिसवं स्थपतित्वमाप।
यो—द्वादशाहयजनेऽग्निचिदप्यभूत्सः
श्रीचण्डुपण्डित इमां नितान टीकाम् ॥[6]

इनके स्वोल्लेखके अनुसार नैषधदीपिका का निर्माणकाल सम्वत् १३५३ (१२९७ A.D.) ठहरता है—

श्रीविक्रमार्कसमताच्छरक्षादामथत्रि-
पञ्चाशता समधिकेषु शतेष्वितेषु :

१—साहित्य विद्याधरी १४.८८

२—वही।

३—विवरणार्थ द्रष्टव्य "Naisadha carita of sriharsa: k. k Handiquri PP. XX-XXI.

४—वही

५—उदाहरणार्थ नैषधदीपिका १०.५१ इत्यादि

६—नैषधदीपिका २२वें सर्गके उपसंहार पर।—इनकी यह प्रथम

तेषु त्रयोदशसु भाद्रपदे च शुक्ल—
पक्षे त्रयोदशतिथौ रविवासरे च ।।[1]

फलतः उनका समय त्रयोदशी किस्तुशती का अन्त या चतुर्दशीका आदि ठहरता है।

'चिन्तामणि' मन्त्र पर चाण्डूकी टीका और पूर्वोल्लेख 'अवामा वामार्दे' इत्यादि पद्य पर चाण्डू पण्डितकी टीका निम्न-लिखित है—

वामे अर्धे वामपक्षार्थे प्रथमम् अ वा ओकारेण तथा मामकारेण ॐकारेणेत्यर्थः । यत् रूपं द्विधा द्विप्रकारं भूतं सत् द्वितीयेन ओंकारेण दक्षिणार्धेऽपि भूतं प्राप्तं भगवद-भिधेयं भवति ब्रह्मवाचकम् । किं भूतम्—उभयाकारस्य ओंकारद्वयस्य घटनात् मेलना-त्सकलम् । तदन्तः तयोः ओंकारयोरन्तर्मध्ये हरमयमीश्वरमयं मन्त्रं मम स्मर । अथ च हकारो रेफकारो मकार ईकारश्च । चतुष्टयेऽपि अकार उच्चारणार्थः । ईकारस्य पुरतः अकार-स्य सुखोच्चारणार्थे य आदेशे ह्रींकारः उभय-पक्षे ओंकारेण संपुटित इत्यर्थः । सेन्दुम् अर्ध-मात्रायुक्तम् । अथवा हरमयमिति मयट्प्रत्ययः । अथवा सेन्दुमिति मयट्प्रत्ययः । अथवा सेन्दु-मिति ईश्वरम् । ई च इन्दुश्च ताभ्यां सह वर्तते सेन्दुः तं तथा । एतावता ईकाराऽनु-स्वारश्च लब्धः । अमलं निराकारं चान्तर्जप । हे नरपते ! स ते तव सिध्यतु मे मम देव्या भारत्या मन्त्रः सिध्यतु । सारस्वतो मन्त्रः ।'[2]

भाव यह है कि यह मन्त्र हरमय अर्थात् ईश्वररूप है साथ ही ह र म और ई इन चार स्वरव्यञ्जनोंसे बना है। इसके उभयतः (उभयाकारघटनात्) 'ओ' और 'म्' हैं—अर्थात् यह दो प्रणवोंसे घिरा है। इस प्रकार 'ओं ह्रीं ओम्' इस मन्त्रस्वरूपकी लब्धि होती है।

किन्तु महाकविने ह र म व्यञ्जनोंका 'अकार' युक्त उल्लेख किया है जबकि 'ह्रीं' में अकार नहीं, अपितु स्वरके नाम पर केवल चतुर्थ स्वर (ई) है—जिसकी उपलब्धि दुष्कर दीख रही थी, अतः नैषधदीपिकाकारने 'ह,र,म' तीनोंमें मुखसुख अर्थात् उच्चारणसौकर्य हेतु[3] अकारका उपनिबन्धन माना, और इस त्र्यक्षरी के अनुगामी 'य' की भी ईके परतः अकी स्थिति मान, ह्+अ=ह, र्+अ,+र, म्=अ=म, ई+अ=य । इस क्रमसे 'हरमय' पदसे पूरे ह्रीं इस मायाबीजकी स्थिति सिद्ध की। या फिर उनकी दृष्टिसे पद्यगत 'सेन्दुम्' पदसे भी 'ई'

१—वही सर्गान्तपुष्पिका भी
मननीय है—'इति धवल्लकवास्तव्य नागरश्रोत्रियावतं
स पण्डित श्री वैद्यनाथशिष्य ऋग्भाष्यक्रलक्षहोमचतुष्टयकृत्
सम्राट् स्थापति सप्तसोमसंस्थाया जिह्वार्दशाहाग्निचिद्
दीक्षितश्री चाण्डूविरचितायां नैषधदीपिकायां हंसगमनो नाम प्रथमः सर्गः, ।

२—नैषधदीपिका १४.८८

३—तुलनीय—'हकारादिष्वकार उच्चारणार्थः' सिद्धान्तकौमुदी संज्ञाप्रकरणम्
'न पुनरन्तरेणाऽचं व्यञ्जनस्योच्चारणमपि भवती' 'त्युच्चैरुदात्तः (१. २. २९)
इति सूत्रस्थभाष्यम्

कारका लाभ हो सकता है—(ईच इन्दुश्च (ई+इन्दुः) ताभ्यां सहवर्तते तं तथा इस व्युत्पत्तिसे। सेन्दुपद 'इन्दुकलाधारी' कैलास-बिहारी शिवको तो सहज बतलाता ही है। इन्दु अनुस्वार और अर्धमात्राको भी बतलाता है। फलतः चाण्डू पण्डितके अनुसार ओं सम्पुटित 'ह्रीं' की ओर महाकविने प्रस्तुत पद्य में सङ्केत किया है।

आगे दीपिकाकारने प्रस्तुत पद्यसे ही आराध्य यन्त्रकी भी सिद्धि की है। दो भगाकार त्रिकोणोंके योगसे (उभयाकारघटनात्) बने षट्यन्त्रके मध्यमें ह् र् क् ल् तथा 'ओ' और 'म्' के मेलसे बने मन्त्रका स्मरण किया जाना चाहिये—जिसका क्रम उनके अनुसार 'ॐ क्लीं ह्रीं' इस प्रकार पर्यवसित होता है[1]।

मल्लिनाथ और 'चिन्तामणि' मन्त्रका उद्धार–

विद्याधर और चाण्डूपण्डितकी टीकाकृतियों और श्रीहर्षके (1020—1180 A. D. के) निर्माणकालका अन्तर बहुत अधिक नहीं। चाण्डू ने तो अपने जन्म और विद्याके पूर्ववंशका परिचय देते हुए नैषधको स्पष्ट शब्दोंमें अपने समयका नया काव्य कहा है—

श्रीमानालिंगपण्डितः स्वसमया—
विर्भूतसर्वाश्रम—
श्चाण्डूपण्डितसंज्ञितं प्रसुषुवे
श्री गौरीदेवी च यम्।
बुद्ध्वा श्री मुनिदेवसंज्ञविबुधात्
काव्यं नवं नैषधं
द्वाविंशे शशिवर्णने विवरणं
सर्गे स टीकां व्यधात्॥[2]

इस प्रकार उनकी व्याख्याओंका महत्त्व स्वतः सिद्ध है। इनके अनन्तर उल्लेखनीय दो व्याख्याएं और हैं, मल्लिनाथकी जीवातु और नारायण 'वेदरकर' की 'नैषधीय प्रकाश'। मल्लिनाथका प्रान्तीयनाम पेद्दभट्ट था। श्रीपापयल्लय सूरिने 'कृष्णकर्णामृत'की स्वटीका में पेद्दिभट्टनामसे संकेत करते हुए इनकी अस्पर्धनीय कीर्तिका परिचय इस प्रकार दिया है—

१—'अथवा यद्रूपं भगवद् योनिशदृशाकारं त्रिकोणयन्त्रमयं भवति। किं भूतम्—उभयाकार घटनात् द्विधाभूतं त्रिकोणयन्त्रद्वयघटनात् षट्कोणयन्त्रं तदन्तः मध्ये मे मन्त्रं स्मर। हकाररेफमयम्। सकलं ककारलकारसंयुक्तम्। अवा ओकारेण मा मकारेण त्रिष्वपि अक्षरेषु बिन्दुना (सह वर्तमानम्)। तथा यत्र अध वामाअस्ति। 'वामा' शब्देन स्त्री प्रत्यय ईकारो लक्ष्यते। अयमभिप्रायः। षट्कोणयन्त्रमध्ये पूर्वं प्रणवस्ततः क्लीं ह्रीं। अथवा अवामा न शक्तिः, अपरा वामा नाम शक्तिः इति–द्वे अर्थे। एतत्स्वरूपं द्विधाभूतम् उभयाकारघटनात् योन्यर्धाकाररूपद्वयमेलनात् सकलं संपूर्ण सत् यत् रूपं भगवत् योनिवत् तदन्तर्मन्त्रं स्मर। शेषं पूर्ववत्। वही।

२—इस पद्यके अनुसार आलिग और गौरीदेवी चाण्डूपण्डितके पिता और माता थे तथा उन्होंने नैषधीयचरितका अध्ययन विशेषरूपसे मुनिदेव नामक विद्वान्से किया था। सामान्यतः तो इनके विद्यागुरु थे—'विद्यानाथ', जिनकी इन्होंने आरम्भमें सरस्वतीके साथ वन्दना की है— नत्वा वागधिदेवतां तदनु च श्रीवैद्यनाथं गुरुम्।

 # कार्यक्रम 

दि० 26 नवम्बर 1995 रविवार

लग्न समारोह सायं 6 बजे

दि० 28 नवम्बर 1995 मंगलवार

तेल प्रात 11 बजे

दि० 29 नवम्बर 1995 बुधवार

चाक दोपहर 2 बजे

दि० 30 नवम्बर 1995 गुरूवार

घुड़चढ़ी दोपहर 2 बजे

कार्यक्रम स्थल - नटराज होटल,
गली चौदह महादेव, भरतपुर दूरभाष : 22742

पाणिग्रहण संस्कार एवं प्रीतिभोज रात्रि 8 बजे

विवाह स्थल - कला मन्दिर स्कूल, भरतपुर

नोट -

बारात निकासी दि० 30.11.95 को सायं 5.30 बजे गंगा मन्दिर से प्रारम्भ होकर कला मन्दिर स्कूल प्रस्थान करेगी ।

संस्थान-

ओउम आयरन एण्ड पेन्ट स्टोर

बुध की हाट - गंगा मन्दिर
भरतपुर 321001(राज.)
दूरभाष - 25219

।। श्री गणेशाय नमः।।



स्नेही स्वजन,

चि० पप्पी गोपालिया (जगदीश)

(सुपौत्र श्रृद्धेय शिवलाल जी बौहरे)

(सुपुत्र महेश चन्द गोपालिया)

एवम्

सौ० काँ० किरण

(सुपुत्री श्री बालकिशन जी)

निवासी कोटा (राज.)

के

मंगल परिणय

की मधुर बेला पर

सपरिवार पधारकर अनुग्रहीत करें ।

दर्शनाभिलाषी

रामजीलाल, गोपालस्वरूप

रामभरोसी, किशनचन्द

एवं समस्त गोपालिया परिवार

विनीत

महेश चन्द गोपालिया

राजीव गोपालिया

निवास -

बुध की हाट, गंगा मन्दिर, भरतपुर 321001

दूरभाष - 25219

कृपया कार्ड को ही व्यक्तिगत बुलावे की मान्यता प्रदान करें ।

पेद्दिभट्टादिभिः प्राप्य—
यशांते प्रार्थना न ये।
किन्तु कृऽणस्मृतिर्नित्यं
भवत्विति मतिर्मम ॥[1]

श्रीकृष्णमाचार्य[2] और डा० जानीको[3] पेद्दिभट्ट और मल्लिनाथकी एकतामें सन्देह है। किन्तु, ग्राफ्रेक्ट[4] और शेषगिरि शास्त्री[5] दोनोंको अभिन्न मानते हैं, और डॉ० सुशील-कुमार 'दे' भी।[6]

संस्कृतके मूर्धन्य पञ्च महाकाव्यों—कुमारसम्भव, रघुवंश, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, नैषधीयचरित और भट्टिके अतिरिक्त मेघदूत, अमरपदपारिजात, तार्किकरक्षा, और एकावली पर टीकाओं, उदारकाव्य और रघुवीरचरित नामक काव्यों तथा वैश्यवंश-सुधार्णव के रचयिता इन मल्लिनाथ[7] से संस्कृत साहित्यका, विशेषत: काव्यविद्याका प्रत्येक विद्यार्थी भली-भांति परिचित है। वांशिक उपजातिके आधार पर इन्हें कोलाचल मल्लिनाथ भी कहा जाता है। इनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा और विद्या वैभव सचमुच अनुपम हैं। इनके लिए प्रयुक्त 'महामहोपाध्याय' उपाधि सर्वथा यथार्थ है। इनके विद्यावैभव पर हमने अन्यत्र प्रकाश डाला है—अत: यहां पर 'जीवातु' प्रथम सर्गकी पुष्पिकाका उद्धरण ही पर्याप्त है। यथा—

'इति पदवाक्य प्रमाणपारावारपारीण श्रीमहामहोपाध्याय' कोलाचल मल्लिनाथसूरि विरचितायां नैषधयाख्यायां प्रथमः सर्गः। यह ठीक है कि चाण्डूपण्डितका विद्यावैभव भी खूब बढ़ा-चढ़ा था। वैदिक आदि अंशविशेषमें वे मल्लिनाथ सूरिसे आगे हों, यह भी माना जा सकता है, पर सर्वाङ्गीण परीक्षणके अनन्तर तो कोलाचल मल्लिनाथ बीस ही ठहरते हैं, उन्नीस नहीं। व्याख्या-लेखनमें तो वे और भी अनुपम हैं। नपे तुले शब्दोंमें व्याख्येय ग्रन्थका आशय खोल कर रख देनेमें वे निपुण हैं। बिना प्रमाणके कुछ लिखना नहीं, और जो आवश्यक नहीं, उसे कहना नहीं—

1—Sh. Sesagiri's rep. on a search for Sanskrit and Tamil MSS. No. 2, pp. 58

2—History of Classical Sanskrit Literature PP. 183 (1899)

3—A Critical Study of Sriharsa's Naisadhiya-contam PP. 64

4—Catalogus Catalogorum: Aufrect, Leipugig PP. 345 (1903) records "Prddvhatta—a name of the commnentator Mallinatha"

5—Report on a search for Skt. and Tamil MSS., by Sh. Sesagiri No 2. for 1893—94, Madras, 1899

6—Sanskrit Poetics, De, s. k. (1976) PP. 207

7—(I) Catalogus Catalogorum: Aufrect PP. 434
(II) History of Classical Sanskrit Literature: knishnamacrian PP. 182

८—नैषधीय जीवातु, पालघाटसंस्करण (१६३०) पृ. ७६

नाऽमूलं लिख्यते किञ्चि—
न्नाऽनपेक्षित मुच्यते ।[१]

उनका अनुकरणीय सिद्धान्त है—जिसे उन्होंने सर्वत्र खूब निभाया है। उनके सुपुत्र भी सर्व विद्या-दीक्षित थे। उनके लघु पुत्र कुमार स्वामीने विद्यानाथकृत 'प्रतापरुद्रीय' की 'रत्नापण' व्याख्यामें अपने पैतृक गुणोंको खूब संजोया है और उनके उपक्रम श्लोकसे, कि—

कोलाचलपेद्दयार्यः
प्रमाणपदवाक्यपारदृश्वा यः ।
व्याख्यातसर्वशास्त्रः
प्रबन्ध कर्ता च सर्व विद्यासु[२] ।।

उनके अग्रज विश्वेश्वरकी सर्वशास्त्र तिष्णाततामें कोई सन्देह नहीं रह जाता !

वस्तुतः वैदिक वाङ्मयमें जो काम सायण माधवने किया, काव्य वाङ्मयमें वही काम कोलाचल मल्लिनाथने। सायणके बिना वैदिक वाङ्मय आज पहेली बनकर रह गया होता, तो मल्लिनाथसूरिके बिना किरातार्जुनीय और शिशुपालवध जैसे महाकाव्य भी अधिकांशतः अबोध्य पड़े रहते। व्याख्याकार अनेक हैं और सबके अपने-अपने विशेष गुण हैं, पर सब पहलुओंसे व्याख्येयपर प्रकाश डालना, मल्लिनाथ सूरिकी अपनी विशिष्टता है। इनका समय लगभग सभी इतिहास-विशेषज्ञोंने कुछ वर्षोंके अन्तरसे चौदहवीं शताब्दीका अवसान निर्धारित किया है[३]।

देवता, मन्त्र और यन्त्रके अभेदसिद्धान्तानुसार मल्लिनाथने 'अवामा वामार्धे' पद्यसे क्रमशः अर्धनारीश्वर चिन्तामणि मन्त्र और चिन्तामणि यन्त्र तीनों अर्थ दिखाए हैं। उनके अनुसार सरस्वती राजा नलको स्व-देयवरका स्वरूप सविस्तार बतलाती हैं कि राजन्, अर्धभागमें पुरुष और अर्धभागमें स्त्री, इस प्रकार दोनों रूपोंके मेलसे संघटित, 'भगवान्' कहकर पुकारे जाने वाले, चन्द्र-कलासमेत, तत्त्वतः निराकार मन्त्र और ईश्वर रूप मेरे 'अर्धनारीश्वर' स्वरूपका चिन्तन करो, वह तुम्हें सिद्धिदायक हो। मन्त्रपक्षमें इसका अर्थ होगा कि दक्षिण और उत्तर दोनों ओर 'ओम्' से सम्पुटित 'ह्' और 'र' इन द्विधा भूत वर्णोंमेंसे 'अ' कार को निकाल 'ई' विन्दु और अर्धचन्द्रसहित मेरे निर्मल मन्त्रको जपो ……… इत्यादि।

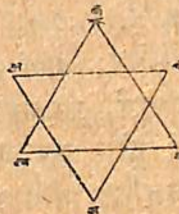
और यन्त्र पक्षमें, योनितुल्य दृश्य दो त्रिकोणोंके योगसे षट्कोण[४] रूपमें समग्र बने

१—सञ्जीवन्याद्युपक्रमे

२—प्रतापरुद्रीयम्, वें० राघवान्, सम्पादिते पृ० २

३—द्रष्टव्य (i) प्रतापरुद्री य रत्नापणकी डा० राघवन्‌की प्रस्तावना पृ. २
(ii) Bhandarkar, Report—1887—91
(iii) Pathak, into to Meghaduta PP. 11—12
(iv) Nandargikar, into. to Raghu. PP. 1—6 esp. 5—6
(v) Trivedi, into. to Ekavali P. XX vii f., Bhatti PP. xxiv—xxiv

४—षट्कोणस्वरूप निम्नाङ्कित बनता है—



यन्त्रके भीतर ऊपर उद्धृत मन्त्रको जपो ... ... इत्यादि।[1]

१—अत्रवरस्वरूपमेव पञ्चभिः प्रपञ्चेनाऽऽह, अवामेत्यादि। नरपते हे नरेन्द्र! अर्धे एकभागे, अवामाअस्त्रीपुमानित्यर्थः। पुनः अर्धे अर्धभागान्तरे वामास्त्री, अतएव द्विधाभूतं स्त्रीपुंसात्मकम्, उभयाकारघटनात् उभयोः आकारयोः मेलनात्, सकलं सम्पूर्णं भगवदभिधेयं भगवच्छब्दवाच्यं यद्रूपं भवति, विद्यते, सेन्दुम् इन्दुकलासमेतम्, अमलं निर्मलं, निराकारं परमार्थतः निरंशं, मन्त्रं मन्त्रात्मकं, तद्वत् गोप्यं वा, हरमयम् ईश्वरात्मकं, मे मम, तत् रूपं स्वरूपमित्यर्थः, अन्तः अन्तःकरणे स्मर चिन्तय, शश्वत् निरन्तरं जप मन्त्रात्मकत्वात् जपरूपेण च उपासस्व, स मन्त्रमूर्तिः भगवान् अर्धनारीश्वरः, ते तव, प्रिष्यतु प्रसीदतु, फलतु इत्यर्थः। मन्त्रपक्षे तु अर्धे प्रथमभागे अवा ओकारेण मा मकारेण, प्रणवेन इत्यर्थः। तथा अवामार्धे अर्धे उत्तरभागेऽपि, अवा ओकारेण, मा मकारेण चोपलक्षितं, प्रणवद्वयसम्पुटितमित्यर्थः, एवमुभयाकारघटनात् उभयाभ्याम् अकाराभ्यां घटनात् संयोगात्, द्विधाभूतं हर इति द्विधाविभक्तम् अथवा उभयाभ्यामासकाराभ्यां, प्रणवस्वरूपायां, घटनात् सम्पुटीकरणात्, द्विधाभूतं द्वयाकारं, भगवदभिधेयं भगवान् शिवः अभिधेयो वाच्यो यस्य तत् शिववाचकं यद्रूपं भवति ओं हर ओम् इति यत् स्वरूपं निष्पद्यते, तत् हरमयं हकाररेफात्मकं, निराकारं अश्च अश्च तौ अौ तयोराकारं स्वरूपं, निर्गतौ-रहितौ, अकारद्वयं यस्मात् तादृशं, हकाररकारयोरुच्चारणार्थं यत् अकारद्वयं तच्छून्यम्, अतएव 'ह्र' इति व्यञ्जनवर्णमात्रात्मकमित्यर्थः। तथा ई च इन्दुश्च ताभ्याम् ईन्दुभ्यां सह वर्तते इति तादृशं सेन्दु तुरीयस्वरविन्दुसहितम्, अमलं निर्दोषं, सकलं कलया अर्द्धचन्द्रेण सहितं, मे मदीयं, मन्त्रं प्रणवद्वयसम्पुटितं 'ओं ह्रीं ओम्' इत्याकारकं सारस्वतचिन्तामणि मन्त्रमित्यर्थः तदुक्तं पारमेश्वरे—'उद्धारस्तु परोक्षेण परोक्षाप्रियताश्रुतेः। शिवान्त्यवह्निसंयुक्तो ब्रह्मद्वितयमन्तरा। तुरीयस्वरशीतांशुरेखा तारा समचितः। एष चिन्तामणिर्नाम मन्त्रः साधकः। जगन्मातुः सरस्वत्या रहस्यं परमं मतम्। इति। शिव शब्देन हकारः, वह्निशब्देन रकार, ब्रह्मद्वितयमन्तरा प्रणवद्वितयमध्ये, तुरीयस्वरेण ईकारः, शीतांशुरेखया अर्द्धचन्द्रः, ताराशब्देन बिन्दुः इत्यर्थः। अन्तरित्यादि पूर्ववत् मल्लिनाथीय उद्धरणमें आए 'परोक्षप्रियताश्रुतेः' के मूलान्वेषणमें निम्नाङ्कित श्रुतियां देखें—

'परोक्षप्रिया इव हि देवा भवन्ति प्रत्यक्षद्विजः' (गोपथब्राह्मण १. २. २१.)

'परोक्षं वै देवाः'—(माध्यन्दिन शतपथ ब्रा० ३. १. ३. २५) और, 'परोक्षकामा हि देवाः'—(वही ६, १, १, २०, ७, ४, १, १०,) इत्यादि।

यन्त्रपक्षे—भगवत् योनीव, अभिधेयं दृश्यं यद्रूपं त्रिकोणाख्यम्, उभयाकारघटनात् त्रिकोणद्वयमेलनात्, सकलं सम्पूर्णं षट्कोणमित्यर्थः भवति, तदन्तः तस्य षट्कोणस्यान्तर्मध्ये, मन्त्रं ॐ ह्रीं ओम् इत्याकारकम्। अनन्तरोक्तं, नरपते इत्यादि पूर्ववत्।

(नैषधचरित 'जीवातु' चौखम्भा प्रकाशन भाग २ पृ. ४७७)

मल्लिनाथकी विशिष्टताएं इस व्याख्यामें कई तरहसे उभरी हैं। प्रथम तो उन्होंने पद्यकी देवता, मन्त्र और यन्त्र तीनों अर्थोंमें विशकलित योजना की, तदनन्तर अलङ्कार और छन्दका निरूपण भी किया।[1] यद्यपि विद्याधरने भी अलङ्कार लिखा था, पर मल्लिनाथने अभिप्रायपूर्वक यह काम इस ढङ्गसे किया कि 'इस पद्यमेंसे तीनों अर्थ कैसे निकल सकते हैं, इस शङ्काका सहज समाधान हो जाए। किन्तु तान्त्रिक प्रसङ्गमें जो उनका सर्वोपरि योगदान है वह यह कि उन्होंने मन्त्रका जो उद्धार सामने रखा, उसे, आगम वाक्यों द्वारा समूल सिद्ध कर दिया—उनको भी इस रूपमें कि—'उनमें या श्रीहर्षके पद्यमें ही सम्बद्ध मन्त्र या यन्त्रको सीधे ही न कहकर रहस्य बनाकर क्यों कहा गया', ऐसा कहनेका भी किसीको अवसर न रहे।

नैषधीयप्रकाश और चिन्तामणि मन्त्र—

पण्डितवर नरसिंह और मदालसाके सुपुत्र श्रीरामेश्वर और सीताके शिष्य [2]देवीमहात्म्य और गीतगोविन्दकी टीका (पदद्योतनिका) के निर्माता महाराष्ट्रीय नारायण बेदरकरका समय १४००—१६३७ (A.D.) निर्धारित किया गया है[3] इनकी टीका 'नैषधीय प्रकाश' बहुत ही जनप्रिय है। मूल भावोंके पूर्ण ग्रहण और कल्पना या अभिव्यक्ति सम्बन्धी भूल-भूलैयाओंमें मूलकारके पूर्ण अनुकरण द्वयर्थक या विरल प्रयोगवाले पदोंसे घटित सन्दर्भोंके शुद्धता तथा सुन्दरताके साथ व्याख्यान एवम् वाक्योंके विस्तृत ढांचे या वर्णन अथवा स्थिति की दुर्बोधताके लिए नवीन विद्वानोंने भी इसकी बड़ी श्लाघा की है[4]। एक-एक पदके अनेक-अनेक अर्थ करनेमें और दूरकी कौड़ियां ढूंढने में नारायण पण्डित सचमुच अनुपम है। पर यह भी मानना पड़ेगा कि वे एक-एक पदके, कहीं तो अक्षरके, अर्थके बाद अर्थका ऐसा जाल बुन देते हैं कि पाठक किसी निश्चय पर पहुंचने

१—अत्र देवतामन्त्रयन्त्राणां त्रयाणामपि प्रकृतत्वात् केवलप्रकृतश्लेषोऽलङ्कारः शिखरिणी वृत्तम्। (वही)

२—नत्वाश्रीनरसिंहपण्डितपितुः पादारविन्दद्वयं,
मातुश्चापि मदालसेत्यविधया विख्यातकीर्तेः क्षितौ।
श्रीरामेश्वरसीतयोः सुमनसोर्गुर्वोरगर्वो यथा—
बुद्धि श्रीनिषधेन्द्रकाव्यविवृति निर्माति नारायणः॥
नैषधीयप्रकाश पृ० १.

३—प्रो. हन्दीकीका नैषधीयचरितानुवाद पृ. XX

4. Sri Narayana has a thorough appreciation of the beauties of his author, and is fully able to follow him into the labrinthine windings whether of fancy or expression—He explains with accuracy and nicety all those passages which, from th double meanings of words or their rare use, from the elaborate structure of the sentence or the obscurity of allusion or circumstance

में अपनेको असमर्थ पाता है। नए-नए अर्थोंको दिखानेके इन्द्रजालमें सङ्गति और औचित्य भी बिछुड़ जाते हैं। किन्तु अपने बहुमुखी विस्तारके कारण नैषधके सम्बन्धमें 'नैषधीय प्रकाश' एक अनुपेक्षणीय टीका है।

प्रस्तुत श्लोककी व्याख्या भी नारायणने खूब की है। प्राचीन टीकाओंका सार ही इसका तत्त्वभाग है, बाकी शब्दक्रीड़ा है—जिसके कारण इन्होंने इतनी ख्याति अर्जित की है। 'शश्वज्जप' शब्दको नलका विशेषण बताते हुए इन्होंने अपनी व्याख्याका आरम्भ किया है, और देवतापक्षमें 'मन्त्र' का अर्थ 'रहस्यभूत', मानते हुए 'अर्धनारीश्वर' पक्षमें इसे लगाया है क्योंकि शिव और पार्वती दोनों 'सेन्दु' हैं, शिव चन्द्रकान्तिसे युक्त हैं और पर्वतीका तो चन्द्रकला भूषण ही है।[1]

शिवपक्षमें इन्होंने 'सेन्दुमम्+अलम्' ऐसा पदच्छेद किया है। इनके अनुसार 'स्मरहर मयम्' का आद्यर्थ 'भुक्तिमुक्तिदायक और शक्ति शिवरूप' भी है[2]। 'सेन्दु ममलं हरमयम्' का अर्थ आगे चलकर कर्पूरतुल्य शुभ्र शुभावहविधि रूप हरको (जपो), भाषण (स्तुति) करते हुये तुम्हें वह सिद्ध हों या तुम्हारे कर्म साधक बनें या साक्षात्कारमें आएं, जो 'अन्तर्मन्त्र' हैं क्योंकि शैव और शाक्तमन्त्र उनमें निगूढ़ हैं।[3] वे भगवती और भगवान् अर्थात् पार्वती और परमेश्वरके नामसे पुकारे जाते हैं, या 'भगवत्' अर्धनारीश्वरके। आगे 'अवामा वामार्ध' को अर्धनारीश्वरीयोजनामें उपास्य रूप आधेमें 'अ' (विष्णु) और आधेमें 'वामा' शक्ति या (वा) 'मा' (रक्षिका) लक्ष्मी है, क्योंकि नारायण का वामनेत्र इन्दु है, अतः वे 'सेन्दुम्' हैं, तो लक्ष्मीका भी इन्दु (अर्धचन्द्र) भूषण हैं। यह 'लक्ष्मीनारायण' रूप भी हरमय है क्योंकि

---

would, otherwise remain unintellegible. Nor is the prolix, as is frequentty the case with such commentators."

Dr. Roeis preface to the Uttaranaisadhacarita, Vol. II, Pt. I, p. vii.

१—शश्वज्जपो यस्य तत्संबोधनम् तादृश भो नरपते नल, मे मन्त्रं गोप्यं मदीयरहस्यभूतं सेन्दुमिन्दोर्मा चन्द्रकान्तिरसत्सहितम् ईशभागे—चन्द्रकान्त्या युतं चन्द्रकलोपेतम्। पार्वतीभागे–भूषणीभूतार्धचन्द्रसहितम्— नैषधीयप्रकाश, वेंकटेश्वरप्रकाशन पृ. ४४१

२—'तथास्मरमयम् कामतत्त्वरूपम्, हरमयं शिवतत्त्वरूपं क्रमेण भुक्तिमुक्तिदायी एवंभूतं तद्रूपम् .... स्त्रीणां कामप्रधानत्वात् स्मरपदेन स्त्रीभागो लक्ष्यते। तथा च पूर्वोक्त-गुणविशिष्टं स्मरहरमयं शक्तिशिवरूपं तन्मे रूपं .... (पृ. ४४०)।

३—'सेन्दुममलं कर्पूरगौरं हरमयं शुभावहविधिभूतं तन्मे विशिष्टं रूपं स्मर, रपते भाषमाणाय स्तुवते सते साधवे तुभ्यंसिध्यतु वा। रपते ते स हरः सिध्यतु साक्षात्कर्म-साधकोभवत्विति वा। ...... सोऽयं स्मरहरस्ते सिध्यतु साक्षाद् भवत्विति वा। अन्तर्मध्ये मन्त्राः शैवाः शाक्ताश्च यस्य तादृशमिति वा। तत् किं यद्रूपं शब्दरूपत्वाद् भगवती च भगवांश्च भगवन्तौ पार्वतीपरमेश्वरावभिधेयं यस्य। यद्वा भगवच्छब्द वाच्यमर्धनारीश्वरम्। ...... वही।

लक्ष्मीनारायण शिवसे अभिन्न ही हैं ।[1]

मन्त्रके पक्षमें 'अवामा वामार्धे सेन्दु हरमयम्' की प्राचीन सरणिको ही इन्होंने सर्वाङ्गतः स्वीकारा है। बीच-बीचमें व्याख्या-विशेषकी बात और है। 'ह' और 'र' में से 'आकार' अर्थात् उच्चारणाऽर्थक दोनों 'अ' (अ+अ='आ') कार निकल जाएं और 'ई' कार तथा अनुस्वार और 'अर्धचन्द्रसे योग हो जाए तथा दाएं बाएं 'ओम्' से, तो वही चिन्तामणि मन्त्र है। यह 'भगवदभिधेय' है, क्योंकि 'ह र' में 'अ' कारके रहते भगवान् (शिव) का बोध होता है, या यूं कहिए कि 'ह+र' इस स्थितिमें द्वैत प्राप्त यह मन्त्र 'अ' कार निकल जानेसे अद्वैतको प्राप्त हो, सकल पूर्ण बन जाता है।[2]

'भगवदभिधेयं' का यहां पर नारायणने जो अर्थ दिया, वह महत्त्वपूर्ण है। वे लिखते हैं भगवती भुवनेश्वरी जिस मन्त्रकी अभिधेय (वाच्य) हैं—ऐसा मन्त्र[3] और आगे मल्लिनाथके द्वारा उद्धृत प्रमाण देते हुए पुनः कहते हैं कि उक्त आगमके आधार पर दो 'ओम्' से घिरे भुवनेश्वरी रूप चिन्तामणि नामक मुझ सरस्वतीके स्वरूप मन्त्रको जपो, वह मन्त्र तुम्हें सिद्धि दे'। शिवादिका भी चिन्तामणि मन्त्र संभव है, अतः प्रकरणानुसार केवल सरस्वती का ही चिन्तामणि मन्त्र यहां पर प्राप्त हो सके—इसलिए (सरस्वतीके वाक्यमें 'मे' मेरा सरस्वतीका) ऐसा विशेषण कहा गया है।[4]

१—'यद्रूपमर्धे अश्चासौ वामा चावामा शक्त्यात्मको विष्णुः। अर्धे मा वा लक्ष्मीश्च वा चार्थे। यद्वा अवतीत्यवा रक्षिका मा लक्ष्मीः। लक्ष्मीनारायणात्मक भवति! तद्वामनेत्रस्येन्दुरूपतया सेन्दुमम्। ध्याने चन्द्रकलोपेतत्वात्सेन्दुमम्। लक्ष्मीभागे च भूषणीभूतार्धचन्द्रयोगात्सेन्दुमम्। शिवादभिमत्वाद्धरमयं लक्ष्मीनारायणात्मकं ... ... अनुपद ही इस रूपको हरिहरात्मक भी बता दिया गया है क्योंकि उस रूपके वामभागमें स्त्री (मोहिनी) रूप धारी हरि और दक्षिण भागमें हर हैं—'यद्रूपमरूपा विष्णुरूपधारिणी वामाशक्तिर्वामार्धे सव्यभागे भवति। तद्धरमयं [सामर्थ्याद्दक्षिणभागे शिवरूपमेवंभूतं हरिहरात्मकं मे रूपं स्मर' (वही)

२—'तथ[ा] निराकारं अश्च अश्च औ तयोः आकारः स्वरूपम्। स्वरूपेच सुहृद्वर डा० जानीके 'नैषधाभ्यास' (A Critical Study of Sriharsa's Naisdhiya charitam) के द्वितीयपरिशिष्टमें डा० बुल्हरकी सूचना पर प्रकाशमें आए पाटना—स्थित 'संघवीना पाडानो भण्डार' में सुरक्षित भोजपत्रखचित तीन पाण्डुलिपियोंमें पूर्ण हुए नैषधीय चरितका विवरण है जिनमेंसे संवत् १३९५ की १ से १४ सर्गान्त दूसरी पाण्डुलिपि में १ पृष्ठ 'अवामा वामार्धे' इत्यादि श्लोक ही समर्पित हुआ है।

३—'भगवती भुवनेश्वरी अभिधेया यस्य तादृशमिति वा।

४—'शिवान्त्यो ... ... रहस्यंपरमं मतम्' इत्यागमाअणवद्वयसंपुटित भुवनेश्वरी रूपं चिन्तामण्याख्यं मे सरस्वत्याः स्वरूपं मन्त्रं स्मर जप। स च मन्त्रस्ते सिध्यतु। शैवादिचिन्तामणिमन्त्रसंभवान्म इति विशेषणम्। हश्चरश्चमश्च ईश्च तादृशं हकार रेफ मकारेकार समाहाररूपम् यद्यपीकारः पश्चान्निर्दिष्टस्तथापि मकारात्पूर्वमेव ज्ञातव्यः। तस्य पश्चान्निर्देशो मन्त्रगोपनार्थः।'

अनन्तर 'सकलं' की व्याख्या करते हुए वे उपसंहार करते हैं कि—'अ' कार शून्य ईकार और सानुस्वार अर्धचन्द्र रूप' इत्यादि (शेष पूर्ववत्) रीतिसे 'क्लीम्' यह काम-राज-बीज (चिन्तामणि मन्त्रका बीजरूप) सिद्ध होता है। इस श्लोकमें अन्य टीकाओंमें बहुतसे शैव वैष्णव इत्यादि मन्त्रोंका उद्धार किया गया है—यह विदित हो। "ग्रन्थ बढ़ जानेके भयसे और टीकान्तरीय उन प्रकारोंमें कष्टकल्पना होनेके कारण हमने उसे नहीं कहा"।[1]

सारांश—'नैषधीय प्रकाश' का विलोडन करने पर शिव, अर्धनारीश्वर या लक्ष्मीनारायण मन्त्रके अभिधेय हैं और प्रणवसम्पुटित 'ह्रीं' या 'क्लीं' चिन्तामणिमन्त्र, यह निष्कर्ष निकलता है।

नैषधकी उपलब्ध प्राचीनतम पाण्डुलिपिमें चिन्तामणि मन्त्रोद्धार—

इसके अनुसार ॐ, ककारलकार और रेफ के भगवती (ई) के तथा अनुस्वारके साथ योग और अकारोंके साथ वियोगसे बनने वाले श्वेत वर्ण मन्त्रका ही सरस्वतीने अन्त:करणमें स्मरण एवं जपहेतु नलको उपदेश किया था।[2] इसके अनुसार तो 'ओं क्लीं ह्रीं' यह चिन्तामणि मन्त्रका स्वरूप बनता है, नकि 'ओं ह्रीं ओम्', जैसा कि मल्लिनाथादिने कहा है। स्मरण रहे कि यह पाण्डुलिपि प्राचीनतामें चाण्डूपण्डितकी समान सामयिक प्राय है।

समीक्षा—

काव्यप्रकाशके शिरोमणी व्याख्याकार श्री भीमसेन दीक्षितने 'सुधासागरी' के उपक्रममें बड़ी मार्मिक बात कही थी कि—

१—'तथा सेन्दुं सचन्द्रं निराकारं निर्गताकारचतुष्टयंस्वरूपं तादृशं मे मन्त्रं स्मर। इतरत्पूर्ववदिति वा। अत्र पक्षे आकाररहितो मन्त्र:। सकलश्च लश्च कलौ ताभ्यां सहितम्। अत्रापि निराकारं सेन्दुमिति संबध्यते। उभयाकारघटनादित्यादि पूर्ववत्। तथा च 'क्लीम्' इति कामराजबीजं सिध्यति। अस्मिञ्श्लोके टीकान्तरकृतो बहूनां शैववैष्णवादि मन्त्राणामुद्धारो विज्ञेय:। अत्र ग्रन्थविस्तरभिया कष्टकल्पनया च नोक्त:'।

२—'अथवा उंकारेण (ॐ कारेण) कृत्वा यद्रूपं भवति तथा सकलं ककार-लकारसंयुक्तं यद्रूपं भवति सह ककारलकाराभ्यां वर्तते इति सकलम्। अन्यच्च हरमयं हकाररकारयुक्तं यद्रूपं भवति ततश्च सकलं हरमयं।
हरयुक्तं हकाररकारयुक्तं यद्रूपं भवति ततश्च सकलं हरमयं एतदन्तं पदद्वयं कथंभूतं द्विधाभूतं कस्माद् उभयाकारघटनात्। उभयाकारयोर्जायनात्। पुन: किं विशिष्टं भगवदभिधेयं भगवती ईर्लक्ष्मीस्तया सहाऽभिधीयते इति भगवदभिधेयं तत्सहितं इत्यर्थ:। यदत्रयमधिकमभूतं निराकारं आकारश्च अकारौ च आकारा:, विनिर्गता आकारा यत्र तन्निराकारम् आकारसमूहरहितमित्यर्थ:। तथा च सेन्दुं इन्दुसंयुक्तं क्रियते तथा वामार्धे मा संयुक्तं क्रियते तथा वामार्धे मा संयुक्तं व्यञ्जनं मकारसहितमित्यर्थ:। पुन: कीदृग् अमलं श्वेतरूपम्। ततश्च तद्रूपं मे मम मन्त्रस्तके मन्त्रं त्वमन्तश्चित्त स्मर जप च। स मम मन्त्रस्तवसिध्यतु।'

व्याख्यातं हि पुराऽत्र यैः सुकवयः
सर्वे महापण्डिता-
स्ते वन्द्याः सुतरां न तेषु मम
कोऽप्यस्त्याग्रहः स्पर्धितुम् ।
किन्तु ग्रन्थसहस्रसारमपि
यद्वृत्त्या विरुद्धं
वचस्तत्क्षन्तुं न समुत्सहे न च
पुनर्भीतिः सुरेज्यादपि ।।

'जिन्होंने इस महान् ग्रन्थ पर पहिले व्याख्या लिखी है वे सभी सुकवि और महा विद्वान् अतएव वन्दनीय हैं, उनसे स्पर्धा करने का मेरा कोई हठ नहीं। किन्तु हजारों ग्रन्थों का भी सार हो, पर मूलसे विरुद्ध हो, तो उसे मैं सहनेमें असमर्थ हूँ और (इस बातमें) देव-गुरुका भी भय नहीं।'

'अवामा वामार्धे' इत्यादि पद्यकी उपरि दर्शित व्याख्याओं में व्याख्याकारोंकी प्रतिभा और विद्यावैभवकी प्रभा तो अवश्य झलकती हैं, किन्तु वे श्रीहर्षके चिन्तामणि मन्त्रका उद्धार कर पाए हैं—इसमें सन्देह है। क्रमशः विचारणीय है।

यहां हम आगमशास्त्रेतर विचार छोड़ दें, यथा विद्याधरने जब मन्त्रको ईश्वरस्वरूप बतला दिया, तब तुरन्त अनन्तर ही उसे ईश्वर सदृश बतलाना अनुचित है, क्योंकि सादृश्य भेदगर्भ होता है और स्वरूपता सदा अभेदगर्भ। उपमा और रूपक अलङ्कारोंका भेद इसी भित्तिपर आधारित है और तद्रूप बतलानेके बाद तत्सदृश बतलाना ऊपरसे नीचे गिराने जैसा है। फिर भी, एक बात तो आपाततः भी स्फुट है कि विद्याधरी और पटनाकी पाण्डु-लिपिको छोड़कर अन्य टीकाओंमें प्रकरणका उल्लंघन ही क्या, परस्पर प्रतिषेध तक है।

सरस्वतीने 'अवामा' इत्यादि मन्त्रमें उपदिश्यमान मन्त्रको अपना मन्त्र कहा है। अतः सरस्वती ही इस मन्त्रकी देवता हैं। 'या मन्त्रेणोच्यते सा देवता'[1] यह निगमोंका सिद्धान्त आगमोंकी भी मूल प्रतिष्ठा है। किञ्च,—आगे वाग्देवताने कहा—

पुष्पैरभ्यर्च्य गन्धादिभिरपि सुभगै—
श्चारुहंसेन मां चेन्—
निर्यान्तीं मन्त्रमूर्तिं जपति मयि मतिं
न्यस्य मय्येव भक्तः ।[2]

'सुन्दर पुष्पों और गन्धादिकोंसे सुरम्य हंसारूढा मन्त्ररूपा मेरी पूजा करके मेरेमें ही बुद्धिको स्थिर करके, देवतान्तरोंको छोड़ मेरी ही भक्ति करता हुआ (जो इस मन्त्रोत्तमको) जपता है।' अतः यदि देवतापरक व्याख्या प्रकृत श्लोककी करनी ही है, तो वह भी भगवती सरस्वतीकी ही होनी चाहिए, न कि शिव, अर्धनारीश्वर या लक्ष्मीनारायणादिकी। उन (देवतान्तर) के लिए उत्तमोत्तम मन्त्रों की न्यूनता नहीं। अतः वहां पर प्रकरणका

१—जायनात्की जगह योजनात् पाठ उचित लगता है। डा० जानी ने 'जोटनात्' पाठ कल्पित किया है। यह व्याख्या अङ्कित पद वाक्योंके अतिरिक्त अविकल रूपसे, पटनाके ही 'श्रीहेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमन्दिरमें पेटी संख्या २०१ पाण्डुलिपि संख्या ८६८३ में भी उपलब्ध होती है। डॉ० जानी, पृ. परिशिष्ट ५, पृ. १६।

२—'मन्त्रस्य वाच्यं देवता'—शुक्ल यजुः संहिता भाष्य, (निर्णयसागर प्रकाशन) पृ. १

उल्लंघन अनुचित है । इसी श्लोकमें आगे 'मय्येव भक्तः' इस पदकदम्बकसे चिन्तामणि सरस्वतीके मन्त्राराधनकालमें श्रीविग्रहके ध्यान की वाञ्छनीयता ही नहीं, देवतान्तरके ध्यान की परिहरणीयता भी 'एवं' कार द्वारा साग्रह बतलाई गई है[१] । सच बात यह लगती है कि 'उभयाकार घटनात्' और 'स्मरहरमयम्' इन पदोंसे व्याख्याकार भ्रममें पड़ गए । पहले एक भ्रान्त हुआ उसके बाद तो उसका अनुकरण मात्र हुआ । जैसा कि श्रीहर्षने लिखा था—

वर्त्म कर्षतु पुरः परमेक—
स्तद्गतानुगतिको न महार्घः ।[२]

'मन्त्रं मे' प्रकृतपद्यस्थ 'मे' पदकी व्याख्या में तो, जैसाकि हम पहिले देख चुके हैं, नारायण ने स्वयं ही लिखा है कि चिन्तामणि मन्त्र तो शिव विष्णु इत्यादि दूसरे देवताओंके भी हो सकते हैं, अतः कहीं वे इस श्लोकमें उपदिष्ट मन्त्रमें न ले लिए जाएं, इसलिए 'मे' यह (अस्मच्छब्दके षष्ठी एकवचनका) प्रयोग किया गया है—शैवादि चिन्तामणि मन्त्रसंभवा-'न्म' इति विशेषणम्[३] । चूंकि 'मन्त्रं' में कहा गया है, आगे पुनः अपना ध्यान 'मन्त्रमूर्ति' रूपसे करना बताया गया है, अतः यहां यन्त्रप्रदर्शन भी क्लिष्ट कल्पनामात्र हो लगता है । फलतः देवता मंत्र यन्त्र तीनोंको मल्लिनाथका प्रकृत मानना और श्लेष द्वारा उनका वर्णन बताना मूलसे असिद्ध है, जहां केवल मन्त्र प्रकृत हैं ।

भुवनेश्वरी मन्त्र :—

इतना ही नहीं, मल्लिनाथने अपने विवक्षितकी पुष्टिमें जो आगम वचन उद्धृत किया है—पर नारायणने उसे भुवनेश्वरी मन्त्र बतलाया है—

'प्रणवद्वयसंपुटितभुवनेश्वरीरूपं
चिन्तामण्याख्यम्' ।[४]

स्मरणीय है कि श्री भुवनेश्वरी दस महाविद्याओंमेंसे अन्यतम हैं । कहा जा सकता है कि नारायणके इस उद्धरणमें भुवनेश्वरी शब्द महाविद्याविशेषके लिए नहीं अपितु 'ह्रीम्' के लिए ही आया है, क्योंकि भुवनेश्वरी पद इसमें सङ्केतित है । 'भुवनेश्वरी' महाविद्याका वाचक होनेके कारण आगमोंमें 'ह्रीम्' पदको भी 'भुवनेश्वरी' कहा जाता है । किन्तु पूर्वमें 'भगवदविधेय' पदकी व्याख्यामें नारायणने लिखा है—भगवती भुवनेश्वरी अभिधेया यस्य तादृशमिति[५] । इससे तो यही सिद्ध होता है कि भुवनेश्वरी महाविद्याको ही नारायणने इस मन्त्रका अभिधेय माना है । अतः वही इसकी देवता होंगी ।

रही बात—'जगन्मातुः सरस्वत्या रहस्यं परमं मतम्' की तो भुवनेश्वरीपरक मानने पर भी इसमें विरोध नहीं आता, क्योंकि मन्त्र है

१-–तु. मय्येव मन आधत्स्व (श्री गीता)–दोनों स्थलोंमें 'एव' कार अन्य योगव्यवच्छेदार्थक है ।

२—नैषधीयचरितम् ५.५४

३—नैषधीय प्रकाश वैङ्कटेश्वर प्रकाशन पृ. ४४२

४—वही

५— ,,

तो वाग्रूप ही और वह भी असामान्य। अतः वाग्वदेवताका रहस्य तो वह सभी स्थितियों में माना ही जाएगा पर अर्थ इसका होंगी भुवनेश्वरी।

यह ठीक है कि एक ही महाशक्तिका नाना नामों एवं रूपोंमें विलास है, किन्तु, जहां विशिष्ट नामरूपोपाधिकतत्त्वकी उपासनाका विधान है वहां तो उस विशेषका ही ग्रहण होता है, न कि सामान्यका। फिर, एक-एक देवताके भी कितने ही अवान्तर भेद हैं। एक सरस्वतीके ही कितने भेदोपभेद हैं और एक लक्ष्मीके ही कितने अवान्तर प्रकार हैं। थोड़ेसे अन्तरसे ही उपासनाकी विधि और फल इत्यादिमें महान् भेद हो जाता है। इसका मनमाना उल्लंघन लाभके स्थान पर हानिकारक हो सकता है। गणपति एवं विष्णु तत्त्वतः एक ही हैं, किन्तु गणपतिके लिए तुलसीदल वर्जित है, जबकि विष्णुके लिए विशेष रूपसे विहित। शिवके ही विभिन्न कामना भेदसे विभिन्न नामरूप आगमज्ञोंने बताए हैं और सौम्य दारुण कर्मोंमें तादृश नाम रूपको ही आराधनासे अभीष्ट फल लाभ होता है—शिवतत्त्व अभिन्न होने पर भी ध्यान उपासना आदिमें परिवर्तनसे फल लाभ नहीं होने पाता। ऐसी स्थितिमें चिन्तामणि सरस्वती, शिव, अर्धनारीश्वरकी उपासनामें साङ्कर्यका भी 'आगम' समर्थन दुर्लभ है।

[शेष अगले अङ्कमें]



कालिदासका इतिहास

[लेखक :—कविपुण्डरीक श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र M.A. (Sans.), M.A. (English)]

[आशुकवि श्रीहरिशास्त्रीजी दाधीचसे मेरा स्नेहसम्पर्क ४५ वर्ष पुराना है। १५-२० वर्ष पूर्व जब मैं पंचांग प्रकाशनार्थ अजमेर जाया करता था तब भी डा० श्री अम्बालालजीके घर पर शास्त्रीजीसे भेंट हो जाती थी। डा० अम्बालालजी तन्त्र मर्मज्ञ शाक्त पुरुष थे। दाधीचके नाते शास्त्रीजीके स्वजातीय मित्र थे। दोनों वयोवृद्ध मित्रोंका मुझ पर विशेष स्नेह था। श्रीहरिशास्त्रीजी कट्टर वाममार्गी विद्वान् तान्त्रिक थे. उनका अपरनाम 'श्रीहरिहरानन्दनाथ' था। 'कालीपञ्चरत्नम् (जो डा० अम्बालालजीके सुपुत्र श्रीपुरुषोत्तम लाल शर्मा द्वारा प्रकाशित है) में शास्त्रीजी द्वारा निर्मित 'श्रीकालिकात्रिशती नाम माला' और 'कस्तूरीस्तवराज' जिन्होंने पढ़ा है वे शास्त्रीजीकी अद्भुत प्रतिभासे परिचित होंगे। शास्त्रीजीने एकाधिकबार मुझसे अनुरोध किया था कि—"त्रिवेदीजी, आप मुझसे वाममार्गकी दीक्षा ले लीजिए, फिर चमत्कार देखें कि विश्वमें आपका यश-वैभव दशगुणा बढ़ेगा।" इस पर मैंने उनको स्पष्ट कह दिया था कि—"आप जैसे सन्मित्रके स्नेहका मैं आभारी हूं, पर मैं दक्षिणमार्गसे दीक्षित हूँ, वही मेरे लिए श्रेयस्कर है "एको देवः केशवो वा शिवो वा।" ऐसे उपासक महापुरुष (श्रीहरि शास्त्रीजी ने कविपुण्डरीकजीको कालिदासका जो इतिवृत्त बताया उसकी सत्यतामें सन्देह करना उचित नहीं। श्रीहरिशास्त्रीजी जिव्हालोलुप अधिक थे। मरणासन्न रुग्णावस्थामें भी उन्होंने प्रसाद रसको नहीं त्यागा। अब ऐसे महान् तन्त्रमर्मज्ञ साधकोंका लोप होता जा रहा है। नामधारी आत्मश्लाघी तथाकथित तांत्रिक रह गये हैं।

—सम्पादक]

'अभी आया' कह कर श्री हरिशास्त्री-दाधीच उठे और एक रजिस्टर लाकर मेरे सामने रख दिया।

'क्या है ?' मैंने पूछा।

'कालिदासका इतिहास' कहते हुए शास्त्री जीने प्रसक्त पृष्ठ मेरे सामने खोल दिये। मैंने देखा कि लगभग दो सौ संस्कृत श्लोकोंमें शास्त्रीजीने अपने हाथसे कालिदासका इतिहास लिख रखा है। मैंने तत्काल उन श्लोकों को अपने हाथसे उनके सामने ही बैठे-बैठे उतार लिया और बोला—

'आपने यह कहांसे प्राप्त किया ?'

'कालिदाससे'

'कैसे ?'

'एक दिन विचार आया कि क्यों न स्वयं कालिदासनसे ही उनका जीवन-वृत्त पूछ लिया जाय ! गुरुपूर्णिमासे कुछ दिन पहले मैंने कालिदासको बुलाया। वे आये। प्रणामादि स्वीकार करके उन्होंने बुलानेका कारण पूछा तो मैंने अपनी बात कही। वे बोले—

'देखो, इस समय मैं अधिक नहीं ठहर सकता हूं। तुम मुझे गुरुपूर्णिमाको बुलाना। उस दिन मैं तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर दूँगा। यह कहकर वे चले गये।

गुरुपूर्णिमाको मैंने स्थान गोबरसे लिपवाकर विधिपूर्वक उनका आह्वान किया और उन्होंने मेरे सारे प्रश्नोंका उत्तर दिया। उसी को मैंने उनके चले जाने पर इन दो सौ श्लोकों में बाँध लिया है।

श्रीहरि शास्त्री दाधीच महाराजा संस्कृत कालिज, जयपुरमें साहित्यके प्रोफेसर रह चुके थे। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री उनके साथी प्रोफेसर थे और पण्डित गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी प्रिंसिपल। आज शास्त्रीजीको शरीर छोड़े ग्यारह वर्ष बीत चुके हैं और उनके साथ मेरे

इस वार्तालापको इक्कीस वर्ष। उससे भी पांच वर्ष पहले शास्त्रीजी मेरे मौलिक संस्कृत काव्य 'ऋतूल्लास:' की हिन्दीमें भूमिका लिख चुके थे जो मैंने बम्बईके निर्णय-सागर प्रैसमें १९५६ ई० में अपने काव्यके साथ छपवाई। वे चण्डी के वाममार्गी उपासक थे। मेरी उनसे मंत्र-तंत्र पर बहुत बातें हुई हैं पर मेरा उनसे कोई गुरु-शिष्य-संबन्ध नहीं था। उन्होंने मुझे वह विधि भी बताई जिससे उन्होंने कालिदासको बुलाया था। उनका कहना था कि भृगु ऋषि इस विधिका प्रयोग करते थे। इसी विधिके फलस्वरूप शास्त्रीजीने 'मणिद्वीपकी सैर' नामसे कुछ अद्भुत लेख उन दिनों की 'चण्डी' (आज भी श्री ऋतशील शर्माके सम्पादकत्वमें प्रयाग से निकलने वाली मासिक पत्रिका) में छपवाये थे जो उन्होंने मुझे भी पढ़वाये थे। मेरे पाससे वे दो सौ श्लोक खो गये हैं जो मैं उनसे उतार कर लाया था। स्मृतिके आधार पर कुछ बातें मैं यहां बताऊंगा।

'आपका बचपन कैसे बीता? विद्या कैसे पढ़ी?'' शास्त्रीजीने कालिदाससे पूछा। कालिदास बोले—

'बचपनमें ही मेरे माता-पिता मर गये थे। मैं साधुओंको, तपस्वियोंको प्रणाम करके चलता था। आठ-दस वर्षकी अवस्थामें, मध्य-प्रदेशमें, एक दिन एक ब्राह्मण तपस्वी साधु अपने शिष्योंके साथ दुपहरीमें चले जा रहे थे—ऊंचा तेजस्वी ललाट, सिर पर जूड़ा बंधा हुआ, लम्बे शरीर पर झंगा पहने हुए। मैंने स्वभाववश उन्हें भी प्रणाम किया। वे मुझसे बहुत प्रसन्न हुए, मेरे सिर पर हाथ रखा और परिचय पूछकर अपने साथ चलनेको कहा। माता-पिता तो मेरे थे ही नहीं, मैं उनके साथ हो लिया। वे मुझे पढ़ाते भी थे। विद्या मुझे मंत्र-जपसे देवीकी कृपासे प्राप्त हुई।

'राजकुमारी विद्योत्तमासे आपके विवाह की बात क्या सच है?'

'नहीं, वह सच नहीं है।'

इससे उनकी पेड़ पर बैठकर डाल काटने की बात भी झूठ सिद्ध हो जाती है।

'कवि होनेके बाद आपका जीवन कैसा रहा? आपने देशाटन भी किया है?'

'भगवतीकी कृपासे विद्या प्राप्त करके मेरा जीवन बहुत सुखसे बीता। मैंने देशाटन किया है। मैं कश्मीर भी गया था। राजाओं से मेरा सम्पर्क रहा है। जीवनके अन्तिम पैंतीस वर्ष मैं उज्जयिनीके राजाका मित्र बन कर उज्जयिनीमें रहा।'

कालिदाससे श्रीहरि शास्त्रीका यह वार्तालाप कोई प्लैंशैट (Planchette) के प्रयोग का परिणाम नहीं है। उन्होंने तो एक युवकमें कालिदासका आवाहन किया था। उन्होंने मुझसे स्वयं कहा था कि लोग इसे मैज्मैरिज़म (Mesmerism) समझेंगे पर यह मैज्मैरिज़म नहीं। मैंने शास्त्रीजीसे कहा—

'मैं आपकी बात नहीं मानता। मेरे सामने प्रयोग करके बताओ। इस प्रयोगसे तो लगता है कि कालिदास देवयोनिमें है।'

'महाराज, हम तो स्वयं सच्चाईकी खोजमें हैं। आपके सामने प्रयोग कर देंगे, साधन ढूंढ लीजिए, लड़की हो या लड़का। वह लड़का तो मन्थर ज्वर (Typhoid) से मर चुका है।

एक बातका मुझे और स्मरण होता है शास्त्रीजीने कालिदाससे पूछी थी। उन्होंने पूछा था—

'आपने शरीर कैसे छोड़ा ?'

कालिदास बोले—

'मैं कह चुका हूं कि जीवनके अन्तिम पैंतीस वर्ष मैं उज्जयिनीके राजाका मित्र बन कर रहा। मैं रातको भोजनके बाद भगवती के दर्शनको जाया करता था। एक रात जब मैं दर्शनसे लौटा तो मुझे ज्वर हो आया। चैतका महीना था, नवरात्र बीत चुके थे, वसन्तकी चांदनी छिटक रही थी। द्वादशीकी रात भर ज्वर रहा। प्रातःकाल शरीर छूट गया।'

सच-झूठ भगवान् जाने। श्रीहरि शास्त्री का तान्त्रिक जगत्में कितना सम्मान था इसके लिये मैं इतना ही लिखना पर्याप्त समझता हूँ कि १९६५ ई० में बनारसमें स्व० पं० गोपीनाथजी कविराजके प्रयत्नसे उत्तरप्रदेशके तत्कालीन गवर्नर श्री विश्वनाथदासके सहयोग से जो अखिल भारतीय मंत्र-तंत्र-सम्मेलन हुआ था और जिसमें नेपालसे भी तान्त्रिक आये थे, शास्त्रीजीको उसके सभापतित्वके लिये जयपुरसे बुलाया गया था और दस मार्च १९६५ ई० को संस्कृतमें हुआ उनका अध्यक्षीय भाषण अठारह पृष्ठकी एक पुस्तकके रूपमें छपा था जिसमें उन्होंने वाममार्गकी प्रशंसा की थी।

कालिदासका इतिहास चाहे कुछ भी रहा हो पर एक बात मैं निश्चितरूपसे कह सकता हूँ कालिदास दुराचारी नहीं थे। उनकी कृतियां भी यही प्रमाणित करती हैं। उनके वेश्यागामी होनेकी कोई किंवदन्ती मुझे सच दिखाई नहीं देती। वे एक राजसी प्रकृतिके उच्चकोटिके तपस्वी ब्राह्मण थे, जिनके सुख और सम्मानकी रक्षा मन्त्रदेवता अन्त तक करती रही और यशकी रक्षा आज भी करती है। उन्होंने अपना कोई इतिहास नहीं छोड़ा, इसका कारण मुझे उनके जीवनमें कोई गहरी कसक दिखाई देती है। उस टीससे उन्हें वैराग्य होता गया होगा और तपस्या तथा अनुभूति उसे पुष्ट करती गई होगी।

उनकी काव्यरचनाके सम्बन्धमें भी मेरा एक निश्चित मत है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् (शकुन्तला नाटक)' और 'मेघदूत' उन्होंने पच्चीस वर्षकी अवस्थामें लिखे होंगे और 'ऋतुसंहार', 'विक्रमोर्वशीय' और 'कुमारसम्भव' पन्द्रहसे बीस वर्षकी वयमें। 'रघुवंश' आरम्भ तो उन्होंने पहले ही कर दिया होगा पर उसे पूर्ण उन्होंने तीस-पैंतीस वर्षकी अवस्था में किया होगा। 'रघुवंश' में कुछ स्थल ऐसे हैं जिन्हें वे अधिक अवस्थामें भी संवारते रहे होंगे। जो लोग उनके विचारगाम्भीर्य, अनुभूतिगौरव और भाव-परिपाकसे उनकी 'शकुन्तला' को बुढ़ापेकी कृति बताते हैं उनकी बात मुझे नहीं जंचती क्योंकि औपदेशिक कवि (मंत्र-शक्तिसे कवि) को ये सब बातें जवानीमें भी आ जाती हैं। वैसे भी 'लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्' के प्रभावसे बुढ़ापे की बात तो जवानीमें की जा सकती है पर जवानीकी फड़कन बुढ़ापेमें नहीं टिकती। बीस-पच्चीस वर्षकी वयमें कविता और कामिनी की जो ललक मनुष्योंमें पाई जाती है वह इस

के बाद घटती चली जाती है । मैं आज 'ऋतूल्लास' नहीं लिख सकता, वह तो मैं पच्चीस वर्षकी अवस्थामें ही लिख सका। कालिदासने भी 'मेघदूत' पच्चीस वर्षकी अवस्थामें लिखा होगा। मुझे तो लगता है कि कालिदासने पैंतीस वर्ष तक सब कुछ लिख डाला होगा और जीवनके अन्तिम पैंतिस वर्ष उन्होंने उज्जयिनीके राजा के सौहार्दसे अपने यश और सौभाग्यको भोगते हुए, भजन करते हुए, स्त्री-बच्चोंके साथ सुख से बिताये हों तो कोई आश्चर्य नहीं। पर यह इतिहास है या नहीं, मैं नहीं कह सकता।

पता—उल्लास श्रीभवनम्
२४५—बी, गोपालगढ,
भरतपुर (राजस्थान)।

निग्रह-दारुण-सप्तकम्

ध्यानम्

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चञ्चलोऽत्युग्रजिह्वः,
कालो दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवो वाड़वाग्निः।
ऊरुस्थौ व्याधिमृत्यू शरभवर-खगश्चण्डवातातिवेगः,
संहर्ता सर्वशत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः॥

मूल स्तोत्रम्

कोपोद्रेकाति निर्यन् निखिलपरिचरत् ताम्रभारप्रभूतं,
ज्वालामालाग्रदग्धस्मरतनुसकलं त्वामहं शालुवेश !
याचे त्वत्पादपद्मप्रणिहितमनसं द्वेष्टि मां यः क्रियाभि–
स्तस्य प्राणप्रयाणं परशिव भवतः शूलभिन्नस्य तूर्णम् ॥१॥

शम्भो ! त्वद्धस्तकान्तक्षतरिपुहृदयान्निःस्रवल्लोहितौघं,
पीत्वा पीत्वातिदीर्घा दिशि-दिशि विचरास्त्वद्गणाश्चण्डमुख्याः।
गर्जन्तु क्षिप्रवेगा निखिलजयकरा भीकराः खेललोलाः,
सन्त्रस्ता ब्रह्मदेवाः शरभ खगपते ! त्राहि नः शालुवेश ! ॥२॥

सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकलमभयहरं त्वत्स्वरूपं हिरण्यं,
याचेऽहं त्वाममोघं परिकरसहितं द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः।
श्रीशम्भो त्वत्कराब्जस्थितकुलिशकराघातवक्षःस्थलस्य,
प्राणाः प्रेतेशदूत ग्रहगणपरिखाः क्रोशपूर्वं प्रयान्तु ॥३॥

द्विष्मः क्षोण्यां वयं हि तव पदकमलध्याननिर्धूतपापाः,
कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता विहगकुलपते ! खेलया बद्धमूर्ते !

तूर्णं त्वत्पादपद्मप्रवृतपरशुना तुण्डखण्डी-कृताङ्ग-
स्तद्द्वेषी यातु याम्यं पुरमतिकलुषं कालपाशाग्रबद्धः ।।४।।

भीमश्रीशालुवेश ! प्रणतभयहर प्राणजिद् दुर्मदानां,
याचेऽहं चास्य वर्गप्रशमनमिह ते स्वेच्छया बद्धमूर्ते !
त्वामेवाशु त्वदङ् घ्र्यष्टकनखविलसद्ग्रीवजिह्वोदरस्य,
प्राणा यान्तु प्रयाणं प्रकटितहृदयस्यायुरल्पायतेश ! ।।५।।

श्रीशूलं ते कराग्रस्थितमुसलगदावृत्तवात्याभिघाताद्,
यातायातारियूथं त्रिदशविघनोद्धूतरक्तच्छटार्द्रम् ।
सद्दृष्ट्वाऽऽयोधने ज्यामखिल सुरगणाश्चाशु नन्दन्तु नाना-
भूता वेतालपूगः पिबतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः ।।६।।

अल्पं दोर्दण्ड बाहु-प्रकटितविनमच्चण्डकोदण्डमुक्तै-
र्बाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथिलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य ।
तस्य प्राणावसानं परशरभ विभोऽहं त्वदिज्या-प्रभावै-
स्तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादिमध्यान्तहेतोः ।।७।।

इति निशि प्रयतस्तु निरासनो यममुखः शिवभावमनुस्मरन् ।
प्रतिदिनं दशवार दिनत्रयं जपति निग्रह-दारुण सप्तकम् ।।८।।

इति गुह्यं महाबीजं परमं रिपुनाशनम् ।
भानुवारं समारभ्यं मङ्गलान्तं जपेत् सुधीः ।। ९ ।।

इत्याकाशभैरव-कल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे नरसिंहकृता शरभस्तुतिः ।।

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवते प्रलयकालाग्निरुद्राय दक्षाध्वरध्वंसकाय महाशरभाय मम शत्रुच्छेदनं कुरु कुरु स्वाहा ।" इति मन्त्रः ।

—रुद्रदेव त्रिपाठी

रत्न-ज्योतिष या रत्न विज्ञान

[लेखक :—श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, प्रभाकर, साहित्यरत्न, बी. ए, ज्योतिष-वाचस्पति]

वेद हमारे सबसे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ हैं। वेदोंके छः अंग हैं और ज्योतिष इनमें सबसे प्रमुख है। हमारी काल-गणनाके अनुसार आजसे लाखों वर्ष पूर्व वेदोंकी रचना हुई थी। उस समय संसारके अन्य देश अज्ञानके अन्धकारमें डूबे हुये थे और हमारी आर्य संस्कृति अपने सर्वोच्च शिखर पर थी। आज तो सर्वोत्तम दूरवीक्षण यन्त्र उपलब्ध हैं, परन्तु हमारे ऋषि मुनियोंने अपने योगबल और अन्तर्दृष्टिसे सभी ग्रह नक्षत्रोंकी दूरी गति स्थिति आदिके बारेमें सही जानकारी प्राप्त कर ली थी। ग्रहोंके प्रतिकूल प्रभावको दूर करनेके लिये जप तप यज्ञ योगदान धर्म, तीर्थ-स्नान आदि उपाय तो परवर्ती पुराण उपनिषद महाभारत रामायण आदि कालोंमें प्रचलित हुये, परन्तु रत्नों द्वारा ग्रह शान्ति भाग्योदय और रोग निवारणकी प्रक्रिया तो वैदिक कालसे ही प्रचलित है। तात्पर्य यह कि रत्न ज्योतिष सबसे प्राचीन है और वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है।

सूर्यकी किरणोंकी उष्णता और चन्द्रमाकी किरणोंकी शीतलताका अनुभव तो सबको होता है, परन्तु अन्य ग्रहोंकी किरणोंका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं हो पाता। वास्तवमें सभी ग्रहोंकी रश्मि तरंगे वातावरणमें सदैव व्याप्त रहती हैं, और जन्म समय पर ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार जिसका जैसा व्यक्तित्व बनता है, उस पर अपना अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव डालती रहती हैं। ग्रह नक्षत्र सदा चलते रहते हैं और कौन ग्रह कब किस व्यक्तिको कितनी मात्रामें अनुकूल या प्रतिकूल है इसकी जानकारी ज्योतिष विद्याके द्वारा प्राप्त की जा सकती है। वर्तमान परिस्थितियोंमें ग्रहशान्ति तथा भाग्योदयके अन्य शास्त्रोक्त उपाय जैसे जप अनुष्ठान दान धर्म आदि करना निष्ठावान् कर्मकाण्डी पुरोहितोंके अभावमें और शास्त्रोक्त साधनोंके उपलब्ध न होनेसे सरलतासे सम्पन्न नहीं हो पाते।

वर्षा ऋतुमें आकाशमें बिजली कड़कती है और कभी-कभी किसी मकान पर गिर कर उसे भस्म भी कर देती है। परन्तु, यदि उस मकान पर विद्युत् ग्रहण करने वाला यन्त्र लगा हो तो बिजली उस यन्त्रकी नोक पर गिर पृथ्वीमें प्रवेश कर जाती है और उस मकानको कोई हानि नहीं होती। इसी प्रकार ग्रहोंकी हानिकारक किरणें भी रत्न धारण करने वाले व्यक्तिके शरीरमें रत्नके द्वारा प्रवेश करती हैं और उनका हानिकारक प्रभाव दूर हो जाता है। कुछ लोग यह प्रश्न भी उठाते हैं कि जब वातावरणमें सभी ग्रहोंकी किरणें विद्यमान रहती हैं तो फिर उन सभी किरणोंको रत्न द्वारा शरीरमें प्रवेश करना चाहिये। इसके उत्तरमें आप रेडियोका उदाहरण लें। वातावरणमें विभिन्न रेडियो स्टेशनोंकी रेडियो तरंगे सदा विद्यमान रहती हैं। दिल्ली बम्बई मद्रास कलकत्ता जयपुर लखनऊ आदि २। परन्तु आप जिस स्थानका कार्यक्रम सुननेके लिये अपने रेडियोकी सुईको मिलाते हैं उसीके कार्यक्रम आपको सुनाई देते हैं, अन्यके नहीं। इसी सिद्धान्त पर रत्न केवल अपनेसे सम्बन्धित ग्रहकी रश्मियोंको ही शरीरमें प्रवेश होने देता है और वह भी संशोधित और परिवर्धित करके।

भाग्य रत्न

जन्म समय पर सूर्य जिस राशिमें होता है उस राशिके स्वामी ग्रहका रत्न भाग्य रत्न होता है। पाश्चात्य मतसे सायन सूर्य प्रत्येक राशि २३ तारीखके आसपास बदलता है और भारतीय मत से निरयन सूर्यकी संक्रान्ति १३ तारीखके आसपास आती है। सूर्य एक राशि पर एक मास तक रहता है और उस सौर मासमें उत्पन्न सभी व्यक्तियोंके लिए एक ही भाग्यरत्न प्रतिपादित किया गया है। कुछ आचार्योंने इसे स्थूल मानकर जन्मकी तारीखके अनुसार अलग-अलग रत्न निर्धारित किये हैं। ग्रह सदैव चलते रहते हैं और उनकी वर्तमान स्थिति किस राशिके व्यक्तिको कितनी शुभ या अशुभ है इसका विचार गोचर पद्धतिसे लगा कर प्रतिकूल ग्रहको अनुकूल करनेका उपाय रत्न धारण करके बताया जाता है। जन्म कुण्डलमें कोई ग्रह नीच राशिमें पड़ा है अथवा अशुभ भावोंमें है और दशा पद्धतिसे ऐसे अशुभ ग्रहकी दशा चल रही है तो उसके कुप्रभावको दूर करनेके लिये उस दशाकालमें उस ग्रहका रत्न धारण करनेका परामर्श दिया जाता है। जिनको अपने जन्म समय तारीख आदिका ज्ञान नहीं होता उनको नाम राशिसे विचार करके रत्न धारण कराया जाता है। नामसे राशि ज्ञान कराने वाली सारिणी पंचांगोंमें अवकहडा चक्रके अन्तर्गत दी हुई है। पाश्चात्य और भारतीय दोनों मतोंसे सूर्य कब तक किस राशिमें रहता है, उस राशिका स्वामी कौन सा ग्रह है यह सूचना नीचेकी सारिणीसे प्राप्त की जा सकती है। आजकल पाश्चात्य मत भी बहुत प्रचलित हो गया है और कई पत्र-पत्रिकायें इसीके अनुसार राशि फल भी देने लगी हैं, इसलिये यह सूचना देना हमने आवश्यक समझा है, परन्तु हमारा व्यक्तिगत मत है कि भारतीयोंको भारतीय मतसे अपने भाग्यरत्नका निर्णय करना चाहिये। जन्मकुण्डलीमें सूर्य जिस राशिमें हो वही सूर्यकी राशि समझनी चाहिये। जन्म यदि राशिके आरम्भ या समाप्त होने वाली तारीखोंके आसपास हुआ हो तो सूर्यकी राशिका निर्णय उस सालके पंचांगको देखकर या किसी ज्योतिषीकी सहायता से करा लेना चाहिये।

सौर मास पाश्चात्य और भारतीय मतसे	सूर्यकी राशि	स्वामी ग्रह
पा० म० २१ मार्चसे २० अप्रेल भा० म० १३ अप्रलसे १२ मई	मेष	मंगल
पा० म० २१ अप्रेलसे २१ मई भा० म० १३ मईसे १४ जून	वृष	शुक्र
पा० म० २२ मईसे २१ जून भा० म० १५ जूनसे १५ जुलाई	मिथुन	बुध
पा० म० २२ जूनसे २३ जुलाई भा० म० १६ जुलाईसे १६ अगस्त	कर्क	चन्द्रमा
पा० म० २४ जुलाईसे २३ अगस्त भा० म० १७ अगस्तसे १६ सि०	सिंह	सूर्य
पा० म० २४ अगस्तसे २३ सित० भा० म० १७ सित० से १६ अक्टू०	कन्या	बुध
पा० म० २४ सित० से २३ अक्टू० भा० म० २४ अक्टू० से २१ नव०	तुला	शुक्र
पा० म० २४ अक्टू० से २१ नव० भा० म० १४ नव० से १४ दिस०	वृश्चिक	मंगल
पा० म० २२ नव० से २२ दिस० भा० म० १५ दिस० से १३ जन०	धनु	वृहस्पति
पा० म० २३ दिस० से २६ जन० भा० म० १४ जन० से १३ फर०	मकर	शनि

पा० म० २१ जन० से १९ फ०	भा० म० १४ फर० से १३ मार्च	... कुम्भ ...	शनि
पा० म० २० फर० से २० मार्च	भा० म० १४ मार्चसे १२ अप्रेल	... मीन ...	वृहस्पति

नीचेकी सारिणीमें प्रत्येक ग्रहका भाग्यरत्न, उसका वजन, धातु. अंगुली, वार तथा पहनने का समय दिया हुआ है। ऊपरकी सारिणीमें पा० म० का अर्थ पाश्चात्य मत और भा० म० का अर्थ भारतीय मत है। प्राचीन समयमें रत्न बाजुओं पर और कलाइयों पर भी वलय और कंकणोंमें भी पहने जाते थे, परन्तु आजकल अंगुठियोंमें पहने जाते हैं। पुरुष दाहिने हाथमें और महिलायें बाएं हाथमें रत्न धारण करें। यदि किसी व्यक्तिको उनका ज्योतिषी इनके अतिरिक्त अन्य परामर्श दें तो उसका पालन करना चाहिये।

रत्नको अंगूठीमें इस प्रकार जड़ा जाता है कि पहनने पर वह शरीरसे स्पर्श करता रहता है। रत्न धारणके लिये आपका ज्योतिषी यदि कोई खास मुहूर्त बताये तो उसका भी ध्यान रखते हुए रत्नको धारण करना चाहिये।

ग्रह	रत्न	वजन	धातु	अंगुली	वार	समय
सूर्य	माणिक	तीन रत्ती	सोना	तर्जनी	रविवार	सूर्योदय
चन्द्रमा	मोती	दो रत्ती	चांदी	कनिष्ठा	सोमवार	सन्ध्याकाल सायं
मंगल	मूँगा	६ रत्ती	सोना	अनामिका	मंगलवार	प्रथम प्रहर प्रातः
बुध	पन्ना	३ रत्ती	चांदी/सोना	कनिष्ठा	बुधवार	,, ,, ,,
गुरु	पुखराज	६ रत्ती	सोना	तर्जनी	गुरुवार	चतुर्थ प्रहर दिन
शुक्र	हीरा	डेढ रत्ती	चांदी/सोना	कनिष्ठा	शुक्रवार	प्रातःकाल
शनि	नीलम	४ रत्ती	स्टील/पंचधातु	मध्यमा	शनिवार	सायंकाल
राहु	गोमेद	४ रत्ती	चांदी/अष्टधातु	मध्यमा	शनिवार	रात्रि प्रथम प्रहर
केतु	लहसुनिया	४ रत्ती	चांदी	मध्यमा	शनिवार	अर्धरात्रि

अँगूठेसे पहिली अंगुली तर्जनी, दूसरी मध्यमा, तीसरी अनामिका, चौथी कनिष्ठा होती है। नीलम और गोमेदको परीक्षा करके पहनना चाहिये। वैसे तो सभी रत्नोंकी शुभाशुभ परीक्षा कर लेनी चाहिये। रातको सोते समय रत्नको भुजा पर इस तरह बांधो कि वह त्वचाको स्पर्श करता रहे। २-३ रात तक ऐसा करो और देखो कि रातमें किस प्रकारके स्वप्न आते हैं। इन दिनोंमें आमदनी बढ़ती है या हानि होती है, कोई शुभ समाचार मिलता है या बुरी खबर आती है, अथवा विचारोंमें किस प्रकारका परिवर्तन होता है। इन सब बातोंके आधार पर रत्नके अच्छे बुरेकी परीक्षा हो जाती है। अंगूठीको शुभ मुहूर्तमें दूध या गंगाजलसे धोकर ग्रहका मन्त्र पढ़कर अपने इष्टदेवका ध्यान करके धारण करना चाहिये। जौहरीसे नग सदा परीक्षाके लिये फिरौतीका कहकर लाना चाहिये और देख लेना चाहिये कि उसमें कोई दोष तो नहीं है। जाला धब्बा बिन्दु चीरा लकीर

आडी तिरछी लकीरें गढ्ढेदार सतह भदरंगापन चमक हीनता दुरंगा या कई रंगका होना, जो चिह्न काकपक्षीके पैरों जैसा चिन्ह होना यह रत्नोंके दोष होते हैं।

पाश्चात्य मतसे जन्मकी तारीखके अनुसार मूलांक बनाकर जो भाग्यरत्न बताये गये हैं, उनका व्योरा निम्न प्रकार है :—

जन्म तारीख	मूलांक	स्वामी ग्रह	भाग्य रत्न
१,१०,१९,२८	१	सूर्य	पुखराज, अम्बर (तृणमणि)
२,११,२०,२९	२	चन्द्रमा	मोती, चन्द्रमणि (मूनस्टोन), लहसुनियां (बडुर्यमणि)
३,१२,२१,३०	३	वृहस्पति	नीलम (नीलमणि) एमाथाईस्ट (फीरोजा)
४,१३,२२.३१	४	हर्षल	नीलम (इन्द्रनीलमणि)
५,१४,२३,	५	बुध	हीरा (चन्द्रमणि) चांदी या प्लेटिनममें
६,१५,२४	६	शुक्र	पन्ना, टरकोयज़ (फीरोजा) हरे-नीले रंगका मिश्रित
७,१६,२५	७	नेपचून (वरुण)	मूनस्टोन (चन्द्रमणि) लहसुनियां (बैडुर्यमणि) कट्स आई
८,१७,२६	८	शनि	गहरा नीला नीलम, गहरा लाल माणिक, लालमणि (कारबन्कल)
९,१८,२७	९	मंगल	लालमणि (गारनेट) रक्तमणि, माणिक ब्लडस्टोन।

कुछ मणि व रत्न साथ-साथ नहीं पहने जा सकते। यदि माणिक पहना हुआ है तो उसके साथ किसी भी उंगलीमें हीरा नीलम गोमेद व लहसुनियां नहीं पहना जा सकता। नीचे इसका विवरण दिया जा रहा है।

माणिकके साथ हीरा नीलम गोमेद व लहसुनिया, मोतीके साथ हीरा पन्ना नीलम गोमेद और लहसुनिया, मूंगाके साथ हीरा पन्ना गोमेद लहसुनिया, पन्नाके साथ मूंगा और मोती, पुखराज के साथ हीरा नीलम गोमेद और लहसुनियां, हीराके साथ माणिक मोती मूंगा और पीला पुखराज, नीलमके साथ माणिक मोती मूंगा और पीला पुखराज, गोमेदके साथ माणिक मूंगा और पुखराज तथा लहसुनियांके साथ माणिक मूंगा मोती और पुखराज नहीं पहने जा सकते।

अब मुख्य मुख्य मणियोंकी पहचान गुण दोषोंके बारेमें संक्षेपमें बताया जाता है।

(१) माणिक-पद्मरागमणि—यह लाल रंगकी होती है, परन्तु सिन्दूरी, गुलाबी, शंगरफी, लाखके रंगकी, अनारदाने, लालगुंजा और बीरबहूटीके रंग जैसी भी होती है। दूधमें रखने पर

दूधका रंग गुलाबी हो जाता है। दिनमें कहीं भी रखें इसमें लाल किरणें निकलती हैं। हथेली पर रखें तो लाल आभा चारों ओर फैल जाती है। कमलकी कली पर रखनेसे कली खिल जाती है। दूधिया कान्तिवाली मट्मैली मणि नहीं पहने। शुद्ध मणिके पहननेसे दुःख कष्ट दारिद्रय दूर होता है, सुख-समृद्धि, धन-सम्पत्ति बढ़ती है। कफ, ठंड जनित रोगोंमें रक्त विकार चर्म रोगोंमें लाभ करती है।

(२) मोती-मुक्तामणि—आठ प्रकारकी होती है। शंखमुक्ता, गजमुक्ता, मीनमुक्ता शूकरमुक्ता, सर्पमुक्ता, वंशमुक्ता, आकाशमुक्ता और सीपीमुक्ता अब केवल सीपी मुक्ता रह गई हैं। उसमें भी नकली चल गई हैं। गोल शुद्ध चमकदार मोती ज्ञान मान बुद्धि रूप तथा बलको बढ़ाता है। सुन्दरता स्वास्थ्य लावण्यको बढ़ाता है। चमकहीन छायायुक्त धब्बे वाला दोषयुक्त मोती नहीं पहनना चाहिये।

(३) मूंगा-विद्रुम मणि—इसको पहननेसे लौकिक सम्पत्तिकी वृद्धि होती है। मूंगेकी माला पहननेसे मिरगी व हृदय रोग दूर होते हैं। बच्चोंको सूखा रोग उदरविकार वायुविकारमें लाभ करता है। इसको घिसकर पेट पर लगानेसे गर्भपात रुक जाता है। साहस व शक्तिको बढ़ाता है, उत्साहवर्धन करता है। शुद्ध मूंगा कमसे कम पांच रत्तीका पहननेसे लाभ होता है।

(४) पन्ना-मरकतमणि—हरे रंगकी होती है और इसमें तेज चमक होती है। अबरखी जालदार दुरंगा चीरा जाला गढ्ढा युक्त पन्ना दोषी होता है। सूरजकी रोशनीमें इसमेंसे हरे रंगकी आभा आसपास फैल जाती है। दूधमें रखने पर भी दूध हलकेसे रंगका हो जाता है (पन्ना कमसे कम पांच रत्तीका धारण करें)। शुद्ध मणिको गर्भिणी स्त्रीकी जांघ पर बांधनेसे प्रसव कष्टरहित हो जाता है। शुद्ध पन्ना सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य देता है। चर्मरोग घाव कफ श्वास रोग, दांत आंखके रोग, स्त्री रोग तथा मानसिक दबावोंको कम करने या दूर करनेमें लाभदायक होता।

(५) पुखराज-पुष्पर:गमणि—हल्दी गोरोचन नींबू केसर जैसे रंगकी होती है। साफ चमकीला शुद्ध पुखराज धन-धान्य सुख समृद्धि आयु यश और वंशकी वृद्धि करता है। भूतप्रेत बाधा आधि व्याधियोंका नाश करता है। यकृत जिगरके रोग हड्डी मज्जाके रोग और स्त्री रोगों में लाभदायक है। पति पत्नीमें परस्पर प्रेमको बढ़ाने वाला कामदेवको बढ़ाने वाला रत्न है।

(६) हीरा-चन्द्रमणि—यह कई रंगका होता है। परन्तु आमतौर पर सफेद चमकदार हीरा ही अधिक मिलता है। शुद्ध हीरेमेंसे सूर्यके सामने रखने पर इन्द्रधनुष जैसी आभा या किरणें निकलती हैं। पीले चिन्हों वाला अबरखी पीली छाल या काले जो चिन्ह वाला चीरा जाला बिन्दु धब्बे वाला काक पक्षीके पंजों जैसे चिन्ह वाला, आडी-तिरछी लकीरों वाला हीरा दोष युक्त होता है। सभी नगोंमें प्राय: यही लक्षण दोषके कहे जाते हैं। चमकहीन दुरंगा नहीं होना चाहिये शुद्ध।

हीरा कल्याणकारी और विजय दिलाने वाला होता है। दोषी नग भयदायक कष्टप्रद होता है। और धन-सम्पत्तिका नाश करता है। शुद्ध हीरा सर्दीके रोग कफ खांसी दमा आदिमें लाभ करता है और लावण्यको बढ़ाता है।

(७) नीलम-इन्द्रनीलमणि—शुद्ध उत्तम नीलम मोरकी गरदन जैसे रंगका, अलसीके पुष्प के समान चिकना और चमकीला होता है। इसको दूधके गिलासमें रोशनीमें रखनेसे दूध हलका नीला दिखाई देता है। सर्वथा शुद्ध नीलम यदि अनुकूल मिल जाय तो शनिके कुप्रभाव साढेसाती आदिमें बहुत लाभ करता है। नीलम पहननेसे कानके रोग सिरदर्द चक्कर आना मानसिक तनाव अनिद्रा रोग चिड़चिड़ापन आदि दूर होते हैं। रीढकी हड्डीके रोग आमाशयके रोग जलन सूजन दूर होती है। इसमें अन्य दोषोंके अलावा यह भी देखना चाहिये कि यह मटमैला या हरी आभा लिये तो नहीं है। शुद्ध नीलम अनुकूल हो तो सुख सम्पत्ति बल आयु यश एवं धनकी वृद्धि करता है। श्वेत कुष्ठ चर्मरोग गठिया आदि रोगोंको भी दूर करता है।

(८) गोभेद-मेदकमणि –इसका रंग धूलधूसरित आकाश जैसा रक्तश्याम मिश्रित होता है। सुन्दर छाया वाला चिकना चमकदार नग ही पहनना चाहिये। यह शत्रु पर विजय प्राप्त कराता है। रोग व्याधि दूर कर सुख-सम्पत्ति धन धान्यकी वृद्धि करता है। टखने व घुटनोंके दर्दमें लाभदायक है।

(९) लहसुनिया-वैडुर्यमणि—रातको चमकती बिल्लीकी आंखों जैसी इसकी आभा होती है। इसमें जनेऊ जैसी रेखा होती है इसलिये इसे सूत्रमणि भी कहते हैं। साफ चिकना चमकदार रत्न धारण करनेसे दरिद्रताका नाश होता है। भूतप्रेत, भयानक पशु शस्त्र व शत्रुसे रक्षा करता है। आधा सीसी अर्धाङ्ग वाय लकवा घाव कमरका दर्द कण्ठमाला आदि रोगोंमें लाभ करता है।

(१०) लाल या लालडी-सूर्यमणि—यह अंगारेके समान लाल या कनेरके पुष्पके समान लाल रंगकी गुलाबी गेरुआ अनारकलीके रंगके समान गुलाब या गुलेबांसके फूलके समान रंग वाली भी होती है। शुद्ध साफ चमकदार सूर्यमणि रोग दोष दूर करती है, आधि व्याधियोंका नाश करती है। तेज व ओजको बढ़ाती है। धन-धान्य सुख-सम्पत्ति आनन्दको देने वाली है। दोपहरके समय सूर्यकी किरणोंके सामने रुईके अन्दर मणिको रखनेसे रुईमें आग लग जाती है। प्रेतबाधा भूतबाधा को दूर करती है।

प्रत्येक मणि चिकनी साफ चमकदार और सर्वत्र एक रंगकी होनी चाहिये। उसमें दाग धब्बा जाला बिन्दु आडी तिरछी लकीरें चीरा जौ जैसा चिन्ह या कौएके पैरों जैसा निशान मट-मैलापन दुरंगापन या सतह पर गड्ढे होना दोष होता है। अबरख जैसे तड़की सी होती है वैसे चिन्ह भी नहीं होने चाहिये। प्रायः सभी मणियोंकी परीक्षा करके ही पहनना श्रेयस्कर होता है। परन्तु नीलम गोमेद लहसुनिया आदिको तो अवश्य ही परीक्षा करके धारण करना चाहिये।

पृथ्वीसे यह छेड़छाड़ अनुचित

[लेखक :—विद्यावाचस्पति श्री पं० गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र' डी० लिट्]

आज हमें पृथ्वीके सम्बन्धमें कुछ सोचना विचारना है, बिना कुछ पूर्वाभासके कुछ लिखना उचित नहीं जान पड़ता, हम पृथ्वी पर रहते हैं पैदा होते हैं और इसी पर मरते हैं, इस सम्बन्धमें थोड़ा बहुत ज्ञान लोगोंको होगा ही, पृथ्वीके सम्बन्धमें सोचते भी होंगे और मनमानी कल्पनाओंको कविता बनाकर उसकी छायामें बैठ जाते हैं, विश्वके सभी प्राचीन साहित्यमें धर्म ग्रन्थोंमें पुराण इतिहासों में पृथ्वीके सम्बन्धमें कहा गया है, सोचा गया है, परन्तु कल्पना ही तो ठहरी, सभी अलग हैं, हमारे पुराणोंमें मत्स्य, कूर्म वाराह आदि अवतारों के साथ पृथ्वी सम्बन्धी अनेक कथायें हैं, पृथ्वी को शेष नाग कच्छप वाराह अपने ऊपर धारण किए हुए हैं और दिशाओंके दिक्पाल हाथी इसके बेलैन्सको संतुलित रखते हैं, पृथ्वी पर पापकी वृद्धि होनेसे भूकम्प आदि उपद्रव होते हैं ये, कल्पनायें केवल रूपक मात्र ही हैं, इन्हें समझना दुरुह है।

पृथ्वीके जन्मकी कथा बड़ी ही अद्भुत और बड़ी ही विचित्र है, वैज्ञानिकोंने इस दिशा में बहुत कुछ शोध करके अपना मत निश्चित किया है, जो बहुत समीचीन और तथ्यपूर्ण है, वैज्ञानिकोंने प्रतिपादन किया है कि यह पृथ्वी जिस पर हम रहते हैं आजसे अगणित वर्षों पूर्व इस रूपमें नहीं थी, यह एक तप्त विशाल लोह पिण्डके रूपमें अतिवेगसे सूर्यकी प्रदक्षिणा करती थी, इस तप्त विशाल पिण्ड के कारण वायु मण्डल क्षौभित था और इससे उत्पन्न ताप बादल बन कर इस पर वर्षा करते थे, यह क्रम संख्या गणनाकी परिधी में नहीं आता, अरबों खरबों वर्ष इसी प्रकार बीत गये, तब कहीं इस पृथ्वीकी ऊपरी पर्त कुछ शीतल हुई, समुद्रने चारों ओरसे घेर लिया, यह ठण्डी होती गई।

इस निर्माण कालमें पृथ्वीका सन्तुलन ठीक रखनेके उद्देश्यसे स्वयं ही नदी झील पहाड़ आदि बन गये, हम बैंगनका उदाहरण यहां दे सकते हैं। 'बैंगन' को हम भरतूके लिये आगमें दबा देते हैं, वह जब अग्निसे बाहर किया जाता है वह बैंगनके आकारमें ही रहता है, परन्तु जब वह ठण्डा होकर सिकुड़ जाता है, तब उसमें ऊंचा नीचापन कई जगह आ जाता है, शल पड़ जाते हैं, यही हमारी पृथ्वी की दशा उस समय थी जब यह ठंडी हो रही थी।

पृथ्वी बिलकुल शीतल हो चुकी ऐसा मानना ठीक नहीं है। यह अन्दर उसी प्रकार धधक रही है जैसा कि वह आरम्भमें थी, इसमें अन्दर ही अन्दर पिघले हुए तप्त पदार्थों की नदियां बह रही हैं, तालाब और झील जैसे पिघले पदार्थोंकी नदियां बह रही हैं, तालाब और झील जैसे पिघले हुए पदार्थोंके स्थान बने हुए हैं, यह होना भी आवश्यक है, जिस दिन पृथ्वी गर्भमें गर्मी नहीं होगी, उस दिन यह एक शवकी भांति होगी, जिस पर न कोई जीव होगा, न जल होगा, न हवा होगी, न वृक्षादि।

वैज्ञानिकोंने मनुष्य शरीरसे पृथ्वीकी तुलना करके बताया है कि हमारे शरीरमें जितना जल पृथ्वी लोह लवण क्षीर अस्थि मांस वस्तु आदि है, उसी परिमाणानुसार पृथ्वीमें ये विद्यमान हैं, शरीरमें इन जीवन तत्त्वोंका जिस प्रकार सुस्थिर परिमाण रहना आवश्यक है उसी प्रकार पृथ्वीमें भी समस्त आवश्यक तत्त्वों का होना रहना जरूरी है।

धरतीके अन्दर पत्थर शिला चट्टानें हड्डियोंका काम करती हैं, जल रक्तका काम करता है, धूल मिट्टी मांसके रूपमें, लवण आदि जिन्हें हम आज अपनी भाषामें रासायनिक पदार्थ कहते हैं, पृथ्वीमें इसकी स्थिरताके हेतु प्रकृतिने इसे प्रदान किए हैं, वृक्ष वनस्पति रोग समूहके रूपमें पृथ्वीके विषाक्त पदार्थोंको बहार निकालने तथा जीवनीय तत्व अन्दर पहुँचानेका काम करते हैं। पृथ्वीके अन्दर पानी के स्रोत झरने आदि स्नायुके रूपमें अपना कार्य करते रहते हैं, सारांश कि मानवशरीरका एक विशालतम एनलार्जमैंण्ट पृथ्वी है।

अब देखना और सोचना यह है कि यदि हमारे शरीरसे हड्डियां निकाल दी जावें, खून चूस लिया जावे और समस्त रासायनिक द्रव्य किसी कार्यके लिये निकाल लिये जावे तो हमारी क्या गति होगी ? अथवा यह भी पूछा जा सकता है कि पांवोंकी हड्डियां, हाथोंमें और हाथोंकी हड्डियां मस्तकमें लगा दी जावे तो हम कब तक जीवित रह सकते हैं। फेफड़े के स्थान पर मस्तिष्क और मस्तिष्कके स्थान पर फेफड़ा बिठा दिया जाय तो शरीरकी क्या स्थिति होगी ? गुर्दोंको निकाल फैंका जाय और यकृतका पांवोंमें लगा दिया जाय तो मानव शरीर कितने क्षण तक जीवित रहेगा ? हमारे पेटके पानीको निकाल कर कानोंमें या आंखों में भरकर तालाब बना दिया जाय तो क्या होगा ?

यही दशा आज हमारी पृथ्वीकी कर दी गई है, इससे पत्थर मिट्टी निकाल निकालकर भवनोंका निर्माणका यह भी बीस पच्चीस मंजिले भवन बना डालना, कैसे ठीक माना जा सकता है, नदियोंमें बहने वाले जलको चाहे जहां विशाल जलाशय बांधकर क्या पृथ्वीके बेलैन्सको असन्तुलित करनेका काम नहीं है। ट्यूब वेल द्वारा पृथ्वीका जल खींचना क्या यह रक्त दोहन नहीं है, सैकड़ों हजारों मीटर धरतीका बोरिंग, क्या यह पृथ्वीकी आत्महत्याका कार्य नहीं है ? पृथ्वीके अन्दर रेलें चलाना सैकड़ों फीट गढ्ढे खोदकर उनमें परमाणु बमोंका विस्फोट क्या पृथ्वी माताके साथ पुत्रोंका बलात्कार नहीं है ?

पृथ्वीको हम माता कहते हैं, वेदमें कहा है—

'गौर्मे माता ऋषभः पिता मे'

अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है और बादल हमारे पिता हैं, इस माताकी गोदमें बालक बनकर उस पर मूत्र त्याग सकते हैं, उसे शुद्ध किया जा सकता है, आज माताके शरीरमें गढ्ढे खोदकर हम फ्लश लैटरिन बनवाकर क्या माताके प्रति यह अन्याय नहीं।

ये सब कार्य करके आजका मानव प्रसन्न हो सकता है, परन्तु यह नहीं भूल जाना है कि हम अपना भविष्य स्वयं अन्धकारमय बनाने पर तुले हुए हैं। आज मीलों लम्बे जलाशय बांधकर हम खेती-बाड़ीके नाम पर हर्ष प्रकट कर रहे हैं, परन्तु एक दिन वह भी हो सकता है कि हमारा कैद किया गया पानी बांध तोड़कर प्रलय मचादे, अथवा अन्दर ही अन्दर बांधके पानीको एक विशाल स्रोत पृथ्वी के भीतर धधकती हुई विशाल भट्टीमें पहुंच जावे और तब भूकम्प विस्फोट आदि उपद्रवों से मानव जातिका प्रलयका दृश्य देखना पड़े।

हम अपने हाथों धरती माताको भारत माताका इतना निर्बल बना रहे हैं कि वह आगे चल कर एक दिन नष्ट हो जावे, मानव स्वयं एक मूर्खकी भांति विनाशकी ओर भाग रहा है, मानव स्वयं प्रलयका आह्वान कर रहा है, इस समय मानव वही मूर्खता पूर्ण कार्य कर रहा है जो एक लकड़हारा जिस शाखा पर बैठा उसीको काट रहा है। विज्ञानके नाम पर कुछ कर दिखाने और पैसा कमाने वाले प्रबुद्ध जनोंसे यही निवेदन है कि पृथ्वीसे यह छेड़छाड़ अब बन्द कर दें, अन्यथा मानव विनाशका अपराधी और विज्ञानका दुरुपयोग माना जायगा, पहले अपने पृथ्वी परके मक्खी मच्छरों आदि मानव जातिको करोड़ोंको मृत्यु के घाट पहुंचाने वाले कीट-पतंगे जीबाणुओं तथा कीटाणुओंको नष्ट करनेका चमत्कार दिखावें तब कहीं चन्द्रलोक अथवा मंगल शुक्र गुरु आदि पर पहुंचनेका कार्य हाथमें लें तो अच्छा हो।

हमारी यह रत्नगर्भा वसुधा सर्वगुण सम्पन्ना पृथ्वी और परिवारकी एक अति समृद्ध और चिरयुगीन सदस्या है सूर्य और चन्द्रग्रहण इसीके प्रतिपाद्य परिलक्षित होते हैं, वैज्ञानिकों के मतमें यह एक विशिष्ट सौरमंडलकी सदस्या है इसका पोषण भूलोक वासियोंके लिये ही नहीं अपितु समस्त सौर-मण्डलके लिये परम आवश्यक है। इसीमें हमारा कल्याण है और दोहनके नाम पर इसके साथ छेड़-छाड़ और इसके शरीरस्थ पदार्थोंका बलात् अपहरण हमारे लिये महान् भीषण भयंकर दृश्य हो सकता है।

स्वर्णके अण्डे देने वाली मुर्गीके पेटसे मुर्गी के पेटको चीरकर समस्त अण्डे एक साथ प्राप्त करनेकी कहावतके अनुसार हमारा यह पृथ्वी दोहन शेखचिल्लियों तथा मूर्खों जैसा काम होगा। मानव जातिको अपने कल्याण हेतु पृथ्वीका यह दोहन बन्द कर देना परमावश्यक है।

—शान्तिकुटीर आगर-मालवा (म०प्र०)

ज्योतिषशास्त्र और पुनर्जन्म

[लेखक :– डॉ० भूपसिंह राजपूत]

विश्वकी प्राचीनतम ज्ञाननिधि वेदमें ज्योतिषको नेत्र बताया गया है :—

सिद्धान्तसंहिताहोरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम्,
वेदस्य निर्मलंचक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्त्तं कर्म न सिद्धयति,
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितपुरा ।।
(नारद पुराण)

'सिद्धान्तसंहिता और होरा (जातक) ये तीन स्कन्ध रूप ज्योतिष-शास्त्र वेदका निर्मल और पुण्यप्रद नेत्र कहा गया है। इस ज्योतिष-शास्त्रके बिना कोई श्रौत और स्मार्त्त कर्म सिद्ध नहीं हो सकता, अतः ब्रह्माजीने संसारके कल्याणके लिए सबसे पहले ज्योतिष शास्त्रका निर्माण किया'।

प्राणियोंके जन्मसे लेकर मृत्यु पर्यंत समस्त सुख-दुःखोंमें ग्रहोंका भी हाथ रहता है। आकाश में व्यक्त और अव्यक्त अनेक ग्रह हैं। जिनमें से कुछ शुभ तथा कुछ अशुभ प्रभावकारक हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र जहां वर्तमान कालके विषयमें जातककी कुंडली पर विचार करता है. वहीं मानवके शाश्वत कौतूहलके विषय पुनर्जन्म पर भी पर्याप्त प्रकाश डालता है।

भारतेतर ज्योतिर्गणनाओंमें यह जाननेको तो विधियां हैं कि जातकका वर्तमान जन्म कैसा रहेगा, लेकिन यह जाननेका साधन कि वर्तमान कुंडलीके आधार पर जातकका विगत जन्म कैसा था व भावी जन्म कहां तथा कैसा होगा, भारतीय ज्योतिषशास्त्रमें ही सविस्तार वर्णित है। इसके अलावा यदि कोई जिज्ञासु व्यक्ति किसी मानवेतर-योनिके प्राणीकी जन्म लग्नके हिसाबसे तैयार की हुई जन्म कुण्डली प्रस्तुत करे तो वास्तविकता बताई जानी भी सम्भव है। यही नहीं वरन् और गहराईयोंसे उतर कर यहां तक बतानेकी व्यवस्था है कि जातक द्विपद, चतुष्पद, सरीसृप वर्ग, वनस्पति वर्ग या पक्षी वर्गमेंसे किससे सम्बन्ध है ? वृक्षादि वर्गमें तो यह भी बताया जा सकता है कि वह उपयोगी, अनुपयोगी फूलदार या फलदार वृक्ष है।

यदि गर्भाधान कालके सही समयकी जानकारी उपलब्ध कराई जा सके तो यह बताना कठिन नहीं है कि गर्भाधान हुआ भी अथवा नहीं ? गर्भाधानकी स्थितिमें गर्भस्थ जीव नर होगा अथवा मादा ? या नपुंसक किस्मका प्राणी ? गर्भस्थ भ्रूणसे एक, दो या अनेक शिशु होंगे ? युग्म होंगे अथवा एकल ? अनेक भ्रूणोंकी स्थितिमें यह बताना कि कितने नर और कितने मादा होंगे या कितने नपुंसक होंगे ? शिशु सामान्य अंगों वाला या एकाधिक मुखों, सिरों, नाकों वाला या दोसे अधिक हाथों, पैरों, आंखों, कानों वाला, दन्तपंक्ति युक्त, कूबड़ा, पंगु, गूंगा, बहरा, वामन या विकलांग होगा ? अंधा होगा या काना और काना होनेकी स्थितिमें कौनसी आंखसे काना होगा ? गर्भकाल पूर्ण होने पर जन्मा शिशु जीवित होगा या नहीं ? माता जीवित रहेगी या नहीं ? अथवा दोनों (जच्चा-बच्चा)

जीवित रहेंगे या नहीं? शिशु वैध-संतान है अथवा जारज? शिशुका जन्म सिरेकी तरफसे हुआ या पांवकी तरफसे? जन्म शय्या पर हुआ या भूमि पर? जन्मके समय कितनी दाइयां थीं और उनमेंसे भी कितनी कमरेके भीतर थीं व कितनी कमरेके बाहर? स्त्री जातककी हालतमें उसका पति कैसे स्वभाव का होगा? कामी होगा? जार होगा? नपुंसक होगा, पत्नी-त्यागी होगा अथवा वैधव्य-दाता होगा? यह भी बताना बहुत कठिन नहीं है।

एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्यकी ओर भी भारतीय ज्योतिर्विदोंने ध्यान दिया है कि किसी व्यक्तिके जन्मका सही समय न मालूम हो तो उसकी जन्मकुण्डली भी किस प्रकार बनाई जा सकती है? कुछ सूत्र हैं, जिनकी सहायता से सही जन्म, वर्ष, मास, पक्ष, वार, तिथि, दिन या रात जन्म लग्न, जन्म राशि तथा जन्मकालको जाना जा सकता है? (द्रष्टव्य है नारदपुराणका ज्योतिषखण्ड)।

इसी प्रकार विचारार्थ प्रस्तुत जन्म कुंडली वाला जातक पूर्वयोनिमें क्या था? यह जाननेके लिए भी कुछ सूत्र बताए जाते हैं। ज्योतिषशास्त्रके विद्वानोंका एक वर्ग यह भी मानता है कि जन्म लग्नकी ही भांति मरण लग्न भी देखना चाहिए। इनके अनुसार नवमेश से पूर्व जन्मका तथा पञ्चमेशसे भावी जन्मका हाल जानना चाहिए।

इस सृष्टिमें अब तक ८४ लाख जीव-योनियोंके बारेमें ज्ञात हो सका। इनके चार मुख्य भेद हैं। १. जरायुज २. अण्डज ३. स्वदेज ४. उद्भिज। इन प्राणियोंमें ९ लाख प्रकारके जलचर, ११ लाख प्रकारके कृमि, १० लाख प्रकारके पक्षी, २० लाख प्रकारके पशु, ३० लाख प्रकारके स्थावर प्राणी व ४ लाख प्रकारके मनुष्य और उससे मिलते-जुलते प्राणी हैं। ये कुल मिलाकर ८४ लाख योनियां हुई। अपने-अपने कर्मविपाकसे इन योनियोंमें जन्म लेकर जीवको असंख्य प्रकारके जन्म-मरणके दुःख-सुख सहने पड़ते हैं।

महर्षि अरविन्दका कथन है "मृत्यु इस लिए होती है क्योंकि देहने अब तक इतनी प्रगति नहीं की है कि बिना परिवर्तनकी आवश्यकता एक ही शरीरमें प्रवृद्ध होता चला जाय और शरीर स्वयं भी काफी सचेतन नहीं हुआ है। यदि मन प्राण और खुद शरीर अधिक चेतन तथा अधिक सुनम्य हो तो मृत्यु की जरूरत ही नहीं रहेगी।

इस बातको थोड़ा और स्पष्ट करें कि कि मनुष्यका शरीर अस्थि मज्जाका ढांचा मात्र नहीं है और न ही वह केवल रक्तमांसके संयोगसे बना है, वरन् यह अनन्त तथा अक्षय आत्माका व्यक्तिकरण है। इसलिए शरीरकी बहुत बार मृत्यु हो सकती है आत्माकी नहीं। जब तक मानवमें कामनाएं रहती हैं, तब तक वह जन्म-मृत्युके चक्करमें भटकता रहता है। एक ही जीवनमें मुक्तिकी प्राप्तिका होना अत्यन्त दुष्कर है। हो सकता है इसकी पूर्तिके लिए अनेकों जन्म भी लेने पड़ सकते हैं।

इह चेदशकद बोद्धं प्राक् शरीरस्य विस्रसः।
ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते॥
(कठोपनिषद् २)

देही अपने अनेकों जन्मोंके क्रमसे गुजरनेके समय बहुत प्रकारके व्यक्तित्व धारण करता है

तथा बहुत प्रकारकी अनुभूतियोंसे होकर गुज़रता है, किन्तु वह उन सबको अन्य जीवन में नहीं ले जा सकता। पुराने मन तथा प्राणकी क्षमताएं, व्यस्तताएं, रुचियां तथा स्वभावगत विलक्षणताएं जितनी हद तकके नए जीवनके लिए उपयोगी होती है उतनीके अतिरिक्त नए मन तथा प्राण द्वारा ग्रहण नहीं की जातीं। अन्तरात्मा पुरानी अनुभूतियों या व्यक्तित्वका प्रायः वही स्वरूप नहीं रहता।

जिस प्रकार पदार्थ अविनाशी है, उसी प्रकार मानसिक और परामानसिक अर्थात् चेतन और अतिचेतन तत्व भी अविनाशी है। यह तत्व ही आत्मा है। अन्तरात्माके पुनर्जन्म में वापस आने पर पूर्ण विस्मृति आ जाए ऐसा कोई नियम नहीं। विशेषतः बचपनमें पिछले जन्मकी बहुत सी स्मृतियां अंकित रहती हैं, लेकिन सामाजिक परिवेश और भौतकवादी बना देने वाली आधुनिक शिक्षाका प्रभाव आखिरकार इन स्मृतियोंको भूल जाने में सहायक होता है। आधुनिक रूपमें प्रचलित विचारों तथा भौतिक जगत्के आदर्शोंके सम्बन्ध में विचार करते समय आधुनिक भौतिकतावादी लोग पुनर्जन्मके सिद्धान्तको स्वीकार करनेमें काफी कठिनाई महसूस करते हैं।

सामान्यतः अन्तरात्मा एक ही लिंगका अनुसरण करती है लेकिन पुनर्जन्मके लिए लौटने वाली अन्तरात्माएं कब नए शरीरमें प्रवेश करती हैं, इसके लिए कोई एक ही सर्वमान्य नियम नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि प्रत्येक प्राणीके साथ विभिन्न परिस्थितियां होती हैं।

हम वर्तमान जन्मसे पूर्व माताके गर्भमें थे, उससे पहले पिताके वीर्यमें, पितृ-वीर्यसे पहले कामाग्निमें तथा कामाग्निसे भी पहले वातावरणमें थे।

इसी प्रकार इसके उलट क्रममें इसकी विपरीत स्थितिको रख कर देखा जा सकता है।

मृत्युके बाद आत्मा कहां जाती है; कहां रहती है? क्या क्रिया—कलाप करती है? प्रेतलोक कैसा है? कहां है? वहां किस प्रकार जाया जाता है? यह जानकारियां कुछ पूर्वजन्मकी स्मृतियोंको स्मरण रखने वालोंके वर्णनों के आधार पर बताई जा सकती हैं। पूर्वजन्मके विषयमें अब तक काफी वैज्ञानिक अनुसंधान हो चुके हैं और आए दिन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें पुनर्जन्म सम्बन्धी कोई न कोई घटना प्रकाशित होती रहती हैं। पुनर्जन्म अपने आपमें आत्माकी अमरताका प्रमाण है। पुनर्जन्म एक प्रकारका मरणोत्तर जीवन ही है। जिस व्यक्तिको भूतकालकी घटनाओंकी स्मृति वर्तमानमें बनी रहती है, उसका अस्तित्व दोनों कालोंमें होना स्वयं सिद्ध है और यही सिद्धान्त पूर्वजन्मकी स्मृतिके आधार पर पुनर्जन्मको सिद्ध करता है।

सभी हिन्दू सम्प्रदाय चाहे वो बौद्ध हों, जैन हो, सिक्ख हो या आर्य समाजी अथवा सनातन धर्मी, गौ और ओ३म्की भांति पुनर्जन्मके प्रति भी समान रूपसे आस्थावान् हैं। लेकिन पुनर्जन्म केवल हिन्दुओंमें ही होता हो, ऐसी बात नहीं है, सेमेटिक धर्मावलम्बियोंमें भी ऐसी घटनाएं आए दिन प्रकाशमें आती रहती है। उनके धर्मग्रन्थोंमें यह सिद्धान्त बीजरूपमें विद्यमान है। सत्य तो यह है कि पुनर्जन्म

की अनेकों घटनाएं मूसाई, ईसाई तथा मोहम्मदी धर्मावलम्बियोंमें पाए जाने पर 'प्रत्यक्षम् प्रमाणम्' सम यह बात सिद्ध हो जाती है कि पुनर्जन्म एक हकीकम है। धर्म चाहे कोई भी हो वह इसमें आड़े नहीं आता है। पश्चिमी जगतके (धर्मके लिहाजसे ईसाई) लोगोंमें इतने मामले प्रकाशमें आए हैं कि जितने शायद हिन्दुओंके भी प्रकाशित न हुए हों। सुन्नी मुसलमानोंके यहां ऐसा बताया जाता है कि पुनर्जन्मकी मान्यता धर्म विरुद्ध है, जबकि कुछ अन्य मुस्लिम सम्प्रदाय पुनर्जन्मके मामलेमें सुन्नियोंसे वैचारिक वैपरीत्य-भाव रखते हैं। कतिपय गैर मुस्लिम विद्वान् भी जिन्होंने इस्लामधर्म का गहन अध्ययन किया है पुनर्जन्मको इस्लाम विरोधी नहीं मानते हैं। एक सूफी सन्त जलालुद्दीन सूफी 'मसनवी' में कहते हैं "मैं मिट्टी कंकर आदि स्थावर आदि देहसे मरकर वनस्पति बना, वनस्पति देहसे मरकर पशुवर्गमें प्रकट हुआ, पशु देहसे मरकर मनुष्य बना और इसके बाद मैं मरकर देव देह धारण करूंगा। मैं देवताओंसे (देवदेहसे) भी आगे बढ़ जाऊंगा। वाणी उस स्थानका वर्णन नहीं कर सकती और मन उसका चिन्तन नहीं कर सकता।

हिन्दूधर्मेतर अन्य अनेक विदेशी विद्वान्-गण भी जन्म-मरणका चक्र, आत्मा, अमरता तथा पुनर्जन्मके विषयमें विचार रखते रहे हैं। एतद्विषयक कतिपय पाश्चात्य मनीषियोंके विचार हम नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्राचीन यूनानके विख्यात दार्शनिक तथा वैज्ञानिक पाइथागोरसका मत था कि नेक कर्मों के करने पर आत्मा उच्चतर लोकोंमें चली जाती है और इसके विपरीत खोटे कर्मोंके करने से दुष्टआत्माएं निकृष्ट योनियोंको धारण करती हैं।

सुकरातने मृत्युकी उपमा स्वप्न-विहीन निद्रासे की है और पुनर्जन्मका द्वार इसे बताया है।

प्लेटोने विचार प्रकट किया था कि कामनाके ही कारण पुनर्जन्म होता है। सब प्रकारके भोगविलासोंको तिलाञ्जलि देनेसे आवागमनके बन्धनोंको काटा जा सकता है।

इन्हींसे मिलते-जुलते विचार थेल्स, एम्पीडक्लीस, फिरिसाइडिस प्रभृति यूनानी तथा सिसरो, वर्जिल तथा ओविद आदि रोमन और मेहते, फिख्ते, शेलिंग, लेईसिंग तथा मैक्स-म्यूलर इत्यादि जर्मन एवं हर्टले, स्विनोझा, हीगल, बर्कले, काण्ट, ह्यूम, मैकटेगर्ट, प्लूटार्क, वाल्टाह्विटमैन, सरआथरे कॉनन डॉयल, वर्ड्स-वर्थ टेनीसन व ब्राऊनिंग प्रभृति अन्य यूरोपियन तथा अंग्रेज विचारकोंने भी रखे हैं।

बाइबिलके ११वें अध्यायमें सन्तजॉनको स्वयंको महात्मा ईसाके विषयमें कहते उद्धृत किया गया है कि वह पूर्व जन्ममें एलियास थे।

इसी प्रकार हजरत मोहम्मदके विषयमें भी एक हदीसमें बताया गया है कि वह मोहम्मदरूप धारण कर पृथ्वी पर अवतरित होनेसे पहले स्वर्ग स्थित एक बेरीके वृक्ष पर मोर बन कर रहते रहे थे। अस्तु।

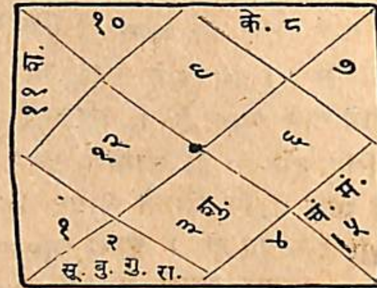
अब हम ज्योतिष विद्याके प्रकाशमें पुनर्जन्म की कुछ चुनिन्दा हस्तियोंसे आपका साक्षात्कार करा रहे हैं उनकी जन्म कुण्डलियोंके माध्यसे वैसे तो कोई दिन ही खाली जाता

हो जबकि पत्र-पत्रिकाओंमें ऐसी घटनाका जिक्र न रहता हो लेकिन हम यहां जिन जातकोंका वर्णन कर रहे हैं साथ ही उनकी जन्म कुण्डलियां भी अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं। अब विद्वान् पाठक वृन्द ही निर्णय लें कि तुलनात्मक रूपसे इन विभिन्न कुण्डलियोंमें क्या-क्या साम्यताएं हैं ? क्या विशेषताएं हैं ? ऐसा कैसे हुआ ? ज्योतिष जगत्में यह संभवतः प्रथम अभिनव प्रयास है जिसमें स्वाभाविक ही होगा कि मेरे जैसे नौसिखिए द्वारा कितनी ही त्रुटियां भी होंगी, लेकिन हर नए प्रयासमें शुरुमें ऐसी बातों को थोड़ा नज़र-अन्दाज़ तो किया ही जा सकता है, ऐसा आप भी मानकर चलेंगे। ऐसा ही सोचकर मैं हिम्मत कर रहा हूं। सदाकी ही भांति आप लोगोंके विचारोंका मुझे इन्तजार है और स्वागत है। सर्वप्रथम यह कुण्डली देखिए—



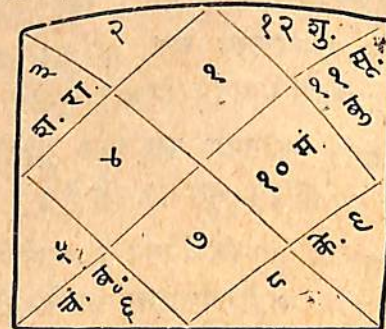
यह एक लड़कीकी जन्मकुण्डली है। इसका जन्म मार्गशीर्षके कृष्णपक्षकी पहली नवम्बर उन्नीस सौ छप्पन गुरुवारके दिन प्रातः ४.२५ पर हुआ था। लग्न कन्या है जिसका स्वामी बुध स्वराशिका होकर लग्नस्थ है चन्द्रमा कन्याका है यह अपने पिछले जन्ममें भी लड़की ही थी, इस लड़कीको अपने विगत एक जन्मकी बात याद है।

अब दूसरे नम्बर पर यह कुण्डली देखिए—



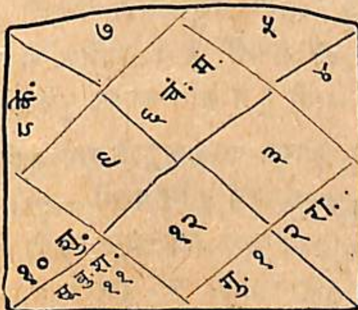
इस कुण्डलीका जातक प्रवीण कुमार अग्रवाल जातिक एक जैन बालक है। जिसका जन्म ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी रविवार विक्रम सम्वत् २०२२ (छह जून उन्नीस सौ पैंसठ) को हमारे शहर हांसीमें शामको ७.३६ पर हुआ था। लग्न धनु है, जिसका स्वामी वृहस्पति वृष राशिका होकर छठे घरमें बैठा है। चन्द्रमा सिंह राशिका है। इस जातकको पिछले एक जन्मकी स्मृति है जिसके अनुसार विगत जन्ममें दिल्लीके एक ओसवाल परिवारका सदस्य था जो आस्थाके हिसाबमें सनातनी थे। इसके विगत जन्मकी पुष्टि इस परिवारमें जाकर कर ली गई है। इस जातकका लिंग व वर्ण वही रहा, केवल जाति व सम्प्रदाय बदल गए।

अब देखिए यह तीसरे नम्बरकी कुण्डली—



इस कुण्डलीका जातक चम्पतस्वरूप अग्रवाल जातिके एक जैन हैं—जिनका जन्म चैत्र कृष्णा द्वितीया गुरुवार २००२ तदनुसार (पहली मार्च उन्नीस सौ पैंतालीस) को सुबह ९—१० पर हमारे शहर हाँसीमें ही हुआ था। लग्न मेष है जिसका स्वामी मंगल मकर राशि का होकर दसवें घरमें बैठा है। चन्द्रमा कन्या राशिका है। इस जातकको अपने विगत दो जन्मोंसे एकको कुछ धुंधली सी तथा दूसरेकी स्पष्ट स्मृति है कि वह धामपुर (बिजनौर) यू० पी० में एक सनातनधर्मी अग्रवाल घरका इकलौता पुत्र था। (वहां उसका नाम सुरेश कुमार था) इसकी वहां चीनी मिल थी तथा खेलखेलमें गोदाममें चीनीकी बोरियोंके नीचे दबकर मर जानेमें इसका वह चोला छूटा था। इस बातकी पुष्टि जैनमतकी श्वेताम्बरी शाखा के धर्मगुरु आचार्य श्री तुलसीरामजीके हाँसी चातुर्माणके दौरान हो चुकी है। सुरेश कुमार की माताजी चम्पतस्वरूपसे मिलनेके लिए हांसी आकर अपनी तसल्ली करके गई थीं। इस जातकका लिंग व जाति पूर्ववत् ही रहे केवल सम्प्रदाय बदल गया।

अब आइए चौथे नम्बरकी कुण्डली पर—



इसी कुण्डलीका जातक दयानन्द जातिसे एक गूजर बालक है, जिसका जन्म फाल्गुन कृष्ण तृतीया विक्रमाब्द २०१८ गुरुवार (अठारह फरवरी उन्नीस सौ इकसठ) की शाम ८ बजे हमारे शहरमें हाँसीकी एक निकटस्थ बस्ती ढाणी पालमें हुआ था। लग्न कन्या है जिसका स्वामी बुध कुंभराशिका होकर छठे घरमें जा बैठा है। मनका मालिक चन्द्रमा राशिका है।

यह जातक बड़ा विलक्षण है। इसे अपने विगत दो जन्मोंकी याद बहुत ही सूक्ष्मतासे याद है। इसका पहला जन्म हाँसी शहरकी एक उपबस्ती मंडी मालियानमें एक कुम्हार परिवारमें हुआ था। तब इसका घरेलू नाम सोहन व पण्डितजीका दिया हुआ नाम जगत सिंह था (घर वालोंको सोहन ही नाम याद था) लेकिन जगतसिंह नाम इसने ही बताया जब हमें यह सन् १९७७ में अपने पहले जन्म वाले मकानमें ले गया था। वहां इसके पिताका नाम भोलू था तथा ये लोग ५ बहन-भाई थे। १५-१६ वर्षकी उम्रमें यह यकायक मर गया। इसे अभी तक याद है कि वह ७ जनवरी १९४७ की मंगलवारकी शामके ५ वर्षका वाकया है।

दूसरा जन्म इसका पटियाला शहरमें एक अहीर परिवारमें हुआ वहां इसके पिताका नाम 'खम्बू हीर' था और दादाका नाम 'फकीरा हीर' था। मांको देखा ही नहीं इसने, पहले ही मर गई थी। वहां एक गऊशालामें ये लोग रहते। ५-६ वर्षकी वयमें ही एक दिन गायोंने इसे रौंद मारा।

तीसरा जन्म इसका एक गूजर परिवारमें है। पिताका नाम अमरसिंह गूजर है जो ढाणी पालमें एक मध्यवर्गीय परिवारके हैं।

यह जातक मरनेके बाद यमलोक तकके

सफर व वहांसे गर्भमें आने तककी वापसीकी कहानी बहुत ही साफ-साफ और सजीव व सूक्ष्मतासे सुनाता है। यहां यह बात स्मरणीय है कि मिस्टर दयानन्द तीनों ही बार तथा कथित शूद्र परिवारोंमें जन्मा। दो जन्मोंमें तो उसे अक्षर ज्ञान कराया गया ही नहीं और अब भी वह ग्रामीण स्कूलमें एक निहायत औसत दर्जेका विद्यार्थी है अतः यह नितान्त असम्भव है उसने मुस्लिमलैला जैसी लगने वाली इस दास्तानको खुद अपनी कल्पनाओंसे इतने हृदयस्पर्शी रंगीन अफसानेका रूप दे दिया हो। वह जो कुछ भी बताता है वह ग्राम्य सहजता व भोलेपनसे सभी वाणीमें ही है। इसकी परलोक यात्राओंकी कहानियां मैं किसी दूसरे मौके पर जरूर प्रस्तुत करूंगा। जो बड़ी ज्ञानवर्धक तथा कई नए तथ्योंको उद्घाटित करने वाली साथ ही पुरानी मान्यताओंका मण्डन करने वाली भी हैं।

अन्तमें मैं एक और जन्मकुण्डली दे रहा हूं—



इस कुण्डलीका जातक जैनेन्द्रसिंह राठौर गोत्रीय राजपूत बालक है। इसका जन्म हांसी शहरमें चैत्र शुक्ला ६ मंगलवार सम्वत् २०३४ वि० एतदनुसार उनतीस मार्च उन्नीस सौ सतत्तरको रातके आठ बजकर नौ मिनिट पर हुआ था। लग्न तुला है। जिसका स्वामी शुक्र गुरुके क्षेत्रमें सूर्य और बुधसे संयुक्त होकर बैठा है। चन्द्रमा कर्क राशिका है। यह जातक मेरा पुत्र है। इसे भी अपने विगत दो जन्मोंकी बात याद है। पहले जन्ममें यह मेरा मामा था जिनकी मृत्यु आसो शुक्ला ७ सम्वत् २००२ वि० को हुई थी। उस समयकी बहुत सी बातें यह बड़ी साफ-साफ बता देता है। दूसरे जन्ममें यह दिल्लीकी उपबस्ती पालममें एक ऐसे घर में पैदा हुआ जहां स्लेट पर लिखाईके काम आने वाली बत्तियां बनाई जाती थीं। ऐसा लगता है कि यहां इसका निधन छोटी उम्रमें ही हो गया था क्योंकि दूसरे जन्मके विषयमें जैनेन्द्रकी स्मृति बहुत स्पष्ट नहीं है। फिर भी यह एक मनोरञ्जक केस तो है ही।

इस प्रकार उपरोक्त पांच कुण्डलियां देकर मैंने पुनर्जन्मसे ज्योतिषका क्या सम्बन्ध हो सकता है, इस तरफ ज्योतिर्विदोंका ध्यान आकृष्ट करनेकी चेष्टा की है। मेरे गुरुदेव एवं मार्ग-दर्शक स्वर्गीय वैद्य रामचन्द्रजीने निम्नलिखित तीन कारण इसके लिए समझे थे।

१. लग्नका स्वामी शनिके क्षेत्रमें बैठा हो या शनिकी दृष्टि हो तो पूर्व जन्मका ज्ञान होता है। शनिसे संयुक्त होने पर भी पूर्वजन्मकी स्मृति हो सकती है। क्योंकि आत्मा सूर्यसे होकर आती है व शनि इसका पुत्र है।

२. देवगुरु या दैत्यगुरुसे लग्नेशकी संयुक्तता अथवा इनकी पूर्ण दृष्टि पथमें उसकी उपस्थिति भी स्मृतिको बहुत तेज बना देती है। क्योंकि प्रथम ब्रह्मविद्याका व दूसरा मृत-संजीवनी-विद्याका अधिष्ठाता है।

३. सूर्य यदि अष्टमभाव (मृत्यु स्थान)

को पूर्ण दृष्टिसे देखकर हो तो भी पूर्वजन्मकी स्मृति रह सकती है।

बाकी अब विद्वान् पाठकोंकी रायका, उनके बहुमूल्य सुझावोंका इन्तजार है कि उन के निजी अनुभव क्या हैं तथा शास्त्रीय सूत्र क्या हैं ?

यह लेख मेरे मार्गदर्शक गुरु श्रीरामचन्द्रजी आयुर्वेदाचार्यके मार्गदर्शनमें लिखा गया अन्तिम लेख है। पिछली सदीयोंमें उनका ६७ वर्षकी आयुमें निधन होगया। उनके निधनसे हमने एक कर्मकाण्डी ब्राह्मण, नाड़ी विज्ञानका अप्रतिम वैद्य तथा ज्योतिषजगत्‌का एक सितारा खो दिया। भगवान् उन्हें आवागमनके चक्रसे मुक्त कर अपने धाममें शरण दें, यही प्रार्थना हम सबकी है। एवमस्तु।

राजपूत-भवन, लाल सड़क
हांसी १२५०३३ (हरियाणा)

श्री बटुक-मन्त्र-विधान

[लेखक :—श्री सीताराम मिश्र आयुर्वेद विशारद]

अनुष्ठानके नियम :—

१. मंत्र साधना करनेका स्थान एकान्त हो। साफ तथा पवित्र हो, वहां अन्य कोई दूसरा आये जाये नहीं, और न ही वहां कोई शब्दादि हो।

२. कोई भी ऐसा कार्य छोड़कर साधना करने मत बैठो, जिससे मन चंचल हो जाये। तथा साधना करते समय उसमें विशेष बाधा होवे।

३. सब सम्बन्धियों तथा मित्रोंको पहले ही सूचित कर दो कि कितनी ही आवश्यकता पड़े, परन्तु वे बीचमें किसी प्रकारकी रुकावट तथा खलल न डालें।

४. अनुष्ठान करनेके दिनोंमें ब्रह्मचर्यका पूर्ण रूपसे पालन करना चाहिये। सत्य-अहिंसा प्रभृति नियमों पर कठोरतासे स्थित रहो।

५. अनुष्ठानके मध्यमें आहार आदि सर्वथा साधारण होना चाहिये। अपने शरीर तथा ऋतुके अनुसार प्रयोग करो। फलोंका प्रयोग अधिक रखो।

६. अनुष्ठानके समय आलस्य तथा प्रमाद से दूर रहो, किन्तु कितनी ही अशान्ति क्यों न हो ढीले मत रहो और नियमको मत छोड़ो, जरा सा आलस्य सारे किये पर पानी फेर देता है।

७. यदि शरीरमें कोई रोग पीड़ा अथवा उसके लक्षण हों तो आपको शिथिल नहीं होना चाहिये। सब रोगादि तथा पीड़ा स्वयंमेव ही तुमसे दूर भाग जायेंगे।

८. बाहिर अथवा कुलका चाहे कितना ही दुःखदाई और दुःखमय समाचार क्यों न हों, अपने हृदयको मत हिलाओ, उस समय मनको वशमें रखनेकी चेष्टा करो।

९. अनुष्ठानके दिनोंमें यह चेष्टा बराबर करो कि मन शान्त रहे। कोई बात मत करो जिससे तुम्हारे मनमें भय उत्पन्न हो।

१०. अनुष्ठानके दिनोंमें किसी प्रकारका समाचार-पत्र, पत्र, टेलिफोन तथा अन्य समाचार मत सुनो और पढ़ो, जहां तक हो सके इन से दूर रहनेकी चेष्टा करो।

११. कुछ भी चमत्कार देखो तो भयभीत नहीं होना चाहिये, दृढ़ विश्वास तथा धैर्यसे परिणामकी प्रतीक्षा करो, जैसी अवस्था होवे, उसके अनुसार अपना अनुष्ठान करते रहो।

१२. अपनी साधनाकी बात किसी पर प्रकट न होने दो, चाहे उससे किसी प्रकारका सम्बन्ध क्यों न हो। सर्वदा उसे गुप्त रखनेकी चेष्टा करो।

१३. किसी प्रकारकी इच्छा रखकर अनुष्ठान करनेमें उसमें थोड़ी सी भी कमी आ जाने पर अनुष्ठान भंग हो जाता है। कभी-कभी विपरीत फलका भी भय रहता है। ध्यानसे करें।

१४. किसी भी अनुष्ठानके सफल न होने पर धैर्यको नहीं छोड़ना चाहिये। उसको दूसरी बार करना चाहिये। असफलता आपकी किसी कमीके कारण ही होती है।

१५. किसी मनुष्यसे सुनने मात्रसे ही अनुष्ठान करने मत बैठ जाओ। जब तक पूरी विधि या गुरु बतलाने वाला न हो उसे मत करो।

१६. विना इच्छासे जो अनुष्ठान किया जाता है यदि उसमें किसी प्रकारकी कमी आ जाये वह हानिकारक नहीं होती, अन्तमें सफलता ही होती है।

१७. जिस मन्त्र या देवताका अनुष्ठान करो उसमें पूर्ण विश्वास तथा प्रेम होना चाहिये। अन्यथा सफलता प्राप्त न होगी।

प्रयोगकी आवश्यकता :—

(१) यदि जन्म, मास, गोचर और दशा, अन्तर्दशा, स्थूल दशा आदिमें ग्रह पीड़ा होनेका योग हो।

(२) किसी महारोग यक्ष्मा आदिसे कोई पीड़ित हो।

(३) भाई वगैर पृथक् हो रहे हों।

(४) नगरमें हैजा प्लेग आदिसे मर रहे हों।

(५) राज्य या पदप्रतिष्ठा जाती हो।

(६) धन-ग्लानि हो।

(७) मेलापकमें नाड़ी दोष षडष्टक आदि आता हो।

(८) राजभय हो।

(९) मन धर्मसे विपरीत हो गया हो।

(१०) राष्ट्रके टुकड़े हो गये हों।

(११) मनुष्योंसे परस्परमें घोर क्लेश हो रहा हो।

(१२) और त्रिदोष वश दुर्निवार्य रोग हो

मन्त्र विधान

ॐ अस्य श्रीआपदुद्धार वटुक मंत्रस्य वृहदारण्यक ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः भैरवो देवता 'वं' बीजं ह्रीं शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः ॥ ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ वृहदारण्यक ऋषये नमः शिरसि । ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। ॐ भैरवो देवतायै नमो हृदि । ॐ बीजाय नमो गुह्ये । ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥

ॐ ह्रां वां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ [हृदयायनमः] ॥ ॐ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा (शिरसे स्वाहा) ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां वषट् ॥ (शिखायै वषट्) ॐ ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां हुम् ॥ (कवचाय हुम्) ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठाकाभ्यां वौषट् ॥ (नेत्रत्रयाय वौषट्) ॥ ॐ हः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ अस्त्राय फट्) ॥

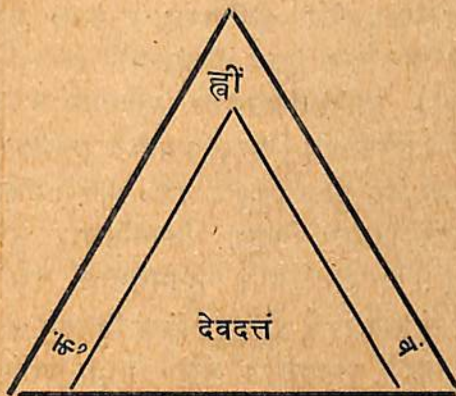
मानसोपचारैः सम्पूज्य

—: ध्यानम् :—

कर कलित कपालः कुण्डली दंडपाणी,
तरुणतिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती।
ऋतु समय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति,
बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

मू० "ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॥"

पूर्वमें १२५००० सवालक्ष जपे ॥



प्रथम कांस्य पात्रमें सिन्दूरका चौका लगावें, उसमें त्रिकोण यन्त्र लिखें जैसा कि ऊपर छपा है । भीतर अक्षर लिखें संकल्प करके आवाहनादि करके षोडशोपचार वा पंचोपचार पूजन करें। अथवा गन्ध-पुष्प-धूप-दीप और नैवेद्यसे पूजन करें। तथा यन्त्रके पास नीचे लिखा सामान रखें । उर्दकी दालके बड़े तिल्लीके तैलमें सिकें हुए दहीमें मिला सिन्दूर लगाकर, कच्चा दूध गुड़ मिला हुआ । भुना हुआ केला, नुकतीका लड्डू और इमरती। लाल कनेर व गुड़हलके फूलसे पूजन नित्य करें, रात्रिके नौ बजेसे प्रातःकाल ३ बजे तक जप करें और दशांश घी, असली शहद और चीनीका हवन करे ११ दिनमें कार्य सिद्ध होगा। प्रथमबारमें मन्त्र सिद्ध न हो तो चार पुरश्चरणमें अवश्य सिद्धि मिलेगी।

भैरवाष्टक स्तोत्र

ॐ यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि वदनं भूमि कंपाय मानम्। सं सं सं संहार मूर्ति शिरमुकुट जटा शेखरं चन्द्र विम्वम् ॥ दं दं दं दीर्घ कायं विकृतनखमुखं ऊर्ध्वरोमं करालम् । पं पं पं पाप नाशं प्रणमतसततं भैरव क्षेत्रपालम् ॥१॥ ॐ रं रं रं रक्तवर्ण कट कटित तनुं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालम् । घं घं घं घोषघोषं घघ घघ घटितं घर्घराघोर नादम्। कं कं कं कालरूपं धिग धिग धृगितं ज्वालितं काम देहम्। दं दं दं दिव्य देहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥२॥ ॐ लं लं लं लंब दन्तं लल लल लुलितं दीर्घ जिह्वा करालम्। धूं धूं धूं धूम्रवर्णं स्फुट विकृत मुखं भासुरं भीमरूपम् ॥ रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिरमय-मुखं ताम्रनेत्रं विशालम् । नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥३॥ ॐ वं वं वं वायु वेग प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपम्। खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीमरूपम्। चं चं चं चालयंतं चल चल चालितं चालितं भूतचक्रम्। मं मं मं माय

रूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥४॥ शं शं शं शंख हस्तं शशिकर धवलं यक्ष सम्पूर्ण तेजम् । मं मं मं भाय कुलमकुलकुलं मन्त्र मूर्ति स्वतत्वम् ॥ भं भं भं भूत नाथं किलकिलित वचश्चारु गृह्वा लुलंतम् । अं अं अं अन्तरिक्षं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्र पालम् ॥५॥ ॐ खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं कालकालान्धकारम् । क्षी क्षीं क्षीं क्षिप्रवेगं दह दह दहनं नेत्र संदीप्यमानम् । हूँ हूँ हूँ हूँकार शब्दं प्रकटित गहनं गर्जितं भूमिकम्पम् । बं बं बं बाललीला प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥६॥ ॐ सं सं सं सिद्धियोगं सकल गुणमयं देव देवं प्रसन्नम् । पं पं पं पद्मनाभं हरिहर वरदं चन्द्र सूर्याग्नि नेत्रम् ॥ जं जं जं यक्षनाथं सतत भय हरं सर्व देवस्वरूपम् । रौं रौं रौं रौद्ररूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्र पालम् ॥७॥ ॐ हं हं हं हंस घोषं हसित कहकहा राव रौद्राट्टहासम् । यं यं यं यक्ष सुप्तं शिर कनक महा बद्धखट्वांग नाशम् ॥ रं रं र रंग रंगप्रहसित वदनं पिंगकस्याश्मशानम् । सं सं सं सिद्धनाथ प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥८॥ ॐ ह्रीं क्रों अत्रस्थ भैरव क्षेत्रपाल आगच्छागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं, पुष्पं, धूपं, चरू बलि स्वस्तिकं यज्ञ भागे च यज्ञामहे प्रतिगृह्यताम् स्वाहा ॥ एवं पूर्वाद्यष्ट दिक्षु ॥ एवं यो भाव युक्तंप्रपठित च यतः भैरवस्याष्टकं हि । निर्विघ्नं दुःखनाशं असुर भय हरं शाकिनीनां विनाशम् ॥ दस्युर्न व्याघ्र सर्पः धृति विदसि सदाराजशत्रोस्तथाज्ञात् । सर्वे नश्यन्ति दूराद्ग्रहगणविषमाश्चिन्तिता चेष्ट सिद्धिः ॥ ॥९॥ इति विश्वसारोद्धारे क्षेत्रपाल भैरवाष्टक स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री भैरवाष्टकं प्रारभ्यते ॥

श्रीवटुक भैरवाय नमः । ॐ चण्डं प्रति चण्डं कर धृत दण्डं कृतरिपुखण्डं सौख्यकरम् । लोकं सुखयंतं विलसित वंतं प्रकटितवंतं नृत्य करम् ॥ डमरू ध्वनिशंखतरलवतंसं मधुर हसंतं लोकभरम् । भज भज भूतेशं प्रकट महेशं भैरववेषं कष्टहरम् ॥१॥ चर्चित सिन्दुरं रणभुवि शूरं दुष्टविदूरं श्रीनिकरम् । किंकिणि गणरावं त्रिभुवन पावं खर्प्पर सावं पुण्यभरम् । करुणामयवेषं सकल सुरेशंमुक्तसुकेशं पाप हरम् । भज० ॥२॥ कलिमल संहारं मदनबिहारं फणिपतिहारं शीघ्रकरम् । कलुषं शमयन्तं परिभृत संतं मत्तद्वंगतंशुद्धतरम् । गति निंदितहेशं नरतनदंशं स्वच्छकशं सन्मुण्डकरम् । भज० ॥३॥ कठिन स्तन कुंभं सुकृत सुलंभं काली डिम्भं खड्ग-धरम् । वृत भूतपिशाचं स्फुट मृदुवाचं स्निग्ध सुकांचं भक्तभरम् । तनुभाजित शेषं विमल-सुदेशं कष्ट सुरेशं प्रीतिनरम् । भज० ॥४॥ ललितानन चन्द्रं सुमुद वितंद्रं वोधितमंद्र श्रेष्ठ वरम् । सुत्विताखिललोकं परिगतशोकं शुद्ध विलोकं पुष्टिकरम् । वरदा भयहारं तरलिततारं क्ष्युह्यविदारं तुष्टिकरम् । भज० ॥५॥ सकला युधभारं विजन विहारं विश्वविशारं भृष्ट-मलम् । शरणागत पालं मृगमदभालं संजित-कालं स्वेष्टबलम् । पद नूपुर सिंजं त्रिनयन कंजं गुणिजनरंजं कुष्टहरम् । भज० ॥६॥ मर्दयितु-सरावं प्रकटितभावं विश्वसुभावं ज्ञानपदम् । रक्तांशुकजोषं पारकृततोषं नाशित दोषं संन्मतिदम् । कुटिलभ्रकुटीकं ज्वरधन वीकं विसरंध्रीकं प्रेमभरम् । भज० ॥७॥ परिनिर्जित-कामं विलसित वामं योगिजनाभंयोगेशम् ।

बहुमद्यपनाथं गीत सुगाथं कृष्ट सुनाथं वीरेशम। कलयंतमशेषं भृतजन देशं नृत्य सुरेशं दत्तवरम्। भज० ॥८॥ इति।

॥ श्री सात्त्विक ध्यानम् ॥

ॐ वन्दे बालस्फटिक सदृशं कुंडलोद्भासिववक्त्रं दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किंकणीनूपुराढ्यम्। दीप्ताकारं विविधवसनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं शूलदडौ दधानम् ॥

॥ अथ श्रीवटुक भैरवपंचरत्न स्तोत्रम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॐ करकलितकपालं गल रुण्डं मालं कुलिजनपालं देववरम्। नाशं जग जालं रूपविशालं संजितकालं सौख्यकरम्॥ शरणागत पालम्, दुर्जनकालं कालीबालं कष्ट हरम्। भज श्रीवटुकेशं सकल सुरेशं कौल गणेशं सिद्धिकरम्। ॥१॥ खड्गायुधधारं श्रुतिपथसारं निजजन तारं भूतेशम्। संनिर्जितमारं विश्वाधारं स्वैराचारं योगेशम्॥ श्रुतिगण गुणसारं शम्भुकुमारं मुक्ताहारं वामेशम्। भज श्रीवटुकेशम्। ॥२॥ विधि हरिहररूपं भाल उद्रूपं शुद्धस्वरूपं ज्ञानपदम्। तारण भव कूपं भावअनूपं सुखर भूपं जन सुखदम् अतिस्थूल अणुपं प्रियतमरूपं ध्रापितधूरं प्रेमभरम्। भज श्री वटुकेशं० ॥३॥ संचित सुखधामं बहुविधि नामं विलसित वामं दु-खहरम्। नूतन घनश्यामं पूरणकामं धृतपथवामं मुडंधरम्। निगमागमगीतं नाम पुनीतं विश्वातीतं शुभमतिदम्। भज श्री वटुकेश० ॥४॥ फणिपति उपवीतं हरिहर मीतं ध्यानप्रतीतं सद्गतिदम्। भवस्थितिलय करणं जन दुःख हरणं कृतविषजरणं पापहरम्। साधकगण भरणं स्फाटिक वरणं पूजित चरणं पुण्य भरम्। भज श्री वटुकेशम् सकल सुरेशं कौलगणेशं सिद्धि करम्॥

भैरवस्य नरो भक्त्या महास्तोत्रमिदंपठेत्।
सर्वसिद्धि मवाप्नोति लक्ष्मी विंदति पुष्कलाम्
नरसिंहकृत स्तोत्रं पुत्रपौत्र विवर्द्धनम्।
सर्व रोगं हरं पुण्यं ग्रहबाधानिवारणम्॥
पूजाकाले चार्धरात्रौ रुद्रवारे पठेत्सदा।
राजानो वश्यतां यांतु शत्रुनाशं प्रजायते॥

॥ श्री वटुकनाथ ध्यानम् ॥

ॐ फणिवर फणिनाथो देवदेवाधिनाथः,
क्षितिपतिक्षितिनाथो वीरवेताल नाथः।
निधिपतिनिधिनाथो योगिनीयोगनाथो,
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

॥ श्री तामस ध्यानम् ॥

ध्यायेत्त्रैलोक्यकांतं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं दिग्वस्त्रं पिंगकेशं डमरुमथ सृणि खड्ग शूले दधानम्॥ नागं घण्टा कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीम दंष्ट्रं सर्पा कल्पं त्रिनेत्रं मणिमय विलसत्किंकिणीनूपुराढ्यम् ॥३॥

श्री महावटुक भैरवाय नमः

॥ अथ श्रीशान्ति स्तोत्रम् ॥

ॐ यस्यार्चनेन विधिना किमपीह लोके कर्म प्रसिद्धमिति मान फलं प्रसूते। तं सततं सकल साधक चित्तवृत्तीं चिन्तामणि सुरगणाधिपति नमामि ॥१॥ रक्ताम्बरं ज्वलनपिंगजटा कलापं ज्वालावली कुटिल चन्द्रधरप्रचण्डम्॥ बालार्ककोटि फलकांचन धातुवर्णं देवीसुतं वटुकनाथ महं नमामि ॥२॥ हरतु कुलगणेशो विघ्न संघान्यशेषान् नयतु कुल सपर्या पूर्णतां साधकानाम्॥ पिबतु वटुकनाथः शोणितं निन्दकानां, दिशतु सकल कामान् कौलिकानां गणेशः ॥३॥

॥ श्री राजस ध्यानम् ॥

ॐ उद्यद्भास्कर सन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्ग-रागस्त्रजस्मरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः। नीलग्रीवमुदारभूषण युक्तं शीतांशुखंडो ज्जवलं बंधूकारूण वाससं भयहरं देवं सदा भावयेत् ॥

अथ मन्त्रः ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ॐ नमः शिवाय ॥

पता—श्री गंगाजीका मंदिर सरदारशहर
(राजस्थान)

सिद्ध सावर-महालक्ष्मी-मन्त्र

[लेखक :—काव्यतीर्थ पं० श्री चन्द्रभूषण शास्त्री चित्तौड़गढ़ राजस्थान]

मन्त्राधीनाश्च देवताः

वर्तमान समयमें मध्यम श्रेणीका मानव अर्थाभावसे अत्यन्त दुःखी है। वह अपने बल पौरुषसे जितना कमा लेता है वह उसके भरण-पोषणके लिये भी पर्याप्त नहीं होता। कोई डिग्री प्राप्त है तो नौकरी नहीं मिलती, उन्हें दर-दरकी ठोकरें खानी पड़ती है। मँहगाई बहुत है, जिसके कारण भ्रष्टाचार लूट-मार डैकेतियां छुरेबाजी आदि दुराचार बढ़ते जा रहे हैं। कई तो इस दारुण कालमें दुःखी होकर आत्महत्यायें भी कर रहे हैं।

'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।'

यह ध्रुव सत्य है कि जहां मानवीय बल समाप्त हो जाता है, वहां दैविक बल ही सहायक होता है। जो इष्टोपासना मन्त्र साधना यन्त्र लेखन आदिसे सम्भव है। कर्मोंका जाल बड़ा कठिन है। जिसे सुलझानेके लिये मान्त्रिक-बल ही समर्थ है।

गोस्वामी श्री तुलसीदासजीके शब्दोंमें—
"मेटत कठिन कु अंक भालके" (मानस)

प्रभु कृपा क्या नहीं कर सकती। मान्त्रिक बलोंके अनुभव अनादि कालसे चले आ रहे हैं। उन मन्त्रोंकी प्रामाणिकता साधकोंकी अनुभूतियां उपलब्धियां व प्राप्त सिद्धियां ही हैं।

मन्त्र अनेक हैं, और उनके देवता भी भिन्न-भिन्न हैं, तथा साधन विधियां भी कामना के अनुसार भिन्न ही हैं।

"अमन्त्र-अक्षरोनारित नास्तिमूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषोनास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः॥"

कोई अक्षर अमन्त्र नहीं है। कोई तृण-मूल अनौषध नहीं है। कोई मनुष्य अयोग्य नहीं है, किन्तु इन सबका संयोजक दुर्लभ है।

आज मैं यहां सभी धनके इच्छुक आस्तिक बन्धुओंके हितार्थ एक अनुभूत एवं अमोघ, तथा आशुफलप्रद 'सिद्ध सावर महालक्ष्मीमंत्र' का उल्लेख कर रहा हूं, जो आर्ष एवं शास्त्रीय भी है, और अनुभव सिद्ध भी। विधिवत् इस मन्त्रके जपरूप अनुष्ठान भी होते हैं, तथा विधि सहित घर पर भी साधक अपने मनोरथकी सिद्धि अनायास प्राप्त कर लेता है।

व्यापार, व्यवसायमें वृद्धि, धन प्राप्तिके रुके हुए मार्गोंका विकास, नौकरीकी प्राप्ति,

उलझे हुए धनका लाभ, अपने ही मकानमें गड़े हुए धनकी उपलब्धि आदि फलरूप सिद्धियां देखी जा रही हैं । अपनी-अपनी कामनाओंके अनुसार जप-जाप साधनाकी विधियां कुछ अलग-अलग भी हैं । वह पोष्टेज भेजकर मुझ से पूछी जा सकती हैं । जिसकी कोई फीस नहीं होगी । यह दुःखी एवं धनाभावसे पीड़ित परिवारोंकी निःस्वार्थ सेवा मात्र है ।

मन्त्र छोटा है लेकिन बड़ा विलक्षण है । धनदाता है, अभावको वैभवमें परिणित करने वाला है । इस मन्त्रकी अलौकिक शक्ति है जो भगवती महालक्ष्मीको शीघ्र ही प्रसन्न कर देती है ।

यहां यह उक्ति स्पष्ट देखी गई ।

"मन्त्रपरमलघुजासुबसविधिहरिहर सुरसर्व ।"

मेरा यह दृढ़निश्चय है कि—अनुभव हीन अपरीक्षित प्रयोग मैं नहीं दिया करता हूं । साधक विश्वास करें, और करके देखें । किं-बहुना ।

इस महामन्त्रके अंगन्यास, करन्यास-ध्यान संकल्प, विनियोग भी हैं जो बादमें दे रहा हूँ । वह सर्वसाधारणके गम्य भी नहीं हो सकेंगे । इन्हें केवल महालक्ष्मीके सामने जितने भी हो सके पूजा विधि पूर्वक केवल मूलमन्त्रका ही जप कर लेना चाहिए । लक्ष्मीजीका चित्र पट सामने हो, और उस पर गंध अक्षत धूप दीप-पुष्पमाला चढ़ाई जाय, तथा मिश्री मिला दूध का भोग लगाया जाय । मन्त्रका जाप अधिक हो तो अच्छा अन्यथा १०८ से कम न हो । यही विधान प्रातः व सायं दोनों समय किया जाय । ऐसे साधकके लिये कोई यम-नियमोंका बन्धन नहीं है ।

महा अनुष्ठान जो १। सवालाख या इससे भी अधिक जप तथा दशांश हवनादिका है वह तो महान् कार्यकी सिद्धिके लिये उसी रूपमें हीं करना होता है, वह खर्चीला अवश्य, परन्तु परिणाममें अवश्य लक्ष्यकी सिद्धि देने वाला है ।

इसके आसानीसे १॥ घंटेमें इसके जप एक हजार हो सकते हैं, वे दो बार करके भी किये जा सकते हैं ।

मूल मन्त्र यह है—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिन्यै महालक्ष्म्यै अस्माकं दारिद्र्यम् नाशय प्रचुरं धनं देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ"

इसके न्यासादि आगेके अंकमें प्रकाशित करूंगा । लेख कुछ विस्तृत भी हो गया है तथापि कोई महानुभाव प्रकाशनके पूर्व भी न्यासादि जानना चाहे तो मैं उन्हें सहर्ष स्पष्ट लिखूंगा, उनको मेरे पास पोष्टेज भेजना आवश्यक होगा । अन्यथा कोई उत्तर नहीं दिया जावेगा ।

पूर्व अंकमें प्रकाशित दुर्गेश महामन्त्रके साधकोंकी सफलता भरी चिट्ठियां भी आ रही हैं, जिसकी प्रसन्नता है ।

परम पूज्या गोमाताका दूध परमौषधी

[लेखक :—भक्त श्री रामशरण दास, पिलखुवा]

[भारतमें वन सम्पदा गोचरभूमि और गोधनका ह्रास करके हम अपने पैरों पर कुठारा घात कर रहे हैं। गोदुग्ध तो अमृत है ही पर गोमूत्र और गोमय (गोबर) में भी जीवनी शक्ति है। पञ्चगव्यकी महिमामें ऋषिकल्प आचार्योंने लिखा है—"अग्रभागं चरन्तीनामोषधीनां वने वने। तासामृषभ पत्नीनां पवित्रंकायशोधनम्॥" इस सम्बन्धमें भक्त श्रीरामशरण दासजीका यह लेख पाठकोंको रुचिकर होगा।

—सम्पादक]

गोदुग्धकी विलक्षण महिमा क्या देखी ?

अभी मेरठके भगवान् श्रीविल्वेश्वर महादेवके मन्दिरमें एक १८ दिवसीय भागवत ज्ञान महायज्ञ महोत्सव बड़ी धूमधामके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ है जिसमें काशीके सुप्रसिद्ध महान् धुरन्धर विद्वान् पूज्यपाद आचार्य श्री-स्वामी भागवतानन्द सरस्वतीजी महाराजके श्रीमद्भागत पर प्रवचनोंकी बड़ी धूम रही, जिसे सुननेके लिये बड़ी-बड़ी दूरसे जनता उमड़ी चली आती थी। भगवान् श्रीश्यामसुन्दरकी असीम कृपासे उसमें हमें भी जानेका परम सौभाग्य प्राप्त हुआ था। हम अपने साथ अपने पुत्र व्रजेन्द्रकुमार गोयलको लेकर गये थे, तो वहां पर हमें एक परम गोभक्त ठाकुर साहबके दर्शन हुए। उन ठाकुर साहबका बड़ा गौरवर्ण था, उनके मस्तक पर तिलक शोभा पा रहा था, उनकी आयु ५०-६० वर्षकी प्रतीत हो रही थी और वह ब्राह्मण जैसे प्रतीत हो रहे थे। परन्तु जब उनसे हमारा सत्सङ्ग हुआ और वार्तालाप हुआ तो उनसे मालूम हुआ कि वह जातिके राजपूत क्षत्रिय हैं और परम आस्तिक हैं, भगवद्भक्त हैं, और साथ ही परम गोभक्त हैं, आपकी आयु ५०-६० वर्षकी नहीं अपितु ७०-७५ वर्षकी है और पचासों वर्षसे आप अन्न बिल्कुल नहीं खाते हैं। यह सुनकर हमारे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। अन्न न खाने वाला व्यक्ति इतना तन्दुरुस्त हो और पूर्ण रोग मुक्त हो और धार्मिक विचारोंका हो और अपने जीवनमें पूर्ण सुख शान्तिका भी अनुभव करता हो, इसका एकमात्र कारण क्या है। हमें यह जाननेकी बड़ी भारी उत्सुकता पैदा हुई ? हमने जब उन ठाकुर साहबसे इसका कारण मालूम किया तो उन्होंने हमें कृपा कर यह सब पूज्या गोमाताकी और गोमाताके गोदुग्धकी कृपा बताते हुये इसका रहस्योद्घाटन करते हुये कहा—

ठाकुर साहब—मैं जातिका राजपूत क्षत्रिय हूँ। मैं बड़ी शान्तिसे जी रहा हूँ। मुझे पचासों वर्षसे कभी कोई रोग शोक, आधि-व्याधि, खांसी, जुकाम, नजला, बुखार, सिर दर्द अथवा कोई अन्य रोग आज तक नहीं हुआ है। न मैं कोई बीमारी जानता हूं कि बीमारी कैसी होती है ? इसका एकमात्र कारण मैं आपके सामने रखता हूँ।

मैंने स्वयं गोदुग्धका अद्भुत चमत्कार देखा ? आप मेरे जीवनका अनुभव सुनिये कि जो इस प्रकार है—

मैं आपको इस समय भले ही जवान दिखाई दे रहा हूं पर मैं जवान नहीं हूं। मेरी आयु इस समय ७०-७५ वर्षकी है और मैं बूढ़ा होने पर भी अपनेको आज भी जवान जैसा प्रतीत करता हूँ और आजके जवानोंसे लाख दर्जे अच्छा समझता हूँ। इसका कारण यह है कि मैंने लगभग ५० वर्षोंसे अन्न खाना छोड़ा हुआ है और अन्नका एक दाना भी नहीं खाया है। बस एक मात्र खाली गायका दूध पिया करता हूँ। पहले मैं स्वयं अपने पास बड़ी-बड़ी सुन्दर काली-पीली, धौरी, सफेद गायें रखा करता था और उनकी अपने हाथोंसे स्वयं खूब सेवा-सुश्रुषा किया करता था और स्वय अपने हाथोंसे उन अपनी गायोंका दूध दुहकर (निकाल कर) ५-६ किलो दूध दोनों समयमें पी जाता था। कभी-कभी तो मैं ७ किलो तक दूध पी जाता था। कभी जीमें आता था तो अपने हाथोंसे दूहा दूध तुरन्त बिना अग्नि पर औटाये यों ही बिना मीठेके पी जाता था और कभी जीमें आता था तो दूधको औटा कर उसमें मीठा डालकरके पी जाता था। अब जबसे तेजीका जमाना आया है और जबसे पासमें कुछ पैसोंकी कमी हो गई है, और इधर मेरे पासमें गायोंको रखनेके लिये स्थानकी भी कमी हो गई है, तबसे मैं एक गाय वालेके पास नित्य प्रति जाता हूं और अपने सामने काली-पीली गायोंका दूध निकलवा करके लाता हूँ और उसे पी जाता हूँ और पीता गायका दूध ही हूं। भैंसके दूधको तो मैं कभी हाथ भी नहीं लगाता हूं। पेटमें कुछ नमक भी जाना चाहिये इस दृष्टिसे मैं कभी घीया, तो कभी तोरोई तो कभी लौकी आदिको उबालकर और उसमें कुछ नमक डालकर उसे खा लेता हूँ। दूधके अतिरिक्त कभी अन्न, मिठाई आदि भूल करके भी नहीं खाता हूँ। इसका अद्भुत प्रत्यक्ष चमत्कार यह है कि मैं समस्त रोगोंसे एक दमसे मुक्त हो गया हूँ और मैं नहीं जानता कि बुखार खांसी, नजला या जुकाम, सिरमें दर्द अथवा कोई अन्य प्रकारकी बीमारी कैसी होती है ? मैं कभी किसी डाक्टरके पास अथवा किसी वैद्यके पास नहीं गया। मुझे न आज तक इतनी आयु होने पर भी कभी बुढ़ापेने सताया है और न किसी रोगने परेशान किया है और न मेरे मनमें किसी प्रकारकी अशान्ति और तनिक भी चिन्ता है। गोदुग्ध रूपी अमृत पान करनेसे मेरा मन भी बड़ा शान्त स्थिर और सात्विक बन गया है, सात्विक मन रहने से तनिक भी मेरा मन पापोंकी ओर प्रवृत्त नहीं होता और मैं इसीसे भगवान्का खूब भजन करता हूं, देवताओंका खूब पूजन आराधन करता हूं। कभी भूलकर भी सिनेमा नाटक, खेल-तमाशे आदि देखनेको मन नहीं करता। अब यहां पर आया हूँ और खूब अपना मन लगाकर श्रीमद्भागवतका प्रवचन सुनता हूं अथवा धार्मिक कथा-कीर्तन सत्सङ्ग आदिमें अपना सारा समय व्यतीत करता हूँ और बड़े ही आनन्दसे रहता हूं। यह सब है पूज्या गोमाताके गोदुग्ध रूपी अमृत पान करनेका मेरे जीवनका सत्य अनुभव कि जो मैंने आपके सामने रखा है। मेरा यह दावा है कि यदि भारतमें परम पूज्या गायोंकी पहलेकी भांति खूब भरमार हो और गायोंको खूब अच्छी तरहसे पेट भरकर खिलाया-पिलाया जाय, घर-घरमें गायें पाली जाय, गोदुग्धकी भरमार हो और सब गोदुग्धका पान करें तो भारतसे सब समस्त रोग-शोक और डाक्टर और

अस्पताल, करोड़ों रुपयोंकी औषधी आदि एकदमसे यहांसे विदा हो जायं। गोदुग्ध पान करनेसे सबके मन सात्विक दूध पीनेके कारण स्वतः ही सात्विक बन जायेंगे और फिर सात्विक मनसे पाप करने, पर स्त्री गमन करने, लड़ाई-झगड़ा करने आदि सब खुराफाती बातें और सब बवाल अपने आप स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे। जब हमारे मन ही खराब नहीं होंगे तो फिर हमसे खराब काम और पाप करने कैसे बनेंगे ?

परब्रह्म परमात्मा भगवान् और श्रीराम और भगवान् श्रीकृष्ण जो गोरक्षाके लिये अवतार ले करके आते हैं और सभी बड़े-बड़े देवी-देवता, ऋषि-मुनि, धर्माचार्य सन्त महात्मा और सभी वेदशास्त्र पुराण आदि जो गायोंको एक स्वरसे वन्दना कर गुणगान करते हैं, क्या वे मूर्ख थे ? यदि गाय साक्षात् माता और पूज्या न होती और गायका दूध अमृत न होता तो फिर यह सब गायकी और अमृत समान दूधकी इतनी महिमा क्यों गाते ? जिस गोमाता के माखन-दूध, मलाई और छाछके लिये साक्षात् श्रीकृष्ण ब्रह्म -

ताहि अहीरकी छोहरियां छछिया—
भरि छाछ पे नाच नचावें।

छाछके लिये ठुमक-ठुमक कर नाचते थे, तो क्या गायके दूध-छाछ आदि साधारण दूध-छाछ थे ? या साक्षात् अमृत थे। आज भारत देश का और हिन्दू जातिका यह महान् दुर्भाग्य है कि पूज्या गायोंको तो कटवाया जा रहा है और विलायती कुत्तों को पाला जा रहा है। फिर भला हमारी और हमारे देशकी उन्नति कैसे होगी ? गायोंका अमृत समान परम पवित्र दूध न पीकर विलायती डिब्बेका दूध पी रहे हैं और सबकी जूंठी थाली-प्लेटोंमें चाय, चुड़ैलकी प्यालियां चाट रहे हैं और सबको अण्डे मांस मुर्गें, मछली खानेके उपदेश दिये जा रहे हैं और प्याज, लहसुन, सलजम, मिर्चमसाले, चाय, तम्बाकू, शराब, बीड़ी-सिगरेट आदि खाओ-पीओ और कामोत्तेजक अण्डे मुर्गे और सिनेमा देखकर हमारा मन भला कैसे स्थिर और शान्त रह सकता है ? कैसे पापोंसे बच सकता है ?

यदि अपनी जातिकी और अपने देशकी उन्नति करनी है तो पुनः गोमाताकी शरण लो और अविलम्ब गोहत्याको बन्द करो, गोभक्षक पापात्माओंकी चापलूसी करना बन्द करो, गायोंको पालो, गोदुग्धका सेवन करो और शरीरको रोगमुक्त करो। सात्विक गोदुग्ध पीकर मनसे काम, क्रोध, लोभ, मोह आदिको भगाओ और पापोंसे बचो, यही एक मात्र हमारे देशोन्नति और कल्याणका साधन है, गोदुग्ध पान करनेसे अन्नकी भी बड़ी बचत होगी और फिर विदेशोंसे झोली पसार कर अन्न मांगनेके लिये भिखारी भी नहीं बनना पड़ेगा। इस प्रकार घर बैठे अन्नकी समस्या भी स्वतः ही हल हो जायेगी और पूज्या गोमाताके शुभाशीर्वादसे देश पुनः फले-फूलेगा। समस्त विश्वका सिरमौर बन जायगा।

पाठक ! माननीय ठाकुर साहबका यह अनुभव हमने आपके सामने रखा है, आशा है पाठक इस अनुभवसे कुछ लाभ उठायेंगे और पूज्या गोमाताकी शरण ले, अपना कल्याण करेंगे ?

★

त्रैमासिक राशि भविष्य

नवम्बर-दिसम्बर १९८१ जनवरी १९८२

[लेखक :—श्री ओंकारनाथ त्रिवेदी, बाराबंकी, उ०प्र० २२५००१]

मेष

(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

नवम्बर—यह मास आपके लिए अच्छा है। अधिकांश समय सुखोपभोग और विलासपूर्ण जीवन जीनेमें व्यतीत होगा। व्यसनोंमें रुचि बढ़ेगी। बीच-बीचमें बौद्धिक उलझनें आवेंगी, जिनके कारण सगे-संबंधियोंसे विषाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। पर इसमें कुछ चिंताजनक नहीं है। यद्यपि कार्यकारी जीवनमें आप जमकर कोई काम न कर सकेंगे, फिर भी सफलता देने वाले योग विद्यमान हैं। इस सम्बन्धमें ४ या ५-१३-२२ ता० अनुकूल हैं। २५ ता० को राहु आपके तृतीय स्थानमें प्रवेश करके पराक्रमकी वृद्धि करेंगे। धन लाभके लिए २-६-११-१४-२०-२३ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ८-९ या १०-१६-१८-२५ भी अच्छी रहेंगी, प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। व्यापारिक व्यवस्थामें सुधार करनेको सोचेंगे। उत्सवों-दावतों मंगल कार्योंमें सम्मिलन, इस दृष्टिसे २ ता० महत्त्वपूर्ण हैं। पत्नीसे सहयोग और उत्तम वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति। स्वास्थ्यमें आकस्मिक खराबी। कई सुखद यात्रायें होंगी। ९-१७-२६ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास सामान्य अच्छा है, परम्परागत जीवन अपने पथ पर चलता रहेगा। जो बौद्धिक उलझनें चल रही हैं, वे द्वितीय सप्ताहमें समाप्त हो जायेंगी। श्रम और उद्योग करनेकी इच्छा होगी लेकिन कर न सकेंगे अथवा बीचमें विघ्न आ जायेंगे। बहुतसा समय आलस्यमें निकल जायेगा। व्यसनों-विलासोंमें रुचि बढ़ेगी। धन लाभके लिए ३-४-७-११-१२-२०-२१-३०-३१ ता० अच्छी हैं। प्रथमार्द्धमें प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। आर्थिक दबाव बराबर रहेगा, व्यापारमें कुछ सुधार करनेके लिए योजनाएं बनावेंगे। समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी। पर जनप्रियताकी कमी खटकेगी। भ्रमण-मनोरंजनके अवसर। उत्सवादिमें सम्मिलन। वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति। छोटी-छोटी अनेक यात्रायोंके अवसर प्राप्त होंगे। मित्र-परिजनों से सहयोगकी आशा बहुत कम है। २३ या २४ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास अच्छा है। यदि व्यसनों विलासोंमें समय नष्ट न कर तो इसे और अधिक अच्छा बना सकते हैं। उद्योग करने और सफलता पानेके अवसर बार-बार मिलते रहेंगे। शरीरमें स्फूर्ति रहेगी। १४ ता० से उत्साहमें चमत्कारिक वृद्धि होगी। इस सबका सदुपयोग आप पर निर्भर है. सहयोग देने वाले अनेक मिलेंगे। कामनाएं पूर्ण होंगी। कई कठिन समस्याओंका समाधान स्वत: हो जायगा। धन-लाभकी दृष्टिसे ७-८-९-१४ से १८ और २४ से २६ तक ता० श्रेष्ठ हैं, संभव है कि

१-१०-१६-२८ भी अच्छी रहें। २-३-२६-३० तारीखोंमें विशेष व्यय तथा हानिके योग हैं अतः इन दिनों विशेष सावधानी आवश्यक है। व्यापारमें सुखद सुधार होंगे। ऋण लेकर व्यापारको बढ़ानेकी सोचेंगे। समाजमें प्रभाव-वृद्धि, मान तथा जनप्रियता। वैवाहिक सुखोंमें कुछ बाधाएं रहेगी। प्रेम-सम्बन्धोंमें आंशिक सफलताकी ही आशा है। २-१० या ११-२०-२६ ता० नेष्ट।

वृष

(ई, उ, ए, ओ, व, वि, वू, वे, वो)

नवम्बर—बौद्धिक उलझन तथा मानसिक अशान्तिके योग हैं। एक घेराव जैसी स्थिति में रहेंगे। श्रम तो करना पड़ेगा, लेकिन उसमें रुचि न रहेगी। तुलनात्मक दृष्टिसे प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है जिसमें प्रयासोंमें सफलता और शत्रुओं-बाधाओं पर विजय मिल सकती है। सगे-सम्बन्धियोंसे कलह-वैमनस्य, ६-१४-२३-२४ ता० में संयमसे काम लेना चाहिए। समस्याओंको भूलनेके लिए व्यसनों-विलासों का सहारा लेंगे। २६ ता० को एक अतिप्रिय व्यक्तिसे भेंट। आर्थिक दबाव। ऋण या संचित धनका सहारा लेना पड़ सकता है। २७ से ३० तारीखोंके बीच जीवनमें एक शुभ मोड़ आने की आशा है। व्यापारको सुधारनेके लिए नकद या मालके रूपमें ऋण लेंगे। प्रतिष्ठा बनी रहेगी, पर जनप्रियताकी कमी खटकेगी। पारिवारिक सुखोंमें बाधाएं। आलस्य और उदर विकार। छोटी-छोटी यात्राएं और दौड़धूप। २३-२४ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। शुभाशुभ फल जीवनमें दिखायी न देंगे। बौद्धिक उलझने बढ़ जायेंगी। व्यसनों और अस्वाभाविक भोगोंमें भी रुचि बढ़नेके योग हैं। सगे-सम्बन्धियोंसे कलह-वैमनस्य। दूसरी ओर धार्मिक या सामाजिक वातावरण रहेगा। किसी धार्मिक अथवा मंगल कार्यका आयोजन करेंगे। व्यक्तिगत सुखोपभोगके अवसर प्राप्त होंगे। धन लाभके लिए ६-१७-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ६-७-१४-१५-२३-२४-२५ भी अच्छी रहेंगी, उत्तरार्द्धमें प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति, आकस्मिक लाभ संभाव्य। विशेष व्यय और हानिसे बच पाना कठिन है। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। समाजमें यश और अयश दोनोंकी प्राप्ति होगी। वैवाहिक सुखोंमें बाधाएं। संतानके लिए मास कष्टप्रद है। प्रथमार्द्धमें दौड़-धूप। उदरविकारसे कष्ट संभाव्य। २० ता० नेष्ट।

जनवरी—इस महीने शुक्रके अतिरिक्त अन्य सभी ग्रह नेष्ट स्थानोंमें हैं। जहां तक शुक्रका सम्बन्ध है, वे सुरक्षा और नैतिक भावना देते रहेंगे। धैर्य और सावधानी पूर्वक चलनेकी आवश्यकता है। बौद्धिक उलझनें घेरे रहेंगी। उनके कारण असमय और अकारण क्रोध उत्पन्न होगा जिससे संभव है कि कोई ऐसा काम कर बैठें कि बादमें पछताना पड़े। श्रम और उद्योग करनेमें मन न लगेगा। जो उद्योग करेंगे, उनमें कठिनतासे सफलता मिलेगी। व्यसनों और अस्वाभाविक भोगोंमें वृद्धि। धन लाभके लिए १-२-३-१०-११-१६-२०-२१-२८-२६-३० ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ५-१३-२३ भी अच्छी रहेगी। विशेष व्यय

और हानिसे बच न सकेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। समाजमें मान बना रहेगा। किसी धार्मिक उत्सव या मंगल कार्यमें भाग लेंगे। संतानके लिए मास कष्टप्रद है। भोजन प्राप्तिमें असुविधा। १६-१७ ता० नेष्ट।

मिथुन

(क, की, कु, घ, छ, के, को, ह)

नवम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। भिन्न प्रकारकी दो प्रवृत्तियां जीवनमें कार्य करेंगी। एक ओर तो उत्साह और स्वबाहुवल पर विश्वासके साथ उद्योगमें लगकर नयी सफलताएं पाना चाहेंगे। प्रयत्न करने पर उल्लेखनीय सफलताएं मिल सकती हैं। दूसरी ओर, व्यसनों-विलासोंमें रुचि रहेगी जिसके कारण कुछ अस्वाभाविक भी घटित हो सकता है। १८ से २३ ता० के बीच आत्मविश्वास बढ़ा रहेगा। घर-बाहर विवादके अवसर आ सकते हैं। सहयोग देने वाले अनेक व्यक्ति मिलेंगे। धन लाभके लिए ८-६ या १०-१६-१८-२५-२६ ता० श्रेष्ठ हैं आशा है कि ६-१०-२०-२६ या ३० भी अच्छी रहेगी। नवीन वस्त्राभूषण-वैभव सम्पदाकी प्राप्ति। व्यापार को बढ़ानेके लिए ऋण लेनेको सोचेंगे। समाज में प्रभाव वृद्धि, मान और जनप्रियता, भ्रमण-मनोरंजनके अवसर प्राप्त होंगे। वैवाहिक सुखोंमें बाधाएं। हर्षदायक समाचार और पत्र। २१ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी इस मासको अच्छा नहीं कह सकते हैं। बौद्धिक उलझनें पूर्ववत् चलती रहेंगी। सामाजिक, व्यावसायिक या पारिवारिक समस्याएं आपके मनको अशांत बना देगी। घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आ सकते हैं। संघर्षों में विजयकी आशा बहुत कम है। जिस उत्साह से आप उद्योग कर रहे थे, वह बहुत घट जायगा। फिर भी यत्न करने पर सफलता मिलती रहेगी। व्यापारी है तो पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। परम्परागत सामान्य लाभ होता रहेगा, इस सम्बन्धमें ७-६-१५-१७-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। आर्थिक दबाव बना रहेगा। उत्सवादिमें सम्मिलनके अवसर प्राप्त होंगे। पत्नीसे अप्रत्यक्ष सेवा-सहयोगकी प्राप्ति होती रहेगी। परिवारके किसी सदस्यकी बीमारी। उत्तरार्द्ध में दौड़धूप। उदर विकारसे कष्ट। १८ ता० नेष्ट।

जनवरी—इस महीने सभी चारों पाप ग्रह नेष्ट स्थानोंमें है और तीनों शुभ ग्रह शुभ स्थानोंमें हैं। किन्तुपाप ग्रह वेधमुक्त हैं और शुभग्रह वेधग्रस्त हैं। अतः इस मासको अच्छा नहीं कह सकते। शुभफलोंकी संभावनाएँ तो दिखाई देगी किन्तु उनके वास्तविक रूप लेने में कठिनाइयां हैं। किसी अप्रिय घटनाकी सूचना भी मिल रही है। प्रयत्न करने पर सफलता मिलती रहेगी। मित्र और परिजन सहयोग देंगे। किसी निकट सम्बन्धीकी बीमारी। व्यापारकी रूपरेखा बदलनेकी संभावना उठ खड़ी होगी। धन लाभके लिए ३-४-५-११-१२-१३-२१-२२-२३-३०-३१ ता० श्रेष्ठ हैं, प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति, उत्तराधिकारादिसे धन-लाभ संभाव्य।

विशेष तथा अस्वाभाविक व्ययसे बच पाना कठिन होगा। उदर रोगसे कष्ट। उत्तरार्द्धमें दुर्बलता तथा थकानका अनुभव होगा। २४ ता० नेष्ट।

कर्क

(ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

नवम्बर—इस मासको आपके लिए अच्छा नहीं कह सकते हैं। शनि पूरे महीने और बुध अंतिम सप्ताहमें शुभ स्थितिमें रहेंगे। लेकिन जीवनको सुख-सुविधापूर्ण बनानेके लिए इतना पर्याप्त नहीं है। चारों ओरके वातावरणमें एक प्रकारकी घन्नता प्रतीत होगी। बार-बार बौद्धिक उलझनें आवेंगी। निकट सम्पर्क वालों से विवाद, ६-१४-२३ ता० में संयमसे काम लेना चाहिए। २५ ता० को राहु आपके व्यय स्थानमें प्रवेश करेंगे जो शुभ नहीं है। समस्याओंको भूलनेके लिए व्यसनों-विलासों का सहारा लेंगे। भोजन प्राप्तिमें असुविधा। लाभकी तुलनामें व्यय अधिक। धन लाभके लिए १-२-४ या ५-१०-१३-२२ ता० अच्छी हैं। ऋण संचित धनका सहारा लेना पड़ सकता है। व्यापारकी रूपरेखा बदलनेकी सोचेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। धैर्यपूर्वक सुसमयकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। १९ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास सामान्य अच्छा है। किन्हीं ठोस उपलब्धियोंकी आशा नहीं है, किन्तु परिस्थितियां आपके अनुकूल बन जायेंगी और नवीन आशा-विश्वासका उदय होगा। समुचित श्रम करने पर कार्यकारी और सामाजिक जीवनमें सफलताएं मिलती रहेंगी। शत्रु-बाधाओं पर विजय मिलेगी। बौद्धिक उलझनें शांत होंगी। अप्रत्यक्ष सहयोग देने वाले कई मित्र और परिजन मिल जायेंगे। व्यसनों-विलासोंमें रुचि रहेगी। किसी स्त्रीके कारण कोई अशोभन परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है। एक नीच व्यक्ति गुप्त शत्रुता करता रहेगा। धन लाभके लिए २-१०-१९-२९ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि १८-२८ भी अच्छी रहेंगी। विशेष व्यय होगा, १२ ता० चिन्तनीय है। चोरोंसे सावधान रहें। व्यापार की व्यवस्था सुधारनेका विचार करेंगे। वैवाहिक-पारिवारिक समस्याएं। खानपान-भ्रमण मनोरंजनके अवसर मिलेंगे। १५ या १६ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास संघर्षपूर्ण प्रतीत होगा। प्रायः वही स्थिति रहेगी जो गत कई मासोंसे चली आ रही है और आप जिससे परिचित हैं। एक अप्रिय घटना या समाचार का योग भी है। घर-बाहर कलह-वैमनस्यके अवसर आवेंगे, जिनसे नारी वर्गका सम्बन्ध अवश्य होगा। अस्वाभाविक भोगोंमें रुचि रहेगी। तृतीय स्थानमें बैठे-मंगल-शनि आपको उद्योग करनेकी प्रेरणा देंगे। धन लाभके लिए ६-७-१५-२५ ता० श्रेष्ठ हैं। किन्तु लाभकी तुलनामें विशेष व्यय और हानिके योग प्रबल है, ८-९-१० ता० चिन्तनीय हैं, चोरोंसे विशेष रूपसे सावधान रहें। व्यापारमें सुधारकी योजनाओं पर विचार करेंगे। समाजमें खान-पान और भ्रमण-मनोरंजनके अवसर मिलते रहेंगे। पत्नीके लिए मास कुछ कष्टप्रद है। दौड़धूप करनी ही पड़ेगी। १२ ता० नेष्ट।

सिंह

(म, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

नवम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्ध कुछ अधिक अच्छा है। आर्थिक और सामाजिक दृष्टिसे २ ता० उल्लेखनीय रहेगी। प्रथमार्द्धमें उत्साह पूर्वक उद्योग करेंगे किन्तु १७ ता० से एकाएक शिथिलता आ जायेगी। बौद्धिक उलझनें पूरे मास घेरे रहेंगी। बहुतसा समय व्यसनों-विलासोंमें व्यतीत होगा। कार्यकारी जीवनमें कुछ परिवर्तन करनेकी सोचते रहेंगे। २५ ता० को राहु आपके लाभ स्थानमें प्रवेश करके धन लाभका मार्ग डेढ़ वर्ष तक प्रशस्त करते रहेंगे। सफलता पानेके लिए ४ या ५-१३-२२ ता० अनुकूल हैं। धन लाभके लिए २-६-११-१४-२०-२३ तारीखें श्रेष्ठ हैं। विशेष व्यय और हानिसे बच पाना कठिन है। नयी व्यापारिक योजनाएं आरंभ करने का विचार मनमें आवेगा। समाजमें मान और जनप्रियतामें वृद्धि। उत्सवों-दावतों मंगल-कार्योंमें सम्मिलन। वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति। प्रेम संबंधमें सफलता। १७ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—ग्रह स्थितिको देखते हुए इस मासको आपके लिए अच्छा नहीं कह सकते हैं। सावधानीपूर्वक परम्परागत जीवनकी लीक पर चलते रहना ही श्रेयस्कर होगा। व्यसनों-विलासोंमें रुचि बढ़नेके संकेत मिल रहे हैं। घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आवेंगे। किसी स्त्रीके कारण अशोभन परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है। मन अशांत रहेगा। धन लाभके लिए २-४-१०-१२-१९-२१-२९-३१ ता० श्रेष्ठ हैं। व्यापारमें उतार-चढ़ाव आवेंगे, उसमें कुछ परिवर्तन करने और ऋण लेनेका विचार करेंगे। समाजमें मान और जनप्रियताकी कमी खटकेगी। भ्रमण-मनोरंजनके अवसर मिलते रहेंगे। पारिवारिक तथा कौटम्बिक समस्याएं। वैवाहिक सुखोंमें बाधाएं। संतानको कष्ट। कई सुन्दर स्त्रियोंकी ओर आकृष्ट होंगे, पर उनसे मित्रता न बन सकेगी। भोजन प्राप्तिमें असुविधाएं आवेंगी। दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहेगी। ६-१४-२४ ता० नेष्ट।

जनवरी—किन्हीं विशेष शुभ फलोंकी आशा भले ही न हो, पर यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। कार्यकारी जीवनकी प्रगतिमें अवरोध रहेंगे और कुछ उतार-चढ़ाव भी आवेंगे। फिर भी उद्योगके प्रति उत्साह बना रहेगा जिसमें १४ ता० से महत्वपूर्ण वृद्धि होगी। उत्तरार्द्धमें समस्याएं सुलझेंगी और बौद्धिक उलझनें घटेंगी। दो मित्र और सम्बन्धी विरोध करेंगे। मित्रोंसे सहयोगकी आशा नहीं है। धन लाभके लिए ७-९-१४-१५-१७ या १८ २४-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, संभव है कि ८-१६-२६ भी अच्छी रहें। ९ ता० को आकस्मिक लाभ हो सकता है। व्यापार को सुधारनेके लिए ऋण लेनेका विचार करेंगे। समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी और भ्रमण मनोरंजनके अवसर प्राप्त होंगे। निकट सम्पर्क वालोंसे कलह-विवाद। पत्नीको कष्ट। दौड़-धूप अवश्य। २-१० या ११-२०-२९ ता० नेष्ट।

कन्या

(टो, पा, पी, पू, ष, ठ, पे, पो)

नवम्बर—यह मास पर्याप्त अच्छा है और

सुधारोंकी सूचना देता है। प्रारम्भिक दो दिन अनेक प्रकारसे आनंदविनोदपूर्ण रहेंगे। १६ या १७ ता० को आपमें नया उत्साह जाग उठेगा और मनोयोग पूर्वक उद्योग करने लगेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी, कामनाएं पूर्ण होंगी। शत्रु-बाधाओं पर विजय। सहयोग देने वाले अनेक मित्र और परिजन मिलेंगे। धन लाभके लिए ८-९-१०-१६-१७-१८-२५-२६-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २-११-२०-२९ भी अच्छी रहेंगी, आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे। ३-१२-२१ ता० में सावधान रहें। व्यापारकी प्रगतिके लिए नयी योजनाएं आरंभ करेंगे। समाजमें प्रभाववृद्धि। उत्सवों-दावतों-मंगल कार्योंमें सम्मिलन। घरमें भी कोई उत्सव होनेका योग है। पत्नीसे सहयोग तथा वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति। छोटी-छोटी यात्राएं होगी। १४ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास पर्याप्त अच्छा है। यदि आप सचेत रहें और समुचित श्रम तथा उद्योग करें तो इसे उपलब्धियोंका और स्मरणीय मास बना सकते हैं। चली आ रही समस्याओंका समाधान होगा। आनंद-विनोद में दिन बीतेंगे। कामनाएं पूर्ण होंगी। निश्चिन्ततापूर्ण स्थितिमें पहुँच जायेंगे। एक नए जीवनका शुभारंभ हो सकता है। व्यापार बढ़ेगा और फैलेगा। स्थायी साधन तथा कई अन्य रास्तोंसे धन लाभ, इस संबधमें ५-६-१३-१४-२२-२३-२४-२५ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ९-१७-२७ भी अच्छी रहेगी, लाभ स्रोतका विकास, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा, कोषकी वृद्धि। समाजमें मान और जनप्रियता। खान-पान-भ्रमण मनोरंजनके अवसर, उत्सवादिमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार और पत्र। घरमें मंगल-कार्य होनेके योग हैं। विविध वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति। एक प्रेमाकर्षणमें मन लगा रहेगा। यात्रा अवश्य। ११ या १२ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास पर्याप्त अच्छा है। दीर्घकालसे चली आ रही समस्याएं और चिंताएँ दबी हुई रहेंगी। दशम स्थानमें स्थित राहु कर्मशक्तिमें वृद्धिके साथ अनैतिक कामोंमें रुचि भी देगा। दो महत्वपूर्ण व्यक्ति सहयोग देंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। कामनाएं पूर्ण होंगी। व्यसनों-विलासों-मनोरंजनोंमें पर्याप्त समय नष्ट होगा। धन लाभके लिए १-२-३-१०-११-१९-२०-२१-२८-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ५-१३-२३ भी अच्छी रहेगी। आकस्मिक लाभ और कोषकी वृद्धि संभाव्य। नयी व्यापारिक योजनाओं पर विचार करेंगे। समाजमें मान और जनप्रियता खान-पान, भ्रमण, मनोरंजनके अवसर प्राप्त होंगे। उत्सवों, दावतोंमें सम्मिलन। हर्षदायक समाचार और पत्र। घरमें कोई मंगल कार्य होगा। वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति। ८ ता० नेष्ट।

तुला

(रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

नवम्बर—यह मास पर्याप्त अच्छा है। किसी चमत्कारिक शुभ फलकी प्राप्ति भले ही न हो, पर आनंद-विनोद और सम्पन्नतामें दिन बीतेंगे। पहली तारीखसे ही जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा, शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायेगी और मासांत तक समाधान पूर्ण स्थितिमें पहुंच

जायेंगे। उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि। उद्योग करनेमें भी मन लगेगा। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी, कामनाएं पूर्ण होंगी। २५ ता० को राहु आपके धर्म स्थानमें प्रवेश करेंगे, सम्भव है कि तब आपकी प्रवृत्ति अनैतिकता की ओर जाने लगे। धन-लाभके लिए १-२-६-१०-११-१८-१९-२०-२७-२८-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं, लाभ-स्रोतका विकास। व्यापारकी कार्य-प्रणालीमें सुधार और प्रगति। समाजमें मान और जन-प्रियता, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार और पत्र। पत्नीसे सहयोग तथा पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति। छोटी सुखद यात्राएं। १२ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—अनेक शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास किसी अप्रिय घटनाकी सूचना देता है। कुछ समयके लिए विचलितसे हो जायेंगे। यह अवश्य है कि परिस्थितियोंका सामना दृढ़ता और शक्ति पूर्वक करेंगे। गुप्त शत्रु सक्रिय रहेंगे। मित्रों-परिजनोंसे सहयोग की आशा बहुत कम है। तुलनात्मक दृष्टिसे उत्तरार्द्ध कुछ अधिक अच्छा है। नितान्त व्यक्तिगत दृष्टिकोणसे देखेंगे तो अपनेको बहुत कुछ सुरक्षित पावेंगे। धन-लाभके लिए ७-८-९-१६-१७-२६-२७ ता० श्रेष्ठ हैं। कठिन आर्थिक दबावका अनुभव होता रहेगा। विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे। किसी नयी योजना में पूंजी लगाना प्रारम्भ करेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी। भ्रमण मनोरंजनके अवसर मिल जायेंगे। किसी दूरके सम्बन्धीकी गम्भीर बीमारी या मृत्यु। ९ या १० ता० नेष्ट।

जनवरी—आपके जीवनमें कुछ जटिल समस्याएं दीर्घकालसे चली आ रही हैं जिनके आप अभ्यस्त हो चुके हैं। उन्हें उचितानुचित उपायों द्वारा दूर करना चाहेंगे पर वे दूर न होंगी। एक द्विविधापूर्ण स्थितिमें रहेंगे और कोई ठोस कदम न उठा सकेंगे। प्रथमार्द्धमें उत्साह रहेगा किन्तु १४ ता० से शिथिल पड़ जायेंगे। उत्तरार्द्धमें आलस्य और थकान। शुभाशुभ स्वप्न दिखाई देंगे। गुप्त शत्रु सक्रिय रहेंगे। दो व्यक्ति अच्छा सहयोग देंगे। जीवन में सरसता भी रहेगी। आर्थिक दबाव बना रहेगा और बढ़ेगा, १४-१५-१६ ता० चिन्तनीय धन-लाभकी दृष्टिसे ३-४-५-११-१२-१३-२१-२२-२३-३०-३१ ता० श्रेष्ठ हैं। पारिवारिक सुखोंमें वृद्धि। घरमें उत्सव या मंगल कार्य। सामान्य वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति। समाजमें जनप्रियता, प्रियजन समागम। एक अप्रिय समाचार सुनाई देगा। छोटी यात्राएं। ६ ता० नेष्ट।

वृश्चिक

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यु)

नवम्बर—यह मास सामान्य अच्छा है। उसमें भी पहले दो दिन विशेष अच्छे रहेंगे। पृष्ठ-भूमिमें समस्याओं और आशंकाओंके होते हुए भी उत्साह और आत्मविश्वासके साथ उद्योग करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। शत्रु-बाधाओं पर विजय। कामनाओंकी पूर्ति। यह ध्यान रखें कि जोश-क्रोध या जल्द-बाजीमें कोई ऐसा काम न कर बैठें कि बादमें पछताना पड़े। दुःस्वप्न दिखाई देंगे। व्यसनोंमें वृद्धि। पर्याप्त धन-लाभ, इस सम्बन्धमें २-४ या ५-११-१३-२०-२२-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं,

आशा है कि ६-१४-२३-२७ सभी अच्छी रहेंगी, आकस्मिक लाभ। किसी शुभ या मगल कार्यमें व्यय। व्यापारको बढ़ाने या सुधारने में पूंजी लगावेंगे। समाजमें प्रभाव वृद्धि, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, सुसमाचारोंकी प्राप्ति। पत्नीसे विविध वैवाहिक-पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति। अच्छा स्वास्थ्य। उत्तरार्द्धमें दिनचर्यामें व्यवधान। १० ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास पर्याप्त अच्छा है और उपलब्धियोंकी सूचना देता है। पहली या दूसरी तारीखसे जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा, शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायेगी और २९ या ३० ता० को किसी सावधानपूर्ण स्थितिमें पहुंच जायेंगे। मासके प्रथम तीन दिन उल्लेखनीय और स्मरणीय हो सकते हैं। उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि होगी। अपने उज्ज्वल भविष्यकी नींव रख सकते हैं। धन लाभके लिए २-३-९-१०-११-१७-१९-२०-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ६-१४-१५-२३-२४-२५ भी अच्छी रहेगी, नवीन लाभ स्रोत की स्थापना। किन्हीं शुभ कार्योंमें विशेष व्यय होगा। नयी योजनाओंके साथ व्यापार बढ़ेगा और फैलेगा। समाजमें जनप्रियता, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार और पत्र। पत्नीसे पारिवारिक-वैवाहिक सुखों की प्राप्ति। संतानको कष्ट। ४-१२-२१-३१ ता० नेष्ट।

जनवरी--यह मास बहुत अच्छा है। कार्यकारी जीवन और सामाजिक जीवन दोनों के लिए समय अच्छा है। उत्साहपूर्वक उद्योग करेंगे। उत्साह और स्फूर्तिमें १४ ता० से चमत्कारिक वृद्धि होगी। प्रयासोंमें सफलता मिलती रहेगी। कोई उल्लेखनीय सफलता या विजय भी मिल सकती है। कामनाएं और महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होंगी। अब यह आप पर निर्भर है कि इस श्रेष्ठ ग्रहस्थितिसे कितना लाभ उठाते हैं। धन लाभके ७-१४-१५-२४-२५ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ५-८-१३-१६-२३-२६ भी अच्छी रहेगी-लाभ स्रोतका विकास होगा, आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। समाजमें मानप्रतिष्ठाकी प्राप्ति। उत्सवादिमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार और पत्र। व्यापार बढ़ेगा, फैलेगा और चमकेगा। पत्नीसे सेवा-सहयोग तथा वैवाहिक पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति। छोटी सुखद यात्राएं। ४-८-३१ ता० नेष्ट।

धनुः

(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा भे)

नवम्बर—यह मास आपके लिए अच्छा हो सकता है, यदि आप विवेकपूर्वक चलें और कुशलतापूर्वक इसका सदुपयोग करें। तुलनात्मक दृष्टिसे प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है। संभव है कि आपकी रुचि अनैतिक कर्मोंकी ओर रहे अथवा आलस्यमें पड़कर अपनी कर्मशक्तिको घटनेका अवसर दें। जिस प्रगतिके योग गत मासोंमें आरम्भ हुए हैं उन्हें आगे बढ़ाना आपका धर्म है। असावधान रहने पर अयश मिल सकता है और कलह-विवादके अवसर आ सकते हैं। एक नीच कुल की स्त्रीकी ओर आकर्षण। धन-लाभके लिए ३-४-५-८-१२-१३-१६-२१-२२-२५ ता० श्रेष्ठ है। आशा है कि २-११-२०-२९ या ३० भी अच्छी रहेगी। विशेष व्यय और हानिसे बच पाना कठिन है। व्यापारमें पूंजी लगावेंगे।

समाजमें मान और जनप्रियता । सुखोपभोगके अवसर । वैवाहिक जीवनमें अप्रत्याशित अवरोध आवेंगे । दुःस्वप्न दिखाई देंगे । यात्राकी संभावना । ६ ता० नेष्ट ।

दिसम्बर—यह मास सामान्य अच्छा, किन्तु महत्त्वहीन जैसा है । एक सुरक्षित स्थितिमें रहते हुए भौतिक सुखोंका आनंद लेनेकी प्रवृत्ति रहेगी । संभव है कि किसी नीच और चालाक स्त्रीके आकर्षणमें पड़कर अपना समय नष्ट करते रहें । इस कारण विवाद भी उत्पन्न हो सकता है । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी । जोश-क्रोध या जल्दबाजीमें कोई ऐसा काम न करें कि बादमें पछताना पड़े । बढ़े हुए व्ययको घटानेका प्रयत्न करेंगे । धन-लाभके लिए २-५-१०-१३-१६-२२-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ६-१७-२७ भी अच्छी रहेगी, आकस्मिक लाभ होंगे, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदाकी प्राप्ति । व्यापारके बढ़ाने या सुधारनेका प्रयत्न करेंगे । समाजमें मान और जनप्रियता, उत्सवोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार और पत्र । वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति । पत्नीके लिए यह मास कुछ कष्टप्रद है । संतान-सुख । उत्तराद्ध में दौड़धूप । ६ ता० नेष्ट ।

जनवरी—यह मास पर्याप्त अच्छा है लेकिन ऐसा लगता है कि आपकी रुचि अनैतिक कामों और अस्वाभाविक विलासोंकी ओर रहेगी । उत्साह और आत्मविश्वासके साथ उद्योग करेंगे । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी । कामनाएं पूर्ण होंगी । स्थायी साधन और कई अन्य रास्तों से धन-लाभ, इस सम्बन्धमें १-८-९-१०-१६-१७-१८-१९-२६-२७-२८ ता० श्रेष्ठ है, आशा है कि ३-५-११-१३-२१-२३-३० भी अच्छी रहेगी । आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदाकी प्राप्ति, कोषकी वृद्धि संभाव्य । व्यापारका क्षेत्र विस्तृत होगा । समाजमें मान और जनप्रियता, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, हर्षदायक समाचार और पत्र । पत्नीसे सहयोग और गार्हस्थिक सुखोंकी प्राप्ति होगी । किसी मित्र या सम्बन्धी के यहां कोई मंगल कार्य । प्रेम सम्बन्धमें सफलता । २-२९ ता० नेष्ट ।

मकर

(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

नवम्बर—गत मासोंकी तुलनामें यह मास अच्छा है और कार्यकारी जीवनमें सुधारोंकी सूचना देता है । इन सुधारोंसे आपकी व्यक्तिगत स्थिति तो न बदलेगी, पर चारों ओरका वातावरण बदल जायेगा । उद्योग करनेमें रुचि लेंगे । उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि होगी । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी । यह संतोष का विषय है कि २५ ता० को राहु आपके छठे स्थानमें प्रवेश करके शत्रु-बाधाओंका शमन करने लगेंगे । आप यह नोट कर लें कि लगभग एक साल बाद अति-श्रेष्ठ समय आने वाला है और कठिनाइयोंके बीचमें उस को तैयारी आपको अभीसे आरम्भ कर देनी चाहिए । संघर्षों-विवादोंमें उलझना आपके लिए हितकर न होगा । लाभ-स्रोतका विकास । धन-लाभके लिए ६-१०-१७-१८-२६-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २-११-२०-२९ या ३० भी अच्छी रहेगी । व्यापारमें सुधार, उसमें पूंजी भी लगावेंगे । चोट-चपेट सम्भाव्य । दौड़धूप अवश्य । ६ ता० नेष्ट ।

दिसम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। किसी अप्रिय घटनाकी संभावना भी प्रतीत होती है जो मासमें किसी भी दिन घटित हो सकती है। तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है। अपने महत्त्वपूर्ण कार्य इसी भागमें बना लेने चाहिए। कार्यकारी जीवनमें व्यवधान आवेंगे। श्रमकी भावना मनमें रहेगी। किन्तु समुचित उद्योग न कर सकेंगे। बीच-बीचमें आलस्य और थकान अनुभव। राशि लग्नमें बैठा हुआ शुक्र सुखोपभोग और आनन्द-विनोदके अवसर प्रदान करता रहेगा। विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे। ऋण या संचित धनका सहारा लेना पड़ सकता है। व्यापारमें पूंजी लगावेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए। भविष्यकी सूचना देने वाले शुभ स्वप्न दिखाई देंगे। किसी प्रियजनकी गम्भीर बीमारी। ऐसेमें बीच-बीचमें वैवाहिक सुख मिलते रहेंगे। ३-३० ता० नेष्ट।

जनवरी—इस महीने केवल शुक्र ही शुभ फल देनेकी स्थितिमें है। अतः यह मास संघर्षपूर्ण है। जहां तक नेष्ट फलोंका सम्बन्ध है, वे कई मासोंसे चले आ रहे हैं और उनके आप अभ्यस्त हो चुके हैं। धर्माधर्मके बीच मन भटकता रहेगा। दुःस्वप्न दिखाई देंगे। आलस्य और थकानका अनुभव। आर्थिक दबाव बराबर रहेगा। विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे। ४-१३-२२-३१ चिन्तनीय हैं। स्थायी साधन तथा एकाध अन्य रास्तोंसे सामान्य धन लाभ, इस सम्बन्धमें २-३-१०-११-२०-२१-२६-३० ता० श्रेष्ठ है, सम्भव है कि ५-१३-२३ भी अच्छी रहें। व्यापारमें कुछ मौलिक परिवर्तन करनेका विचार करेंगे। नौकरीमें पदवनतिका भय। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। अयश या अपवाद मिल सकता है। सुखोपभोग तथा आनंद-विनोदके अवसर मिलते रहेंगे। कष्टप्रद यात्राएं। २६ ता० नेष्ट।

कुम्भ

(गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा)

नवम्बर—यह मास निश्चित रूपसे अच्छा है। प्रयत्न करके इसे और भी अच्छा बना सकते हैं। इसके अच्छे होनेकी सूचना आपको २ ता० को ही मिल जायेगी। दीर्घकालसे चली आ रही नीरसता और अकर्मण्यतामें कमी आ जायेगी और उज्ज्वल भविष्यके निर्माणमें दत्तचित हो सकेंगे। श्रम और उद्योग करनेमें रुचि बढ़ेगी। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। कामनाएं पूर्ण होंगी। यह याद रखें कि आप आलस्य, कलह-विवाद या अलौकिक प्रेममें पड़ सकते हैं। इन संभावनाओंसे बचना आपके हाथमें है। लाभ-स्रोतका विकास, धनलाभके लिए ६-१०-१७-१८-२६-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २-११-२०-२६ या ३० भी अच्छी रहेंगी। व्यापार बढ़ेगा और फैलेगा। समाजमें मान और जनप्रियता, उत्सवों, कार्यक्रमोंमें सम्मिलन, सुसमाचार। वैवाहिक सुखोंमें बाधाएं। ६-१४-२३ ता० संघर्षपूर्ण हैं। उदर विकारसे कष्ट। ३-४ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। व्यक्तिगत रूपसे घिरावपूर्ण स्थितिमें रहते हुए श्रम और उद्योग करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। मित्र और प्रियजन सहयोग देंगे।

कामनायें पूर्ण होंगी । आपका मन नैतिक सुधार तथा धर्मकी ओर जायेगा । साथ ही एक मायाविनी स्त्रीका आकर्षक भी रहेगा। उसके कारण या किसी अन्य कारणसे बौद्धिक उलझनें आवेंगी । जहां तक नेष्ट फलोंका सम्बन्ध है, चोट-चपेट लग सकती है और किसी कारण अपमानित भी हो सकते हैं। धन लाभके लिए ५ से ९, १३ से १७ और २२ से २७ ता० श्रेष्ठ है, लाभ-स्रोतका विकास, आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। किसी शुभ कार्यमें व्यय होगा । उत्सवादिमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार और पत्र। शुभ स्वप्न दिखायी देंगे। यद्यपि पत्नी और सन्तान के लिए मास कष्टप्रद है, पर पत्नीसे सेवा-सहयोग मिलते रहेंगे। दौड़धूप अवश्य। १९ ता० नेष्ट ।

जनवरी—वृहस्पति और शुक्र पूरे महीने और सूर्य प्रथमार्द्धमें अनुकूल स्थानोंमें रहेंगे। स्पष्ट ही यह मास मिश्रित फल वाला है। एक दो अप्रिय घटनाओंकी संभावना भी है पर आशा है कि स्थिति अधिक बिगड़ेगी नहीं। शुभ स्वप्न दिखायी देंगे जो इस बातके सूचक होंगे कि अदृश्य शक्तियोंकी आप पर कृपा है। दो सज्जन व्यक्ति भरपूर सहयोग देंगे। दो दुष्ट व्यक्ति आपके विरुद्ध रहेंगे । कारोबार में पूंजी लगावेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे बहुत सावधान रहना चाहिए। आर्थिक दृष्टिसे प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है। धन-लाभ के लिए १-२-५-१०-११-१३-१९-२०-२३-२८-२९ ता० श्रेष्ठ हैं। किसी शुभ या मंगल कार्य पर व्यय होगा। २४-२५ ता० चिन्तनीय है। किसी सम्बन्धी या स्वयं आपको शारीरिक कष्ट मिल सकता है। एक अप्रिय या शोक समाचार सुनायी देगा । वैवाहिक सुखोंमें बाधाएं। १४-१५ ता० नेष्ट।

मीन

(दी, दु, थ, झ, दे, दो, च, चा, ची)

नवम्बर—यद्यपि यह मास सुधारोंकी सूचना देता है पर आपको ऐसा लगेगा कि जैसे जीवनमें संघर्ष ही भरे हैं। व्यक्तिगत रूप से एक घिराव जैसी स्थितिमें रहेंगे और व्यसनों व विलासोंमें मन बहलाना चाहेंगे। छठे स्थानमें स्थित मंगल शत्रुबाधाओं पर विजय देनेमें सक्षम है। पर सम्भव है कि आप अपना बहुत सा समय आलस्यमें बिता दें। कलह-वैमनस्य के अवसर आ सकते हैं। अंतिम सप्ताहमें आप की रुचि, श्रम और उद्योगमें बढ़ेगी और जीवन में गति आ जायेगी। आर्थिक दबाव चलता रहेगा किन्तु धन लाभकी भी संभावनाएं दिखाई देने लगेगी। धन लाभके लिए ४ या ५ १३-२२ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ८-१९-२५ भी अच्छी रहेंगी, समाजमें जनप्रियताकी कमी खटकेगी। किसी उत्सव या कार्यक्रममें भाग लेंगे, वैवाहिक सुखोंमें बाधाएं। गुदा दुर्बलता का अनुभव। उदर-विकार। अनावश्यक दौड़-धूप करनी पड़ेगी। १-२८ ता० नेष्ट ।

दिसम्बर—यह मास आपके लिए मिश्रित फल वाला है। व्यक्तिगत रूपमें एक घिरावपूर्ण स्थितिमें रहेंगे और जीवनमें आने वाली परि-स्थितियों तथा घटनाओंको, बहुत कुछ, एक मूक दर्शककी भाँति असहाय हो देखा करेंगे। प्रथमार्द्धमें श्रम और उद्योग करनेके अवसर बहुत कम मिलेंगे तथा आपका मन भी उधर

नहीं लगेगा । उत्तरार्द्ध में कर्म-शक्तिमें बहुत वृद्धि होगी और तब प्रयत्न करने पर सफलताएं भी मिलेंगी । यदि आप व्यसनों-विलासों और कलह-विवादसे बच सके तो इस मासको पर्याप्त अच्छा बना सकते हैं । धन-लाभके लिए २-५-६-१०-१३-१७-१६-२२-२७-२६ ता० श्रेष्ठ हैं । आशा है कि १५-१८-२५-२८ भी अच्छी रहेंगी । व्यापारमें कुछ थोड़ा सुधार उत्तरार्द्ध में होगा । भ्रमण-मनोरंजन और उत्सवादिमें सम्मिलनके अवसर मिलेंगे । पारिवारिक समस्याएं आवेंगी । किसी प्रियजनसे विछोह । उदर विकार, चोट-चपेट संभाव्य । २५ या २६ ता० नेष्ट ।

जनवरी—यह मास मिश्रित फल वाला है । उत्साह और आत्मविश्वासपूर्वक उद्योग करेंगे । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी । कार्यकारी जीवनमें प्रगति होगी । कामनाएं पूर्ण होंगी । साथ ही अस्वाभाविक भोगोंमें रुचि बढ़ेगी । घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आवेंगे । पारिवारिक समस्याओं और मानसिक अशांतिके योग भी हैं जो ६-१७ या १८-२७ ता० में बढ़ सकते हैं । धन लाभके लिए ५-६-७-१३-१४-१५-२३-२४-२५ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ३-११-२१-३० भी अच्छी रहेगी, आकस्मिक लाभ, लाभ-स्रोतका विकास । व्यापार बढ़ेगा और फैलेगा । पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिए । समाजमें प्रभाव, वृद्धि, मान और जनप्रियताकी प्राप्ति, उत्सवादिमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार और पत्र । १४ ता० को शुभ घटनाके योग हैं । पत्नीको कष्ट । २२ ता० नेष्ट ।

जैन-तन्त्र : एक समीक्षात्मक सर्वेक्षण

[डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी, आचार्य, एम० ए०, पी-एच०-डी०-डी०-,लिट्०]

१. मानक-परम्परा

भारतीय धर्मोंमें 'वैदिक, जैन एवं बौद्ध' धर्मकी तीन धाराएं सुप्रसिद्ध हैं और ये तीनों अपने-अपने वाङ्मयके रूपमें निरन्तर बहती हुई समस्त जन-जीवनको आप्यायित कर रही हैं। विश्वके विशिष्ट धर्मोंमें अन्य प्रधान धर्मों के समान ही जैन धर्मने भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है तथा चिन्तन एवं मननकी सभी दिशाओंमें जैन-साहित्यने पर्याप्त प्रसार पा लिया है।

जो साहित्य गतिशील होता है उसमें प्राणवत्ता स्पन्दन करती है, आदान-प्रदानके द्वार खुले रहते हैं तथा एकतामें अनेकताका विकास होता रहता है। जैन वाङ्मयमें भी इन्हीं गुणोंके कारण व्यापक तत्त्वोंका समावेश परिलक्षित होता है। द्वादशांग एवं उपांगोंसे अनुप्राणित आगमोंमें वे सभी तत्त्व सहज उपलब्ध हो जाते है जिनका परिज्ञान इहलोक तथा परलोक दोनोंके लिये उपादेय होकर चरम लक्ष्य तक पहुंचानेमें सहायक सिद्ध होता है।

अनेकविध धार्मिक एवं उपासनामूलक शास्त्रोंकी सुदीर्घ शृंखलामें 'जैन-तन्त्र' साहित्य भी विपुल परिणाममें प्राप्त होता है जिसमें लघुसे लघु और महान्से महान् प्रयोगविधानों की शास्त्रीय परिपाटीका विधिवत् उल्लेख हुआ है। साथ ही ऐसे भी अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं जिनमें साधकोंने अपनी साधना के बल पर बड़े-से-बड़े कार्योंको सिद्ध करके एक 'मानक-परम्परा' स्थापित की। लौकिक और लोकोत्तर चरित्रोंके कारण जन-मनको जैन-धर्मके प्रति आकृष्ट करने, जन-जीवनमें व्याप्त अश्रद्धाको उखाड़ फेंकने तथा चिर-स्थिर धर्मनिष्ठा, शास्त्रनिष्ठा गुरुनिष्ठा आदिको बनाये रखनेमें तन्त्र-शास्त्रका आश्रय जैन-साधकोंका कभी-कभी एक अमोघ अस्त्र भी बना है तो उपासना-काण्डमें अन्य धर्मोंके समान ही जैन धर्ममें भी तन्त्रशास्त्रके सभी अंग-उपांग समाहृत हुए हैं।

२. सम्प्रदायगत शाखा-प्रशाखाएं

जब कोई बीज अंकुरित होता है तो वह कालक्रमसे पल्लवित, पुष्पित और फलित होता हुआ, शाखा-प्रशाखाओंसे व्याप्त होकर एक महान् वृक्षके रूपमें परिणत हो जाता है। ऐसे वृक्षकी शाखा-प्रशाखाओंका भी अपना एक स्वतन्त्र अस्तित्व धीरे-धीरे निखरता रहता है। जैन धर्ममें भी इसी प्रकार सम्प्रदायगत न्यूनाधिक-मान्यताओंके आधार पर कुछ शाखा-प्रशाखाएं स्थिर हुई हैं, जिनका संक्षिप्त विचार इस प्रकार है।

प्रमुख रूपसे '**१. दिगम्बर, २. श्वेताम्बर एवं ३. स्थानकवासी**' के रूपमें इस धर्मकी तीन प्रसिद्ध शाखाएं हैं जिनमें प्रथम दो मन्दिर एवं मूर्तिको मानते हुए, आगमोंकी कुछ न्यूनाधिक मान्यताके कारण पार्थक्य रखती हैं जबकि तीसरी शाखा मन्दिर-मूर्तिको नहीं

मानती है। समान सिद्धान्त एवं आस्थाके रहते हुए भी कतिपय शास्त्रीय दृष्टिकोणसे उद्‌भूत वैमत्यके कारण, क्रियाओंकी पद्धतिगत भिन्नता के कारण एवं यत्र-तत्र तर्क-वितर्कोपपादित वैचारिक विविधताके कारण और भी कुछ प्रशाखाएं आज जैन समाजमें पुष्ट हो रही हैं। किन्तु सन्तोषका विषय यह है कि सभीकी दृष्टि—'नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत्' की तरह एकलक्षी ही है।

एक सुदीर्घकालसे चली आ रही आचार्य परम्पराके द्वारा समय-समय पर समाजको संघटित करनेके लिये किये जाने वाले प्रयासों के फलस्वरूप 'गच्छ' बने। यतियों और भट्टारकोंने अपने दल तैयार किये और स्रावकों में भी ऐसे अच्छे विधिज्ञोंका समुदाय सन्नद्ध हुआ जिसके कारण छोटी-बड़ी अनेक प्रशाखाएं कर्मरत हुई एवं अन्यान्य स्थापनाओंके साथ ही ग्रन्थ-निर्माण-प्रक्रियामें भी पीछे नहीं रहीं। यह भी एक कारण तन्त्र-शास्त्रकी प्रवृद्धिमें सहयोगी बना और जैसा जिसने सुना, देखा और समझा—उसे पुस्तकारूढ़ करनेमें सकोच नहीं किया।

३. 'तन्त्र' : शब्दार्थ, परिभाषा और आयाम—

तन्त्र शब्दके अर्थ बहुत विस्तृत हैं, उनमेंसे "सिद्धान्त, शासन-प्रबन्ध, व्यवहार, नियम, वेदकी एक शाखा, शिव-शक्ति आदिकी पूजा और अभिचार आदिका विधान करने वाला शास्त्र, आगम कर्मकाण्ड-पद्धति और अनेक उद्देश्योंका पूरक उपाय अथवा युक्ति" प्रस्तुत विषयके सम्बन्धमें महत्त्वपूर्ण हैं।

व्युत्पत्तिकी दृष्टिसे—

१. **तन्त्रं कुटुम्बकृत्ये च सिद्धान्ते चौषधोत्तमे।**
प्रधाने तन्तुवाये च शास्त्रभेदे परिच्छदे॥
(क्रमशः...)

१. तननं तन्त्रम्।
२. तन्यते अनेनेति तन्त्रम्।
३. तन्त्रणं तन्त्रम्।
४. तन्त्रयते अनेनेति तन्त्रम्।
५. तनोति त्रायते च इति तन्त्रम्।

इन व्युत्पत्तियोंमें 'तनु—विस्तारे' 'तत्रि-धारणे' और तन्—पूर्वक 'त्रैङ्-पालने' धातुओंका प्रयोग हुआ है। वैसे यह शब्द 'तन्' और 'त्रै' इन दो धातुओंसे बना है, अतः 'विस्तारपूर्वक तत्त्वको अपने अधीन करना' यह अर्थ व्याकरण की दृष्टिसे स्पष्ट होता है, जबकि 'तत्' पदसे प्रकृति और परमात्मा तथा 'त्र' से स्वाधीन बनानेके भावको ध्यानमें रखकर 'तन्त्र' का अर्थ—'देवताओंके पूजा आदि उपकरणोंके प्रकृति और परमेश्वरको अपने अनुकूल बनाना' होता है। तथा परमेश्वरकी उपासनाके लिए जो उपयोगी साधन हैं वे भी 'तन्त्र' ही कहलाते हैं। इन्हीं सब अर्थोंको ध्यानमें रखकर शास्त्रों में तन्त्रकी परिभाषा दी गई है—

सर्वेऽर्था येन तन्यन्ते त्रायन्ते च भयाज्जनान्।
इति तन्त्रस्य तन्त्रत्वं तन्त्रज्ञाः परिचक्षते॥

अर्थात्—जिसके द्वारा सभी मन्त्रार्थों—अनुष्ठानोंका विस्तार-पूर्वक विचार ज्ञान हो तथा जिसके अनुसार कर्म करने पर लोगोंकी भयसे रक्षा हो, 'तन्त्र' है—तन्त्र-शास्त्रके मर्मज्ञों का यही कथन है।

'कामिक-आगम' तन्त्रान्तर पटलमें भी—

तनोति विपुलानर्थान् तत्त्वमात्रसमन्वितान्।
त्राणं च कुरुते यस्मात् तन्त्रमित्यभिधीयते ॥

कहा गया है। जिसका सारांश भी 'तत्त्व-पूर्ण' विपुलार्थोंका विकास एवं संरक्षण ही 'तन्त्र' की परिभाषा व्यक्त करता है।

श्रुतिशाखान्तरे हेलावुभयाथ-प्रयोजने।
इति कर्त्तव्यतायां च ... ... ॥

—मेदिनी कोश

जिस प्रकार 'तन्त्र' शब्द अपनेमें अनेक अर्थोंको धारण करता है उसी प्रकार तन्त्र-शास्त्रका आयाम भी अति विस्तृत है। इसमें 'तनन और त्राण' धर्म रूप तत्त्वोंका समावेश होनेसे अन्तर्दृष्टि, दिव्यदृष्टि और दूरदृष्टि सम्पन्न ऋषियों और मनीषियोंने लोक-कल्याण-कारी सभी विषयोंका तन्त्रमें प्रवेश माना है।

प्रमुख रूपसे तन्त्रके—१. ज्ञान और २. विज्ञान, ऐसे दो भेद हैं तथा इनके भी प्रत्येकके दो-दो प्रभेद होते हैं। यथा—ज्ञानके—१. उपासनारूप बहिर्याग तथा २. अन्तर्याग। विज्ञानके—१. मनोविज्ञान रूप मन्त्र-शास्त्र और २. कर्मविज्ञानरूप और चिकित्सा शास्त्र। बहिर्याग आचारशास्त्रका अनुगमन करता है तो अन्तर्याग योगशास्त्रका। मन्त्रशास्त्र अध्यात्मशास्त्रका पोषक है तो चिकित्साशास्त्र जीवनशास्त्रका। इस प्रकार तन्त्रमें सभी सुसाध्य बातोंका संग्रह होता है।

साधारण रूपसे तन्त्रकी परिधिमें—१. मन्त्र, २. यन्त्र, ३. तन्त्र (क्रिया), ४. योग और ५. स्तोत्र, पांच अंग ग्राह्य हैं। अन्य प्रकारसे १. गीता, २. सहस्रनाम, ३. स्तव, ४. कवच और ५. हृदयको पंचांग कहा गया है जबकि अन्यत्र १. पटल, २. पद्धति, ३. कवच, ४. सहस्रनाम तथा ५. स्तोत्रको पंचांग कहा है।

जैसे—१. श्रद्धा, २ धैर्य, ३. गुरु भक्ति और ४. इष्ट भक्तिके साथ स्थान, मन, द्रव्य तथा क्रिया शुद्धि पूर्वक आसन, आचार, प्राणक्रिया, अर्चना, मुद्रा, जप, होम, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण-भोजन, स्तुतिपाठ, ध्यान आदि भी तन्त्रके ही आयाममें आते हैं तथा तन्त्रके नामसे व्यवहृत विभिन्न प्रक्रियाएं—"मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणी आदि साधन, रसायन कर्म, इन्द्रजाल, जयवाद, बाजीकरण, भूतग्रहादि वारण, भय निवारण, विष प्रतीकार, अभिषेक, कंकण, कवच, पट्ट, यन्त्र, रत्न, औषधि, फल, कपर्दिका, शंख, रुद्राक्ष, श्वेतांकुर, दन्त, नख, रोम, चर्म, धातु, दिव्य-वृक्ष बीज आदि धारणीय एवं साधनीय वस्तुएं, लेपन, अंजन, पिच्छक, कीला-रोपण, पताका" आदिसे सम्बद्ध सभी कार्य कलाप तन्त्रके ही अंग माने गये हैं। ज्योतिष, शकुन और स्वरोदयका उपयोग भी तन्त्रमें आवश्यक होता है। अतः तन्त्रका आयाम बहुत ही विस्तृत है और इन सभीका जैन तन्त्रकारों ने अपनी सीमामें रहते हुए सर्वत्र समादर किया है।

४. जैन तन्त्रका उद्गमस्रोत एवं प्रवाह

जैन सम्प्रदायमें भगवद् भाषित एवं गण-धरों द्वारा ग्रथित द्वादशांगोंमें बारहवां अंग 'दृष्टिवाद' के रूपमें है। इसमें पांच विभाग हैं—१. परिकर्म, २. सूत्र, ३. पूर्वानुयोग, ४. पूर्वगत तथा ५. चूर्णिका। इनमें 'पूर्वगत' विभागमें चौदह पूर्व वर्णित हैं जिनमें दसवां पूर्व 'विद्यानुप्रवाद' है। यह 'विद्यानुप्रवाद'

अत्यन्त विशाल है और इसमें मुख्यतः साधना सिद्धि और साधनोंका विस्तारसे वर्णन किया गया है, किन्तु जैन-परम्पराकी मान्यता है कि इन पूर्वोंका ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया है।

इसके अतिरिक्त द्वादशांगीके दसवें अंग 'प्रश्नव्याकरण' में मन्त्र-तन्त्रात्मक विषयोंका वर्णन था, किन्तु वह भी आज उस रूपमें उपलब्ध नहीं है। आज जो प्रश्न-व्याकरण मिलता है उसमें आस्रव और संवरका वर्णन है, परन्तु नन्दी सूत्रमें वर्णित प्रश्न व्याकरणके विषयोंमें 'विद्यातिशय' का जो निर्देश है वह आज अनुपलब्ध है।

संघदासगणी रचित 'वसुदेवहिण्डी' (५वीं शती) के चौथे लम्पकमें भगवान् ऋषभदेवके चरित्र-वर्णनके अन्तर्गत एक कथा आती है कि—

"ऋषभदेवके 'कच्छ' और 'महाकच्छ' नामक कुमारोंके पुत्र 'नमि' और 'विनमि' महादानके समय अनुपस्थित रहनेके कारण कुछ प्राप्त नहीं कर पाये, तब तपोरत ऋषभदेवसे कुछ प्राप्त करनेकी लालसासे वे जहां तप कर रहे थे वहां पहरा देने लगे। एक बार 'धरणेन्द्र नागराज प्रभुके दर्शनार्थ आया और इन दोनोंको वहां सेवारत देखकर पूछा कि—तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?' उत्तरमें उन्होंने कुछ प्राप्त करनेकी इच्छा प्रकट की तो धरणेन्द्रने प्रसन्न होकर उन्हें वैताढ्य पर्वतकी दो श्रेणियां तथा आकाश-गामिनी आदि विद्याएं प्रदान कीं। ये वैताढ्य पर्वत पर रहने और विद्याके धारक होनेसे विद्याधर कहलाये।"

इस कथासे तन्त्र-विद्याका प्रवर्तन ऋषभदेवके समयसे ही माना जा सकता है। ऋषभदेव आद्यतीर्थङ्कर हैं।

एक मान्यताके अनुसार तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथने जैन-तन्त्र और उसकी विभिन्न साधनाओंको जन्म दिया है। श्रीपार्श्वनाथ तेईसवें तीर्थंकर थे तथा योग एवं अन्य सिद्धियों के महान् धनी थे। इस समय जैन तन्त्रोंमें जो साहित्य मन्त्रादिका प्राप्त होता है उसमें भी सर्वाधिक श्रीपार्श्वनाथसे सम्बद्ध ही है। धरणेन्द्र यक्ष और देवी पद्मावतीकी उपासनामें भी पार्श्वनाथका ही महत्व है।

जैनागमोंमें प्रायः पंच नमस्कार-महामन्त्र की चर्चा हुई है। 'निशीथ-सूत्र' में नमस्कार-मन्त्र, सूरि-मन्त्र और कतिपय विद्याओंके बारे में विवेचन हुआ है। इनके अतिरिक्त 'पंचम-चरित्र, त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित आदि ग्रन्थों में भी जैन-मन्त्र-शास्त्र सम्बन्धी चर्चाएं मिलती हैं।

जैन परम्परामें चौबीस तीर्थङ्करोंकी सेवा करने वाले देव और देवियां—यक्ष-यक्षिणियां मानी गई हैं। वे ही प्रभुके आराधकोंको विभिन्न प्रकारकी उपासनाओंके माध्यमसे सिद्धियां प्रदान करते हैं। जैन शासनकी उन्नति और प्रभावनाकी दृष्टिसे प्रत्येक आचार्य को मन्त्र-विद्याका धारक होना चाहिये।

इस प्रकार मूल-तीर्थंकर एवं उनके द्वारा भाषित आगमोंसे जैनतन्त्रका उद्गम हुआ और उसका प्रवाह क्रमशः बढ़ते-बढ़ते आज अत्यन्त विशाल रूपको प्राप्त हो गया है। दिगम्बर-सम्प्रदायका दक्षिणमें पर्याप्त प्रचार रहा, फलतः वहां एक परम्परा जैन ब्राह्मणोंकी भी विकसित हुई और उन्होंने भी अपने संस्कारोंके अनुसार जैनतन्त्र-साहित्यकी अभि-

वृद्धिमें सहयोग किया।

उत्तर कालमें ऐसे अनेक आचार्य हुए हैं जिन्होंने एनेक प्रौढ़ तन्त्र ग्रन्थोंकी रचना की। १४वीं शतीके आचार्य प्रभाचन्द्रका 'प्रभावक-चित्र' इसी कोटिका ग्रन्थ है जिसमें अनेक महाप्रभावी तान्त्रिक जैनाचार्योंकी मन्त्र-निष्णातताका एवं प्रभावापन्नकर्मोंका विस्तारसे वर्णन हुआ है।[1]

यह प्रवाह विभिन्न धाराओंमें किस प्रकार परिणत होता रहा और आज उसकी क्या स्थिति है ? किन-किन रूपोंमें है ? इसका संक्षिप्त लेखा-जोखा हम आगे प्रस्तुत कर रहे हैं।

५. जैन धर्ममें मन्त्र और उनकी उपासना

मनकी स्थिरता तथा आन्तरिक शक्तिका विकास प्राप्त करनेके लिये मन्त्र एक सबल साधन है इस दृष्टिसे जैन धर्ममें अति प्राचीन कालसे साधना, आराधना-उपासनामें मन्त्रको महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। ऐसे मन्त्रोंमें 'नमस्कार-मन्त्र' सर्व-प्राचीन है। इस सम्बन्धमें कहा गया है कि—

अणाइकालो अणाइजीवो अणाइ-जिणधम्मो।
तइजावि ते पढंता इसुच्चिज जिण-नमुक्कारो।।

अर्थात् 'काल अनादि है, जीव अनादि है और जैन धर्म भी अनादि है। जबसे उसका प्रवर्तन हुआ है तभीसे यह जिन-नमस्कार अर्थात् 'नमस्कार-मन्त्र' भव्य जीव पढ़ रहे हैं। इस प्रकार पंच परमेष्ठी-मन्त्रापर नामक 'नमस्कार-मन्त्र' इस धर्मका मूल मन्त्र है तथा इसीसे 'ॐ', 'ह्रीं' तथा 'अर्हं' बीज मन्त्रोंका आविर्भाव हुआ है। यथा—

पणव हरियारिह इअ मंतह बीआणी सप्पहावाणि।
सव्वेसिं तेसिं मूलो इक्को नवकार-वरमंतो।।

इस महामन्त्रसे ॐ कार, ह्रींकार और अर्हं बीजोंकी उत्पत्तिका प्रकार भी वैदिक सम्प्रदायके अनुसार ही है। यथा—

अरिहंता असरीरा आयरिय उवज्झाय मुणिणो।
पंचक्खर-निष्फन्नो, ॐ कारो पंचपरमिट्ठ।

इसके अनुसार प्रथमार्धगाथामें उक्त पांचों शब्दोंके योगसे—अ+ अ=आ, आ+आ= आ,आ+उ=ओ तथा ओ+म्= ओम् = ॐ— प्रणवकी निष्पति हुई है। 'माया बीज कल्प' में ह्रींकारके बारेमें कहा गया है—

चतुर्विंशतितीर्थेश जैनशक्त्या विभूषिता।
पंचपरमेष्ठिमयश्चैव सिद्धचक्रमयो ह्ययम्।।
त्रयीमयो गुणमयः सर्वतीर्थमयो ह्ययम्।
पंचभूतात्मको ह्येष लोकपालैरधिष्ठितः।।
चन्द्रसूर्यादिग्रहयुग् दशदिक्पालपालि सः।
गृहे तु पूज्यते यस्य तस्य स्युः सर्वसिद्धयः।।
(२६ से २८)

इस दृष्टिसे चतुर्विंशति जिन, जैनशक्ति और पंच परमेष्ठिमय होनेके साथ ही ह्रींकार को अन्य अनेक शक्तियोंस सम्पन्न बताया है। 'ऋषिमण्डलस्तवयन्त्रालेखन' ह्रींकारमें क्रमशः पाच परमेष्ठियोंकी स्थिति इस प्रकार व्यक्त करता है—

नादोऽर्हन्तः कव्हा सिद्धाः सान्तः सूरिः स्वरो परे।
बिन्दुः साधुरतः पंचपरमेष्ठिमयस्त्वसौ।।

---

१. पावयणी धम्मकही वाई नेमित्तिओ तवस्सी च।
विज्जासिद्धो य कवि अट्ठ पभावगा भणिआ।।
इस गाथामें विद्यासिद्ध और मन्त्रसिद्ध आदि पद इसीके सूचक हैं।

अर्थात् नाद—अर्हन्त, कला—सिद्ध, ह्—आचार्य, ई—उपाध्याय और बिन्दु—साधुरूप होनेसे ह्रीं बीज पंचपरमेष्ठिमय है । एक अन्य पद्धतिसे वहीं इसकी सिद्धि ऐसे दिखाई है—

अर्हन्तो वृत्तकला, त्रिकोणसिद्धस्तु शीर्षकं सूरिः ।
चन्द्रकलोपाध्यायो दीर्घकला साधुरिह पंच ॥

इसी प्रकार यह सर्वधर्मबीजरूप ह्रींकार पार्श्वनाथके स्वरूपमें भी मान्य है । 'मन्त्र-राजरहस्यमें कहा गया है कि—

वर्णान्तः पार्श्वजिनः कलाहफणा बिन्दुरत्रनागमहः ।
नागो रई तु पद्मा तत्रार्हन् सूरिमेरुमयः ॥

अर्थात् ह्—पार्श्वजिन, कला-नागका फण, बिन्दु और नाद—नाग-मणि, हे र्—नागराज घरणेन्द्र तथा ई—पद्मावती देवी है। तथा 'मन्त्रराजरहस्य' में—

माया बीजं लक्ष्यं परमेष्ठि-जिनालि-रत्न रूपं यः ।
ध्यायत्यन्तर्दोरं हृदि स श्रीगौतमः सुधर्माऽथ ॥

इसी तरह ह्रीं बीजको परम महत्व देते हुए इसके सात अंश माने गये हैं—

रेफः सान्तः शिरश्चन्द्र कलाश्च नाद ई स्वरः ॥
—ऋषिमण्डलस्तवयन्त्रालेखन

अर्थात् र, ह इन दोनोंकी सीधी शिरोरेखा, चन्द्रकला, बिन्दु, नाद और ई स्वर'। इसमें वैदिक मायाबीजके अनुसार ह्र्का क्रम बदला हुआ है, जिसे हम आम्नाय-भेद तथा कर्मभेदका कारण कह सकते हैं । अन्यत्र ह्रींके विविध रंगोंका भी वर्णन है ।

'सिद्धहेमशब्दानुशासन' की स्वोपज्ञ बृहद् वृत्तिमें श्रीहेमचन्द्राचार्यने 'अर्हं' बीजको परमेष्ठि का वाचक मानते हुए कहा है कि—

अर्हमित्यक्षरं ध्येयं, वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥

यह बीज परम्परा जैनतन्त्र-साधनाका अंग बनकर आगे नाना रूपोंमें विकसित हुई । प्रत्येक अक्षरकी स्वतन्त्र मन्त्रमयताका विशद वर्णन 'मन्त्र-व्याकरण' (आर्ष-विद्यानुशासनगत) में प्राप्त होता है । कूटाक्षररूप बीजमन्त्र भी अपने प्रसारमें पीछे नहीं हैं । दो-दो, चार-चार वर्णोंके मिश्रणसे निर्मित बीज-मन्त्र तथा कमलवरयूं से क्षमलवरयूं तकके कूट बीज भी पर्याप्त हैं । पंचतत्व बीज क्षिप ॐ स्वाहा' जैसे नानाक्षरोंके प्रथमाक्षरोंसे निर्मित बीज मन्त्रोंकी भी न्यूनता नहीं।

मन्त्रोंका विस्तार बीजमन्त्रोंके साथ नामाक्षर, साध्यकार्यसूचक विशिष्ट कर्मबीज, नमोऽन्त, स्वाहान्त, कुरुकुर्वन्त, साधय साधय-पदान्त प्रयोगोंसे सम्बद्ध होनेके कारण तथा प्राकृत और संस्कृत-भाषाके साथ ही लोकभाषामिश्र होनेसे अत्यन्त व्यापक रूपसे हुआ है । वैदिक मन्त्रोंके समान ही यहां एकाक्षरसे सहस्राक्षर-पर्यन्त मन्त्र हैं तथा उनमें कतिपय प्रसिद्ध स्तोत्रोंकी गाथाओंने भी मन्त्रमयता प्राप्त की है।

स्त्रीवाचक मन्त्र 'विद्या' कहे जाते हैं और पुरुषवाचक मन्त्र 'मन्त्र' कहे जाते हैं । वैसे वर्णोंकी पुं. स्त्री-नपुंसकरूपता भी जैनतन्त्रोंमें मान्य है ।

वर्णमाला, दीर्घषट्क, वर्णमिश्रस्वराष्टक, स्वरषोडशक आदि भी मन्त्र रूपमें बहुधा स्वीकृत हैं । बहुतसे मन्त्र तो अन्य धर्मके यथावद् गृहीत भी हैं ।

मन्त्रसाधनाके लिये पहले मन्त्रपट, उसकी प्रतिष्ठा, दीक्षा तथा पूर्वसेवाकी आवश्यकता मानी गई है। नित्योपासनामें—स्नानादिके पश्चात् आसन पर बैठकर—(१) पवित्रता—ऊं प्रां प्रीं प्रः अमले विमले अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा–द्वारा, (२) हृदयादिशुद्धि–ऊं विमलाय विमलचित्ताय झ्वीं क्ष्वीं स्वाहा—द्वारा. (३) कल्मषदहन—ऊंविद्युत्स्फुलिंगे महाविद्ये मम सर्वकल्मषं दह दह स्वाहा—द्वारा (४) तिलक—ऊं आं ह्रीं क्रौं अर्हते नमः–द्वारा तथा भूमि शुद्धि—ऊं भूरसि भूतधात्रि विश्वाधारे नमः मंत्रोंसे की जाती है। तदनन्तर पूजादि विधान करते हैं और जपमें माला-प्रयोग विभिन्न प्रकारसे होता है जिनमें—१ वर्णमातृकाधारी लोम-विलोम, २. करमाला—एक दक्षिण हस्तगत अंगुलियोंसे, (३) शंखावर्त, (४) नन्द्यावर्त्त, (५) ऊं वर्त, (६) श्रीं वर्त, (७) ह्रीं वर्त (८) क्लीं वर्त आदि भेद प्रशंसनीय हैं। जैसे मणि, वस्त्रमणि, रुद्राक्ष-भद्राक्षादि भी ग्राह्य हैं। कर्मकी दृष्टिसे जपमाला–भेदके अतिरिक्त यहां करमालामें स्त्री-विद्याजप और पुरुष-मन्त्रजपके प्रकारोंमें भी भेद माना गया है।

'मन्त्राधिराज-कल्प' में सिंहतिलकसूरिने जपके १३ भेद माने हैं जो इस प्रकार हैं—

रेचक-पूरक-कुम्भा, गुणत्रयं स्थिरकृतिस्मृति हवका नादो ध्यानं ध्येयैकत्वं तत्त्वं च जपभेदाः॥

अर्थात्—(१) रेचक, (२) पूरक (३) कुम्भक, (४) सात्विक, (५) राजसिक, (६) तामसिक, (७) स्थिरकृति (८) स्मृति (९) हवका (१०) नाद (११) ध्यान (१२) ध्येयैकत्व और (१३) तत्व ये जपके भेद हैं। अन्य जप-मूलक सावधानियां भी यहां निर्दिष्ट हैं।

जपके पश्चात् दशांश हवनका भी निर्देश है तथा कुण्डनिर्माण, अग्नि-स्थापनादि प्रक्रिया भी भिन्न-भिन्न जैन मन्त्रों द्वारा की जाती है। जपादि साधनाके समय पालनीय आचारोंमें—(१) अनशन (२) ऊनोदरिका (३) वृत्ति-संक्षेप (४) रसत्याग (५) कायक्लेश, (६) संलीनता, (७) प्रायश्चित्त (८) विनय (९) वैयावृत्य (१०) स्वाध्याय (११) ध्यान और (१२) उत्सर्गको बाह्यान्तर तपके रूपमें माना है, तथा सार्धमि-वात्सल्यको ब्राह्मण-भोजनका स्थान दिया है।

फलित ज्योतिषमें प्रारम्भिक ज्ञानार्थ—

राशियोंका स्वरूप गुणधर्मादि फलविवेचन (३)

[लेखक :—श्री विक्रमसिंहजी, कोटा राजस्थान]

मेष—का स्वरूप मेढा है पित्त प्रधान दीर्घाकार अग्नि-तत्व लाल रंग, रजोगुणी, क्षत्रिय वर्ण, पृष्ठोदय, पर्वत पर वास, पुरुष लिङ्ग, पूर्व दिशा सशब्द रात्रिबली चर स्वभाव चतुष्पद योनि, धातुकी प्रतिनिधि, अल्प सन्तान है। स्वामी मंगल है। के. शु. सू. के नक्षत्र क्रमशः अश्विनी भरणी कृत्तिकाका संयोग है। इसलिये मेष राशिके जातक चंचल सदाचारी मेधावी उष्ण प्रकृति, क्रोधी, निपुण वक्ता, तार्किक, असहिष्णु और साधारण ज्ञानसे युक्त होंगे। कार्यमें लगे रहनेकी रजोगुणी प्रकृति, दुर्बल कृश सुकुमार देह, मध्यम कद, पीताभ वर्ण, दन्तुर, स्वेद बहुल

गन्धयुक्त देह, अल्परोम, शुक्र बल, अपत्य भी अल्प, बहुभोजी शीघ्रगामी विद्वान् ईर्ष्यालु साहसी युद्धप्रिय उग्र स्वभाव सिरोरोगसे पीड़ित, कुशाग्रबुद्धि स्वतन्त्र विचारक विज्ञानादि सूझबूझके विषयोंमें रुचि रखने वाला और प्रत्येक कार्यमें प्रेरणाकी अपेक्षा रखने वाला होगा। अश्विनी जातक चंचल होने पर भी दैवी गुण संपन्न होंगे जबकि भरणी जातक कामी व मंदगति और कृत्तिका जातक क्रोधी हिंसक होंगे । मेष जातक प्रायः अग्निजीवि लुहार सुनार आदि अग्नि धातु संयोगसे जीविका करने वाले होंगे उनका भाग्योदय २८ वर्षमें होता है ।

वृष—वृषका स्वरूप बैलके समान है । वात प्रधान, दीर्घाकार, भूमितत्व, श्वेत वर्ण, रजोगुणी वैश्य जाति, पृष्ठोदय, मैदानमें वास, स्त्रीलिंग दक्षिण दिशा, शब्दयुक्त रात्रिबली स्थिर स्वभाव चतुष्पाद योनि, मूलकी प्रतिनिधि है। मध्य सन्तान। स्वामी शुक्र है। सू. चं. मं. के नक्षत्र कृत्तिका रोहिणी मृगशिरा संयोग है।

इसलिये वृष लग्नके जातक दृढ़ संकल्प सहृदय स्मृतिशील सहनशील क्षमाशील उदार और ऐश्वर्यवान होंगे। शान्त व धीर होनेसे चिरग्राही भी होंगे। उनकी मैत्री भी स्थायी होगी तो वैर भी स्थायी होगा। श्रद्धालु बुरे कार्योंमें लज्जाका अनुभव करने वाले दूरदर्शी विद्वान सात्विक अलोलुप कर्मठ परिश्रमी उदार होंगे। वृषलग्नके जातकका आकार छोटा होंठ मोटे मस्तक चौड़ा रंग गोरा दांत बड़े अधेड़ावस्थामें बाल उड़ने लगेंगे। उनका स्वभाव सतोगुणी सत्संगति प्रिय होगा। छेड़े जाने पर असहिष्णु होंगे । सूक्ष्म निरीक्षक परिणाम को पहिलेसे भांपने वाले वणिकवृति, अधिकार प्रिय लेखक होंगे। स्नायुरोग उन्हें प्रायः कष्ट देगा। कृत्तिकाके जातक क्रोधी व हिंसक होंगे जबकि रोहिणीके सरल परोपकारी रसिक होते हुए भी दूसरोंके लिये भयप्रद होंगे और मृगशिराके क्रोधी विद्वान् दूषित चरित्र होंगे।

यहां पृथ्वी तत्वके साथ मूलका संयोग होनेसे उनकी वृत्ति प्रायः कृषककी होगी या जमीनकी पैदावार लकड़ी वन आदिसे संबन्धित होगी।

मिथुन—का स्वरूप स्त्री पुरुषके जोड़ेके समान है। यह समधातु वायु तत्व हरा रंग रजोगुणी शूद्रवर्ण शीर्षोदय ब्रज गोष्ठमें रहने वाला पुरुष लिंग पश्चिम दिशा शब्दयुक्त रात्रि-बली द्विस्वभाव नरराशि मध्यम-संतान जीव की प्रतिनिधि है। इसका स्वामी बुध है। मंगल राहु और गुरुके नक्षत्र मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु का इसमें संयोग है, इसलिये मिथुन राशिके जातक व्यवहार कुशल नम्र अनुशासन प्रिय समताप्रिय अल्पस्मृति भुलक्कड़ स्वभाव शीघ्र रागविरागी भय शोकसे शीघ्र प्रभावित होने वाला, मत्सर स्तेन कृतघ्नतासे युक्त हास-विलास कलह मृगया इतिहास गीत उद्यान मे रुचि रखने वाला होता है। उसका चेहरा गोल, शरीर रूखा नेत्र गोल व चंचल, पुतलियां फैली हुई मस्तक चौड़ा, काय (शरीर) हाथ पांव दांत छोटे, नसें उभरी हुई, दांतों व नखसे खानेकी कुटेव। वाक् पटु हरफनमौला रति-प्रिय कामी श्वास व स्नायुरोगसे पीड़ित सदा गतिशील भ्रमण व व्यक्तियोंके संपर्कसे धनो-पार्जन करनेमें तत्पर। एजेण्ट दलाल प्रचारक अध्यापक पायलेट आदि। उनका रंग गेहुआं

कद मध्यम हास्यरस प्रवीण रसिक गीत वाद्य-प्रिय चतुर परोपकारी गणितज्ञ होते हैं। मृगशिरा और पुनर्वसुके जातक कुटिल व अकारण क्रोधी होते हैं, जबकि आर्द्राके जातक साहसी विवादी कृतघ्न होते हैं, शनिसे दूषित होने पर ठग अस्थिर चित्त मित्रद्रोही कन्याप्रज और प्रवासी होते हैं।

कर्क—कर्क राशिका स्वरूप केंकड़ेकी तरह है । यह कफ प्रधान स्थूल जलतत्व गुलाबी रंग सतोगुणी, ब्राह्मण जाति, पृष्ठोदय जलचर वासी, स्त्रीलिंग, उत्तरदिशा शब्द रहित दिनबली चर स्वभाव अनेकपाद, कीट राशि, बहु संतान । धातुकी प्रतिनिधि, स्वामी चन्द्रमा है। गुरु शनि बुधके नक्षत्र पुनर्वसु पुष्य अश्लेषाका इसमें संयोग है।

इसलिये कर्क लग्नके जातक सुन्दर संतोषी ऐश्वर्यवान् होते है। कद मध्यम, स्थूल शरीर, चौड़ा चेहरा, गौरवर्ण चौड़ा मस्तक कुशाग्रबुद्धि सहृदय गृहासक्त वक्ता आत्मविश्वासी ईमानदार दृढ़ न्यायप्रिय, व्यसनी, प्रवासी, व्यापारी, असफल प्रेमी उत्पादन योजनाप्रिय होते हैं । उनकी आजीविका जलीय धातु शंख सीप मोती रेतसे होती है या कृषि विभाग सिंचाई विभाग के वेतनभोगी कर्मचारी होते हैं, जिनका भाग्यो-दय प्रायः २४ वर्षमें होता है।

पुनर्वसुके जातक क्रोधी लेकिन विद्वान् होते हैं। पुष्यके जातक सहिष्णु तपस्वी होते हैं। आश्लेषाके क्रोधी हिंसक आलसी एवं शोक मोह ग्रस्त होते हैं।

सिंह—सिंह राशिका स्वरूप शेरके समान है। यह पित्तप्रधान दीर्घाकार अग्नितत्व गुलाबी रंग सतोगुणी, क्षत्रिय वर्ण, शीर्षोदय, वनवासी पुरुषलिंग पूर्व दिशा, शब्दयुक्त, दिनबली स्थिर स्वभाव, चतुष्पद योनि, अल्प संतान, मूलकी प्रतिनिधि है। इसका स्वामी सूर्य है, केतु शुक्र और सूर्यके नक्षत्र मघा पूर्वाफाल्गुनी और उतराफाल्गुनीका इसमें संयोग है।

इसलिये अग्नि तत्वके गुण जातकमें होते हैं। वह चंचल पवित्र मेधावी उष्णप्रकृति क्रोधी जिद्दी असहिष्णु होते हुए भी सात्विक प्रकृति परोपकारी और स्थिर स्वभाव, स्वतंत्र विचारक शस्त्री अश्वारोही पराक्रमी साधुसेवी उदार रूढ़ीवादी साहित्य-कला प्रेमी विद्वान् होता है। उसका व्यक्तित्व सिंहके समान आकर्षक, चौड़े कंधे, पतली कमर, वनचारी, ताम्रवर्ण, सब परिस्थितियोंमें रह सकने वाला, उदर रोगी, वेदान्त प्रिय होता है।

अग्नितत्वसे मूलका संयोग होनेके कारण होटल हलवाई ढाबा रसोईया फार्मेसी, दाल आटा मिल जंगलके अफसर या ठेकेदार कत्थेके व्यापारी आदि होते हैं। भाग्योदय २८वें वर्षमें। मघा नक्षत्रका जातक प्रायः आलसी और हिंसक होता है और अपूर्ण मनोरथ रहता है। पूर्वाफाल्गुनीका जातक भ्रान्त, अस्वस्थ, हीन-वृत्ति होता है । उत्तरा फाल्गुनीका जातक उन्नतिशील सरल रक्षक परोपकारी होता है। सिंह राशिके जातकका भाग्योदय प्रायः अपने स्थान पर ही होता है। या उसका व्यवसाय स्वस्थानमें पूज्य दूकानदार डाक्टर वकील जैसा होता है।

कन्या—कन्या राशिका स्वरूप युवा लड़कीके समान है । यह वातप्रधान मध्य आकार, भूमितत्व, चित्र विचित्र रंग, रजोगुणी

वैश्य जाति, शीर्षोदय पर्वतवासी स्त्रीलिंग दक्षिण दिशा, शब्द रहित, दिनबली, द्विस्वभाव द्विपद नर राशि जीवका प्रतिनिधित्व करती है। इसका स्वामी बुध है। सूर्य चन्द्रमा और मंगलके नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी हस्त और चित्रा का इसमें संयोग है।

इसलिये कन्या राशिके जातक चंचल होते हुए भी शीलवान् लज्जालु स्त्रीस्वभाव शृङ्गार प्रिय। हस्तमें स्थूल शरीर, बड़े नेत्र, मध्यम कद निर्बल, भावुक मितभाषी मृदुभाषी प्रत्युत्पन्नमति विज्ञान गणितमें रुचि रखने वाला लेखनकुशल, साहित्य-कला प्रेमी, विद्वान् धार्मिक गंभीर प्रवासी और घुन्ना प्रकृति होता है। स्नायुरोग प्रधान होनेसे पक्षाघातका उसे भय रहता है।

उत्तरा फाल्गुनीके जातक सरल परोपकारी उत्साही होते हैं। हस्त नक्षत्रके जातक दूध घीके शौकीन, अच्छा भोजन करने वाले, सज्जन, योगी होते हैं। चित्रा नक्षत्रके जातक वाक् पटु क्रोधी और हिंसक होते हैं, उनमें घुन्नापन होता है। पृथ्वी तत्वके साथ जीवका संयोग होनेसे पार्थिव वस्तुके व्यापारी या वास्तु-शिल्पी होते हैं। या पशुपालक शिक्षक आदिके पेशे द्वारा २५वें वर्षमें उनका भाग्योदय होता है।

तुला—तुला राशिका स्वरूप तुलाधार वैश्य, तराजू वाला बनिया है। यह वायुतत्व प्रधान मध्याकार कृष्णवर्ण, रजोगुणी शूद्र जाति, शीर्षोदय, भूमि पर विचरणशील, पुरुष राशि, पश्चिम दिशा, शब्द रहित, दिन बली, चरस्वभाव। द्विपद, नरराशि, अल्प संतान, धातुकी प्रतिनिधि है। शुक्र इसका स्वामी है। मंगल राहू और गुरुके नक्षत्र चित्रा स्वाति और विशाखाका इसमें संयोग है।

इसलिये तुला राशिके जातक व्यवहार-कुशल, नम्र, अनुशासन प्रिय होते हैं। प्रायः गौर वर्ण, मध्यम कद चपटी नाक, चौड़ा चेहरा चौड़ी छाती सुन्दर नेत्र शिथिल गात्र सूक्ष्म निरीक्षक, अच्छे निर्णायक न्यायप्रिय सुधारक या नेता होते हैं। संगीतमें भी उन्हें रुचि होती हैं। सत्य पर बलिदान होनेकी उनमें क्षमता होती है। वे कुटुम्बसे दूर रहने वाले, वीर्य विकारी, स्त्री द्रोही, मृदुभाषी, आस्तिक होते हैं, व्यापारमें उनकी रुचि होती है। वायु तत्वका धातुसे संयोग होनेके कारण प्राय: पार्थिव वस्तुओंके यातायातमें सहायक होते हैं, जैसे मालगाड़ी या ट्रकोंसे माल ढोना आदि या ऐसे विभागोंकी सर्विस, ३१वें वर्षमें उनका भाग्योदय होता है। चित्रा नक्षत्रके जातक प्राय: क्रोधी और हिंसक होते हैं। उन पर बलात्कारका कलंक लग सकता है। विशाखा नक्षत्रके जातक अपेक्षाकृत विचारशील होते हैं। स्वाति नक्षत्रके जातक आलसी विवादी और अच्छे खानपानमें रत रहने वाले होने पर भी सज्जन होते हैं।

वृश्चिक—वृश्चिक राशिका स्वरूप बिच्छू के समान है। यह कफ प्रधान ह्रस्वकाय जल तत्वकी रजोगुणी राशि है। कबरेला रंग, ब्राह्मण जाति। पृष्ठोदय, भूमि व जलमें विचरण-शील, बिलोंमें रहने वाली, स्त्रीलिंगी शब्द रहित उत्तरदिशा दिनबली स्थिर स्वभाव अनेकपाद कीट योनि बहु संतान, मूलकी प्रतिनिधि है। इसका स्वामी मंगल है। गुरु शनि और बुधके नक्षत्र विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा का इसमें संयोग है।

इसलिये वृश्चिक राशिके जातक सुन्दर संतोषी ऐश्वर्यवान् स्नेही होते हैं। वे ह्रस्व काय स्थूल शरीर, गोल नेत्र, चौड़ा चेहरा, चमकीली आंखें, चौड़ी छाती वाले होते हैं उनका स्वभाव सर्वत्र विचरणशील और चिपटने वाला होने से अगम्यागम्य, पास रहने वाले पर अधिक भरोसा रखने वाले, अस्थिर चित्त चौकन्ने सावधान स्वार्थ साधक अपना दांव न चूकने वाले, व्यंग्य या गाली-गलोचसे बात करने वाले, भ्रातृ-द्रोही, निन्दक, कटु स्वभाव, भिक्षुक कपटी पाखण्डी पराये मनकी बात भांपने वाले दयारहित दार्शनिक कुशल पत्र लेखक रूढ़ो-वादी, नृत्यप्रिय अपनी प्रतिभा पर गर्व करने वाले अर्श रोगी, शिरा कष्टी होते हैं।

इस राशिमें जलतत्वका मूलसे संयोग होनेके कारण जलीय वनस्पति कमल सिंघाड़े खरबूजे तरबूज सभी फल सिंचाईकी फसल धान लगाने वाले और २४ वर्षमें भाग्योदयको प्राप्त करने वाले होते हैं।

विशाखा नक्षत्रके जातक क्रोधी हिंसक लेकिन विचारशील होते हैं। उन्हें गणित संगीत शिल्पमें रुचि होती है। अनुराधाके जातक चौकन्ने कपटी जादू करने वाले होते हैं। ज्येष्ठा के जातक तीक्ष्ण स्वभाव कुशाग्रबुद्धि क्रोधी और हिंसक होते हैं।

धनुः—धनु राशिका स्वरूप धनुषयुक्त मानव जिसके पांव अश्वके समान है, यह राशि पित्तप्रधान, सम आकार, अग्नितत्व, पीला रंग, रजोगुणी, क्षत्रिय, पृष्ठोदय भूमि पर विचरणशील पुरुष, पूर्वदिशा, शब्दयुक्त, रात्रि बली द्विस्वभाव पूर्वार्ध द्विपद, उतरार्द्ध चतुष्पद, जीव की प्रतिनिधि है। अल्प संतान है, इसका स्वामी गुरु है केतु शुक्र और सूर्यके नक्षत्र मूल पूर्वाषाढ़ उत्तराषाढ़का इसमें संयोग है।

इसलिये धनुष राशिके जातक चंचल सदाचारी मेघावी उष्ण प्रकृति तार्किक असहिष्णु विजयी और विद्वान् होते हैं। इस राशि में मानवता व पशुताका मर्यादित स्वरूप होनेसे क्रोधके साथ साहस और विचारशीलता भी है। मध्यम कद गौरवर्ण गोल नेत्र, भूरे बाल कफ प्रकृति बड़े दांत सौम्य स्वभाव विद्वान् कवि लेखक दार्शनिक उत्साही रूढ़िवादी धर्मभीरू श्रद्धावान् प्रवासी ईमानदार परोपकारी सहृदय संयमी शुद्ध हृदय व्यवहार-कुशल, जल्दबाज इतना कि दूसरे व्यक्ति गलत समझ जावे। सरल, प्रदर्शनसे घृणा करने वाला होता है।

अग्नि राशिमें जीव राशिका संयोग होने से अग्निजातवस्तुका जीवोंमें व्यवहार करने वाला, यज्ञकर्ता सैनिक-फैक्ट्री-शोधकर्ता प्रायः होते हैं। २३वें वर्षमें अपनी विद्वत्तासे भाग्योदयको प्राप्त करते हैं।

मूल नक्षत्रका जातक साहसी विवादी ईर्ष्यालु और इन्द्रिय सुखमें लिप्त होता है। पूर्वाषाढ़का जातक चंचल विकारयुक्त, भ्रान्त-स्वभाव अस्वस्थ होता है व उत्तराषाढ़का जातक सरल स्वभाव परोपकारी शान्त प्रसन्न व साहसी होता है।

मकर—मकर राशिका स्वरूप जलचर जन्तु मगरके समान है। यह राशि वातप्रधान दीर्घाकार पृथ्वी तत्व कबरैला रंग, तमोगुणी वैश्य जाति, पृष्ठोदय, स्त्रीलिंग स्थल व जलमें विचरणशील। वन्य, दक्षिण दिशा अर्ध शब्द रात्रिबली, चरस्वभाव, पूर्वार्ध चतुष्पद, उतरार्ध

पादहीन, अल्प संतान, धातुकी प्रतिनिधि है। शनि इसका स्वामी है। सूर्य, चन्द्रमा और मंगलके नक्षत्र उतराषाढ़ श्रवण और धनिष्ठा का इसमें संयोग है, इसलिये मकर राशिके जातक दृढ़ संकल्प, सहनशील क्षमाशील उदार शान्त धीर ऐश्वर्यवान्, होते हैं। मकर कामदेवका ध्वज चिह्न होनेसे मकर जातक प्रायः कामुक होते हैं। शनिके प्रभावसे तमोगुणी हिंसक क्रोधी भी होते हैं। उसके नेत्र सुन्दर, भौंहे घनी, दांत बड़े, कद लम्बा, धर्म-विमुख आलसी अपव्ययी निर्लज्ज स्त्री आसक्त परिस्थिति अनुसार अपनेको ढालने वाला सहृदय, साहित्य, विज्ञान-शिक्षा-काव्यमें रुचि रखने वाला होता है। पृथ्वी तत्वका धातुसे संयोग होनेके कारण खनिज लोहा पत्थर शिल्पसे ३२वें वर्षमें उसकी आजीविका होती है।

उतराषाढ़का जातक सौम्य साहसी सहृदय होता है। श्रवणका चंचल व भोगी होता है। धनिष्ठाका जातक क्रोधी हिंसक और ठग होता है।

कुम्भ—कुम्भ राशिका स्वरूप जल-घट वहन कर्ता पुरुषके समान है। त्रिदोष, सम मध्याकार, वायु तत्व, तमोगुणी, कवरैला रंग, शूद्र जाति, शीर्षोदय, जलमध्य वास, पुरुष लिंग पश्चिम दिशा, अर्ध शब्द, दिनबली, स्थिर स्व-भाव द्विपद मूलकी प्रतिनिधि है। शनि इसका स्वामी है। मंगल राहु गुरुके नक्षत्र धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपदका संयोग है। वायु तत्व प्रधान होनेसे चंचल दुःसाहसी व्यवहार कुशल व्यक्ति इस लग्नमें होते हैं। उनकी नाक चपटी चेहरा चौड़ा कद लम्बा मोटी गर्दन मोटे होंठ चौड़े गाल, दुर्बल देह, ईर्ष्या द्वेष अभिमानसे युक्त, भ्रातृ द्रोही, आकर्षक व्यक्तित्वके परो-पकारी होते हैं।

कुम्भ राशि जल-घट-वहनकर्ता पुरुष होनेसे ज्ञानके वहन कर्ता विद्वान्का प्रतीक है। अतः जातक कुशाग्रबुद्धि विद्वान् वक्ता लेखक होता है। दार्शनिक संत तपस्या प्रिय अकुशल प्रबन्धक होता है। वह अपनी क्षमताको युवा-वस्थामें दूसरेके प्रकट करने पर पहचानता है। कुम्भ जातकके कार्यमें कार्य साधनका चातुर्य होता है, वह शिक्षित और गृहासक्त भी होता है। सर्दी या शूल रोगसे पीड़ित रहता है। इस वायु राशिमें मूलका संयोग होनेसे उनकी आजीविका वनस्पतिके यातायातसे संबन्धित होती है अर्थात् फल सब्जी आदिके ढोने वाले या वनस्पतिकी लुगदीके बनने वाले कागज करेंसी आदिके वहनकर्ता, बैंक पोस्ट आफिस या दफ्तरके क्लर्क आदिसे आजीविका करने वाले होते हैं। उनका रोजगार २५वें वर्षमें प्रायः होता है। धनिष्ठा नक्षत्रके जातक क्रोधी हिंसक ठग शोक मोहसे ग्रस्त होते हैं।

शतभिषाके जातक अधिक परिश्रमी व उन्नतिशील होते हैं, परिवारसे दूर रहते हैं। पूर्वाभाद्रपदके जातक बुद्धिमान् होते हुए भी इन्द्रिय सुखमें लीन रहते है।

मीन—मीन राशिका स्वरूप चन्द्राकार मत्स्य युगल है। कफ बहुल, मध्याकार, जल तत्व, पीला रंग, सतोगुणी, ब्राह्मण जाति उभयोदय, जल मध्यवास, स्त्रीलिंग उत्तर दिशा शब्दहीन दिन बली पादहीन द्विस्वभाव राशि जीवकी प्रतिनिधि है। इसका स्वामी गुरु है। गुरु शनि और बुधके नक्षत्र पूर्वाभाद्रपद उतरा भाद्रपद और रेवतीका संयोग है।

इसलिये मीन जातक सुन्दर संतोषी विद्वान् और ऐश्वर्यवान् होते हैं। गौर वर्ण, मध्यम कद, सुडौल देह, बड़े नेत्र, चौड़ा मस्तक, ठोडीमें गढ्ढा, सतोगुणी, सौम्य प्रकृति, दूरदर्शी, रूढ़िवादी धर्म भीरू, अधिकार प्रिय और जिद्दी होते हैं। अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों पर उन्हें गर्व होता है।

परिश्रमी, बहुसंतान, आलसी, रोगी, विषयासक्त, अपव्ययी, न्यायप्रिय, उदार, स्वतंत्र विचारक, आत्मविश्वासहीन और अकस्मात् हानि प्राप्त कर्ता होते हैं। इस राशिमें जल तत्वका जीवका संयोग होनेसे मीन जातककी आजीविका जल और जीवोंके संयोगसे होती है, जैसे मल्लाह, कोई मत्स्यपालक नैवीकी सर्विस सिंचाई विभाग, जलविभागके कर्मचारी, डेरी फार्म, सोडा-लेमन आदि पेय विक्रेता धोबी ड्राईक्लीनर्स होते हैं। ये लोग प्राय: २२ वर्षमें आजीविका प्राप्त करते हैं। पूर्वाभाद्रपद जातक साहसी, क्रोधी और भोगी होते हैं। उतराभाद्रपद जातक सरल परोपकारी विद्वान् होते हैं। रेवती के जातक मंदगामी, गंभीर, बुद्धिमान्, रसिक, कवि लेखक होते हैं।

उपसंहार—

जन्म लग्नसे जातककी क्षमताकी जानकारीके लिये राशियोंका जो विश्लेषण किया गया है वह अपूर्ण है, क्योंकि जो संज्ञायें दी गई हैं उनके कई अभिप्राय निकाले जा सकते हैं। उदाहरणार्थ चोरी या गुमे हुए व्यक्तिके प्रश्नमें राशिकी दिशा वस्तु या व्यक्तिके जाने की दिशाको प्रकट करेगी, जबकि व्यक्तिविशेष के भाग्योदयके विचारमें वही दिशा जीविका मिलनेका संकेत देगी। इसलिये राशिकी संज्ञाओं राशिका उल्लेख उनके साथ ही कर दिया है। प्रत्येकका तत्व विभाग और उनके गुण-दोषोंका विस्तृत वर्णन पृथक् कर दिया है। नक्षत्रोंकी योनियों और राशियोंकी आकृतियोंसे तात्पर्य जाननेकी विधि 'आकृति विज्ञान' के शीर्षकसे पृथक् दी गई है। राशि और नक्षत्र स्वामियों से होने वाले संशधोनके प्रभावको संयोगज प्रभाव नाम दिया गया है। लग्नेशके विभिन्न राशियों और विभिन्न भावोंके फल भी पृथक् दे दिये गए हैं, अत: रुचि रखने वाले पाठकोंको दी हुई परिभाषा पर ही आश्रित न रहकर, तत्व विभाग गुण-दोष, लग्नेशके राशि-भावादि फल व राशि नक्षत्र ग्रह संशोधनके द्वारा स्वयं विश्लेषण करना चाहिये।

इन्दिरा गांधीका तीर्थों व मन्दिरोंके प्रति बढ़ता आकर्षण

[एक रिपोर्टके मुताबिक प्रधानमन्त्री पुनः सत्तारूढ़ होनेके बाद अब तक ५१ मन्दिरों व धार्मिक केन्द्रोंकी दुर्गम यात्राएं कर चुकी हैं। पता चला है कि ये यात्राएं श्रीमती गांधीने विपरीत ग्रहोंके कुप्रभावको टालनेके लिए कीं।]

इसी वर्षके शुरूमें प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी द्वारा दिए गए एक इण्ट्रव्यूका यह अंश।

"मैं मन्दिरों में नहीं जाती हूँ जब तक कि किसी व्यक्ति विशेषने मुझसे वहां जानेका वायदा न रखा हो। उन्हें इन्कार करना निहायत मुश्किल होता है ... ..."

इस इण्ट्रव्यूसे केवल दो सप्ताह पूर्व दिसम्बर १३ को प्रधानमन्त्री कांगड़ा क्षेत्रमें स्थित चामुण्डा देवी मन्दिरमें थी। उन्होंने वहां ४५ मिनट तक पूजा अर्चना की थी। वहांसे वह सीधा शिव मन्दिर पहुंची। दर्शनों के बाद वह बाण गंगा आईं। वहां उन्होंने पवित्र पानीमें हाथ मुंह धोया।

और इसी इण्ट्रव्यूके प्रकाशनके ठीक दस दिन बाद श्रीमती गांधी कांची धाम पीठके शंकराचार्यके दर्शनार्थ सितार पहुंच चुकी थीं। वहां उन्होंने अपने एक सहायकके माध्यमसे एक खिड़कीके पाटसे शंकराचार्यसे बात की थी। सम्वाददाताओंको वार्ता स्थलके आसपास फटकने नहीं दिया गया था और न ही यह पता चल सका कि उन दोनोंके बीच क्या बातचीत हुई थी। उसके बाद प्रधानमन्त्री श्री शालिगरामके दर्शनोंको गईं। यह वही मूर्ति है जिसकी कभी छत्रपति शिवाजी पूजा किया करते थे।

इसके एक सप्ताह ही बाद प्रधानमन्त्री पुनः अहमदाबाद जिलामें साबरकंठा नामके कस्बामें देखी गई। वहां उन्होंने विष्णु मन्दिर में आरती उतारी और मन्दिरकी परिक्रमा की। मन्दिरके पुजारी पं० सुखदेव व्यासने उन्हें एक साड़ी एवं प्रसाद दिया।

इस सन्दर्भमें ध्यान देने योग्य बात केवल इतनी है कि इन मन्दिरोंमें श्री गांधीको कोई व्यक्ति विशेष लेकर नहीं गया और न ही मैडम वहां इन मंदिरोंको पुरातत्व कलाको निहारने गई थी। अब यह तथ्य लगभग स्पष्ट हो चुका है कि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी केवल अपने धार्मिक विश्वास एवं आस्थाके कारण देशके अनेक मंदिरोंकी यात्राके लिए नियमित रूपसे आती-जाती रहती है।

ऐसा माना जाता है कि प्रधानमन्त्री १९८० में पुनः सत्तारूढ़ होनेके बाद पहले वर्ष की अवधिमें २१ मन्दिरोंकी यात्रा पर गई। दूसरे वर्षके पहिले ६ महीनोंमें उनके यात्रा कार्यक्रममें ३० और मन्दिर शामिल किए गए। इस सम्बन्धमें यह सुननेमें भी आया है कि प्रधानमन्त्रीके निजी सलाहकारोंकी ओरसे

उन्हें एक निश्चित अवधिमें मन्दिरोंकी यात्रा करनेका आदेश प्राप्त हुआ था। इसलिए प्रधानमन्त्री अपने नितान्त व्यस्त कार्यक्रमके बावजूद इन यात्राओंके लिए समय निकालती रही हैं।

प्रधानमन्त्रीके समीपी क्षेत्रोंमें प्रतिष्ठित एक पंडित महोदयके अनुसार श्रीमती गांधी केवल ज्योतिषकी भविष्यवाणियों एवं नक्षत्रों की ग्रहदशामें ही यकीन नहीं रखती है बल्कि उनकी यह गहरी मान्यता भी है कि पूजा और पाठके बल पर बुरे ग्रहोंका प्रभाव टाला जा सकता है। उनके इस विश्वासका एक उदाहरण देते हुए इस पंडितजीने बताया कि गत वर्ष कुछ भविष्यवक्ताओंने यह भविष्यवाणी की कि दिसम्बर १९ से लेकर ३१ तकका समय श्रीमती गांधीके लिए ठीक नहीं है। इस भविष्य वाणीके प्रभावके अन्तर्गत श्रीमती गांधी दिसम्बर १५ को अहमदाबादमें स्थित अम्बाजी के मन्दिरमें गई। वहां उन्होंने पण्डित देवी-प्रसादजीसे विचार-विमर्श किया। पण्डित देवी प्रसाद प्रधानमन्त्रीके लिए इससे पूर्व भी कई प्रकारकी पूजा, यज्ञ आदि कर चुके थे। इस बार उन्होंने पुन: प्रधानमन्त्रीसे पूजा करायी और उन्हें तिलक लगाया व प्रसाद भेंट किया। कहते हैं कि इस पूजाके बाद प्रधान मन्त्री जब दिल्ली लौटी तो वह एक नए उत्साहसे ओत प्रोत दिखाई दे रही थी।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दिसम्बर १९ से लेकर २१ तक ही दिल्लीमें अन्तर्राष्ट्रीय भविष्य वक्ताओंका एक सम्मेलन भी हुआ। गोपनीय रूपमें इन ज्योतिषियों द्वारा प्रधान-मन्त्रीकी कुण्डलीका विशेष रूपसे अध्ययन किया गया। राजीवकी कुण्डली भी इन लोगों ने देखी। एक सूत्रके अनुसार इन लोगोंके अध्ययन रिपोर्टमें यह पाया गया कि १९८१ के मध्य तकका समय प्रधानमन्त्रीके अनुकूल नहीं है। इन लोगोंने समयके विपरीत प्रभाव को टालनेके लिए प्रधानमन्त्रीको इस समयमें विभिन्न तीर्थ स्थानों और मन्दिरोंकी यात्रा की सलाह दी गई।

मई १९८१ का पहला पखवाड़ाके दौरान प्रधानमन्त्रीका यात्रा कार्यक्रम देखनेके बाद उपरोक्त कथनकी पुष्टि होती है। मई १९ को प्रधानमन्त्री एक निजी यात्राके अन्तर्गत वाराणसी पहुँची। उद्देश्य वहांके प्रख्यात देवरहावा बाबाका आशीर्वाद प्राप्त करना। उल्लेखनीय है कि यह बाबा एक मचान पर रहते हैं जो गंगाके किनारे स्थित है प्रधान-मन्त्री ५-३० बजे सायं बाबतपुर हवाई अड्डे पर पहुंची। वहांसे वह एक हेलीकाप्टर द्वारा रामनगर पहुंची। वहांसे गंगाके बीच होती हुई एक मोटर किश्ती द्वारा वहां पहुंची जहां पानीमें खड़ी एक मचान पर रुद्र बाबा डेरा लगाए बैठे थे।

बाबासे मिलनेके लिए जाते हुए प्रधानमन्त्रीने सम्वाददाताओंको बताया कि वह आत्मिक शांतिके लिए उनके दर्शनोंको जा रही हैं। श्रीमती गांधी इस बाबाके साथ एक घंटे तक वार्तालाप करती रहीं। इस समय उनके समीप केवल निर्मला देश पांडे थी। सुरक्षा प्रबन्ध इतने कड़े थे कि किसी संवाददाता या प्रैस फोटो-ग्राफरको यहां पहुँचने तककी अनुमति नहीं थी। एक फोटोग्राफरने किसी तरह साहस कर वहां पहुंचनेमें सफलता प्राप्त की। लेकिन

सुरक्षाधिकारियों द्वारा उसका कैमरा छीन लिया गया। पत्रकारों द्वारा काफी जोर डाले जानेके बाद इस फोटोग्राफरको उसका कैमरा पुनः वापस मिल सका।

इस बाबाको एक सिद्ध बाबा माना जाता है। इसकी उम्र लगभग १५० वर्ष बताई जाती है। कहते हैं कि एक बार पंडित नेहरू गाजीपुरसे बलवा तक एक भाषण देनेके सिलसिलामें जा रहे थे। एकभूतपूर्व सांसदके अनुसार पंडित जीका मोटर द्वारा वहां पहुँचनेका कार्यक्रम था। लेकिन पंडित नेहरूने एकाएक अपना इरादा बदल लिया और उन्होंने गंगाके बीचसे मोटर किश्ती द्वारा वहां पहुंचनेकी इच्छा व्यक्त की। रास्तेमें यही बाबा उनकी प्रतीक्षा में खड़े थे और उनके हाथमें पुष्प माला थी। जैसा कि वह जान चुके थे कि पंडित नेहरू इसी रास्तासे आ रहे हैं। इससे यही सोचा गया कि बाबाने अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ही पंडितजीको इस रास्तासे आनेके लिए प्रेरित किया था। लेकिन इसके विपरीत श्रीमती गांधीकी यह यात्रा हर तरहसे सुनिश्चित योजनाके अन्तर्गत थी। केवल स्थानीय जनताको इस बारेमें सूचना नहीं थी।

इसी वर्ष २३ मईको प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी जिम्बावेके प्रधानमन्त्री श्री मेगवी को हवाई अड्डा पर विदा देनेके बाद हरिद्वार के लिए रवाना हो गई। उनकी इस यात्राका उद्देश्य वहां आनंदमयीमांका दर्शन करना था। इस रोज आनंदमयीमां अपना ८७वां जन्म दिवस मना रही थीं। श्रीमती गांधी आनंदमयीमांके साथ लगभग ६० मिनट तक रही। आनंदमयी मांके साथ उनकी यह मुलाकात नितांत गोपनीय रखी गई। कहते हैं कि वहां इस दिन एक यज्ञका आयोजन भी किया गया।

२८ मईको मैडम केदारनाथ एवं बद्रीनाथ की यात्रा पर गई। केदारनाथमें श्रीमती गांधीने दो घण्टे तक पूजा की। वह गोचरसे मन्दिर तक पैदल गई।

२९ मईको प्रधानमन्त्री बद्रीनाथ गईं और वहां वह ६० मिनट तक रहीं। इस यात्रा के दौरान प्रधानमन्त्रीने गढ़वाल चुनाव क्षेत्र में जहां उन दिनों चुनाव हो रहे थे, जाकर सार्वजनिक भाषण देना नामन्जूर कर दिया।

प्रधानमन्त्रीके एक निकटवर्ती सूत्रके हवाले से यह पता चला है कि श्रीमती गांधी मई १६ से लेकर मई ३१ तक लगभग प्रतिदिन तीर्थयात्रा पर रही। दिल्ली लौटने पर वह एक देवीके मन्दिरमें काफी देर रहीं। यह मन्दिर उनके महरोली स्थित फार्मसे थोड़ी दूरी पर स्थित है। जहां श्रीमती गांधीने नागपाल बाबासे आशीर्वाद लिया। यह मन्दिर केवल आठ वर्ष पुराना है और इसकी स्थापना आपात-स्थितिके दौरान की गई।

इस मन्दिरके सम्बन्धमें एक दिलचस्प कहानी भी विख्यात है। कहते हैं कि आपात-स्थितिके दिनोंमें इस मन्दिरको गिरानेके लिए बुलडोजर भेजे गए लेकिन मन्दिरके बाबाने अपनी शक्तिसे उन्हें नाकारा कर दिया। जब यह समाचार प्रधानमन्त्री निवास तक पहुंचा तो तभीसे प्रधानमन्त्री परिवार उनका कायल हो गया। इसके बाद प्रधानमन्त्रीने इस मन्दिर के निर्माणमें विशेष रुचि दिखाई। उन्होंने इस मन्दिरकी आधारशिला भी रखी।

यह भी सुननेमें आया है कि प्रधानमन्त्री जब दिल्लीमें होती हैं तो वह प्रतिदिन सुबह-सुबह इस मन्दिरमें जरूर जाती हैं।

राजधानीके एक वरिष्ट भविष्यवक्ताके अनुसार पिछले चार वर्षोंमें ज्योतिषके प्रति प्रधानमन्त्रीकी आस्था विशेष रूपसे गहरी हुई है। उन्होंने इस अवधिमें अनेकों पूजाएँ व यज्ञ किए हैं। उस समस्यामें इन कार्योंमें उनके सलाहकार भूतपूर्व रेलमन्त्री पण्डित कमलापति त्रिपाठी हैं। पण्डितजीने अपने घर से पूजापाठसे निपट कर प्रतिदिन प्रधानमन्त्री को प्रसाद आदि देने जाया करते थे। ऐसा माना जा रहा है कि प्रधानमन्त्रीको अब इन कर्मकाण्डोंमें अत्यधिक विश्वास होता जा रहा है।

प्रधानमन्त्रीको शकुन और अपशकुनमें आजकल कितना विश्वास हो सकता है, इसका प्रमाण इस घटनासे भी मिलता है।

जनता शासनके दौरान जब श्रीमती गांधीने चिकमंगलूरसे विधानसभाके लिए चुनाव लड़नेका निर्णय लिया। उस समय चिकमंगलूर कांग्रेस (इ) कमेटीने श्रीमती गांधी को अपना उम्मीदवार बनानेका प्रस्ताव पारित किया तो उसके फौरन बाद वहां जोरसे आँधी आई और वहां लगे शामियाने उखड़ गए। इसे बुरा अपशकुन माना गया। 'प्रधानमन्त्री के तांत्रिक सहायताकारोंने चिकमंगलूर प्रस्थान रोक दिया। दुबारा शुभ मुहूर्त निकलवाकर प्रधानमन्त्री वहां गयीं। रास्ताभरमें जो-जो भी देवी-देवता प्रधानमन्त्रीको नजर आते गए वह उन्हें प्रणाम करके आगे बढ़ती रही। शृंगेरीमें श्रीमती इन्दिरा गांधीने जगद्गुरु विद्याधर स्वामीके आशीर्वाद प्राप्त किए। इसके बाद वह श्रद्धाम्बाके मन्दिरमें गयीं। उन्होंने वहां गणपति आश्रममें भी पूजा की थी। चिकमंगलूरमें अपना नामांकन पत्र भरने के बाद प्रधानमन्त्री दक्षिणके प्रख्यात मुस्लिम सन्त बाबा भूदांकी दरगाह पर भी गईं। उसके बाद वह एक जैन मन्दिरमें रहीं। कहते हैं कि जिस समय श्रीमती गांधीने चिकमंगलूरमें अपना नामांकन पत्र भरा था, तब वह पूरी तरह एक तांत्रिक भक्त नजर आ रही थी। पीली साड़ी, गहरा बार्डर, सफेद शाल और गलेमें रुद्राक्ष माला व माथे पर बड़ा तिलक।

और अब सत्तामें पूरी तरह पुन: प्रतिष्ठित होनेके बाद भी श्रीमती गांधीकी धर्मकाण्डमें आस्था कम नहीं हुई है बल्कि वह आगेसे बढ़ी ही है क्योंकि प्रधानमन्त्री होते हुए श्रीमती गांधी अन्तत: तो एक मानव ही है और एक मानवका पराशक्तिसे प्रति आकार्षण होना स्वाभाविक ही है।

(दैनिक 'वीरप्रताप' २१-२२ अगस्त ८१ से साभार)

ज्योतिष्मतीके रजतजयन्ती विशेषाङ्कार्थः—

श्रीसूर्य यन्त्रका विधि-विधान

[लेखक :—एडवोकेट, श्री श्याम कसेरा, 'कुल-सेवक']

श्री विक्रम संवत् २०३७ के 'श्रीविश्व-विजय पञ्चाङ्ग'में पृष्ठ १४० से १४५ तक "तान्त्रिकवाङ्मयमें श्री सूर्यके यन्त्रके तात्विक गुप्तार्थका रहस्योद्घाट" शीर्षक लेख छपा था जिसमें सूर्ययन्त्रके सिर्फ सैद्धान्तिक पक्षका विवेचन था। लेखका क्रम भी पृष्ठोंके सही क्रम के अभावमें प्रेस-मैनकी भूल-वशात् आगे-पीछे हो गया था, जिससे पाठकोंको समझनेमें बहुत कठिनाई हुई। सम्माननीय श्री सम्पादकजी को अगले वर्ष यानि कि चालू वर्ष २०३८ के उक्त पञ्चाङ्गमें पाठकोंकी सुविधाके लिए उक्त लेखके शुद्ध पृष्ठ क्रमकी सूचना मात्र देनेको लिखा था, यदि उक्त सूचना न भी दी गई हो तो शुद्ध क्रम उस लेखका अग्राङ्कित है :—

शुद्ध पृष्ठ क्रम–	१	२	३	४	५	६
छपी पृष्ठसंख्या–	१४०	१४३	१४४	१४२	१४१	१४५

उक्त लेखके तीसरे पृष्ठ (छपी पृष्ठ संख्या १४४) पर वर्णित "पञ्चदशी यन्त्र" की उन दो विधियोंके विषयमें भी बहुतसे पाठकोंने जानकारी प्राप्त करनेकी आकांक्षासे बहुत पत्र लिखे हैं, जो तन्त्रशास्त्रके एक मर्मज्ञ अधि-कारी विद्वान् द्वारा संग्रहीत की गई थी एव जिसका विधि-विधान देवाधिदेव महादेवजीके द्वारा जगज्जननी पार्वतीजीके प्रति कहा गया है। जिज्ञासु पाठकोंको व्यक्तिगत रूपसे पत्रों द्वारा विस्तारपूर्वक समझाना मेरे पक्षमें सहज-साध्य नहीं था, अतः सभी जिज्ञासुओंको 'ज्योतिष्मती' के इस रजतजयन्ती विशेषांकमें उक्त विषय प्रकाशित करवानेके आश्वासनपूर्ण उत्तर दिये। फलस्वरूप अन्य पाठकोंको भी लाभ प्राप्त हो सकेगा। प्राप्त दोनों विधियों का बिना किसी हेर-फेरके अविकल रूपसे सुधी-तंत्र प्रेमी पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे पाठकोंको कुछ लाभ हुआ तो भविष्यमें इस विषय सम्बन्धित अन्य विधियाँ भी छपाई जायेंगी।

॥ श्रीमद्गुरुगणेशाम्बिकाभ्याम् नमो नमः ॥

卐अथ पञ्चदशी यन्त्र पद्धति लिख्यते卐

एक समय लोककल्याणकी दृष्टिसे जग-ज्जननी माता पार्वतीजीके द्वारा आदि तन्त्र शास्त्र प्रवर्तक देवाधिपति श्री महादेवजीसे सहज-साध्य सर्वकल्याणकारी यंत्रकी विधि पूछने पर औघड़ बाबा भोलेनाथने पार्वतीजी के प्रति कहा कि—हे देवी ! कलियुगके कुप्रभाव को जानकर मैंने पूर्व ही सभी प्रकारके मन्त्र-यन्त्रोंको कीलित कर दिया है। सिर्फ इस पञ्चदशी यन्त्रको ही बिना कीले रहने दिया है। यह परम गोपनीय है। जिसे मैं तुमसे कहता हूँ। तुम भी इसे स्वयोनिवत् गुप्त ही रखना। लोभी-लालची कामी-लम्पट, श्रद्धा-भक्ति रहित एवं खल प्रकृतिके किसी भी दुर्जन व्यक्तिको इस यन्त्रकी पूजा उपासनाका भेद मत बताना। इस निष्कीलित जगत् प्रसिद्ध यन्त्रके विधि-विधानको मन लगाकर श्रवण करो।

किसी भी पवित्र नदीके किनारे पर जहां कि सुन्दर-सुन्दर उत्तम फल-फूल वाले पेड़ लगे हुये हों वहां पर एक अच्छी कोठरी साधक को गोबर-मिट्टीसे लीप-पोत कर बनानी चाहिए। उसका फर्श भी गोबर-मिट्टोसे लिपवाकर उस पर अष्ट-गन्धसे एक बहुत बड़ा बीजमन्त्र लिखना चाहिए जिसका मुँह पूर्व दिशामें रहेगा, उसके माथे पर अर्द्धचन्द्र-युत अनुस्वार लिखें। बादमें अष्टगन्धसे ही पृथ्वी पर पञ्चदशी (१५) का यन्त्र लिखना चाहिए। उसके ऊपर सोने, चान्दी, ताम्बा, लोहा या मिट्टीका दीपक रखना तथा उस दीपकमें भी १५ (पंचदर्शा) का यन्त्र लिखना चाहिए। उस दीवेमें गायका शुद्ध घी भरकर उसमें १२, १८, १०८ या १००८ तारकी लाल सूतकी बत्ती लगा कर दीपक जलाना चाहिए। उस दीपकके चारों तरफ तेलसे भरकर ४ चार दिये और जलाने चाहिए। उसके बाद लाल कपड़ेका आसन बिछाकर बीचमें उस पर यन्त्र साधकको बैठना चाहिए।

यदि क्रूर कर्म करना हो तो सूर्य स्वरमें सांस खींचे और दक्षिण तीन पांव पूर्व सामा के उत्तर सामा आगे रखे, बादमें पूर्वदिशा दीपकके सामने आसन पर बैठें। साधकके धोती, वस्त्र और आसन भी लाल रंगके ही होने जरूरी हैं, जिनमें और किसी भी रंगका कोई भी तार नहीं होना चाहिए। साधक आसन पर बैठकर माया बीज (ह्रीं) को जपता रहे, तथा यन्त्रको अष्ट-गन्धसे भरता रहे, साथ ही अपने इच्छित कार्यको भी यन्त्र के ऊपर लिखते जाना जरूरी है। पहले दिन ५०, १००, ३००, ५००, ७००, ९०० या ११०० जितने भी यंत्र लिखे उसी प्रकार प्रति-दिन नियमसे उतनी ही संख्यामें यन्त्र नित्य लिखना अनिवार्य है। केशरसे एकके अंकसे आरम्भ कर एक लाख लिखें तो हनुमान्जी दर्शन देते हैं। इसी प्रकार प्रतिदिन लिखना तथा भोजपत्र या पतले कागज पर यन्त्रको लिखकर उसे काटकर गेहूँके आटेमें गोली बना कर मछलियोंको किसी तालाब नदी आदि जहां मछली हों खिलाना। मछली गोली खाये तो कार्य सिद्ध अवश्य होता है। यदि मछली गोली नहीं खाये तो लिखना बन्द कर देवें—यह कार्य नहीं होनेका संकेत है। मछली को गोली गेरते समय भी माया बीजका जप करता रहे। जब एक लाख यन्त्र लिखना पूरा हो जावे तो जिस प्रकार बलिवैश्व किया जाता है उसी तरह नदी, तालाबके पानीमें जहाँ मछलियां होवे वहां मेवाका हवन एक लाखका दशांश यानि कि दस हजार करना चाहिए। अग्निमें नहीं। मेवाका हवन बीज मन्त्रके साथ स्वाहान्त बोलते हुए जलमें करना चाहिए। इस हवनके बाद दशांशके हिसाबसे तर्पण-मार्जन, ब्राह्मण भोजन, गोदान आदि करना।

विविध प्रयोग—यन्त्रमें एकसे आरम्भ कर ९ तक लिखनेसे हनुमान्जीके दर्शन होवे। २ से आरम्भ कर ९ तक लिखकर बादमें १ लिखनेसे राजवश्य हो। ३ से ९ तक लिखकर पीछे १, २ लिखनेसे व्यापारमें उन्नति-वृद्धि होती है। इसी प्रकार ४ से ९ तक लिखने के उपरान्त १, २, ३, लिखनेसे साध्यका उच्चाटन होता है। ५ से ९ तक लिखनेके पीछे १, २, ३, ४ लिखनेसे साध्यका स्थान भ्रष्ट

होवे। ६ से आरम्भ कर ६ तकके बादमें १ से ५ तक क्रमसे लिखने पर मारण होता है। ७ से ६ तक लिख पीछे १ से ६ तक लिखनेसे वश्य सिद्धि होती है। ८, ६ लिखनेके पीछे १ से ७ तक लिखें तो अशुभ चाहने वालोंको विपत्ति होतीं है। धन-वृद्धिके लिए प्रथम ६ लिखकर पीछे १ से ८ तक लिखनेका विधान है। इस प्रकार यन्त्रको आठ अंगुलकी चमेली की कलमसे अष्टगन्ध द्वारा एक लाख लिखने का प्रमाण है। प्रत्येक अंकके साथ मायाबीज लिखना भी आवश्यक है। मायाबीज न लिखा जा सके तो फिर एक लाखकी जगह सवालाख यन्त्र लिखने जरूरी हैं। प्रतिदिन नियमित रूपसे पूर्व निर्धारित संख्याके अनुसार यन्त्र लिख, उनकी आटेकी गोली बनाकर मायाबीज को जपते हुए गोलियां मछलियोंको देते रहने से कार्य सिद्ध होते हैं। उच्चाटन सिद्धिके लिए लिखित यन्त्रोंको पर्वत शिखर पर चढ़ कर उड़ावें एवं बन्दीको छुटानेके लिए पृथ्वी पर खड़ियासे यन्त्र लिखें। यन्त्र साधनाके समयमें ब्रह्मचर्यसे रहना और हविष्यान्न भोजन करना अनिवार्य है। अष्टगन्ध—केसर, चन्दन, अगर, कूट खस, नेत्रवाला, जटामांसी, देवदारु है।

"पञ्चदशी यन्त्रकी दूसरी विधि"

यन्त्र साधनाका कार्य शुभ कर्मके लिए शुभ दिनसे एवं क्रूर कार्यके लिए क्रूर दिनसे आरम्भ करें। और यन्त्र लिखकर निर्धारित गिनतीके अनुसार नदीमें बहा दिया करें। जो यन्त्र न बहै उसको लेकर अपने पास रखने से सर्व कार्य सिद्धि होती हैं। यथा—१००० लिखनेसे औषध सिद्धि होती है, दो हजारसे तंत्रसिद्धि, तीन हजारसे शत्रु प्रसन्न होवे। ४००० से रोजगार मिले, ५००० से दुःख नाश हो। ६००० से रोग निवारण हो, खोई वस्तु प्राप्त होवे। ७००० से अरिमद्द मोचन एवं ८००० से राजा प्रसन्न होता है। ६००० से विदेशी घर आवे एवं दस हजारसे बन्ध्याको गर्भ रहे। ११००० से लक्ष्मी प्रसन्न और १५००० से इच्छा पूर्ति होती है। यन्त्र लिख कर नदीके जलमें बहानेसे या आटेकी गोली बना मछलियोंको खिलानेसे कार्य सिद्धि होती है।

यन्त्र लिखनेसे पहले सवालक्ष "ॐ ह्रीं क्लीं स्वाहा" मन्त्रके जप करने चाहिए। मोहनार्थ दैनिक दस यन्त्र, आकर्षणके लिए नित्य बीस एवं जयके लिए प्रतिदिन तीस यन्त्र लिखना। स्वर्ण कलम और असली महावरसे लिखनेसे मोहन; चान्दीकी लेखनी गोरोचनसे आकर्षण, सोनेकी कलम द्वारा कस्तूरीसे लिखने पर विजय मिलती है। चान्दीकी लेखनी हल्दीसे स्तम्भन होवे। स्वर्ण-शलाका-केशर द्वारा देवदर्शन होता है। कनक रसाक्त कौवेके पंखकी लेखनीसे संहार होता है। लोहेकी कलम-शवभस्मसे द्रुत गमन सिद्ध होवे। व्रणवृक्षरस एवं लोहकलमसे विद्वेषण होता है, एवं श्वेत चन्दन तथा दूबसे लिखने पर उत्पात शान्ति होवे। कलमकी लम्बाई आठ अंगुल प्रमाण है। बन्दी मोचनहित एक लाख, राजप्राप्तिके लिए दो लाख, वंशवृद्धि-हित तीन लाख, श्राप वरदान देनेकी शक्तिके लिए चार लाख एवं वाक्सिद्धिके लिए पांच लाख यंत्र लिखने चाहिए। ६ लाखसे षट्-कर्म सिद्धि, सात लाखसे लक्ष्मीपति, आठ लाख से अष्टसिद्धि, नौलाखसे नव-निधि प्राप्त होती

है। ग्यारह लाख लिखनेसे साधक मेरे (महादेवजीके) समान हो जाता है। साधकको नित्य ११, २५, ३३, ५१ वा १०८ यन्त्र लिखने चाहिए। शुभ कार्यमें उत्तर मुँह एवं अशुभ में दक्षिण मुँह करके लिखें। ब्रह्मचर्यसे रहें, स्त्रीसग कदापि न करें। ब्राह्मण भोजपत्र, क्षत्रीय ताड़पत्र, वैश्य पीपल पत्र एवं शूद्र कागज पर लिखें। साधक लाल वस्त्र पहने एवं लाल ही आसनका उपयोग करें। पृथ्वी पर सोवें एवं यन्त्र साधनाके कालमें जौ या मूंग चावल का भोजन करें।

॥ इति १५ के यंत्रकी विधि ॥

तन्त्र शास्त्रके प्रकाण्ड-विद्वान् एवं उच्चकोटिके एक वयोवृद्ध साधकके हस्तलिखित प्राचीन संग्रहसे उपरोक्त दोनों विधियां प्राप्त की थीं, जो जिज्ञासु तंत्रप्रेमी पाठकोंके लाभार्थ प्रस्तुत की गई हैं। इन विधियोंमें वर्णित विषय कहां तक प्रामाणिक और फलप्रद है यह तो प्रयोगात्मक परीक्षणसे प्राप्त होने वाले अनुभवों पर ही निर्भर करेगा। फिर भी "करत-अभ्यास" एवं "यादृशी भावना यस्य-सिद्धिर्भवति तादृशी" जैसे इन तन्त्र शास्त्रीय आर्षवचनोंके अनुसार यह निश्चित रूपसे कहा जा सकता है, जिस प्रकार तन्त्रशास्त्रके जटिल विधि-विधानों एवं समय और साधन सापेक्ष प्रयोगात्मक साधनोंके स्थान पर हमें आंचलिक विभिन्न भाषा बोलियोंमें एक परम्परासे प्रचलित लौकिक साबरीतन्त्र-मन्त्रोंके प्रत्यक्ष फलप्रद प्रमाण देखनेको मिलते हैं, उसी प्रकार इस सुप्रसिद्ध शास्त्रसम्मत पञ्चदशी यन्त्रकी उपरोक्त शास्त्रीय एवं लौकिक मिश्रित विधियां भी शक्ति-सम्पन्न और चमत्कारिक फलप्रद होनी चाहिए, इसमें संशय नहीं।

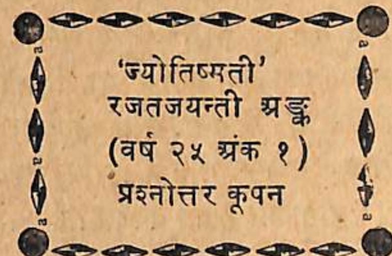
बाखराबाद, कटक—७५३००२ (उड़ीसा)

'ज्योतिष्मती' प्रश्नोत्तर कूपन

विगत २३वें वर्षसे ग्राहकोंके लाभार्थ यह योजना प्रारम्भ की गई है। इससे अनेक पाठकों ने लाभ उठाया उसका संख्या विवरण गत 'नववर्षाङ्क' में दिया जा चुका है।

एक कूपन पर एक प्रश्नका उत्तर बन्द लिफाफेमें भेजा जाता है। उत्तरके लिए ३५ पैसेका पता लिखा लिफाफा या डाक टिकट और नीचे दाहिनी ओर छपा कूपन काटकर नीचे बाँई ओर छपे जोधपुरके पत्ते पर भेजें। नित्य अनेकों प्रश्न-कूपन आते हैं, उन सबका तत्काल उत्तर नहीं दिया जा सकता। एकसे डेढ़ मास तक प्रश्नकर्ताको अपने उत्तरकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। इस अङ्कके कूपन १५ नवम्बर ८१ तक स्वीकार किये जावेंगे।

प्रश्नोत्तर कूपन भेजनेका पता—
पं० श्री अमरचन्द महेशचन्द ज्योतिषी
(ज्योतिष्मती-प्रश्नोत्तर विभाग)
पं० मानचन्द मार्ग, पूंगलपाड़ा,
जोधपुर (राजस्थान)



केवल 'ज्योतिष्मती' के लिये—

प्रताप लंकेश्वर रस (योगरत्नाकर)

[लेखक :—श्री पं० रघुवीरशरण शर्मा वैद्य आयुर्वेद-बृहस्पति]

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक-भस्म, शुद्ध सींगिया विष। हरेक १-१ तोला, काली मिर्च ३ तोला, लोहभस्म ४ तोला, शंख भस्म ८ तोला, वनोपल भस्म (आरनेकंडेकी राख) कपड़ेमें छनी हुई १६ तोला।

विधि—सबसे पहले खरलमें मर्दन करके पारद और गन्धककी कज्जली कर लें। फिर कालीमिर्च और सींगिया विषका चूर्ण करके कपड़छान कर लें। फिर सब चीजोंको मिलाकर ६ घंटे खरलमें घोट लें फिर शीशीमें भर कर डाट लगाकर रख लें।

मात्रा और अनुपान—मात्रा २-३ रत्ती, अनुपान अदरखका रस ६ माशे प्रातः सायं दिनमें दो बार। अदरखके रसके अभावमें अदरखका शर्बत लें।

शर्बतकी विधि—अदरखको कूटकर कपड़ेमें छानकर रस निकाल लें, जितना रस हो उससे चौगुनी चीनी लेकर १ तारकी चाशनी बनाकर किसी चौड़े मुखकी शीशीमें भर कर डाट लगाकर रख लें। मात्रा ६ माशेसे १ तोला तक यह भी संभव न हो तो मधुसे दें।

गुण—प्रसूतावस्थामें होने वाले रोग, ज्वर, सन्निपात, सन्निपातका लक्षण, प्रलाप, अतिसार (दस्त) अयतानक या हिस्टीरियाका लक्षण, दांती भिचना, शोथ (सूजन) आदिमें अव्यर्थ एवं अनुभूत योग है। यदि ज्वर भयंकर हो और होता भी है तब देवदार्वादि क्वाथ (योगरत्नाकर)के साथ दें। इससे प्रलाप (बकवाद) प्यास वमन और शूलमें लाभ होता है।

अथवा दशमूलके क्वाथके साथ दें। दशमूल शोथ (सूजन) पर भी लाभ करेगा। परन्तु दशमूल अच्छा होना चाहिये। दशमूल प्रायः अच्छा नहीं मिलता है[1]। दस्तोंमें १ माशा बृहन्नायिका चूर्ण मिलाकर दें। मकूल्लशूलजो कि रक्तस्राव रुकनेसे होता है उसमें ३ माशे यवक्षार, ३ माशे हल्दी और दो तोला गरम घीके साथ दें।

अतिरिक्त रोगोंमें भी—

लगभग ४० वर्षसे मैं प्रताप लंकेश्वरको अपतंत्रक (हिस्टीरिया) और गृध्रसी (सायाटिका) में भी वर्त रहा हूं, निश्चित सफलता मिलती है। यदि अपतंत्रक रोग भयंकर हो, दिनमें कई-कई बार दौरे पड़ते हों तब मांस्यादि क्वाथ (सिद्धयोग संग्रह) के साथ देता हूं।

मांस्यादि क्वाथ—जटामांसी १ तोला, अश्वगंधा ३ माशे, खुरासानी अजवायन १॥ माशा। इसको दरदरा करके १६ तोले पानी में औटावें, ४ तोला पानी रहने पर छान लें, प्रतापलंकेश्वर चाट कर ऊपरसे इसे पी लें,

(१) शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, अरलुकी छाल, काश्मीरी छाल, बड़ी कटेली, अरबी गोखरू, छोटी कटेली, और बेल ये दस चीजें हैं दशमूलमें। ऊपरकी ६ औषधियोंको अलग-अलग मैं देहरादूनसे मंगाता हूं। गत वर्ष दिल्लीसे मंगाई थीं तो पाटलाकी छाल की जगह न जाने क्या दे दिया।

यह एक मात्रा है, दोनों समय इसी तरह पीवें। यदि गृध्रसी भयंकर हो, घोंटूमें सूजन हो, वेदना के कारण रोगी बेचैन हो तो रास्ना सप्तक (शार्ङ्गधर) के अनुपानसे दें।

रास्ना सप्तक—रास्ना गिलोय अंडकी छाल, देवदारू पुनर्नवामूल (सांठकी जड़) गोखरू छोटे, और अमलतासका गूदा। समभाग। इनको दरदरा करके रख लें। इसमें १॥ तोला लेकर १६ तोला पानीमें काढा करें, ४ तोला पानी रहने पर, छान कर १ माशा सौंठका चूर्ण और ६ माशेसे १ तोला तक कास्ट्रैल डालकर प्रातः सायं दोनों समय सेवन करें, निश्चित लाभ होगा। ग्रंथकारने लिखा है कि गुगल, गुडूची और त्रिफलाके सेवनसे वातज तथा कफज अर्थात् सूखी बवासीरमें लाभ होता है, परन्तु मेरा इस पर अनुभव नहीं है। शास्त्रोक्त योग वैद्यकके हों अथवा ज्योतिषके बिना अनुभवके लिखना व्यर्थ ही समझता हूँ। यही देखिये प्रताप लंकेश्वरको शास्त्रमें न तो 'हिस्टीरिया, पर लिखा है और न गृध्रसी पर, मेरा स्वयंका अनुभव है।

अब आधुनिक विज्ञानानुसार अति संक्षिप्त रूपमें सूतिका रोगोंके कारणों पर भी प्रकाश डालना आवश्यक समझता हूँ, अन्यथा लेख अधूरा ही रह जायेगा। प्रसव कालमें गर्भाशय तथा योनि क्षत-विक्षत रहती है, अतः स्ट्रैप्टोकोकस, स्टैफिनोकोकस, टिटैनो आदि नामके जीवाणु गर्भाशय तथा योनिमें प्रविष्ट होकर ज्वर सन्निपात, अतिसार (दस्त), सूजन, हनुस्तंभ (दांती भिचना), मन्यास्तंभ (ग्रीवा-गर्दन) का जकड़ना आदि रोगोंको उत्पन्न कर देते हैं। महर्षि कश्यपने लिखा है कि—

"सर्वेषामेव रोगाणां ज्वरः कष्टतमोमतः।"

अर्थात् सूतिकाके जितने रोग हैं उनमें अधिक कष्ट देने वाला ज्वर है। (अंग्रेजीमें सूतिका ज्वरको परपरलफीवर कहते हैं) क्योंकि यह जीवाणु जन्य हैं "ग्रह बाधात् ज्वरः सञ्जायते स्त्रियः" (काश्यपसंहिता)

यहां पर ग्रहबाधाका अर्थ जीवाणु बाधा है। आधुनिक विज्ञानके अनुसार इसका नाम स्ट्रैप्टोकोकस है[1]।

हमारे महर्षिगण जीवाणुओंसे और इनके कार्योंसे पूर्णतया परिचित थे। अतः महर्षि सुश्रुतने चेतावनी दी है कि—

निशाचरेभ्यो रक्ष्यस्तु नित्यमेवक्षतातुरः।
(सु. उ. तं. अ. ६)

अर्थात् निशाचरोंसे (रोगजनक जीवाणुओंसे) क्षतातुर (व्रणी-जख्मी) की सदैव ही रक्षा करनी चाहिये। क्योंकि ये जीवाणु क्षतके निमित्त व्रणीके पास पहुँच जाते हैं, पहुंचकर रोगोंको उत्पन्न करते हैं[2] इसका उपाय महर्षि सुश्रुतने लिखा है कि—

सर्षपारिष्टपत्राभ्यां सर्पिणा लवणेन च।
द्विरन्हः कारयेद् धूपं दशरात्रमतन्द्रितः॥
सु. सू. १६-२७

सरसों नीमके पत्ते सेंधा नमक और घी। इनकी धूनी प्रसूतागारमें दस दिन तक दोनों समयबिना नागा देते रहना चाहिये। आयुर्वेदके अन्य ग्रन्थोंमें भी अनेक प्रकारकी धूनी लिखी

(१) स्ट्रैप्टोकोकस फैकलिस, रीविडैन्स और हेमोलाइटीकस भेदसे तीन प्रकारका है।

(२) क्षतजनिमित्तं व्रणिमुपसर्पन्ति। सु. सू. १६।२२

लेखमाला : राशियां और नक्षत्र—

(१) मेष राशि और इसके नक्षत्र

[लेखक :—श्री केवल आनन्द जोशी]

[पृथ्वी पर विषुवत् रेखासे १२ अंश उत्तरकी ओर यह राशि स्थित है। इस राशिमें अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र पड़ते हैं। तारासमूहकी आकृति मेढ़े (बकरी) के चिन्हकी है। ग्रीक लोगोंने इसे एरीज कहा है। निरयन सूर्य इस राशि पर वैशाख मास (१३ अप्रेलसे १४ मई) पर्यन्त रहता है। चन्द्रमा प्रति सत्ताइसवें दिन सवा दो दिनके लिए इस राशि पर संचार करता है। इस राशिके जातक-फलोंमें नक्षत्रोंका प्रभाव भी विचारणीय है अतः पाठकोंको चाहिए कि वे अपना जन्म-नक्षत्र ज्ञात करनेके उपरान्त प्रस्तुत लेखका अध्ययन करें। विद्वान् लेखककी यह उपयोगी लेखमाला 'ज्योतिष्मती'के लिए प्रारम्भ की गई है, अतः सम्पादक की आज्ञाके बिना अन्य कोई पत्र इसको पूर्ण या आंशिक रूपमें प्रकाशित न करें।

—सम्पादक]

राशि चक्रकी पहली राशि मेषको त्याग और बलिदानका प्रतीक माना जाता है। इस राशिके लोग अधिकांशतः दुबले-पतले किन्तु लम्बे और बलिष्ठ शरीरके, चेहरे पर चिह्न वाले, लाल और गोल नेत्रों वाले होते हैं। इनका चेहरा भी रक्तवर्णका होता है तथा लम्बा चेहरा, घुँघराले एवं कठोर केश इनकी विशेषता होती है। ये जल्दी-जल्दी कार्य निपटाने वाले और जल्दी-जल्दी भोजन करने वाले होते हैं। शाक-भाजी इनकी विशेष प्रिय होती है। इस राशिका अधिपति मंगल ग्रह होता है अतः इस राशिके जातक चंचल क्रोधी, शौर्य एवं साहसपूर्ण कार्योंको करने वाले, वैज्ञानिक मस्तिष्कके, उदयमी, कर्तव्य-परायण, चुस्त तथा हमेशा ही नेतृत्व करनेके अभिलाषी होते हैं। स्वतंत्र जीवन जीना, इन्हें प्रिय होता है, परन्तु इसके बावजूद भी ये हमेशा बन्धनों से घिरे रहते हैं। ये विचारोंसे उन्मुक्त और नई विचारधाराका स्वागत करने वाले और सदैव ही नई-नई योजनाओंके कार्यान्वियन में सम्बद्ध रहते हैं।

मेष राशिके जातक प्रखर बुद्धि, प्रतिभावान् और तार्किक स्वभावके होते हैं। बचपन एवं किशोरावस्थामें ये विशेष चपल परन्तु विशिष्ट कार्यकलापोंमें संलग्न रहते हैं। आयुके अनुसार ये गम्भीर और कार्यदक्ष बनते जाते हैं। घूमने-फिरने तथा यात्राओंके ये विशेष शौकीन होते हैं और अधिकांश मेष जातक व्यवसाय अथवा आजीविका भी ऐसी चुनते हैं जहां भ्रमण कार्य अधिक हो। अग्नि, जल तथा लौह धातुसे इनको भय बना रहता है। जीवन का १८वाँ, २१वाँ, ३०वाँ, और ३६वाँ वर्ष इन्हें विशेष भाग्योदयकारक साबित होता है। ४५

है, परन्तु हम उनका लिखना अनावश्यक समझते हैं।

अन्य सावधानियां—

वैसे तो आयुर्वेदमें प्रसूताके लिये बहुत बड़ा विधान है, परन्तु मैं संक्षेपमें इतना ही कहना चाहता हूं कि सूतिकागार स्वच्छ हो। सूतिकाके वस्त्र भले ही पुराने हों किन्तु स्वच्छ हों। योनिमें रखनेके वस्त्र नये हों अथवा पुराने।

वर्षके उपरान्त ये जातक विशिष्टताके शिखर पर होते हैं और ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्वके अनुरूप साबित होते हैं। परन्तु इसमें अन्य ग्रहोंका सहयोग भी विचारणीय होता है।

मेष राशिको पूर्व दिशा, वन, पर्वत, भूमि तथा बांध निर्माण, विद्युत् संयत्रोंका संचालन, राष्ट्रीय स्तरके कार्य अथवा सामूहिक हितकी संस्थाओंका आधिपत्य प्राप्त है। राष्ट्रीय ज्योतिषमें इंगलैण्ड, जर्मनी, स्वीडन, स्विटजरलैण्ड, फ्रांस, पीरु, वैस्टइंडीज, डेनमार्क आदि देशोंका प्रतिनिधित्व प्राप्त है।

मेष राशि अगर किसी जातकके लग्नमें पड़े अर्थात् जन्मके समय यदि यह राशि पूर्वी क्षितिज पर उदय हो रही हो तो व्यक्ति कठोर परिश्रमी, कृषि अथवा तकनीकी कार्योंमें निपुण होता है। मेष लग्न प्रतिदिन किसी भी अक्षांश देशान्तर पर लगभग डेढ़ घंटेके लिए उदय होता है। सूर्य एवं बृहस्पति इस लग्नके लिए योगकारक होते हैं। यदि जन्मकालके समय इन ग्रहोंकी स्थिति अच्छी हो तो मेष जातक सेनापति, अभिनेता, निर्देशक, समाज-सुधारक, प्रशासनिक अधिकारी, राजकीय सेवासे सम्बद्ध होता है। सबल मेष राशिके जातक अच्छे इंजीनियर, मैकेनिक, पायलट, गणितज्ञ पुलिस अधिकारी, सर्जन, जमीदार, पशु-चिकित्सक, अनुसंधानकर्ता, अन्वेषक, हेयरस्टाइलिस्ट, विद्युत् अथवा इलैक्ट्रानिक विशेषज्ञ या फिर किसी बौद्धिक संगठनके प्रधान अथवा राजनेता होते हैं।

सायन नियमके अनुसार सूर्य इस राशि पर एक मासके करीब रहता है। (२१ मार्चसे २० अप्रेल तक प्रतिवर्ष) मेष जातकों पर ऐसे सूर्यका सामान्य प्रभाव यह सूचित करता है कि व्यक्ति गौर वर्णका, उच्च नासिका वाला, ज्वलंत व्यक्तित्वका, प्रभावशाली, उदार और उच्च कुलमें जन्मा हुआ तो अवश्य होगा। ऐसा व्यक्ति आमतौर पर स्वाभिमानी, नेता, तुरन्त निर्णय लेनेकी क्षमता वाला, राजसी ठाटबाट वाला, अपने पितासे अधिक प्रभावशाली, प्रसन्नचित, सबका हितैषी परन्तु कुछ सीमा तक लापरवाह और चापलूसीसे प्रभावित होकर हानि उठाने वाला भी होता है। ऐसे जातक जीवनमें संघर्षों और आपत्तियोंसे हताश और निराश नहीं होते, बल्कि ऐसे समयमें उनकी मस्तिष्क संरचना और भी निखर जाती है। प्यारके क्षेत्रमें ये लोग सामान्य रूपसे असफल रहते हैं अतः विपरीत योनिके प्रति उनका लगाव कम ही रहता है। जीवनमें बहुतसे जोखिम भरे कार्योंको कर डालने वाले ऐसे मेष जातक सार्वजनिक सम्मान अथवा राष्ट्रीय स्तरके पुरस्कार भी अर्जित करते हैं। विज्ञान, दर्शन, कला तथा लेखन कार्यमें इनकी अभिरुचि रहती है। शासनाधिकारियों द्वारा ये प्रशंसित होते हैं। इन जातकोंकी सन्तान अल्प होती है। मतान्तरसे इनका एक ही पुत्र होता है। सायन सूर्यका यही प्रभाव उन मेष जातकों पर भी लागू होगा जिनका जन्म उच्चस्थ सूर्यमें होगा। परन्तु यदि सूर्य शनि अथवा राहु आदिसे पीड़ित होगा तो व्यक्ति दीन-हीन, झगड़ालू, विवादास्पद चरित्रका, और साधारण जीवन जीने वाला होगा।

यही प्रभाव चन्द्रमाके सबल होनेका भी है। यदि मेष राशि वालोंका चन्द्रमा पापग्रहों

से विद्ध न हो अथवा अमावस्या, भद्रा, कुयोगों में जन्म न हो तो उपरोक्त सभी शुभ फल इनके चरित्रमें विद्यमान होंगे। परन्तु इसके विपरीत वे अपघाती, दुखी, परिवारसे विछिन्न, साधारण जीवन जीने वाले और व्यसनोंसे लगाव रखने वाले होंगे। वे मांस-मदिराके शौकीन, तामसी वृत्तिके, कामुक तथा जड़ बुद्धिके साबित होंगे। सबल चन्द्रमा यदि बृहस्पति अथवा सूर्यसे दृष्ट होगा तो वे ख्याति अर्जित करने वाले, लेखक, सम्पादक, अधिकारी, कार्यव्यस्त, समृद्ध एवं महत्वाकांक्षी विचारोंसे युक्त होंगे। मौलिक चिन्तन करने वाले ऐसे मेष जातक उच्चकोटिके चारित्रिक गुणोंसे विभूषित माने जायेंगे। सफलता हर कदम पर उनका साथ देती है। वे मित्रोंके परम हितैषी तथा लोक अथवा समाज कार्योंके लिए चिर-स्मरणीय कहलाते हैं।

कालपुरुषके शरीरमें यह राशि सिर, प्रमस्तिष्कीय गोलार्ध, केश राशि पर्यन्त भाग का प्रतिनिधित्व करती है। मेष राशिके नक्षत्रोंसे मस्तिष्कके स्नायु मंडलका अध्ययन किया जाता है। इस राशिका अधिपति मंगल, वार मंगल और भाग्यांक ६ है। रजोगुण वाली, चतुष्पाद वश्य, चर स्वभावकी यह राशि अग्नि तत्व एवं पुरुष जातिका प्रति निधित्व करती है।

मेष राशि और अश्विनी नक्षत्र–

नक्षत्र मंडलका संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है। आकाशके क्रान्तिवृत्तमें कुछ महत्त्वपूर्ण तारे स्थित हैं, ये नक्षत्र एक जगह स्थिर हैं। इनके साथ ही हमारा सूर्य भी एक नक्षत्र है। पुराणोंकी लोक-व्याख्यामें इन नक्षत्रोंसे काफी निर्देश मिलते हैं। प्रत्येक नक्षत्र अपना विशिष्ट प्रभाव रखता है। स्कन्दपुराण में ब्रह्माण्डके कुल नक्षत्रोंकी संख्या अस्सी समुद्र चौदह अरब और बीस करोड़ बताई गई है। इन नक्षत्र समूहोंमें अति-सुपरिचित सप्तऋषि मण्डल भी है। मरीचि, अरुन्धति सहित वशिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह तथा क्रतु। पृथ्वीके विभिन्न भागोंमें इन नक्षत्रों की विभिन्न ढंगसे प्रतिष्ठा की गई। इन नक्षत्रों को चन्द्रपथके अनुसार पहचाना जाता है। जिस मार्ग पर पृथ्वीके निकट इसका उपग्रह चन्द्रमा भ्रमण करता उसे २७ बराबर भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक १३ अंश २० कलाके क्षेत्रमें पड़ने वाले महत्त्वपूर्ण तारे को अश्विनीसे रेवती तककी संज्ञा दी गई है। इन नक्षत्रोंके स्वामी भी राशियोंकी तरह ग्रह ही माने गये हैं जिनमें राहु एवं केतुको भी विभिन्न तारोंका आधिपत्य प्राप्त है। ये नक्षत्र ही सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्रके आधार हैं। राशि गुण जहां एक विशाल वर्गके बाह्य व्यक्तित्व को इंगित करता है वहां नक्षत्र उनके आन्तरिक विशेषताओंका विश्लेषण करते हैं। राशि गुण यद्यपि ६० प्रतिशतकी सीमा तक मेल खायेगा परन्तु नक्षत्र शेष ४० प्रतिशत गुणोंकी व्याख्या अलगसे करता है। इसी कारण प्रत्येक राशिके लोगोंमें एक दूसरेसे कुछ सीमा तक भिन्नता पाई जाती है।

भृगुसंहितामें नक्षत्रोंके आधार पर ही लोक-पुनर्जन्म आदिकी व्याख्या की गई है। इन नक्षत्रों पर प्रत्येक ग्रहका कुछ काल-प्रभाव रहता है, जिसकी व्यक्ति दशा, महादशा बतौर भोगता है। नक्षत्रोंका अधिपति अगर किसी शत्रु नक्षत्रमें होगा तो जातक पर उसके शुभ

प्रभावकी अपेक्षा कुप्रभाव अधिक उभरेंगे।

इस नक्षत्र मंडलका ही पहला नक्षत्र अश्विनी मेष राशिके १३⅓ अंशके क्षेत्र में जाता है। इस नक्षत्रका चन्द्रमा प्रति सत्ताइसवें दिन एक दिनके लिए भ्रमण करता है अतः एक दिनकी अवधिके दौरान पैदा हुए व्यक्ति अश्विनी जातक कहलायेंगे। चन्द्रमा की कुल संचार अवधिको चार भागोंमें विभक्त करनेसे इसके चरण स्पष्ट हो जाते हैं।

अश्विनी नक्षत्र केतु ग्रहके प्रभावका सूचक है। इसे अश्व-योनि, आद्या नाड़ी देवगणमें वर्गीकृत किया गया है। काल पुरुषके शरीरमें यह सिर, प्रमस्तकीय गोलार्धका निरूपण करता है। पारम्परिक ज्योतिषके अनुसार इसके पहले चरणमें पैदा हुए जातक सजावट और शृङ्गारके विशेष प्रिय होते हैं, तथा साथ ही अपव्ययी भी। दूसरे चरणमें जन्मे लोग मेष राशिके सभी गुणोंसे विभूषित रहते हैं और देखनेमें सुन्दर और आकर्षक लगते हैं। तीसरे चरणमें जन्में जातकोंमें चतुराई बहुत अधिक होती है जबकि चौथे चरणमें जन्में जातक उच्च-शिक्षा प्राप्त करने वाले और अपने व्यवसायमें विशेषज्ञ कहलाते हैं।

आधुनिक ज्योतिष गवेषणाओंके अनुसार इस नक्षत्रमें पैदा हुए जातकोंके सिर पर चोट आती है। ऊहापोह, मस्तिष्ककी घनार्द्रता, प्रमस्तकीय रक्तक्षीणता, मिरगी, अपस्मार, उग्र पित्ति, ऐंठन, सिरके किसी भागमें तीक्ष्ण पीड़ा, गुल्म रोग, तन्त्रिकावसाद तथा आत्म-विस्मृति आदिमेंसे किसी एक विकारसे अवश्य ग्रस्त रहते हैं।

कई जातकोंको लकवा, अंगहानि, चर्म रोग मलेरिया आदि भी पीड़ित करता है। अनिद्रा रोग, चेचक, तनाव एवं भय, श्वास-वृद्धि तथा पेट बढ़ने या ऊँचेसे गिरनेके विकार से भी बहुतसे अश्विनी जातक प्रभावित रहते हैं।

मस्तिष्क संरचनाके लिहाजसे अश्विनी जातक बड़े रहस्यमय प्रकृतिके पाये जायेंगे। पहली नजरमें आप उन्हें भांप नहीं सकेंगे। किसी भी स्थितिमें आपेसे बाहर हो जाना, विचार शून्यता, सदैव ही मित्र-विवाद अथवा जमीन-जायदादके झगड़ोंसे परेशान रहना भी अश्विनी जातकोंकी विशेषता है। तिलस्म एवं काला जादू एवं आश्चर्यजनक करतबोंकी ओर ये आकृष्ट रहते हैं। विख्यात जादूगर या चमत्कारिक सन्तोंमें भी ये जातक देखे गये हैं। विचारोंसे ईश्वर-भक्त, अपने इष्टदेव के प्रति सजग परन्तु सामाजिक व्यवस्थामें साम्यता चाहने वाले अश्विनी जातक पर-म्पराओंको मान्यता देते हैं, परन्तु व्यवहारमें उन्हें असनातनी जैसा पाया गया। बहुमूल्य वस्तु, आभूषण, रत्न आदिके विशेष प्रेमी होते हैं। अगर कहा जाय तो देखनेमें सुन्दर, सबके द्वारा प्रशंसित, कठोर-परिश्रमी तथा स्वावलम्बी जीवन जीने वाले चतुर और बुद्धिमान् जातक होते हैं अश्विनी जातक।

व्यवसायकी दृष्टिसे अश्विनी जातक सरकारी क्षेत्रोंमें साधारण पदों पर ही रहते हैं, परन्तु फैक्ट्री, खान, पुलिस, स्वदेशी-चिकि-त्सालय, कारागार, अपराध-निरोधक विभाग अथवा न्यायालय आदिमें ये विशेष प्रगति पाते हैं। कुछ जातक पुस्तकागार, संग्रहालय पर्य-

वेक्षण कार्य, जमीनसे सम्बन्धित कारोबार, भाषा-विज्ञान आदिमें भी पाये गये हैं। किसी प्रकारके विशिष्ट जनसमुदायके नेता, शोधकर्त्ता या अल्प लाभ वाले व्यवसायोंके व्यवसायी भी अश्विनी जातक होते हैं। यदि बृहस्पति ग्रह शुभ स्थान गत हो तो अध्ययन अध्यापन तथा लेखन-कार्यसे भी ये ख्याति प्राप्त करते हैं।

इस नक्षत्रके जातकोंको आमतौर पर सन्तान आदिसे वंचित रहना पड़ा है या उनकी सन्तान बहुत कम होती है। अगर हो भी तो मध्यायुके उपरान्त। स्त्रियोंके गर्भपातकी संभावना रहती है। जातक संहिताओंमें इस नक्षत्रको गंडमूलकी भी संज्ञा दी गई, जिसके लिए मूल शान्तिका विधान तय किया गया है। गंडमूलके प्रभावका दोष प्रथम चरणमें जन्मे जातकों पर अधिक लागू होता है। शेष तीनों चरणोंका जन्म शुभ माना गया है। परन्तु गृह-कलहसे ये लोग अवश्य पीड़ित रहते हैं।

मेष राशि और भरणी नक्षत्र

नक्षत्र मंडलका दूसरा महत्त्वपूर्ण तारा है—भरणी जो २६ अंश ४० कला तक मेष राशि में स्थित है। इस नक्षत्रकी गज योनि, मध्या नाड़ी, मनुष्यगणमें वर्गीकृत किया गया है। यम इस नक्षत्रका स्वामी है, जबकि शुक्र ग्रहको इसका प्रतिनिधित्व प्राप्त है। कालपुरुषके शरीरमें माथा, सिरका आन्तरिक भाग, स्मरण कोष्ठ एवं धमनियां इसके नियंत्रणमें आती हैं। स्थिति एवं प्रभावके लिहाजसे यह एक कटु एवं तीव्र क्षत्रत्र है। मंगल ग्रहकी राशि में इस नक्षत्रकी स्थिति प्राचीन आचार्योंने अनुकूल नहीं बताई है। इसका प्रमुख प्रभाव तो यह देखनेमें आता है कि भरणीके युवा अथवा युवतियां अत्यधिक सेक्सकी कामना करती है। युवावस्थामें उनका यह विकार कई प्रकारके विवादास्पद कांडोंका स्रजन कर लेता है। इस नक्षत्रके प्रथम चरणमें जन्मे हुए लोग दृढ़ निश्चयी, दूसरे चरणमें जन्मे चतुर एवं प्रसन्न रहने वाले, तीसरे चरणमें जन्मे जातक स्वस्थ, सुडौल और चौथे चरणमें जन्म लेने वाले भरणी जातक कामुक प्रवृतिके पाये गये हैं।

आधुनिक गवेषणाओंके आधार पर इस नक्षत्रमें पैदा हुए अधिकांश जातक चक्षु रोगसे पीड़ित रहते हैं और कुछ जातक कामुक प्रसंगों के कारण यौन रोगसे भी ग्रस्त रहते हैं। जुकाम, सिरका नजला, धमनियोंका विकार, श्लेष्मक प्रवृत्ति तथा आर्द्र प्रगण्डिका तथा जिह्वा रोगसे भी भरणी जातक ग्रस्त रहते हैं। प्रत्येक कार्यमें हड़बड़ी दिखाने वाले चटोरपनसे ग्रस्त तथा अधिक निद्राप्रेमी भी भरणी जातक होते हैं।

मस्तिष्क संरचनाका सर्वेक्षण करनेके उपरान्त यह पाया गया है कि भरणीमें जन्मे लोग प्रसन्नचित्त दिखाई देते हैं। वे अधिक धूम्रपान करने वाले, हर कार्यमें साहसी, रसिक मिजाज और दूसरोंको प्रेरणापूर्ण व्याख्यान देनेमें कुशल भी माने जाते हैं। मांसाहारी, भरणी जातक अत्यधिक क्रूर तथा मारपीट आदिमें भी हिस्सा लेने वाले होते हैं।

व्यवसायकी दृष्टिसे भरणी जातकोंको सुरुचिपूर्ण कहना चाहिए। इनके कार्यालय भी बहुत ही सुसज्जित, मनोरंजक और आनन्द-

दायक होते हैं । खेलकूदके आयोजक, वाद्य यंत्रोंके ज्ञाता, प्रचारकार्य, आतिशबाजी अथवा लाख, पेट्रोलियम आदिके क्षेत्रमें ये प्रविष्ट होते हैं । चित्र कला, फैशनमाडल, विवाह दलाल भी भरणी जातक होते हैं । जिन जातकों के शुक्र और मंगल एक साथ अथवा एक दूसरे के विरुद्ध होंगे, वे विवाह अथवा प्रेमके क्षेत्रमें सफल कहे जा सकते हैं, परन्तु उनका प्रणय जीवन बहुतसे रोमांचक सूत्रोंसे युक्त होगा। इसी प्रकार सूर्य एवं गुरु संयुक्त अथवा एक दूसरेसे दृष्ट होंगे तो भरणी जातक न्यायाधीश, उद्योग समूहके निदेशक, आर्किटेक्ट, डेकोरेटर, भण्डार-नियंत्रक, फिजिशियन, प्रसूती-चिकित्सक, होटल अथवा रेस्तरांके मैनेजर या सेक्स स्पेशलिस्ट होंगे ।

वास्तवमें मंगल और शुक्रके शुभाशुभसे ही यह नक्षत्र विशेष रूपसे नियंत्रित होता है। शुक्रकी महादशा इन जातकोंको जन्मकालसे आरम्भ होती है फलतः बाल्यावस्था अत्यन्त आपदाओंसे भरी होती है। उसके उपरान्त इन्हें मंगल आदिकी दशामें भी लोमहर्षक घटनाओंका रसास्वादन करना पड़ता है। यदि यहांसे सुरक्षित ये निकल जायें तो जीवनमें सब से सफल और महत्वाकांक्षी जातकोंमें भरणी जातक आते हैं । यदि मंगल अथवा शुक्र निर्बल हों और शनि द्वारा भी पीड़ित हो तो इस राशिमें सबसे अधिक बिडम्बनापूर्ण जीवन भरणी जातकोंका ही होता है।

मेष राशि और कृत्तिका नक्षत्र—

क्रान्तिवृत्तका तीसरा नक्षत्र है कृत्तिका, जिसका मात्र एक चौथाई भाग ही मेष राशि में पड़ता है और शेष तीन भाग वृष राषिमें चला जाता है । इस नक्षत्रका अधिपति ग्रह सूर्य है । मेढ़ा योनि, अन्त्या नाड़ी और राक्षसगणमें इस नक्षत्रको वर्गीकृत किया गया है। कालपुरुषके शरीरमें यह नक्षत्र सम्पूर्ण सिर, आँखें, मस्तिष्क, कानियाका दृष्टिभाग तथा पलकोंका प्रतिनिधित्व करता है ।

इन नक्षत्रके प्रथम चरणमें जन्मे जातक बहुत अधिक भोजन करने वाले और लिपिलेखनको आजीविकाका साधन बनाते हैं। शेष तीन चरणोंके जन्मका जातक-फल अगली राशि के विश्लेषणमें किया जायेगा। इस नक्षत्रमें पैदा हुए जातकोंको आमतौर पर मियादी किस्म का बुखार, फाइलेरिया, प्लेग, चेचक, पीलिया, फोड़ेफुन्सी एवं अग्निकांड आदिका शिकार होना पड़ता है । कतिपय जातक सिर-पीड़ा अथवा स्नायु विकारके कारण कर्ण एवं नेत्र दोषके शिकार भी हो जाते हैं ।

कृत्तिका जातक आमतौर पर हृष्टपुष्ट शरीर के, बलशाली, उच्चाभिलाषी और मजबूत आधारशिला वाले होते हैं। हमेशा ही आगे बढ़ने वाले, युद्ध, वादविवादमें विजयी और उत्तरार्ध जीवनमें उच्च स्तरका राजयोग प्राप्त करने वाले ही कृत्तिका जातक होते हैं। अगर देखा जाये तो मेष राशिमें सबसे अधिक गुण-सम्पन्न और भाग्यशाली कृत्तिका जातकों को ही पाया गया है। इनके व्यक्तित्वमें अधिकारसत्ताकी एक झलक दूरसे मिल जाती है। विपरीत योनिके प्रति ये विशेष रूपसे आकर्षित रहते हैं । अधिकांश तौर पर प्रसिद्ध राजनयिक, कानून-विशारद अथवा प्रशासनिक अधिकारी होते हैं कृत्तिका जातक ।

व्यवसायकी दृष्टिसे कृत्तिका जातकोंको

अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। अधिकांश कृत्तिका जातक अपने पैतृक व्यवसायको ही अपना लेते हैं। कुछ जातक भवन निर्माण, भूमि अधिग्रहण, इंजीनियरी, सेना, पुलिस, हथियार-उद्योग अथवा चिकित्साके क्षेत्रको चुनते हैं। व्यापारिक दृष्टिसे भी कृत्तिका जातक सफल कहे जा सकते हैं। सट्टे अथवा जुएके प्रति भी इनमें लालसा रहती है। खास कर कैमीकल्स, पेट्रोलियम अथवा विभिन्न प्रकारके बर्तन या धातुओंसे उत्पन्न व्यवसाय में इनको सफलता मिलती है। सामाजिक हितोंके लिए समर्पित हो जाना इनकी विशेषता होती है।

मेष राशिके अन्तर्गत उपरोक्त तीनों नक्षत्रोंका प्रभाव आपने देखा होगा। इस राशि का सर्वोत्तम फल कृत्तिका जातकोंमें पाया गया है। फिर अश्विनीको फिर भरणी जातकोंको यह राशि अनुकूल रहती है। यदि कोई जातक अपना नक्षत्र नहीं जान सकते हैं तो उन्हें फिर राशि गुणोंका ही विश्लेषण अपने लिए समझना चाहिए।

(अगले अंकमें (२) वृष राशि और इसके नक्षत्र पर लिखेंगे)

होरा शास्त्रका स्वरूप और उपयोगिता

[लेखक :—पण्डित श्री डी. एन. तिवारी ज्योतिर्विद्]

वेदके छ: अंगोंमें नेत्र-स्वरूप ज्योतिष तीन भागोंमें विभक्त है :—सिद्धान्त, संहिता और होरा। वेदांग ज्योतिषमें लिखा है :—

"सिद्धान्त संहिता होरा-रूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिश्शास्त्रमकल्मषम्।"

यह बात ई० पूर्व ५०० से ई० ५०० तक के समयकी थी, उस समय ज्योतिषका अर्थ उपरोक्त तीनों बातोंसे लगाया जाता था, परन्तु इस युगके मध्यमें इस परिभाषामें और भी संशोधन हुये और आगे जाकर यह पंचरूपात्मक होरा गणित, संहिता, शकुन और केरलीय प्रश्नादि रूप हो गई। यथा—

पंचस्कंधमिदं शास्त्रं होरा-गणित संहिताः।
केरलिः शकुनं चेति, ज्योतिः शास्त्रमुदीरितम्॥

कुछ विद्वान् इस मतसे सहमत नहीं है, वे कहते हैं कि शकुन और प्रश्नादि विषयोंका संकलन, संहिता और होराके अन्तर्गत है। नाम मात्रके भेदसे पृथक् स्कन्धोंकी कल्पना की जाय तो स्वर, ताजिक, रमल आदिके भी स्कन्ध होने चाहिये इसलिये वे इस मतको नहीं मानते हैं किन्तु उक्त सिद्धान्त संहिता और होरा नामक तीन स्कन्धोंमें ही ज्योतिष शास्त्रके महाविशाल वटवृक्षको विभक्त मानते हैं। (मैं भी इस बात से सहमत हूं।)

यहां तक होराके पिता ज्योतिषशास्त्र एवं उसके सहोदर भ्राताओंसे आपका अल्प परिचय हुआ। इस मोड़ पर हमने होराको उसके सहोदर भाइयोंसे पृथक् कर उसका स्वरूप और उपयोगिताके विचार हेतु ला रखा है। होराके उत्पत्तिके विषयमें आचार्य वराह-मिहिरने वृहद जातकमें लिखा है कि :—

"होरेत्यहोरात्र विकल्पमेके,
वांछन्ति पूर्वापर वर्ण लोपात्।
कर्मार्जितं पूर्व भवे सदादि,
यत्तस्य पंक्तिं समभिव्यनक्तिः।।"

अर्थात् किसीका मत है कि अहोरात्र शब्द के पूर्वा-पर वर्ण अर्थात् अक्षर 'अ' 'त्र' का लोप करनेसे "होरा" शब्द सिद्ध होता है।

'हुलहिंसासंचरणयोः' धातुसे पचादित्वात् अच् प्रत्ययके होलति, हुल्यते वा—इस अर्थमें 'र' 'ल' के सावर्ण्यसे 'ल' के स्थानमें 'र' करनेसे होरा सिद्ध होता है। होरा शब्दका अर्थ राशिका अर्ध और लग्नके अर्धसे भी है। मान लो स्थूल लग्नमान ५ घड़ी है, इसका अर्थ यह है कि २½ घड़ी जो आधुनिक एक घंटाके बराबर है—से होराका तात्पर्य है। होरा शास्त्र वह शास्त्र है जिसके द्वारा जन्मकालीन ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार व्यक्तिके भूत, भविष्य और वर्तमानके शुभाशुभ फलका निर्णय किया जाता है, इसलिये इसका दूसरा नाम जातक शास्त्र भी है।

जातक-शास्त्र या होरा-शास्त्रके अन्तर्गत राशि-भेद ग्रहयोनि (ग्रहोंकी जाति, रूप और गुण आदि) वियोनिज (मानवेतर-जन्म फल) गर्भाधान, जन्म अरिष्ट, आयुर्दाय, दशाक्रम कर्माजीव (आजीविका), अष्टक वर्ग, राज-

योग, नाभसयोग, चन्द्र योग, प्रवज्यायोग, राशिशील, ग्रह-दृष्टि फल, ग्रहोंके भाव फल, आश्रय योग, प्रकीर्ण अनिष्ट योग, स्त्री जातक, फल निर्माण (मृत्यु विषयक विचार) नष्ट जन्म विधान (अज्ञात जन्मफल को जाननेका प्रकार) इत्यादि विषयोंका वर्णन वृहद् रूपसे होता है।

होरा शास्त्र पर अनेक स्वतंत्र रचनायें हैं। समय-समय पर इस शास्त्रमें अनेक संशोधन और परिवर्तन हुये हैं। आचार्य वराहमिहिर, नारचद्र, सिद्धसेन, दुण्ढिराज केशव आदि प्रधान रचयिता हैं।

मानवके व्यवहारिक जीवनके समस्त कर्म इस शास्त्रके द्वारा चलते हैं। दैनिक जीवन में व्यवहारके लिये अत्यन्त आवश्यक वारका निर्माण होराके आधार पर हुआ है। एक दिन में २४ होरायें होती हैं, जो एक घंटेकी एक होती है। इनका क्रम ग्रहोंकी कक्षाओंके अनुसार निर्धारित है। सृष्टिके आरम्भमें सबसे पहले सूर्य दिखलायी पड़ा है इसलिये पहली होरा का स्वामी सूर्य माना जाता है, एवं उस वार का नाम आदित्यवार या रविवार रखा गया है। इसके अनन्तर उस दिन दूसरी होराका स्वामी उसके पासवाला ग्रह शुक्र, ३सरीका बुध, ४थीका चन्द्रमा, ५वींका शनि, छठीका गुरु, ७वींका मंगल, ८वींका रवि, ९वींका शुक्र, १०वींका बुध, ११वींका चन्द्रमा, १२वींका शनि, १३वींका गुरु, १४वींका मंगल, १५वींका रवि, १६वींका शुक्र, १७वींका बुध, १८वीं का चन्द्रमा, १९वींका शनि, २०वींका गुरु, २१वींका मंगल, २२वींका रवि, २३वींका शुक्र और २४वींका स्वामी बुध होता है। पश्चात् दूसरे दिनकी पहली होराका स्वामी चन्द्रमा पड़ता है, अतः दूसरे वारका सोमवार या चन्द्रवार नाम रखा गया है। इसी प्रकार तीसरे दिनकी पहली होराका स्वामी मंगल, ४थे दिनकी पहली होराका स्वामी बुध, पांचवें दिनकी पहली होराका स्वामी गुरु, छठे दिनकी होराका स्वामी शुक्र, ७वें दिनकी पहली होराका स्वामी शनि होता है, इसलिये क्रमशः मंगल बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये वारका नाम रखा गया है। वारसे सप्ताह, सप्ताहसे पक्ष, पक्षसे मास, अयन, ऋतु, वर्ष इत्यादिका निर्माण किया गया है, दैनिक कार्यों में वार, मास, वर्षका कितना महत्त्व है एवं इनके उपयोगसे भला कौन परिचित नहीं है।

अतएव इस शास्त्रका व्यवहारिक उद्देश्य ही दैनन्दिनिक कर्मोंका संचालन करना है। यदि मानव समाजको इसका ज्ञान न हो तो, धार्मिक उत्सव, सामाजिक त्यौहार, महापुरुषों के जन्मदिन, अपनी प्राचीन गौरव गाथाका इतिहास आदिका किसीको भी ठीक-ठीक पता न चले, जिसके अभावमें कोई भी कृत्य यथासमय सम्पन्न नहीं हो पाते। अतः आज मानव इस शास्त्रके ज्ञानसे अपने कृत्य यथा-समय सम्पन्न कर आधुनिक युग तक पहुंच सका है। इस शास्त्रने जहां विज्ञानके विस्तार में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है वहीं पर हमारे प्राचीन इतिहासको क्रमबद्ध करनेमें बड़ी सहायता की है। श्रद्धेय लोकमान्य तिलकने वेदोंमें प्रतिपादित नक्षत्र अयन और ऋतु आदिके आधार पर ही वेदोंका समय निर्धारित किया है। यहां तक हमने समस्त मानव समाजके लिये सम्मिलित रूपसे होरा शास्त्रके उपयोग पर प्रकाश डाला है। आइये, अब देखें कि एक व्यक्ति विशेषके लिये इसका क्या उपयोग है?

होरा शास्त्रकी उपयोगिता मानव जीवनमें सर्वाधिक है क्योंकि इस शास्त्रके ज्ञानके द्वारा मानव अपना जीवन खुली किताबके समान पढ़ सकता है, फिर पढ़ना आवश्यक इसलिये है कि मानव-जीवन नियमित सरल रेखाकी गतिसे नहीं चलता बल्कि इस पर विश्वसनीय कार्य-कलापों के घात-प्रतिघात लगा करते हैं जिससे मानव सक्रिय हो जाता है, वह कभी समृद्धिकी ओर अग्रसर होता है तो कभी ह्रासको प्राप्त करता है। जीवनकी जटिल समस्यायें नाना प्रकारके रूप धारण कर आती ही रहती हैं । जिससे बच पाना मानवके लिये बड़ा कठिन होता है लेकिन यदि ग्रहोंके स्वभाव और गुणोंके द्वारा अन्वय, व्यतिरेक रूप कार्यकारण जन्य अनुमानसे अपने भावी सुख-दुख प्रभृतिको पहले से अवगत कर अपने कार्योंमें सजग रहते हुए आगामी दु:खको सुखरूपमें परिणित किया जा सकता है ।

बहुतसे लोग कहते हैं कि ज्योतिषशास्त्र के द्वारा भविष्य जाननेका क्या प्रयोजन है ? क्योंकि कर्मोंका भोग तो भोगना ही पड़ता है "करम गति टारे नहीं टरे" के सिद्धान्तानुसार उनमें किसी भी प्रकारका परिवर्तन संभव नहीं है ।

यदि सचमुच ही ऐसी बात हो तो फिर इस जीवको कभीभी मुक्ति लाभ न मिल सकेगा और वह हमेशा काल-चक्रमें भ्रमण करता रहेगा । वास्तवमें यह बात उचित नहीं प्रतीत होती । आइये, सप्रमाण विचार करें ।

श्री नरनारायण पुराणके पृष्ठ ५३ में कर्मोंके सम्बन्धमें पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। कर्म तीन प्रकारके बताये गये हैं। (१) संचित कर्म (२) प्रारब्ध कर्म (३) क्रियमाण कर्म । संचित कर्म :—जो अनेक जन्मोंके किये पाप-पुण्य आदि कर्मोंके द्वारा अर्जित कर्म संचित कहलाते हैं। भारतीय दर्शनके सिद्धान्तानुसार आत्मा अमर है, इसका कभी भी नाश नहीं होता है, केवल यह कर्मोंके अनादि प्रवाह के कारण विभिन्न योनि धारण करती रहती है। अनेक जन्म-जन्मान्तरोंके संचित कर्मोंको एक साथ भोगना सम्भव नहीं है, क्योंकि इनसे प्राप्त होने वाले परिणाम, स्वरूपसे परस्पर विरोधी फल देने वाले होते हैं, अतः इन्हें एकके बाद एक करके भोगना पड़ता है, इसी कारण जीव बार-बार जन्म एवं मरण चक्रमें भ्रमता हुआ, विभिन्न योनि धारण कर कर्म फल भोगता रहता है।

ज्ञान होने पर संचित कर्म नष्ट हो जाते हैं। भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजीने 'गीता' के चौथे अध्यायके ३७वें श्लोकमें कहा है कि—"**ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा**" पाप-पुण्य मिश्रित सब कर्मोंको ज्ञान स्वरूपी अग्नि भस्म कर देती है। इसी प्रकार संचित कर्म ज्ञानके उदय होने पर नष्ट हो जाते हैं।

प्रारब्ध कर्म :—संचित कर्मोंमेंसे जितने कर्मोंके फलको वर्तमान शरीर भोगना शुरु कर देता है उसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं । प्रारब्ध कर्म वह है जिसके कारण यह शरीर प्राप्त हुआ है या यह कह सकते हैं कि यह शरीर ही प्रारब्ध रूप है । जब तक शरीर रहेगा तब तक शारीरिक सुख-दु:ख, ज्ञानी अज्ञानी दोनोंको भोगने पड़ेंगे। देह-जन्य कष्टोंसे वह बिना भोगे छुटकारा नहीं पा सकता —

प्रारब्धं भोगतो नश्येत्शेषं ज्ञानेन दह्यते ।
शरीरं त्वितरत्कर्म तद्द्वेषि प्रियवादिनः ।।

उदाहरण :—इस प्रकार है—संवत् १६६४ विक्रम संवत्के लगभग गोस्वामी तुलसी जीकी बाहुओंमें वात व्याधिकी गहरी पीड़ा उत्पन्न हुई थी और फोड़े-फुन्सियोंके कारण सारा शरीर वेदनाका स्थान सा बन गया था। असहनीय कष्टोंकी निवृत्तिके लिये उन्होंने हनुमान्जीकी वन्दना आरम्भ की (जो ४४ पद्योंमें "हनुमान बाहुक" नामसे प्रसिद्ध है) उसके प्रभावसे सारी व्यथा नष्ट हो गयी। इस प्रकार देह जनित प्रारब्ध भोगनेसे ही क्षय हुआ। यह इस बातका प्रमाण है।

प्रारब्ध, मनुष्यके हाथमें नहीं है। वह कालचक्रके संचालक ईश्वराधीन है। यही कारण है कि घोड़ेके शरीरको किसी भी क्रिया द्वारा मनुष्यका शरीर नहीं बनाया जा सकता है, फिर उसके शरीर पोषणके लिये निर्धारित घास ही उसे खानेको मिलेगी, चाहे घोड़ा किसी अमीरजादेकी बारातमें ही क्यों न जाय। इस प्रकार उस शरीरके लिये प्रारब्धमें घास ही निर्धारित है, वही मिलेगी, भार वहन उसे करना ही पड़ेगा, मार भी उसे खानी ही पड़ेगी इत्यादि।

इसका अर्थ यह हुआ कि प्रारब्ध कर्मके फलस्वरूप बना शरीर अपरिवर्तनशील है, एवं उससे जुड़े सुखःदुःख अपरिवर्तनशील हैं। उन्हें भोगना ही पड़ेगा। सिर्फ मानवको कुछ सुविधायें उपलब्ध हैं जो उसके ज्ञानकी देन है, जैसे—शरीरके रोगी होने पर चिकित्सा के ज्ञानसे उसे कुछ ही समयमें दूर किया जा सकता है, तो भी रोगीको कुछ समय तो कष्ट हुआ ही, यही कष्ट प्रारब्ध रूप है जो अनिवार्य रूपसे भोग्य है, फिर भले ही हम अपने ज्ञानके द्वारा उस कष्टकी अवधि कम कर लें।

इसी प्रकार होराशास्त्रके द्वारा प्रारब्ध जानकर उस शारीरिक रोग विषयक टीके इत्यादि पूर्वमें ही लगाकर उससे विशेष सुरक्षा की जा सकती है एवं आने वाला शारीरिक संकट किसी हद तक कम कर बचा जा सकता है।

अतः होराशास्त्र पूर्वाभास देकर अपरिवर्तनशील प्रारब्धके दुःखोंको दूर करनेमें मानव जातिके लिए चिकित्साशास्त्रकी भाँति ही परम उपकारी मित्र है।

क्रियमाण कर्म :—

वर्तमान शरीरके द्वारा होने वाले पुण्य-पापकर्मोंको क्रियमाण कर्म कहते हैं।

यह कर्म पूर्णतः परिवर्तनशील हैं, ज्ञान एवं पुरुषार्थके बलसे इस कर्ममें अमूल्य परिवर्तन किया जा सकता है। प्रारब्ध कर्मों पर इसका पूर्ण प्रभाव होता है, यही कारण है कि भारत विख्यात सम्राट चन्द्रगुप्तके विशाल साम्राज्यकी स्थापना करने वाला महामंत्री चाणक्यकी बाल्यावस्थामें कुण्डली देखकर ज्योतिषियोंने कहा था कि यह बालक महामूर्ख होगा। यह बात चाणक्यको सहन न हुई, उसने निश्चय किया कि मैं विद्वान् बनूंगा कठिन प्रयासके द्वारा प्रारब्धको बदलनेमें वे सफल हुये।

महाकवि बाल्मीकि अपने जीवनके पूर्व भागमें महान् लुटेरे डाकू थे। एक बार उनकी दृष्टिमें उपरोक्त तत्व लाया गया कि तुम्हारा

डकैतीसे प्राप्त धन सब कुटुम्बी सानन्द उपभोग करते हैं, किन्तु वे इस पापमें भागीदार नहीं होंगे। फल तुम्हें ही अकेले भोगना पड़ेगा। बाल्मीकिने अपने कुटुम्बमें जाकर परीक्षण किया तो उन्हें ज्ञात हुआ कि पापका बटवारा करने के लिए माल उड़ाने वाले कुटुम्बी लोग तैयार नहीं है। इस बातने डाकू बाल्मीकिके हृदय-चक्षु खोल दिये और उन्होंने डाकूका जीवन छोड़ कर ऐसी सुन्दर जिन्दगी बना ली कि अब तक जगत् रामायणके रचयिताके रूपमें उस महाकविको स्मरण करता है। इस प्रकार इतिहास और हमारे विभिन्न धार्मिक ग्रन्थ इस बातके प्रमाण देते हैं कि क्रियमाण कर्ममें परिवर्तन किया जा सकता है। होरा शास्त्रके द्वारा कर्म गति जानकर क्रियमाण कर्मोंमें परिवर्तन द्वारा मनुष्य अपनी सर्वांगीण उन्नति कर सकता है क्योंकि पूर्व संचित संस्कारोंको वर्तमान संस्कारोंसे प्रभावित होना ही पड़ता है।

इस प्रकार होराशास्त्र नैराश्यवाद "कर्म गति टारे नाहीं टरे" का खण्डन कर—

> "कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
> जो जस करहिं सो तस फल चाखा॥"

के सत्यसे मानवका परिचय करा, उसे कर्त्तव्यके क्षेत्रमें ला खड़ा करता है। भविष्य को जानकर अपने कर्त्तव्य कर्मों द्वारा उसे अपने अनुकूल बनानेके लिये ज्योतिष प्रेरणा देता है। यही प्रेरणा दुःखका अन्त एवं सुखका उदय है। यही प्रेरणा मनुष्य जन्मके परम ध्येय 'मोक्ष' को प्राप्त करानेमें उसे सहायक है, वरन् उस की कल्पना भी संभव नहीं है।

यदि होरा शास्त्रका ज्ञान न हो तो हमें अपने कर्मोंका पता ही न चल पायेगा एवं हम अन्धेरेमें भटकते ही रहेंगे। इस प्रकार होराशास्त्र परम उपयोगी सूचक शास्त्र है। होराशास्त्र विज्ञानमय है जो मानव जीवनकी सभी समस्याओंका वैज्ञानिक हल करनेमें समर्थवान् है। कौन सी विद्या पढ़नेमें बालक रुचि लेगा ? क्या प्रतियोगिता विषयमें सफलता मिलेगी ? उसकी आयु क्या होगी ? किस दिशामें जाने पर सफलता लाभ मिलेगा ? बालक धनी या दरिद्री होगा ? क्या लाटरीसे पुरस्कार मिलेगा ? उधार दिया हुआ धन वापिस होगा ? क्या अचल सम्पत्ति खरीदेगा ? मेरा स्थान परिवर्तन होगा ? साहसिक कार्य, सन्तान सम्बन्धी प्रश्न, व्यवसाय, आजीविकोपार्जन, शत्रु आदिके प्रश्न। क्रय-विक्रय, वाद-विवाद, लाभ-हानि, तेजी-मन्दी, खेती-बाड़ी, यश-अपयश, बाग-बगीचा आदिके प्रश्नोंका उत्तर, नौकरीका विचार, पदोन्नतिका विचार, दाम्पत्य-सुख एवं कलह, तलाकके योग। मानसिक, पारिवारिक, राजनीतिक स्थितियां। विदेश-यात्रा, वैवाहिक-जीवन, स्त्री कैसी ? पुत्र-पौत्रादिकी प्राप्ति, चोर, रोग, अचानक लाभादि अनेक विषयोंका समाधान कर, हमारे जीवनको एक नई दिशा दे सकता है।

अतः यह शास्त्र एक अच्छा मित्रसा सच्चा पथ-प्रदर्शक है। इसलिये अपने जीवनको जान कर उसे व्यवस्थित करनेके लिये इस शास्त्र का उपयोग प्रत्येक मानवको अनिवार्यतः करना चाहिये।



फलितमें राहुका योगदान

[लेखक :—श्री विक्रमसिंहजी, कोटा (राजस्थान)]

राहुकी स्थिति—अन्य ग्रहोंके समान आकाश में दृश्य न होते हुए भी राहुकी गिनती नव-ग्रहोंमें की जाती है। इसे छाया ग्रह कहा जाता है, क्योंकि पृथ्वी मार्गको जब चन्द्रमा दक्षिणसे उत्तर जाते हुए काटता है तब कटाव बिन्दु पर राहुकी स्थिति होती है। उसीकी सीधमें वृत्तके दूसरे छोर पर अर्थात् १८० अंश पर सदा केतु रहता है। इनकी चाल सदा उल्टी रहती है और १९ वर्षमें एक परिक्रमा पूरी करते हैं इसलिये दैनिक गति ३/११ मानी गई है।

पौराणिक कथाके अनुसार राहु दैत्य है जो छद्मवेषमें अमृत पानके लिये सूर्य-चन्द्रके मध्यमें बैठ गया था, अमृत पीते ही रहस्यो-द्घाटन हो जानेसे राहुका शिर छेद कर दिया गया किन्तु अमृत पी लेनेसे नष्ट न हो सका और प्रतिवर्ष सूर्य-चन्द्रको ग्रसता है जिसे हम सूर्य-ग्रहण या चन्द्र-ग्रहण कहते हैं।

स्वामित्व—राहुकी राशिके स्वामित्वके विषयमें मतभेद पाया जाता है, बुध तथा बृह-स्पतिकी राशियां राहुके घर बताये जाते हैं, लेकिन अधिकांश विद्वान् कन्या राशिको ही राहुका घर मानते हैं। उच्च स्थान मिथुनके २० अंश है, नीच स्थान धनुर्धर और मूल त्रिकोण राशि मीन है। शुक्र, बुध, और शनि राहुके मित्र हैं। सूर्य, चन्द्रमा और मंगल शत्रु हैं। बृहस्पति सम है। आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा नक्षत्रोंका स्वामी राहु है, अश्विनी, मघा और मूलका स्वामी केतु है। केतुकी स्थिति सदैव राहुसे सप्तम रहती है।

पाप ग्रह होनेसे राहु प्रायः अशुभ फल ही करता है लेकिन साधारण विषयके अनुसार ३, ६, ११ भावमें राहुका फल शुभ है। इसके इसके अतिरिक्त स्वगृही उच्च या मित्र क्षेत्री राहुका अशुभ फल न्यून हो जाता है। १-६-४-२-१२-९-५ राशिका राहु गजान्त लक्ष्मीको देता है। राहुकी स्थितिसे १०-११-४-३-२-१२ स्थानमें स्थित ग्रह तात्कालिक मित्र होते हैं। मूल त्रिकोणसे ५-१२-२-४-८-९ भावमें स्थित ग्रह भी मित्र संज्ञक हैं। ५-९-६-८-७-१ स्थानमें स्थित ग्रह शत्रु होते हैं।

राहुका तत्व—इस प्रकार राहुका फल शुभ व अशुभ दोनों प्रकारका है। अनुभवमें ऐसा आया है कि राहु विच्छेदात्मक ग्रह होनेसे व्यक्तित्वको हानि पहुंचाता है, अर्थात् जिस भावमें स्थित होगा उस भावके अंगमें पीड़ा देता है, या उस भावसे सबन्धित रिश्तेदारों को कष्ट देता है उनसे मधुर व्यवहार नहीं रहने देता या उस भाव-सम्बन्धी चिन्ता देता देता है। लेकिन आर्थिक लाभ भी देता है। राहुके कष्टोंका अनुमान उसके तत्वोंसे लगाया जाता है। राहु वायु प्रधान तामसी ग्रह है। पाप ग्रह होनेसे शनिके समान ही कष्टप्रद है, कृमि दंश (जिसमें सांप, विच्छू, वर्र मच्छर, मक्खी, चिऊंटी आदिके दंश सम्मिलित है) पतन, बन्धन, फांसी, क्षय, पाण्डु, अरूचि, मन्दाग्नि, दर्द, चोट, धननाश, अल्प-स्मृति, मत्सर, स्तेन (चोरी), कृतघ्नता, कलह, दुष्ट-संग, उदर-विकार, दन्त-विकार कुरूपतासे कष्ट देता है।

अन्य पाप ग्रहोंके समान हो राहु भी आयु, बल-वीर्य बुद्धिका कारक है, इसलिये जातकको चतुर, चौकन्ना, दुःसाहसी, वाचाल, कूटनीतिज्ञ, गुप्तचर, राजदूत व जरायमपेक्षा बनाता है। पहाड़ी, पत्थर, कीचड़, शस्त्र, अज्वलनशील गैसका कारक होनेसे तत्संबन्धी व्यवसाय, चोरी, डकैती, हिंसा, भ्रष्टाचार, दुर्घटना, दुर्गम यात्रायें, खोज मुकद्दमेबाजी, शिकारी, सुनार, वैज्ञानिक, समुद्री डाकू, ज्योतिषी, मद्यव्यवसाय, मनोवैज्ञानिक, लेक्चरर, गुप्तचर, जुआ, सट्टा का व्यापार आदि देता है। केतुका स्वतंत्र फल कुछ नहीं है, केतुका अर्थ झण्डा (पताका) है जिस प्रकार पताका उसके धारककी जयका उद्घोष करती है उसी प्रकार केतु भी राहुके शुभ फलको उत्कृष्ट और अशुभ फलको निकृष्ट बनानेमें योग देता है।

राहुका राशिफल :

विभिन्न राशियोंमें राहुका फल लिखनेसे पूर्व इस तथ्य पर विचार कर लेना चाहिये कि राहुकी अंशात्मक स्थिति क्या है, क्योंकि सप्तमस्थ राहु विवाह विच्छेदक होते हुए भी शुक्रके नवमांशका होने पर विवाहकारक बन जाता है। इसके अतिरिक्त राशिके स्वामित्वमें भिन्न मत होनेसे फलितमें भी मत भिन्नता देखनेमें आती है।

१—जैसे मेष राशिका राहु जातकको पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी, कुष्ठी, कामी, क्रोधी और दुःखी बनाता है, लेकिन मेषको राहु का मित्र क्षेत्र मानने वाले विद्वान् मेषके राहुका फल शुभ मानते हैं, उनके विचारानुसार मेषका राहु घरमें उत्सव कराता है, गृह-सुख देता है, भूमि-लाभ कराता है, राज्यसे सम्मान दिलाता है, व स्वाध्यायमें रुचि देता है।

२—वृषका राहु सुखी, चंचल व कुरूप बनाता है, क्रोधी, धूर्त, वाचाल, निर्धन और कुष्ठो बनाता है, मतान्तरसे तीर्थयात्राका अवसर देता है, पशु-लाभ, मनोरञ्जनके अवसर व दार्शनिकता देता है।

३—मिथुनका राहु योगाभ्यासी, गवैय्या, बलवान्, दीर्घायु बनाता है, साथ ही चंचल, धूर्त और मिथ्यावादी भी बनाता है। मतान्तरसे मानसिक असन्तुलन, तुनुक मिजाजी, राजभय, पुलिस अदालतका भय, शत्रुवृद्धि, परिवारमें या स्त्रीको रोग, आपसी लोगोंमें भ्रम गलतफहमी आदि फल है।

४—कर्कका राहु उदररोगी, धनहीन, कपटी व पराजित बनाता है, प्रवासी तथा परिश्रमी भी बनाता है। मतान्तरसे देशसेवाका उत्साह पैदा होता है, धन-लाभ व यश-प्रतिष्ठा होती है, दुःख भी मिलता है।

५—सिंहका राहु सत्पुरुष विचारक, चतुर व नीतिज्ञ बनाता है। प्रवास, दुःख, कर्णरोग भी देता है मतान्तरसे जायदादकी हानि होती है, अशांति रहती है, राजद्रोह या धोखा देनेसे बन्धन होता है।

६—कन्याका राहु लोकप्रिय, कवि, लेखक, गवैया, मधुर-भाषी बनता है। साथ ही प्रवासी, चंचल, कर्तव्य-परायण व कर्ण रोगी होता है। मतान्तरसे आकस्मिक भूमि या धन-लाभ होता है, कार्यमें सफलता मिलती है, सन्तान उच्चस्तरीय, अध्ययन, भोग व सुख प्राप्त होते हैं।

७—तुलाका राहु अल्पायु, दन्तरोगी,

मृत धनाधिकारी बनाता है। वाचाल व सुखी भी होता है, मतान्तरसे व्यापारमें हानि होती है, मुकद्दमेबाजीमें धन जायदाद कृषिकी हानि होती है। अपयश मिलता है। बन्धन होता है और निवास दूरदेशमें होता है।

८—वृश्चिकका राहु—धूर्त, रोगी, निर्धन, बनाता है, तथा आलसी, वाचाल, निरुद्यमी बनाता है। मतान्तरसे व्यापार-हानि होती है, अनैतिक, अशान्त बनाता है। सन्तान या गर्भ की हानि करता है।

९—धनु राशिका राहु बचपनमें सुखी बनाता है, दत्तक जाने वाला व मित्रद्रोही बनाता है। साथ ही वातविकारी, दंभी, अल्पायु, क्रोधी भी बनाता है। मतान्तरसे रिश्तेमें हानि व अशांति तो करता है, लेकिन बिना प्रयास धन लाभ-कराता है। कार्यमें सफलता देता है।

१०—मकरका राहु प्रवासी, परिश्रमशील व तेजस्वी बनाता है। धन-लाभ पदलाभ व उन्नति देने वाला है, उसकी दशामें विवाहोत्सव आदि होते हैं, प्रेतबाधा भी होती है।

११—कुम्भका राहु विद्वान्, लेखक, मितभाषी, मितव्ययी बनाता है, साथ ही दन्तरोगी, कुटुम्बहीन, भीरू, असहिष्णु, सर्प-दंशभय होता है। मतान्तरसे असहाय अवस्था, निराशा, शोक समाचारयुक्त, भ्रम-युक्त, स्त्री व सन्तान कष्टसे चिन्तित, अकाल मृत्युभय, निंद्यकर्मरत होता है।

१२—मीनका राहु आस्तिक, कलाप्रिय, शान्त व दक्ष बनाता है, साथ ही व्यर्थवादी, मन्दाग्नी रोगी होता है। मतान्तरसे रोग, चोर-भय, अशांति तो होती है लेकिन अध्ययनमें रुचि न धन-लाभके अवसर भी प्राप्त होते हैं।

अधिकांश विद्वानोंका मत यह है कि राहु केतु छाया ग्रह है, इनका अपना फल कुछ नहीं है। भावेशसे उनके फलका अनुमान करना चाहिये।

राहुका भावफल

१—लग्नका राहु दुष्ट स्वभाव देता है। ऐसा जातक आपसी लोगोंको ठगने वाला, शिर-शूलसे युक्त, कामी, विवाद पाने वाला होता है। राजद्वेषी, अल्प-संतति, दुःसाहसी और सहानुभूति रखने वाला होता है। उसे गर्भ या सन्तान हानि उठानी पड़ती है। लग्नमें राहु १-३-५-७-९-११ राशियोंका देह को दुर्बल बनाता है। लग्नमें राहु लग्नेशके साथ हो तो जातकको चोर ठगोंका भय रहता है। जब जन्म-लग्नमें राहु हो और लग्नेश दशम भावमें स्थित हो तो जातकका जन्म पांवकी तरफसे होता है। लग्नमें सिंह राशि का राहु राजसी ठाठ देता है। लग्नेश या बुधके साथ राहु श्वेत प्रदर-रोग देता है, राहुका चं. मं. के साथ भी यही फल है। लग्नेश षष्ठेश के साथ राहु सर्प व चोर भय देता है।

२—द्वितीय भावमें राहु जातकको वाचाल बनाता है। देशाटनकी प्रवृत्ति देता है। धन-नष्ट करके निर्धन बनाता है। मात्सर्ययुक्त और कटुभाषी होनेसे कुटुम्ब-विरोध उसे सहना पड़ता या वह कुटुम्बसे पृथक् हो जाता है। उत्तम भोजनका वह शौकीन होता है। द्वितीय भाव का राहु श्यामवर्ण देता है, उसकी दो पत्नियां होती हैं, द्वितीय भावमें राहु मंगलके साथ गन्दा भोजन देता है। मंगल या द्वितीयेशके साथ दूसरे

भावमें राहु मंत्र ज्ञान भी देता है। राहु दूसरे भावमें हो और मंगल सप्तम भावमें हो तो पत्नीघात कराता है। राहु द्वितीय भावमें शनिके साथ सर्पभय देता है।

३—तृतीय भावमें राहु जातकको शत्रु-नाशी पराक्रमी बनाता है। विवादमें उसकी विजय होती है। भाई-बहिनों और पशुओं से उसे सुख नहीं मिलता। ऐसा जातक अल्प-धनी होते हुए भी सुखी होता है और विद्वान् विवेकी प्रवासी होता है, साहसी व व्यायाम प्रिय भी होता है। राहुके साथ तीसरे भावमें पाप ग्रह भी हो तो गर्दनमें रोग देते हैं।

४—चतुर्थ भावमें राहु असोन्तोष उत्पन्न करता है। क्रूर, कपटी, दुःखी, मातृ-क्लेशी, पुत्र व मित्र सुखसे हीन, भ्रमण-प्रिय, हृदय-रोगी, मिथ्याचारी होता है। यूरोपीय भाषाओं पर उसका आधिपत्य होता है, विशेषकर उर्दू, फारसी और अरबीमें। स्वतंत्र पद उसे प्राप्त नहीं होता, हीन स्त्रियोंसे उसका सम्बन्ध होता है। चतुर्थ भावमें राहुके साथ चन्द्रमा हो तो माता को चरित्रदोषका कलंक लगता है। ऐसा सम्बन्ध ग्रहोंके तत्वानुरूप होता है, जैसे गुरु शुक्र ब्राह्मण अफसरसे। शनि नौकरसे, बुध व्यापारीसे, सू. म. सिपाही या अधिकारीसे होता है। चतुर्थ भावमें राहु होने पर जातक घुन्ना होता है, वह अपने मनका भेद किसी से नहीं कहता। यदि राहु पर पापग्रहकी दृष्टि भी हो तो पाखण्डी होता है, बाहर धार्मिकता प्रकट करता है किन्तु आचरण विपरीत करता है।

५—पंचम भावमें राहु उदरशूल देता है, गर्भ या सन्तानकी हानि करता है, बुद्धिको संकुचित बनाता है। उसके कारण जातक तंगदिल क्रूर, उपद्रवी व मनमानी करने वाला अन्यायी बनता है। ऐसा जातक बादीसे फूला हुआ कुलधन नाशक होता है, वाममार्गी शास्त्रोंमें उसकी रुचि होती है। पंचमस्थ राहु पर यदि किसी शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो स्मृति हीन, भ्रमरोग युक्त विक्षिप्त बनाता है। पंचमेश के साथ राहुका योग हो या राहुकी दृष्टि हो तो पुत्र अनुशासनहीन होता है। पंचमस्थ राहु प्रेत-पूजा कराता है।

६—छठे भावमें राहु अरिष्ट व शत्रुओं का नाश करता है, विधर्मियोंसे या म्लेच्छ संगसे उसे लाभ होता है। धन-पराक्रम, मनो-रञ्जन और निरोगता प्राप्त होती है, उसे कटिपीड़ा या पशुपीड़ा होती है। भतीजे उसके अधिक होते हैं। छठे भावमें राहुके साथ चतुर्थेश भी हो तो चौर द्वारा मृत्यु देता है। छठा राहु लग्नेशके साथ टाँग पर चोट या जख्म देता है। षष्ठेश या लग्नेशके साथ केन्द्र-गत राहु हवालातका बन्धन देता है। षष्ठेश, या ८ भावमें मंगलके साथ हो और राहुकी दृष्टि हो या छठे राहु पर पाप ग्रहोंकी दृष्टि हो तो झूठा चोर बनाता है। पाप ग्रह बुरे अंशोंसे राहुको छठे भावमें देखे तो प्रेतबाधा देते हैं। राहु चन्द्र या शनिके साथ ६-८-१२ भावमें बुरी परिस्थितिमें मृत्यु देता है। राहु पर शनिकी दृष्टि हो और चन्द्रमा निर्बल हो तो सिरका आपरेशन होता है, राहुकेतु लग्नेश के साथ छठे हों, चन्द्रमा बुधके साथ हो या दृष्ट हो तो संबन्धित राशिके अंश पर फोड़ा करते हैं। राहु, बुध द्वितीयेशके साथ छठे मुखरोग देते हैं।

७—सप्तम भावमें राहु स्त्री-सुखको नष्ट

करता है, उसकी स्त्री कर्कशा विवादी, रुग्ण, अनियमित मासिकधर्म वाली होती है या स्त्री से उसका विरोध रहता है। सप्तमस्थ राहु द्विभार्या योग भी बनाता है, या विधवा संसर्ग चरित्र दोष देता है। ऐसा व्यक्ति भ्रमणशील होता है। व्यापारमें उसे हानि होती है, चतुर व लोभी होता है। प्रमेहका रोगी होते हुए भी अच्छे भोजनका शौकीन और चटोरा होता है। सप्तमस्थ राहु मंगल शनिके साथ उत्पादक अंगोंमें रोग देता है। पापदृष्ट सप्तमेश राहुके साथ कहीं भी चरित्रदोष देता है। यदि ६-८ भावमें मंगल व शनि हों तो सप्तमस्थ रा० पत्नी हानि करता है। सप्तमस्थ रा० पर दो पापग्रहोंकी पूर्ण दृष्टि हो तो पत्नी नहीं जीती या अविवाहित रहता है। सूर्यके साथ सप्तमस्थ राहु स्त्रियों पर धन-व्यय करता है। स्त्री-कुण्डलीमें सप्तमस्थ रा०को कोई शुभ ग्रह देखता हो तो पुनर्विवाहका योग बनता है। सप्तमेश रा० केतुके साथ पत्नीकी विषसे मृत्युको प्रकट करते हैं। पाप दृष्ट सप्तमस्थ रा० केतु पत्नी पर चरित्र दोष लगाते हैं। इसी प्रकार क्रूरषष्ठ्यंशके रा० केतु सप्तममें पाप दृष्ट हों तो स्त्री पतिको जहर दे देती है। रा० केतु सप्तममें हो, मंगल चतुर्थ भावमें हो तो जातक पशुवत् व्यवहार करता है। सप्तमस्थ रा० केतु पत्नीका असुन्दर होना प्रकट करते हैं, पापग्रहोंका योग गुप्तांग रोग देता है।

८—अष्टमभावमें राहु गुप्तांग पीड़ा, प्रमेह, अण्डवृद्धि उदर-रोग आदि देता है। वादीके बवासीरका कष्ट देता है, मनोरथ हानि करता है। क्रोधी, मूर्ख और व्यर्थभाषी बनाता है। वाचाल और विवादी होनेसे उसे पदसे अवनत होना पड़ता है। अनैतिक बनाता है। अष्टमभावमें राहु केतु अष्टमेशके साथ या दृष्टि सम्बन्ध विषम ज्वर उत्पन्न करता है व निर्बल चन्द्रमा निमोनिया उत्पन्न करता है। यदि राहु ८वें, शुक्र लग्नमें हो तो सिर पर निशान देता है।

९—नवम भावमें राहु धर्म, धन, भाग्यकी हानि करता है। देहमें वात पीड़ा, बान्धव सुखका अभाव और भ्रमण देता है। वह नम्रता रहित और स्त्रीके हाथकी कठपुतली होता है। नवम राहु जातकको क्रूर-कर्मा, दुष्ट-बुद्धि बनाता है, यदि नवमेश भी नीचका हो तो गैंग-लीडर, हिंसक वृत्ति लोगोंका सरदार होता है। स्त्री लग्नमें नवमेशके साथ राहु केतु दुराचारिणी बनाते हैं।

१०—दशम भावमें राहु आलसी वाचाल बनाता है, उसका जीवन अनियमित होता है, उसे पितासे सुख नहीं मिलता व अपनी सन्तान को भी क्लेश देता है। वात-रोगी, शत्रु-नाशी, राज्यमें पद प्राप्त-कर्ता, कला-मर्मज्ञ काव्यमें रुचि लेने वाला, यात्रा-प्रिय, विधवासे संबन्ध प्राप्त करने वाला होता है। मीनका रा० कष्टप्रद है। चन्द्रमाके साथ शुभ फल भी देता है। दशमस्थ रा० दीर्घ यात्रा कराता है। सूर्य या दशमेशके साथ हो और लग्नेशको देखे तो मंत्रशास्त्रमें रुचि होती है। दशमस्थ रा०के साथ बुध शनि भी हो तो पांव कटने का योग बनता है। रा० शुक्र दशम या चौथे हो मंगल शनि लग्नमें हो तो घुटने, कूल्हे पर जख्म देते हैं। दशमस्थ रा० कूटनैतिक सफलता देता है, स्थान हानि भी करता है।

११—एकादश भावमें रा० द्रव्य लाभ कराता है, राज्यसे सन्मान दिलाता है। वस्त्र स्वर्ण पशुका लाभ देता है। विजय व अभीष्ट लाभ देता है। ऐसा जातक चतुर कृषक होता है, छोटे लोगोंमें उसका प्रभाव विशेष होता है और उसके सन्तान अधिक होती है, बड़े भाईसे ऐसे जातकके सम्बन्ध मधुर नहीं रहने पाते।

१२—बारहवें भावमें रा० नेत्रमें रोग विशेषकर बायें नेत्रमें, पैरमें चोट देता है। वह साधु स्वभाव होने पर भी प्रपंच व दुष्ट कर्ममें प्रीति रखता है। आकृति विशेष आकर्षक नहीं होती, विवेकहीन, मतिमंद, कामी, चिंतित व मध्यमवर्ग सेवित होता है। सन्तान अल्प होती है। १२वें घरका रा० जातकको खर्चीले स्थान पर बसाता है। जातककी आंख या कमर पर चोट खरौंच आदि देता है। यदि १२वें भावमें पाप ग्रह हो तो द्वादशेशके साथ रा० अंग भंग कराता है, राशिके अनुरूप अंगकी हानि होती है। यदि रा० १२वें हो और लग्नेशको षष्ठेश देखे तो शय्या सुख जातकको नहीं होता।

राहुका दशा भोग—

उक्त फलित प्रायः दशा या अन्तर्दशामें होता है, लेकिन शत्रु मित्र और समके प्रभाव से फलमें कुछ संशोधन हो जाता है, इसलिये मुख्य अन्तरका स्वरूप ध्यानमें रखना चाहिये।

सूर्यमें रा०का अन्तर आने पर प्रायः रोग होता है। चन्द्रमामें रा०का अन्तर बान्धव विवाद और पैतृक संपत्ति हरण होता है। मंगलमें रा०का अन्तर राजा चोर अग्नि शत्रु भय देता है। बुधमें रा० का अन्तर मानहानि व धनहानि करता है। बृहस्पतिमें रा०का अन्तर व्याधि अल्प-मृत्यु रोग संकट स्थान नाश करता है। शुक्रमें रा०का अन्तर स्त्री पुत्र बन्धु विरोध करता है। शनिमें रा०का अन्तर ज्वर व वातरोगसे कष्ट देता है केतुमें रा०का अन्तर कलहसे क्लेश देता है। रा०की विंशोतरी महादशामें अन्य ग्रहोंका संक्षिप्त फलित निम्न है—

रा०में रा०—चिन्ता विवाद स्त्री या परिवार के मुख्य सदस्यका वियोग। ज्वर कीटदंश शस्त्राघात, पितासे विवाद, धन-हानि अदालतोंमें उपस्थिति, पत्नी रोग, व्यर्थ भ्रमण आदि होता है।

रा०में गुरु—विवाहोत्सव, तीर्थ स्नान शत्रुहानि, सन्तान लाभ, राज-प्रसाद व कार्य में सफलता मिलती है।

रा०में शनि—पतनभय, संबन्धविच्छेद, विवाद, मित्र बान्धवोंका असहयोग, प्रवास या दूरदेश गमन।

रा०में बुध—मित्र-बन्धु व राज्यसे धन लाभ, विवाहकी इच्छा, सन्तान वाहन लाभ, व्यापारमें लाभ, वेश्यागमन, धोखेका कलंक लगता है।

रा०में केतु—गुदाके रोग, अनियमित भोजन, संक्रमक रोग, चोट, शोथ, विषभय, सन्तानको कष्ट, धन व प्रतिष्ठाकी हानि, पत्नी से कष्ट, दुर्भाग्य आदि फल होते हैं।

रा०में शुक्र—वाहन और विदेशी वस्तुओं की प्राप्ति, अफसरसे लाभ, रोग शत्रुसे कष्ट, स्त्रीके द्वारा भाग्य वृद्धि, राज्यकृपा, धन सन्तान भूमिका लाभ, बच्चेका जन्म या परिवारमें विवाहोत्सव होता है। फरेबका इलजाम भी लगता है।

रा० में सूर्य—ज्वर, शत्रुवृद्धि, विवाद, अफसरसे लाभ, पत्नीको भय, निवास परिवर्तन, रोग व भयकी समाप्ति, अध्ययनमें सफलता मिलती है, सुखी जीवन व यश, लेकिन मानसिक अशांति रहती है।

रा० में चं०—कृषि व अन्य साधनोंसे धन लाभ, मनोरञ्जन, समुद्र यात्रा, धन व भूमि का लाभ होता है, लेकिन स्वास्थ्य निर्बल रहता है, अंगोंमें दर्द व चोटका भय, पत्नी द्वारा धन हानि, पत्नी व संतानको रोगभय व परिवर्तनकी संभावना।

रा० में मं०—शासनसे भय, चोर अग्निसे भय, मुकद्दमेंमें हार, भतीजोंके कारण धन हानि, स्मृति नाश, विवाद और अशांति रहती है।

गोचरके राहुका फल—

जन्म राशिका राहु हानि करता है। दूसरा धन नाश, तीसरा धन लाभ, चौथा वैर, पांचवां शोक, छठा श्री, सप्तम कलह, आठवां मृत्यु, नवम दुःख, दशम वैर, ग्यारहवां सुख और बारहवां शोक देता है।

नक्षत्र गणनासे एक सरल रीति और भी प्रचलित है। एक सर्पाकार आकृतिमें मुख पुच्छके अतिरिक्त दाहिनी तरफ गला हृदय जठर गुदा और बांई तरफ कटि कामांग, कपाल मुख लिखकर क्रमशः १+३+४+३+३+१+३+३+४+३ नक्षत्र लिख दे। राहु के वर्तमान नक्षत्रको जिह्वा पर रखकर गिनती करे। जन्म नक्षत्र जहां पड़ेगा उसीके अनुरूप फल होगा, फलके लिये इनकी संज्ञायें जिह्वा १, पुष्पित ३, फलित ४, निष्फल ३, झटित ३, पुच्छ (मूर्च्छित) १, राजस ३, तामस ३, वृद्ध ४, और मृत ३ है। इनकी स्थिति निम्न बनती है—

पुष्पित	फलित	निष्फल	झटित
३	४	३	३
गला	हृदय	जठर	गुदा

१ जिह्वा　　　　१ पुच्छ मूर्च्छित

मृत	वृद्ध	तामस	राजस
३	४	३	३
मुख	कपाल	कामांग	कटि

राहुकी गति उल्टी है, इसलिये आगेके १३ नक्षत्र भुक्तांशमें आते हैं, इनकी जीव संज्ञा है. एवं शेष भोग्य नक्षत्रोंकी मृत संज्ञा है।

सर्वतोभद्रचक्रमें जिस व्यक्ति, नगर, देश का नक्षत्र विद्ध होगा या राहुसे केन्द्र त्रिकोणमें पड़ेगा उसे भय होगा।

गोचरमें राहुके कुप्रभावमें आने पर अकस्मात् धन हानि (राजा अग्नि चोर द्वारा) गृह-कलह, परिवार-विच्छेद (स्त्री संतान परिवारके मुखिया द्वारा) और धर्म हानि, पाप प्रवृत्ति (हिंसा दुराचार चौर-कर्म द्वारा) आदि कुफल होते हैं। राहुके अनिष्ट फलकी शांतिके लिये गोमेद-रत्न धारण करना चाहिये, या चांदी या कांसीके पत्र पर सर्पकी आकृति बनवाकर बुधवार उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें धारण करनी चाहिये, अथवा राहु और जन्म नक्षत्रके समान अंशों पर जब वेध आ रहा हो उससे प्रथम बुधवारको कुश-मुद्रिका पहिन लेनी चाहिये। अबोध बच्चोंके सिरहाने खड्ग (कोई शस्त्र) रख देना चाहिये। मंत्र जप दान व हवन द्वारा भी ग्रह शांति कराई जा सकती है। बुधवारको तैल पक्व अन्न अभ्यागत को जिमाना भी राहुके अरिष्टकी शांति करता है।



सत्यपर आधारित कहानी—

महान् गायत्री भक्त वैद्यराज पं० दिलारामजी

[लेखकः– डा० वेदप्रकाश शास्त्री]

[आधुनिक युगमें वर्तमान शतीके महान् गायत्री उपासक ऋषिकल्प दिवङ्गत पीयूषपाणि वैद्यराज श्रीदिलारामजीकी पुण्यगाथा यहां प्रकाशित कर रहे हैं। पटियालाके एक राजवैद्यने श्रीदिलारामजीका सान्निध्य प्राप्त किया था–उन्होंने आजसे ३८वर्ष पूर्व उक्त वैद्यजीके कुछ चमत्कार सुनाये थे, उनमेंसे एक यह भी है- कि लगभग ५० वर्ष पूर्व पटियालाके तत्कालीन महाराजा भूपेन्द्रसिंहके अनुरोध पर वायसरायने पटियालामें महाराजाका आतिथ्य स्वीकार किया। दूसरे दिन अर्धरात्रोपरान्त वायसरायकी पत्नीके पेटमें असह्य वेदना प्रारम्भ हुई, जो बढ़ती गई। राज्यके वैद्य डाक्टरोंके उपचारसे रोग शान्त नहीं हुआ और मेमसाहबा अर्ध-मूच्छित हो गई। महाराजा घबराए: किसीने सुझाव दिया कि 'जैसे भी हो वैद्य दिलारामजी को लायें तो मेमसाहबा बच सकेंगी।'' मरता क्या न करता। महाराजा स्वयं सचिवके साथ कार लेकर वैद्यजीके गांवमें पहुँचे और अनेक अनुनय विनय करके वैद्य जी को साथ ले आये। मेमकी नाड़ी देख कर वैद्यजी बोले—"भूपा! बता इसको कितनी देरमें ठीक करूं? और खाने-लगाने-सुंघानेकी किस दवासे ठीक करूं?" महाराजाने लाटसाहब (वायसराय)से पूछ कर कहा कि 'सुंघाने की दवासे १५ मिनटमें ठीक करें'। वैद्यजीने दवा सुंघा कर १२ मिनटमें मूच्छित मेमको बैठा कर कॉफी पिला कर सबको आश्चर्य चकित कर दिया। वायसरायने प्रसन्न होकर एक सहस्र स्वर्ण मुद्रा वैद्यजीको भेंट करनेका आदेश दिया। पर, वैद्यजीने एक रुपया भी न लेकर तत्काल गांव पहुंचाने को कहा कि मुझे तो अब घर जा कर इस म्लेच्छ महिलाका स्पर्श किया है प्रायश्चित्तरूपेण अधिक मन्त्र जपना पड़ेगा। जिन वैद्यजी ने यह घटना मुझे सुनाई उन्होंने यह भी कहा कि—श्रीदिलारामजी कहा करते थे कि "आज तक संसारमें ब्राह्मण अढाई हुए हैं, पूरे तीन नहीं। पूछते कि महाराज! वे अढाई कौन हैं? तो बताते— "पहला पूरा ब्राह्मण परशुराम, दूसरा दिलाराम और आधा रावण। यदि रावण पूरा ब्राह्मण होता तो रामसे कभी न मरता।" हमें खेद है कि इस पुण्यगाथाके नायकका चित्र उपलब्ध न हो सका। मैं जब अ०भा० गुर्जरगौड़ महासभाका अध्यक्ष था, उन दिनों महासम्मेलनों और कार्यकारिणी सभामें भी कई बार द्विजोंको अढ़ाई ब्राह्मणका यह आदर्श पुण्यसंस्मरण सुना चुका हूं। इस कहानीके विद्वान् लेखक डा० वेदप्रकाश शास्त्रीजी से ज्योतिष्मतीके पाठक भली-भांति परिचित हैं। हमारे चिरपरिचित परमस्नेही शास्त्रार्थ महारथी स्व० माधवाचार्यजी शास्त्रीके वंशज होनेसे उनकी अद्भुत प्रतिभा आपमें विद्यमान हैं। आपका अगला निबन्ध "श्रीमद्भागवत भगवान् श्रीकृष्णका ही स्वरूप" शीर्षक आगामी अङ्कोंमें प्रकाशित करेंगे।

—सम्पादक]

धर्मभूमि कुरुक्षेत्रका कमलानगर आज विशेष आकर्षणका केन्द्र बना हुआ था। सभी नगरवासियोंके मुख पर एक ही बात थी—'बड़े सौभाग्यशाली हैं हमारे वैद्यजी—जिन्हें

बुढ़ापेकी दहलीज पर पुत्रका मुख देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है।'

× × × ×

वैद्य सुखरामजी कमलानगर के परम्परागत पीयूषपाणि वैद्य थे। कोई भी असहाय, अनाथ और निर्धन उनके द्वारसे कभी निराश न लौटता था। उनकी सहधर्मिणी भी सही अर्थोंमें सच्ची सहधर्मिणी थी। पीयूषपाणि पति जहां रोग निवारणार्थ मुक्त करसे औषध वितरण कर अपनी उदारताका प्रतिपद परिचय कराया करते थे वहीं सहधर्मिणी आगत अभ्यागतोंको अन्न-जल एवं मधुरवाणी द्वारा तृप्त कर स्वयंको उनके अनुरूप सिद्ध करनेमें संलग्न रहती थी। इस देवोपम युगलके सम्पर्कमें आने वाला प्रत्येक व्यक्ति इनके गुण गाते अघाता न था। कुरुक्षेत्रका अड़तालीस कोसका सारा क्षेत्र इनके यश-सौरभसे गमक रहा था। पति-पत्नी एक प्राण दो देह थे। घरमें ऐश्वर्यका साम्राज्य था। यशसौरभ चारों ओर व्याप्त था और यह श्लोक अधिकांश में उन पर घटित होता था—

अर्थागमो नित्यमरोगिता च,
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या,
षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥

बस अभाव था तो एक, 'पुत्रका अभाव'। पति-पत्नी दोनों जैसे-जैसे वृद्धावस्थाकी ओर बढ़ रहे थे वैसे-वैसे पुत्रका अभाव उनके हृदय में शूल उत्पन्न करता जाता था। सफल चिकित्सक होनेके नाते वैद्यजीने पुत्र-प्राप्ति के सभी उपाय किये थे, परन्तु जब किसी उपायसे सफलता हाथ न आई तब नगरके वयोवृद्ध व्यक्तियोंके सत्परामर्शसे अनुष्ठान द्वारा भगवदनुग्रह प्राप्त करनेका विचार किया। निकटवर्ती गांवसे 'पं० लोकनाथजी' नामक पौराणिक विद्वान्को सादर आमन्त्रित कर उनसे पुत्र प्रदायक अनुष्ठान हेतु परामर्श किया। उन्होंने बताया कि मनोयोग पूर्वक 'हरिवंश'का श्रवण ही पुत्र प्राप्तिका एक मात्र उपाय है।

पण्डितजीके परामर्शानुसार 'हरिवंश-पुराण'का नवाह कराया गया। समारोहके साथ उदारतापूर्वक सारे कार्य पूरे किये गये। ब्रह्मभोज आदि कार्य भी किए गये और अन्न-धनका प्रचुरपरिमाणमें वितरण हुआ, चारों ओर वाह! वाह! की लहर दौड़ गई।

श्रद्धापूर्वक किए गए अनुष्ठानका फल शीघ्र ही सामने आया। वैद्यजीकी पत्नी गर्भ-वती हो गईं। जिसने सुना उसने प्रभु को इस दम्पती की मनोकामना पूर्ण करनेके लिए प्रभु को धन्यवाद दिया।

× × × ×

देखते-देखते नौ मास बीत गए। दसवें मासके आरम्भ होते ही वैद्यराजकी पत्नीने सुमुहूर्तमें एक तेजस्वी बालकको जन्म दिया। वैद्यजीकी उदासी दूर हुई, घरमें हर्षका ज्वार उमग उठा। वैद्यजीने प्रसन्नता पूर्वक जातकर्मादि सभी संस्कार सम्पन्न किए और याचकोंको प्रचुर परिमाण में अन्न-धन-वस्त्रादि देकर सन्तुष्ट किया। पं० लोकनाथजीको वैद्यजीने इस अवसर पर मात्र एक स्रुवा समर्पित किया जिसे देख कर वे खिन्न से हो उठे। वैद्यजीने इस पर हँसते हुए कहा—"आचार्यजी! इतने सफल अनुष्ठानकी इतनी तुच्छ दक्षिणा देख

कर आश्चर्य मिश्रित खिन्नता होना स्वाभाविक है, परन्तु वास्तवमें यह स्रुवा मात्र लकड़ी का यज्ञपात्र नहीं, बल्कि इसके द्वारा सम्पादित होने वाले पौरोहित्य कर्मका प्रतिनिधि है। मैंने इसके माध्यमसे अपनी परम्परागत दस गांवों की पुरोहिताई आपको समर्पित कर दी है। आजसे हमारे पारिवारिकोंके स्थान पर आप ही उसे सम्भालेंगे। इसके अतिरिक्त आपका जो भी निदेश हो शिरोधार्य है। आप अब अपने गांवको छोड़ कर यहीं निवास कीजिए और मुझे तथा मेरे पारिवारिकोंको अपनी सेवाका अवसर देकर आभारी कीजिए। पं० लोकनाथजीने आग्रह स्वीकार कर नगरमें ही निवास स्वीकार किया और पौरोहित्य वृत्तिका आश्रय ले जीवन यापन करने लगे।

× × × ×

काल-विहंग कृष्ण-श्वेत पक्षोंको पसार कर उड़ा और देखते ही देखते उसने ५ वर्षका समय लांघ डाला, बालक दिलेराम बाल केलि से माता-पिताके मनको हर्षमग्न करता हुआ, पं० लोकनाथजीके पास आरम्भिक शिक्षा प्राप्त करने लगा। वैद्यजीकी प्रेरणासे पं० लोकनाथ बालक दिलेरामके हृदयमें आस्तिकताके बीज बोने लगे और विभिन्न पुराणोंके उपाख्यान सुना सुनाकर उसके ब्राह्मणत्वको सुदृढ़ बनाने लगे। बालक अतीव मेधावी था। गुरु मुखसे सुन-सुन कर शास्त्रीय रत्नोंको अपनी स्मृति-मंजूषामें एकत्रित करने लगा। देखते ही देखते अनेकों स्तोत्र, अनेकों सूक्तियां तथा अन्यान्य विषय उसे कण्ठाग्र हो गए। माता-पिता-गुरु तथा अन्य सब व्यक्ति बालक दिलेरामकी इस प्रखर बुद्धिमत्ताको देख-देख कर फूले न समाने लगे।

देखते ही देखते बालक दिलेरामने आठवें वर्षमें प्रवेश किया। पं० सुखरामजीने पं० लोकनाथजीसे परामर्श कर बालक दिलेरामके उपनयन संस्कारका आयोजन किया। अतीव समारोह पूर्वक बालक दिलेराम द्विजत्वकी सीढ़ी पर चढ़े। पं० लोकनाथ उन्हें मनोयोग पूर्वक संध्या-गायत्रीका अभ्यास और वेदाध्ययन कराने लगे। गुरु लोकनाथजीने प्रसंगवश एक दिन बताया—"पुत्र ! ब्राह्मण ही नहीं सभी द्विजन्माओंके लिए 'गायत्री'से बढ़कर सर्वार्थ साधक और कोई अनुष्ठान या व्रत नहीं है। जो व्यक्ति श्रद्धा और नियम पूर्वक सन्ध्या और गायत्रीका जाप करता है उसके लिए ससारमें अप्राप्य कुछ भी नहीं रह जाता। सफलताका सोपान, यशका आधान, मोक्षका साधन और कामनापूर्तिका एकमात्र सहज उपाय यदि कुछ है तो गायत्रीका जाप। तुम इसे कभी न छोड़ना। इससे तुम्हें धन, यश, दीर्घायु, मोक्ष सब कुछ प्राप्त होगा।"

बालक दिलेरामने गुरुके वचनोंको सर्वात्मना स्वीकार कर गायत्री जापमें विशेष ध्यान देना आरम्भ किया और परिणाम तत्काल सामने आया, उन्हें सभी शास्त्र और विद्याएं हस्तामलकवत् प्रतिभासित होने लगीं।

सभी शास्त्रोंमें निपुण होने पर भी दिलेरामने आजीविकाके साधनके रूपमें अपनाया आयुर्वेद को, क्योंकि चिकित्सा व्यवसाय उनके परिवारमें परम्परागत रूपमें चला आ रहा था और पं० सुखरामकी भी हार्दिक इच्छा यही थी कि दिलेराम अपने पैतृक व्यवसायको ही अपनाएं क्योंकि इसमें धन, मानके साथ-साथ

स्वतन्त्रता रहती है और धर्मका साधन अनायास होता रहता है। आयुर्वेदमें आचार्योंने स्वयं अपने श्रीमुखसे कहा है—

क्वचिद्धर्मः क्वचिन्मैत्री
क्वचिदर्थो क्वचिद् यशः ।
व्यवहार ज्ञानं क्वचिच्चेति
चिकित्सा नास्ति निष्फला ॥

अर्थात् कभी चिकित्सा द्वारा धर्मका सम्पादन हो जाता है, कभी किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से मित्रता जुड़ जाती है, कभी धनकी प्राप्ति हो जाती है, कभी यश मिल जाता है और इनकी प्राप्ति न होने पर भी प्रत्यक्ष कर्माभ्यास (Practical Experience) तो हो ही जाता है अतः चिकित्सा कभी निष्फल नहीं होती।

दिलेरामजी अपने पूज्य पिताकी छत्रछाया में चिकित्साकर्ममें प्रवृत्त हुए। गुरु लोकनाथ जीके आशीर्वादसे सन्ध्या तथा गायत्रीमें अडिग आस्था बनी हुई थी। प्रातःकाल गायत्रीकी इक्कीस मालाओंका जाप कर तब चिकित्सालयमें आते और जुट जाते जनता जनार्दनका दुःख दूर करनेमें। गायत्रीके जाप के प्रभाव, पिता और गुरुके आशीर्वादके फल-स्वरूप हाथमें पीयूषपाणित्व गुण इस प्रकार आ समाया कि जिसे अपने हाथसे औषधि दे देते वही निरोग हो जाता और उनके गुण गाता हुआ अपने घर लौटता। देखते ही देखते चारों ओर वैद्य दिलेरामजीकी यशः पताका सम्पूर्ण उत्तर भारतमें फहराने लगी। बड़े बड़े राजा-महाराजा उनके पास चिकित्साके लिए आने लगे।

पिताने जब पुत्रको अपने पैतृक व्यवसायमें पूर्ण सफल पाया तो सन्तोषकी सांस ली और सारा दायित्व पुत्रको सौंप कर भगवदाराधनमें मन लगाया। श्री दिलेरामजीके पैंतीस वर्षके होते होते उनके माता-पिता दोनों दिवंगत हो गए। कुछ काल तक तो इस घटनासे दिलेराम जी उद्विग्न रहे परन्तु फिर गुरुमुखसे—

'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवं जन्म मृतस्य च'

(जो उत्पन्न हुआ है उसे एक न एक दिन निश्चय ही मरना होगा तथा जो मर गया है उसे फिर जन्म ग्रहण करना होगा) का तात्त्विक विवेचन सुन उन्होंने शोकको दूर हटाया और कर्त्तव्य कर्ममें ध्यान लगाया।

कुछ समय पश्चात् गुरुजीने भी असार संसारसे विदा ली। दिलेराम जी अब गायत्री जाप और चिकित्सामें निमग्न रह कर काल यापन करने लगे।

× × × ×

गायत्री जापका प्रत्यक्ष प्रमाण श्री दिलेरामजीको यह मिला कि वे जिस किसी रोग की भी चिकित्सा हाथमें लेते वह रोग उनका स्पर्श पाते ही इस प्रकार विदा हो जाता मानो कभी था ही नहीं। सर्प-दंशसे मरे हुए, जलमें डूब कर मरे व्यक्ति तथा गलित कुष्ठके रोगियों की सफल चिकित्साके लिए श्री दिलेराम जी विशेषतः प्रसिद्ध थे। वे प्रायः कहा करते थे—

सर्पदंष्टं जले मग्नं
कुष्ठेन गलितं च यत् ।
तत् सर्वं शमतां याति
ह्यायुर्वेद चिकित्सया ॥

श्री दिलेरामजीकी मान्यता थी कि सर्प-दंष्ट व्यक्ति तथा जलमें डूबे प्राणि पर्याप्त समय तक मरते नहीं, उनके प्राण मस्तिष्क गत कोषमें

सुरक्षित रहते हैं जिन्हें कुशलतापूर्वक चिकित्सा कर लौटाया जा सकता है। वे ऐसे रोगियों की नासिकामें नलकी द्वारा स्वनिर्मित कुछ औषधि विशेष फूंका करते थे और जब उसमें चैतन्यता के लक्षण प्रगट होने लगते तब बाह्य और भीतरी उपचार सूचीवेध द्वारा शिराओं में अगद का प्रयोग करते थे और कुछ ही घण्टोंके पश्चात् ऐसे व्यक्ति इस प्रकार उठ बैठते मानों नींदसे जागे हों। गलित कुष्ठके रोगियोंके लिए उनकी अपनी विशेष चिकित्सा विधि थी। उन्होंने एक विशाल लोहेका पिंजरा बनवाया था। जब गलित कुष्ठका रोगी उनके पास लाया जाता, वे उसके साथ आए व्यक्तियोंसे ६० सेर घीका प्रबन्ध करनेको कहते। घीका प्रबन्ध हो जाने पर रोगीको पिंजरेमें डाल उपलियोंसे इस प्रकार आंच देते जिससे उसका बाहरी चमड़ा प्रायः जल जाता, फिर उसे रूईमें लपेट कर अन्धेरे कमरे में पहुँचाते और चालीस दिन वहीं उसकी चिकित्सा करते। इस चिकित्साके मध्य ऊपर लिखा पुरा घी उसे खिला दिया जाता और इसके पश्चात् जब रोगीको बाहर लाया जाता तब उसका इस प्रकार काया कल्प हो जाता था कि देखने वाले भ्रमित हो कर रह जाते थे कि वे उसी व्यक्तिको देख रहे हैं या उसके स्थानापन्न किसी अन्य व्यक्तिको। इन सफल और अभूतपूर्व चिकित्साओंका परिणाम यह हुआ कि सारी जनता उन्हें दूसरा धन्वन्तरी मानने और कहने लगी। कवि श्रेष्ठ इस रूपमें उनका वर्णन करने लगे—

'श्रीदिलेराम सद्वैद्यो धन्वन्तरिरिवापरः'

अर्थात् श्रेष्ठ वैद्य दिलेरामजी दूसरे धन्वन्तरि के ही तुल्य हैं।

यशकी लालसा कभी क्षीण नहीं होती। यह कथन सर्वांशमें सत्य है। यूं तो लालसा अथवा तृष्णा किसी भी प्रकारकी हो उससे तृप्ति सम्भव नहीं, परन्तु यशकी तृष्णा तो कभी बुझती ही नहीं और उस पर यह कथन सर्वांश में लागू होता है—**'तृष्णा हि तरुणायते'**। वैद्य दिलेरामजीकी यश-लालसा बढ़ती जा रही थी। वे चाहते थे कि सारे संसारका यश उन्हीं की झोलीमें सिमट आए। बहुत विचारके पश्चात् उन्होंने चिकित्सा कार्यसे कुछ समयके लिए अवकाश ले कर गायत्री पुरश्चरण करने का निश्चय किया।

× × × ×

भगवती गायत्री द्विजमात्रकी कामना पूर्ण करने वाली, वात्सल्यपूर्णा माँ हैं। उनकी शरण लेने पर फिर कुछ भी प्राप्तव्य शेष नहीं रह जाता। वैद्य दिलेरामजीने सहधर्मिणीसे अनुमति प्राप्त कर कुरु जंगल प्रदेशके विशाल बदरी क्षेत्रमें प्रवहमाण पावन सरित सरस्वती के तट पर पुरश्चरण आरम्भ किया। पूरे सन्यासीकी तरह संसारसे विरक्त होकर पूर्ण आस्था और नियम पूर्वक वैद्य दिलेरामजी पुरश्चरणमें संलग्न हो गए। पूर्वजन्मकृत सुकृत, इस जन्मके संस्कार तथा गुरु द्वारा प्ररूढ आस्थाके फलस्वरूप उनका पुरश्चरण निर्विघ्न सम्पन्न हुआ और इस अवसर पर स्वयं उन्हें चकित बना देने वाली बात यह हुई कि भगवती गायत्रीने स्वयं प्रगट हो कर उन्हें अपने आशीर्वादसे आप्यायित करते हुए कहा—

'मैं तुम्हारी इच्छासे परिचित हूं, अतः आशीर्वाद देती हूं कि तुम्हारी चिकित्सा कभी

निष्फल नहीं होगी। एक बार कालके गालमें गया हुआ व्यक्ति भी तुम्हारी चिकित्सामें आने पर मरेगा नहीं और तुम्हें देवदुर्लभ यश भी प्राप्त होगा, तुम्हारा नाम लेकर गांवके चारों ओर नगारा बजानेपर महामारी आदि संक्रामक रोग तत्काल प्रशमित हो जाएंगे और सौ वर्षकी आयु भोग कर तुम मोक्ष प्राप्त करोगे।"

वैद्यजीको कुछ मांगना नहीं पड़ा, भगवती गायत्रीके अनुग्रहसे उन्हें वह सब अनायास प्राप्त हो गया जिसकी कल्पना भी सर्व सामान्यके लिए दुर्लभ होती है।

वैद्य दिलेरामजी भगवती गायत्रीका अनुग्रह पा कर घर लौटे और सहधर्मिणीको सारा समाचार सुना चिकित्सा-कार्यमें संलग्न हो गए।

वैद्य दिलेरामजीमें अब एक नया परिवर्तन परिलक्षित होने लगा। वे कट्टर ब्राह्मणत्वके पुजारी हो गए। भगवान् राम, कृष्ण अवतार होने पर भी अब उनके लिए प्रणम्य नहीं, मात्र आशीर्वादके भाजन रह गए क्योंकि उनकी उत्पत्ति क्षत्रिय वंशमें थी। एक निष्ठावान् ब्राह्मण क्षत्रियको आशीर्वाद तो दे सकता है परन्तु प्रणाम नहीं कर सकता। हृदयमें उनके प्रति आदर-भाव तो रख सकता है परन्तु सश्रद्ध-चरणावनत नहीं हो सकता। यही स्थिति वैद्यराज दिलेरामजीकी थी। प्रायः वे अपने ब्राह्मणत्व परक अभिमानको व्यक्त करते हुए कह बैठते थे— "संसारमें केवल अढाई ही ब्राह्मण हुए हैं - एक परशुराम, दूसरे दूर्वासा तथा आधा मैं स्वयं, शेष तो मात्र नामके ब्राह्मण हैं।"

× × × ×

कुछ समय पश्चात् वैद्यराज दिलेरामजी ने दिग्विजय हेतु देशाटनका विचार किया। यात्राके लिए सबसे पहले वैद्यराजने उत्तरी भारतको अपना लक्ष्य बनाया। वर्तमान हरियाणाके अनेकानेक जनपदोंकी यात्रा करते हुए, जनपदोध्वंसक रोगोंसे आक्रान्त जनपदों मे अपने नामका डंका बजवा कर उन्हें रोग-मुक्त बनाते हुए, लाखों व्यक्तियोंको स्वास्थ्य लाभ करा अपनी यशधूलिको अपने आगमन की सूचना देनेके लिए आगे भेज कर स्वयं उसका अनुगमन करते हुए वैद्यराजने अपना पड़ाव डाला पटियाला नगरमें। वहांके तत्कालीन नरेशको संग्रहणी जैसे भयानक रोगसे मुक्त कर उनके आग्रह पर उनका मानद राजवैद्य पद स्वीकार कर वैद्यराज पुनः यात्रा पर अग्रसर हुए और देखते ही देखते जीन्द, नाभा, संगरूर, कसौली आदि पंजाब, हिमाचल आदि क्षेत्रोंके नरेश उनकी विद्वत्ताके सामने नत-मस्तक हो उन्हें गुरुभावसे पूजने लगे।

वैद्यराजने अब आगे बढ़ कर नैसर्गिक सुषमाके आगार काश्मीरमें डेरा जमाया। उन की कीर्तिसे आकृष्ट हो कर झुण्डके झुण्ड रोगी उनके पास पहुँचने लगे और स्वास्थ्य लाभ कर उनके जय-जयकारसे आकाश गुंजाने लगे। होते-होते उनकी पीयूष-पाणिताकी गाथा तत्कालीन काश्मीर नरेशके कानोंमें पहुंची।

तत्कालीन काश्मीर नरेश एक ब्राह्मण द्वेषी राजपूत थे। वे ब्राह्मणोंको ढोंगी, पाखण्डी, धूर्त्त आदि विशेषणोंसे विभूषित कर अमित तोषका अनुभव करते थे। उनके स्वभाव के कारण ब्राह्मण वर्ग प्रायः उनसे दूर-दूर

रहनेमें ही कल्याणके दर्शन किया करता था। राज्यमें राजपूतोंकी तूती बोलती थी, सभी राजपूत स्वयंको किसी अंशमें राजासे कम न मान कर मनमानी किया करते थे। चारों ओर लूट-खसोट, आपाधायी और भ्रष्टाचार का साम्राज्य था। किसीका मान-सम्मान, सम्पद्, मर्यादा, इज्जत आबरू सुरक्षित न थे। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' कहावत पूरी तरह वहां चरितार्थ हो रही थी। इसी समय अचानक दीनोंकी हाय अथवा ब्राह्मणोंके मौन शापसे 'अनभ्रवज्रपात'की तरह काश्मीर नरेश पर पक्षाघातका आक्रमण हुआ और गर्दन के नीचेका पूरा भाग निश्चेष्ट हो गया। बड़े-बड़े चिकित्सकोंने नरेशकी दशाको देख कर आश्चर्य व्यक्त किया। सर्वाङ्ग पक्षाघात में ऊर्ध्वाङ्गका उसके प्रभावसे मुक्त रह जाना सचमुच आश्चर्यकी बात थी। सबने 'ईश्वर की लीला' कह कर सन्तोष किया। चिकित्सा होने लगी परन्तु स्थितिमें किसी प्रकारका परिवर्तन नहीं आया। अन्तमें सर्व-सम्मतिसे वैद्यराज दिलेरामजीसे चिकित्सा करानेका निश्चय किया गया।

राज्य परिषद्के वरिष्ठ सदस्य वैद्यराज दिलेरामजीकी सेवामें उपस्थित हुए और उनसे सानुनय आग्रह किया कि वे काश्मीर नरेशको स्वास्थ्य दान दें।

वैद्यराजने गम्भीरता पूर्वक उनका कथन सुना और फिर मेघ-गम्भीर वाणीमें उन आगन्तुकोंका उपहास सा करते हुए कहा— "आप महानुभावोंको मेरे पास आनेसे पूर्व कुछ विचार तो करना चाहिए था। क्या आप मुझ जैसे ब्राह्मणसे यह आशा करते हैं कि वह ऐसे ब्राह्मणद्रोही नराधम नरेशकी चिकित्सा करना स्वीकार करेगा जिसका जीवन ब्राह्मणों को बुरा-भला कहने, उनका उत्पीड़न करने तथा दीन-हीन प्रजाके शोषणमें बीता हो। राजा तभी सही अर्थोमें राजा कहलानेका अधिकारी होता है, जब वह प्रजाका रंजन पुत्रवत् करे 'राजा प्रकृति रंजनात्'! यदि वह लूट, खसोट, अन्याय, अत्यचारको प्रश्रय देता है तो वह राजा नहीं, केवल डाकू कहलानेका अधिकारी है। आप लोग भ्रमवश गलत जगह आ गए हैं, कृपया लौट जाइए। यहाँ आपकी आशा पूरी न हो सकेगी।"

राज्य परिषद्के सदस्य उस ब्राह्मणकी दो टूक बात सुन कर स्तब्ध खड़े रह गए, कुछ पल तो उन्हें यह सूझा ही नहीं कि वे क्या करें, क्या न करें? अन्तमें साहस बटोर कर उनमें से वरिष्ठ व्यक्तिने कहा— 'महाराज! आप का कथन यथार्थ है परन्तु राजा प्रजाके लिए पिता-तुल्य होता है। यदि पिता दुष्ट हो तो क्या पुत्र को उसे ठुकरा देना चाहिए? इस समय वह असहाय है, कुछ भी कर पानेमें असमर्थ है—क्या ब्राह्मणका धर्म यही कहता है कि दीन-हीन-असहाय व्यक्ति पर दया न की जाए? उसके प्रति अमानवीय, उपेक्षापूर्ण कठोर व्यवहार किया जाय? और फिर यह भी तो सम्भव है कि शायद यह ईश्वरीय दण्ड उसे इसीलिए मिला हो कि आपके द्वारा स्वास्थ्यलाभ कर उसकी विचारधारा पूर्णतः बदल जाए और यह अपने व्यवहार पर पश्चाताप कर सही अर्थोंमें राजा बन जाए। सज्जनोंका जीवन परोपकारके लिए ही होता है '**परोपकाराय सतां विभूतयः**' अतः हम पर

इस राज्य पर कृपा कीजिए और महाराजकी चिकित्सा अपने हाथोंमें लीजिए।

वैद्यराजने उसके शब्दोंको ध्यानसे सुना, कुछ क्षण मौन भावसे उस पर मनन किया और कहा—"जनता जनार्दनके प्रतिनिधियोंकी जैसी इच्छा।" पार्षद् कृतकृत्य होकर लौटे, इस विश्वासके साथ कि अब उनके महाराजा अवश्य स्वस्थ हो जाएंगे।

× × × ×

वैद्यराजने चिकित्सा आरम्भकी। गुदमार्ग और सूई द्वारा शरीरमें औषधियां पहुँचाई तथा मर्दन, स्नेहन आदि बाह्योपचार किये। शीघ्र ही औषधिने चमत्कार दिखाया। काश्मीर नरेशका वामाङ्ग पूर्णतः निरोग और सचेष्ट हो गया।

संस्कृत में कहावत है **'स्वभावोदुरतिक्रमः'** अर्थात् स्वभाव बदलना सर्वथा कठिन होता है: चोर चोरी करना छोड़ सकता है परन्तु हेरा-फेरी नहीं छोड़ता। यही दशा काश्मीर नरेश की थी—किञ्चित् स्वस्थ होते ही फिर उन का स्वभाव उभर कर सामने आ गया। वे फिर पहले की तरह ब्राह्मणोंको दुर्वचन कहने लगे। जिससे वैद्यराज दिलेरामने खिन्न होकर चिकित्सासे हाथ खींच लिया और शीघ्राति-शीघ्र वहांसे आगेके लिए प्रस्थान कर दिया।

वैद्यराजके चले जाने पर राज्य परिषद् के अधिकारियोंको बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने काश्मीर-नरेशसे कहा — "महाराज ! एक विदेशी अतिथि ब्राह्मणके साथ आपका व्यवहार कुछ शोभनीय नहीं रहा। अपने घर आए व्यक्तिका भले ही वह शत्रु ही क्यों न हो कोई निरादर नहीं करता परन्तु आपने तो अपने जीवन रक्षक नारायण स्वरूप वैद्यराजका इस प्रकार निरादर किया कि वे आपकी चिकित्सा बीचमें ही छोड़ कर आपके सायेसे ही दूर चले जानेमें कल्याण समझ कर यहांसे चले गए। अब आप ही विचारिये कि आपकी अधूरी चिकित्सा कैसे पूरी होगी, आपको स्वास्थ्य लाभ कैसे होगा ? इस दशामें आप राज्यका संचालन, व्यवस्था और शत्रुओंसे इस की रक्षा कैसे कर सकेंगे ?"

इन खरी बातोंको सुनकर राजाको चेत हुआ कि सत्य ही उसने अपने पावों पर कुल्हाड़ी मार ली है। अब उसने अपने पार्षदों के सामने अपनी भूल पर पछताते हुए उनसे आग्रह किया कि वे जैसे भी हो वैद्यराज को लौटा लावें। वह अपनी भूलके लिए उनसे क्षमा मांगेगा और भविष्यमें ऐसी त्रुटि फिर न हो इसके प्रति सावधान रहेगा।

× × × ×

पार्षदोंने बड़ी कठिनाईसे वैद्यराजके गन्तव्यका पता लगाया और तीव्रगामी वाहनों पर सवार होकर उनके पास जा पहुंचे। सबने वैद्यराजके सामने पहुँचते ही उनके चरणोंमें प्रणाम किया और उनसे वापस लौट कर फिर काश्मीर नरेशकी चिकित्सा करने, उन्हें पूरी तरह स्वस्थ बना देनेका आग्रह किया।

नरेशके व्यवहारसे क्षुब्ध वैद्यराजने पहले तो लौट चलनेसे स्पष्ट इन्कार कर दिया परन्तु बादमें राजाके विचार उनके मुखसे सुन उनके आग्रहसे लौट चलना स्वीकार कर लिया।

पार्षदोंके साथ वैद्यराज बहुत शीघ्र जम्बू नगरके बाहरी उपवनमें आ पहुँचे। वहां

पहुँचने के बाद कुछ देर विश्राम कर नित्य नैमित्तिक कर्मसे निवृत्त होनेके पश्चात् वैद्यराज दिलेरामजीने पार्षदोंको सम्बोधित कर कहा "आप लोगोंके आग्रहसे मैं यहां लौट तो आया हूँ परन्तु अब आपके नरेशकी चिकित्सा तभी करूंगा जब वह स्वयं यहां अपने पांवोंसे चल कर आएगा और अपने अभद्र व्यवहारकी क्षमा मांगेगा !"

पार्षदोंने कहा—"महाराज ! पक्षाघातके रोगीके लिए ऐसा कर पाना सम्भव है क्या ? आप जानते ही हैं कि हमारे महाराजाका अंग अभी रोग मुक्त नहीं हुआ है, इस स्थिति में भला वे स्वयं पैदल चल कर कैसे आपके पास आ सकते हैं ?"

वैद्यराजने पहले तो कहा— "यह सब जानना आपका काम है, मेरी चिकित्साकी शर्त बस यही है कि रोगी स्वयं यहां आए।" बादमें स्वयं समस्याका समाधान इस रूपमें सुझाया—"आपके नरेशका वामांग पूर्ण स्वस्थ है अतः वह बाएं पांवसे स्वयं चले और दाँई ओर आप लोग उन्हें सहयोग दें, इस प्रकार वे यहां तक आएं और यदि सत्य ही अपने व्यवहारके लिए उनके हृदयमें पश्चात्तापकी भावना आई है तो अपने अभद्रव्यवहारके लिए क्षमा मांगे और भविष्यमें किसी भी ब्राह्मण को कटुवचन न कहनेका वचन दें तभी मैं उनकी चिकित्सा करूंगा, अन्यथा नहीं। यदि वे यहां आकर जैसा मैंने कहा है, करते हैं तो मुझे विश्वास आ जाएगा कि आप लोग मुझे सत्य कह कर ही यहां लाएं हैं, झूठ बोल कर नहीं।"

पार्षदोंने नरेशके पास जा कर सारी घटना सुनाई। काश्मीर नरेशने धैर्य पूर्वक सब सुना और कहा—स्वार्थ मेरा है अतः मैं वैद्यराजके पास चलूंगा। मुख्य मन्त्रीने नरेशको सहारा दिया, नरेश एक पांवसे लंगड़ाते हुए पैदल वैद्यराजके पास पहुँचनेके लिए रवाना हुए।

जिस व्यक्तिकी कठोरताकी कहानी घर-घरमें व्याप्त थी आज उसे इस प्रकार पैदल चलते देखकर जनमेदिनी कुतूहल वश उमड़ पड़ी, परन्तु राजा इस सबसे असम्पृक्त लक्ष्यकी ओर बढ़ता रहा। पर्याप्त परिश्रमके पश्चात् राजा वैद्यराजके पास पहुँचनेमें सफल हुआ। उसने वहां पहुंचते ही वैद्यराजसे अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगी तथा प्रतिज्ञा की कि अब न केवल ब्राह्मण अपितु किसीके लिए भी कटु वचनोंका प्रयोग न करूंगा तथा अपने कर्तव्य का निष्ठा पूर्वक पालन करूंगा।

वैद्यराजने राजाके निर्णयका स्वागत किया और उसे समझाया कि "भले ही राजाकी वर्णाश्रममें आस्था न हो तथापि उसे सभी मनुष्यों को ईश्वरका अंश तो मानना ही चाहिए और उनकी सेवाके माध्यमसे ईश्वरकी सेवाका पुण्य अर्जन करना चाहिए। राजा पिता ही नहीं उससे बढ़ कर होता है अतः प्रजाकी सर्व-विध उन्नति और कल्याणके लिए उसे सदैव तत्पर रहना चाहिए।"

काश्मीर नरेशने वैद्यराजको वचन दिया कि भविष्यमें वह उनके कथनानुसार ही सारा कार्य-व्यवहार करेगा।

वैद्यराजने नरेशको अपने महलमें लौटने की अनुमति दी, और दूसरे दिनसे उनकी चिकित्सा पुनः आरम्भ कर दी, पीयूष-पाणि वैद्यराजकी चिकित्साका फल सामने आया।

काश्मीर नरेश शीघ्र ही पूरी तरह स्वस्थ हो गए, वैद्यराजकी संगति और उपदेशसे उनके स्वभावमें पूर्ण परिवर्तन आ गया।

× × × ×

स्वस्थ हो जाने पर कृतज्ञ काश्मीर नरेश ने वैद्यराज दिलेरामजीका स्वागत करनेके लिए दरबार लगाया और उसमें वैद्यराजकी अनेक प्रकारसे प्रशंसा कर उनसे अनुरोध किया कि वे जो भी चाहें उनसे मांग लें।

वैद्यराज उनके कथनको सुन कर हँसे और बोले—"राजन् ! ब्राह्मण ईश्वर कृपासे पूर्ण-काम होता है। उसे मुट्ठी भर अन्न और भगवदाराधन को छोड़ कर अन्य किसी वस्तु की कामना नहीं होती। जो ब्राह्मण आवश्यकतासे अधिककी याचना करता है, असन्तुष्ट बना रहता है, वह नष्ट हो जाता है—'**असन्तुष्टा द्विजाः नष्टाः।**' मैं तो आपके बदले हुए स्वभावको देख कर ही पूर्ण सन्तुष्ट हूं और ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि यही बदला हुआ स्वभाव आपका सदैव बना रहे, मुझे और किसी वस्तुकी आवश्यकता नहीं है।

काश्मीर नरेश यह सुन कर पुनः कुछ न कुछ लेनेके लिए आग्रह किया तो वैद्यराजने कहा—'राजन् ! यदि आप कुछ देना ही चाहते हैं तो यहां भगवान् श्री रघुनाथका मन्दिर बनवा दीजिए, इससे आपकी इच्छा भी पूरी हो जाएगी और मेरी तथा प्रजाकी भी चिर-संचित साध पूरी हो जाएगी।'

राजाने वैद्यराजके कथनको अंगीकार कर भव्य मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया। राजकोषका मुख खोल दिया गया। कुशल शिल्पी दिनरात परिश्रम पूर्वक मन्दिरका निर्माण करने लगे। यथा-समय मन्दिरका निर्माण हो जानेपर भगवान् श्री रघुनाथजीका श्रीविग्रह उसमें स्थापित किया गया। श्रीविग्रह की पार्षदों सहित प्राण प्रतिष्ठा दी गई। यज्ञादिके पश्चात् मन्दिर प्रजाके दर्शनार्थ खोल दिया गया। हर्ष-विभोर जनताने अपने महाराजके साथ भगवान्के दर्शन कर निज जीवनको धन्य बनाया।

वैद्यराजजी भी मन्दिरमें पधारे परन्तु जहां सब दर्शक भक्तोंने भगवान्को प्रणाम किया वहां वैद्यराजने उन्हें आशीर्वाद दिया। यह देख कुछ लोगोंने उन्हें पागल समझा, कुछ हँसने लगे और स्वयं काश्मीर नरेश भी चकित हो कर कह बैठे—"वैद्यराज ! भगवान् रघुनाथजी तो चराचरके वन्द्य हैं, फिर आपने प्रणाम न कर आशीर्वाद क्यों दिया ?"

वैद्यराजने कहा—"राजन् ! निःसन्देह रघुनाथजी भगवान् हैं, परन्तु उनका यह शरीर क्षत्रिय शरीर है, जो ब्राह्मणोंसे प्रणामकी नहीं आशीर्वादकी अपेक्षा रखता है।"

राजाने पूछा "मेरे अनेक ब्राह्मण प्रजाजन जब उन्हें प्रणाम कर रहे हैं और इससे उन्हें किसी प्रकारकी हानि भी नहीं पहुंची है तब भला आपके प्रणाम करनेसे कुछ अघटित घटेगा यह बात गलेसे नहीं उतरती !"

वैद्यराजने कहा—"राजन् ! यदि ये तथा-कथित ब्राह्मण सत्य ही ब्राह्मण होते तो शास्त्रीय मर्यादाका उल्लंघन कर क्षत्रिय शरीरधारी रघुनाथजीको प्रणाम न करते। तुम्हें संभवतः विदित नहीं, संसारमें केवल अढाई ब्राह्मण हुए

हैं - परशुराम, दुर्वासा तथा आधा मैं। मैं वेद-माता गायत्री एवं त्रिदेवोंके अतिरिक्त किसीके सामने प्रणत नहीं हो सकता।"

राजाने कहा "महाराज ! यदि आपका कथन सत्य है तो हम भी देखना चाहेंगे कि नारायणके अंश भगवान् श्री रघुनाथजी आपके द्वारा प्रणाम करने पर क्या अघटित घटना घटाते हैं?"

वैद्यराजने अनेक प्रकारसे राजाको हठ न करनेके लिए समझाया, परन्तु जब वे न माने तो कहा—"यदि तुम जितना रुपया अभी व्यय कर चुके हो उससे दुगुना व्यय करनेका वचन दो तो मैं प्रणाम करनेके लिए तैयार हूं।"

राजाने वचन दिया। वैद्यराज दिलेरामजी ने जैसे ही भगवान् श्रीरघुनाथजीके सामने प्रणाम किया, तत्काल एक कर्णवेधी स्वरके साथ मूर्तिके दो खण्ड हो गए। प्रजाजन सहित काश्मीर नरेश भयसे विजड़ित हो गए।

वैद्यराजने कहा—"राजन् ! मैंने कहा था न कि गायत्रीके उपासक सच्चे ब्राह्मणका प्रणाम स्वीकार करनेकी क्षमता क्षत्रिय शरीरधारी नारायणांशमें नहीं है, परन्तु आप माने नहीं, अब इस खण्डित मूर्तिको प्रवाहित कर दूसरी मूर्ति की प्रतिष्ठा कराइए और अपने दिए हुए वचन के अनुसार दुगनी धनराशि इस उत्सव, प्रतिष्ठा यज्ञ आदि पर व्यय कर पुण्य और यशके भागी बनिये।" महाराजाने वैद्यराजकी बात अंगीकार कर पुन: श्रीविग्रहकी प्रतिष्ठा कराई। आज जम्मूके रघुनाथ मन्दिरमें प्रतिष्ठित रघुनाथजी का श्रीविग्रह गायत्रीके आराधककी महिमा का मौन भावसे ख्यापन करता हुआ मानो अहर्निश बताता है :—

"धिक् बलं क्षत्रिय बलम्,
ब्रह्म तेजो बलं बलम् !"

× × × ×

कुछ दिन वैद्यराजको राजकीय अतिथिके रूपमें रख कर काश्मीर नरेशने उन्हें भावभीनी बिदाई दी। स्वयं हाथी पर अम्बारी सजा कर उसे ऊपर तक रुपयोंसे भर उस पर वैद्यराज को आसीन करा उन्हें नगरके बाहर तक छोड़ने आए।

उदारमना वैद्यराजने वह सारा धन निर्धनोंको वितरण कर अपनी दिग्विजय यात्रा पूरीकी और गांवमें लौट गायत्री पुरश्चरण करते हुए अपनी इहलीला संवरण की।

× × × ×

वैद्यराज दिलेरामजीकी दिग्विजयका परिचायक एक चित्र कुछ वर्ष पूर्व तक भाग्य-नगरके सीताराम मठमें सुरक्षित था। जिसमें चित्रित था वैद्यराजके स्नानका दृश्य, जिसमें वे स्वयं एक चौकी पर विराजमान हैं और विभिन्न नरेश उन्हें स्नान करा रहे हैं। कोई हाथ मल रहा हैं, कोई पैर, कोई पीठ, कोई पानी डाल रहा है और कोई वस्त्र लिए खड़ा है।

× × × ×

आजका ब्राह्मण समाज सन्ध्या गायत्रीसे विमुख होता जा रहा है और उसका परिणाम सामने है। जहां दूसरी जातियां उन्नतिकी ओर अग्रसर हैं वहां ब्राह्मण समाज पतनके गर्त्तमें इस प्रकार गिरता जा रहा है जहांसे निस्तार संभव नहीं।

श्रीवैद्यराज दिलेरामजीके वंशज आज भी नाभा और दिल्लीमें हैं और भगवती गायत्रीके आराधन द्वारा अपनी कीर्ति और महत्ताको अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।

शुभ और अशुभ ग्रहोंकी मान्यता भ्रम मूलक है

[लेखक—श्री द्विजेन्द्र देसाई, एम.ए.,एल-एल.एम, 'कोविद्' एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट]

[विद्वान् लेखक भारतीय उच्चतम न्यायालयके अधिवक्ता होनेके नाते न्यायविद् तो हैं ही, साथमें ज्योतिर्विज्ञानमें भी आपकी विशेष अभिरुचि है। महर्षि पराशरने भी बलवान् शुभग्रहों (गुरु-शुक्र)को केन्द्राधिपति होने पर दोषी और शनि-मंगलको त्रिकोणेश होने पर शुभ माना है। यद्यपि लेखकके कुछ विचारोंसे हम सहमत नहीं, तथापि लेख तर्कसंगत विचारणीय अवश्य है, अतः फलितविज्ञान अन्वेषकोंके लिए हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक]

ज्योतिषमें गुरु और शुक्र शुभ ग्रह माने जाते हैं और सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु पाप ग्रह व अशुभ ग्रह माने जाते हैं। बुध यदि शुभ ग्रहोंके साथ होता है, तो शुभ फल देता है और यदि पाप ग्रहोंके साथ होता है तो अशुभ फल देता है। इसी प्रकार शुक्लपक्षका चन्द्रमा शुभ और कृष्णपक्षका चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

शुभ क्या है? पाप क्या है? इन प्रश्नों के सत्य ज्ञानकी मीमांसा हम भले ही न करें, किन्तु यह प्रश्न तो हमें पूछना ही चाहिए। शुभ ग्रहोंको शुभ और पाप ग्रहोंको पाप या अशुभ क्यों माना जाता है? सम्भवतः इसका संक्षिप्त उत्तर यह दिया जाय कि शुभ ग्रह शुभ फल देते हैं और पाप ग्रह अशुभ फल देते हैं। सामान्यजन शनि, मंगल और राहुके नामसे ही कांपते हैं और जीवनमें जब वे परेशानी अनुभव करते हैं, तो वे मानते हैं, कि शनि या राहुकी दशा चल रही है।

परन्तु, मैं सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु को पाप ग्रह और गुरु-शुक्रको शुभ ग्रह कहने को तैयार नहीं हूँ। ब्रह्माण्डकी रचनामें प्रत्येक को एक-एक कार्य सिपुर्द किया हुआ है। विश्व की, राज्यकी, समाजकी शरीर रचनामें हरेक को अपना-अपना कार्य करनेका उत्तरदायित्व सौंपा हुआ है, और यदि ये सब अपना-अपना कार्य न करे तो अव्यवस्था उत्पन्न होगी और इससे जो हानि होगी उसको अशुभ कहा जाएगा। सौर मण्डलके ग्रहोंके अपने-अपने कार्यकी विशिष्टता है,प्रत्येक अपना-अपना कार्य करता है, और यह कार्य प्रत्येक ग्रह अपनी-अपनी रीतिसे करता है एवं उसको उसी रीति से करते जाना है। समाजमें भंगीको सफाई करनेका काम सौंपा गया है, यदि वह अपना यह कार्य बराबर करता जाय, तो उसको आप अच्छा कहेंगे या बुरा? क्योंकि वह मैला उठानेका कार्य करता है, क्या इसी कारण उसको अशुभ कहा जायगा? इसी प्रकार यदि समाजमें कोई वकील, डाक्टर, प्राध्यापक, धारा-शस्त्री कम पैसा कमाता है, तो क्या उसको हीन समझा जायगा? शिक्षक, प्राध्यापक, धाराशास्त्री, डाक्टर व व्यापारी का मूल्यांकन करनेके लिए आप क्या मापदण्ड करेंगे? एक शिक्षक जो प्राचीन रीतिसे शिक्षक का काम करता हो, उसको आप अच्छा शिक्षक कहेंगे या नहीं? परन्तु कोई डाक्टर और धाराशास्त्री, डाक्टर व धाराशास्त्रीके

नाते तो योग्य हो, अच्छा काम करता हो, किन्तु मानवके नाते अच्छा न हो, तो उसको आप क्या कहेंगे? कोई शिक्षक शिक्षककी तरह ही नहीं, अपितु मानवके रूपमें भी हमारे सामने आता है।

मानवकी रीतिसे मूल्यमापन करनेका हमारा तरीका क्या है? हम बात-बातमें कहते हैं कि यह मनुष्य अच्छा है, यह व्यक्ति होशियार है, उसके बारेमें हम वस्तुतः क्या कहना चाहते हैं? किसी भी कार्यके दो भाग होते हैं—अच्छा और बुरा। कोई कार्य ठीक हो सकता है, परन्तु वह अच्छा भी हो, यह जरूरी नहीं। एक वस्तु अच्छी हो सकती है, पर वह ठीक भी हो, यह आवश्यक नहीं, एक विद्यार्थी परीक्षामें नकल करता है। जब तक परीक्षकको इसका ज्ञान नहीं होगा, उसको प्रश्नोंके पूरे अंक देता है, किन्तु इसी प्रकार से नकल करके पूरे अंक पाने वाले छात्र को कोई अच्छा नहीं कहता। इसी प्रकार यदि कोई गाड़ी वाला बस स्टैण्ड पर खड़े व्यक्ति को अपनी गाड़ीमें बिठा कर उसके गन्तव्य तक उसको पहुंचानेके लिए उद्यत हो, और मोटर दुर्घटनाके कारण यदि उस व्यक्तिको चोट लग जाय, तो उसको कोई बुरा नहीं कहता। क्योंकि यदि यह आकस्मिक दुर्घटना न होती, तो उसका इरादा शुभ था, कार्य अच्छा था, परन्तु उसका परिणाम खराब निकला। स्पष्ट है किसी कामका परिणाम ठीक होना और बात है, और किसी काम का अच्छा होना और बात है? दोनों हमेशा एक नहीं होतीं। कार्यके परिणामसे हकीकत का हम मूल्यांकन करते हैं। कार्यके परिणाम की भी परीक्षा करते हुए हम इरादेका विचार करते हैं और इसको हम नैतिक मूल्यांकन कहते हैं।

एक व्यक्ति गरीब होते हुए भी अच्छा हो सकता है। एक मनुष्य अमीर होते हुए भी खराब हो सकता है। एक व्यक्ति जीवनमें सफल होते हुए भी खराब हो सकता है और एक दूसरा व्यक्ति जीवनमें निष्फल होता हुआ भी अच्छा हो सकता है। सफलता और निष्फलताका शुभ और अशुभके साथ सम्बन्ध नहीं हो सकता। हम जब किसी व्यक्तिको अच्छा कहते हैं तो हमारा अभिप्राय होता है कि वह सद्गुणी है, दयालु है, सामाजिक है, निःस्वार्थी है, विश्वासपात्र है, सत्यवादी है। इसके उलट जब किसी व्यक्तिको हम खराब कहते हैं, ता उसमें हम मानते हैं कि उसमें कौनसे दुर्गुण हैं, वह निर्दयी है, अप्रामाणिक है, झूठ बोलने वाला है अविश्वासी है, उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता, स्वार्थी है।

इस चर्चाको यहां चलानेका कारण यह है कि सामान्य रीतिसे जिनको हम सद्गुण कहते हैं, शुभवृत्ति कहते हैं, उनका सम्बन्ध उन ग्रहोंके साथ नहीं है. जिनको ज्योतिषमें शुभ ग्रह कहा जाता है. और जिनको हम दुर्गुण और अशुभवृत्ति कहते हैं, उनका सम्बन्ध पाप ग्रहोंके साथ नहीं है। दा०त० गुरुको पाप ग्रह मानता है और पुराने ज्योतिषी इसको खूब महत्त्व देते हैं। केन्द्रमें या अपनी राशिमे स्थित गुरुसे ज्योतिषी खूब मुस्ताक होते हैं। किन्तु मेरा अपना अनुभव है कि अपनी राशिमें, उच्च राशिके केन्द्र त्रिकोणमें गुरुकी जितनी कुण्डलियां

देखी हैं, वे व्यक्ति मुझे निर्दयी, स्वार्थी, धोखेबाज, बात-बातमें झूठ बोलने वाले, और अपने स्वार्थकी सिद्धिके लिए दूसरोंको हानि पहुँचाने वाले, समय आने पर विश्वासघात तक करने वाले मिले। संक्षेपमें कह सकता हूँ कि जिनकी कुण्डलीमें गुरु बलवान् है, उनको मैं विश्वासपात्र नहीं मानता। हां, जिनका गुरु बलवान् है, वे अवश्य व्यवहार कुशल हैं। किन्तु वे सिद्धान्त-प्रिय नहीं होते। हां, जिनका गुरु बलवान् होता है, उनको जीवनमें सुख और सरलता अवश्य प्राप्त होती है, किन्तु जिसको हम सद्गुण, सच्चरित्र और नीतिशास्त्र जिसको चरित्र निष्ठा कहता है, वह उनमें नहीं पाया जाता। जिनकी कुण्डलीमें गुरु बलवान् होता है, वे अवश्य नसीबदार या भाग्यवान् देखे गए हैं। भाग्य हमेशा उनकी मदद करता है। उनको किसी न किसी मनुष्य की सहायता, मदद, सहारा और टेक अवश्य मिलती रहती है। उनके जीवनमें आपत्ति, विडम्बना, पड़ती नहीं है। संघर्षका भी उनको अनुभव नहीं होता। उनका जीवन सरल और सुखी होता है। सामान्यतः उनको पैसेकी तकलीफ या आर्थिक संकट नहीं आता। गुरु जीवनका महान् रक्षक है, पर मेरे अनुभवमें जो आया है, उसको देखते हुए गुरुको शुभ ग्रह कैसे कहा जा सकता है?

हम शुक्रकी गणना करते हैं। शुक्रको हम दानवोंका गुरु बताते हैं। ये राजनीतिमें श्रेष्ठ व्यक्ति थे। केन्द्रमें शुक्र बलवान् हो, विशेषतः दसवेंस्थानमें हो, तो मनुष्यको कमसे कम प्रयत्न द्वारा अधिकसे अधिक धन मिल जाता है। धन और लक्ष्मी बलवान् शुक्रके बिना प्राप्त नहीं होती। बहुतसे ज्योतिषी बुधको व्यापार कारक मानते हैं। किन्तु, मेरी मान्यता है कि शुक्रके सिवाय और कोई व्यापार नहीं दे सकता। दशम कर्म स्थानमें स्वगृही उच्चस्थ बुध वाला व्यक्ति आजीवन सौ-दो सौकी आमदनीमें ही घसीटता हुआ दिखाई देता है। परन्तु जिसके कर्मस्थानमें स्वगृही उच्चस्थ शुक्र होता है, वह छोटी ऊमरसे ही हजारों रुपए कमाने लगता है। व्यापार, वाणिज्य, पुष्कल धन बहुत बलवान् शुक्र ही दे सकता है।

मंगलको देखिए। मैं मंगलको नीतिका रक्षक कहता हूँ। मेरी मान्यता है कि जो स्वगृही, उच्चस्थ बलवान् मंगल प्रामाणिकता, निडरता, निस्वार्थवृत्ति, भलाई, दया, एकवाक्यता बनाता है— वह और कोई ग्रह नहीं देता है। जो व्यक्ति स्पष्टवादी होते हैं, उनका मंगल बलवान् होता है। लोकप्रियताकी चिन्ता न करके इस राशिका व्यक्ति सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ रहते हैं और यह मंगल ही उनको शक्ति देता है। नेताजी सुभाष बोस, बल्लभ भाई, मोरारजी भाई सदृश व्यक्तियोंने लोकप्रियताका ख्याल न करके अपने सिद्धान्तों के प्रति वफादारी बनाई है और अपने सिद्धान्तों के प्रति आदर भावसे चिपटे रहे हैं। दूसरी ओर स्वगृही गुरु-शुक्र वाले मुन्शी, नेहरुने लोकप्रियताकी खातिर अनेक बार अपने सिद्धान्तोंका त्याग किया है। अलबत्ता मंगलवाला व्यक्ति क्रोधी होता है। मुँहमें जो आता है वह बोल देता है। परन्तु एक बार कह देनेके बाद उसके मनमें, हृदयमें पाप नहीं रहता। वह हमेशा, निष्पाप, निरालस और प्रेमी प्रधान होता है। अलबत्ता स्पष्टवादी होनेके कारण उसके जीवनमें उसके दुश्मन भी अनेक होते हैं। गैरसमझ हो जानेसे उसको सहना

भी बहुत पड़ता है। किन्तु ऐसे व्यक्ति अपने स्वार्थके खातिर अपने सिद्धान्तका त्याग नहीं करते। अपनी हानि भले ही होती हो, कोई परवाह नहीं, किन्तु अपने सिद्धान्तको नहीं छोड़ते। दुःखी होते हुए भी नीति और मर्यादा का पालन करते हैं। उनके जीवनमें सुखकी अपेक्षा नीति का महत्त्व सदा अधिक होता है। ये खुशामद नहीं करते। अपने आप कष्ट सह कर, नुक्सान उठा कर भी दूसरोंका भला करनेको तत्पर रहते हैं। इन गुणोंको आप सद्‌गुण नहीं कहेंगे, तो क्या कहेंगे? इस पर मंगलको पाप ग्रह क्यों कहा जाय? मैं कबूल करता हूँ कि मंगल पैसा नहीं देता। मेरे अनुभवमें आया है कि निम्न मध्यम वर्गमें उत्पन्न व्यक्तियोंकी कुण्डलीमें मंगल होता है और वे आर्थिक विडम्बना सहते हैं। इसी प्रकार मंगल मनुष्यको व्यवहार कुशल नहीं बनाता और वह हमेशा दुःखी रहता है, यह सच है। इसी प्रकार मंगल कभी जीवनको सरल नहीं बनाता। जिस मनुष्यका मंगल बलवान् होता है, उसको एकके बाद दूसरी विपत्तिका सामना करना पड़ता है। उसका जीवन सदा सतत संग्रामका बना रहता है। इसको कभी सुख और प्रेम मिलता नहीं, परन्तु इसी कारण इस को खराब नहीं कहा जा सकता। गुरु वाले मनुष्यको लोगोका सदा प्रेम मिलता है। परन्तु जो ताकत, जो निडरता, जो व्यवहारी कार्य दक्षता अपने पैरों पर खड़े हो कर अपनी इच्छानुसार अपना जीवन बनानेकी ताकत मंगल देता है, वह और कोई दूसरा ग्रह नहीं देता। बलवान् मंगलका व्यक्ति चाहे कितना ही गरीब हो, परन्तु सभी समाज, संगियों में उसकी उपस्थितिका वजन पड़ता है और उसको अनुभव किया जाता है। लोग ही नहीं, बल्कि समय आने पर उसके शत्रु भी उससे सलाह लेने आते हैं। दुनियाँके अधिकांश राजनीतिक नेता मंगल व्यक्ति होते हैं। क्योंकि उनमें शत्रुओं और संयोगोंका सामना करनेकी शक्ति होती है। मैं मानता हूं कि मंगल चरित्र देता है। जिसको हम सच्चाई, ईमानदारी और योग्यता कहते हैं, वह मंगलके सिवाय और कोई ग्रह नहीं दे सकता। इसके विपरीत गुरु बलवान् वाले व्यक्ति प्रकट रूपसे शान्त, विनयी, हिम्मती होते हैं, परन्तु पड़देके पीछे गला काटने वाले होते हैं। गुरु व्यक्ति पीठ पीछेसे हमला करता है। मंगल वाला व्यक्ति यह कभी नहीं करता। हमेशा सामनेसे, अपने पन्ने खोल कर हमला करता है।

अब शनिकी परीक्षा कीजिए। मेरी अपनी मान्यता है कि शनि जीवनका सबसे बड़ा शिक्षक है। शनि मानवको मारता है। कसौटी पर परखता है। किन्तु इस तपस्या और निकष-परीक्षासे जो सोना निकलता है वह हमेशा खरा और शुद्ध होता है। शनि अध्यात्मिकता, धार्मिकता, आंतरिकता देता है। बलवान् शनि वाला व्यक्ति सदा जीवनके प्रति निराशाजनक वृत्ति रखता है। संसारमें उस को मजा नहीं आता। संसार उसको भाता नहीं। पानी बिना मछली जैसे तड़पती है, उसी प्रकार वह दुनियांमे तड़पता है। क्योंकि उसकी दुनियाँ निराली होती है। मानस शास्त्री जिसको अन्तर्मुखी कहता है वही शनि व्यक्ति होता है। वह जीता है बाहरी जीवन की सफलताओंके लिए नहीं, अपितु आन्तरिक जगत्‌के लिए सुख, वैभव, विलास उसको अच्छा नहीं लगता। इनमें रहते हुए भी उस

का दिल सदा अध्यात्मिक, आन्तरिक शान्ति की झांकी लेता है। उसका मन सदा अशान्त रहता है। जीवनमें उसको कभी शान्ति मिलती नहीं। क्योंकि जीवनका स्वीकृत स्वरूप वह कभी स्वीकार नहीं कर सकता। दुनियांमें दुनियाँवी बनकर वह रह नहीं सकता। उसको एकांत अच्छा लगता है। रात्रिकी नीरव शान्तिमें वह बहुत समय जाग कर काम कर सकता है। परन्तु प्रभातकी ताजगीभरी मुलायम वातावरणमें जल्दी उठ कर वह काम नहीं कर सकता। सुख, वैभव और विलासकी ओर वह नहीं देखता। वह झांकता है शान्ति, सादगी, सरलता, एकता, आत्माके विराट विश्वके साथ ऐक्यकी ओर? ऐसा व्यक्ति जब प्रेम करता है तो वह अपनी सन्तान, मित्रके साथ पूर्ण रूपसे तादात्म्य-भाव स्थापित कर लेता है। किन्तु जब उसको प्रतिभाव नहीं मिलता तो वह निराश होता है। अन्तरकी खोज, आत्माकी आराधना,आत्मसाधना,आत्मानुभवमें तब प्रवृत्त हो जाता है। जीवनकी सामान्य बातों और वस्तुओंमें उसको रस नहीं मिलता। क्या ऐसे व्यक्तियोंको पापी कहा जा सकता है? उलट शनि निष्ठा और चीवरता देता है। निश्चित ध्येयके प्रति दृढ़ निष्ठा और संकल्प पूर्ण अदम्य वृत्ति उत्पन्न करता है। यह अन्य ग्रह नहीं देते। शनि आम जनताका ग्रह है। आम जनताका हित जिन अनेक राज-पुरुषों द्वारा हुआ है— उनका समावेश शनि व्यक्तियों में किया जाता है।

मेरी युक्तियोंको पढ़ कर शायद मेरी मान्यता को स्वीकार न किया जाए। तो और देखिए। भगवान् श्रीकृष्णकी कुण्डलीमें तुला का शनि छठेमें, मकरका मंगल नवेंमें और कर्क का गुरु तीसरेमें है। भगवान् रामचन्द्रकी कुण्डलीमें तुलाका शनि चौथेमें, मकरका मंगल सातवेंमें और कर्कका गुरु लग्नमें है। युधिष्ठिर की कुण्डलीमें मकरका मंगल बारहवेंमें है। पैगम्बर मोहम्मदकी कुण्डललीमें मेषका मंगल चौथा है। गुरु नानककी कुण्डलीमें वृश्चिकका मंगल चौथा है। आद्य शंकराचार्य की कुण्डलीमें तुलाका शनि चौथेमें, मकरका मंगल सातवेंमें, मेषका सूर्य दसवेंमें और कर्क का गुरु लग्नमें है। रामतीर्थकी कुण्डली में मकरका शनि ग्यारहवेंमें है. श्रीरामकृष्ण परमहंसकी कुण्डलीमें तुलाका शनि नौवेंमें, मकरका मंगल बारहवेंमें है। स्वामी विवेकानन्दकी कुण्डलीमें मेषका मंगल पांचवेंमें है। अरविन्द घोषकी कुण्डलीमें शनि मकरका सातवेंमें है। रमन महर्षिका मगल मेषका सातवेंमें है। सिकन्दरके तुलाका शनि दूसरा है, मकरका मंगल छठेमें, मेषका सूर्य नवां था। स्वगृही शुक्र दशममें और स्वगृही गुरु पांचवेंमेंथे, यह भी ध्यान रखना चाहिए। अकबरका भी तुलाका शनि तीसरेमें, मकरका मंगल छठेमें, मेषका सूर्य नवेंमें था। (अकबर और सिकन्दरकी कुण्डलियोंमें बहुत समानता है)। शिवाजीके समान मुरारजी देसाईकी कुण्डलीमें कर्कका गुरु था और मकरका मंगल आठवेंमें था। हिटलरके सातवेंमें मेषका सूर्य, मंगल था। चर्चिलकी कुण्डलीमें मकरका शनि चौथेमें है। वल्लभ भाईके मकरका मंगल-शनि सातवेंमें था। महम्मद अली जिन्नाहका कुम्भ का शनि लग्नमें था। गोपाल-कृष्ण गोखले के तुलाका शनि लग्नमें और मेषका सूर्य सातवेंमें था। विनोवा भावेके तुलाका शनि

ग्यारहवेंमें है। सावरकरके मेषका मंगल पांचवेंमें है। श्रीकृष्णा मेननके तुलाका शनि ग्यारहवेंमें है, मेषका सूर्य पांचवेंमें है। कस्तूर भाई लालभाईके तुलाका शनि चौथेमें, मेष का मंगल दशवेंमें है। रणछोड़लाल छोटालाल के मेषका सूर्य, शनि - मंगल दशमेंमें है। इन व्यक्तियोंके विचारों, सिद्धान्तोंसे हम विमति रख सकते हैं, उनकी हम टीका कर सकते हैं, परन्तु क्या इनमें एक भी ऐसा व्यक्ति है, जिनमेंसे आप किसीको बेधड़क हो कर खराब मनुष्य कह सकते हैं? इन व्यक्तियोंमेंसे अनेकोंकी कुण्डलीमें आप शनि, मंगल, सूर्यको स्वगृही और उच्च देख सकते हैं। यदि शनि, मंगल और सूर्य ग्रह पाप ग्रह हों, तो जिनकी कुण्डलियों में ये बलवान् हैं, वे व्यक्ति पापाचार करने वाले होने चाहिएं! तो क्या हम शनि-मंगल को पापग्रह कह सकते हैं?

मेरी मान्यता यह है कि वस्तुतः कोई ग्रह शुभ व पाप नहीं है। जो कोई ग्रह अपनी राशिमें स्वगृही, उच्चस्थ व केन्द्रत्रिकोणमें बलवान् होता है, वह अपना उत्तम फल देता है। इसके उल्ट जब कोई ग्रह ऊंचा होता है तो उसका खराब फल होता है। नीच गुरु या नीच शुक्र, नीच शनि - मंगलसे कम खराब फल नहीं देता। जिस व्यक्तिका गुरु नीच होता है वह हमेशा दुःख दारिद्रचमें जीवन बिताता है, किन्तु साथ ही नीचेसे ऊंचा होनेकी सदा अभिलाषा भी रखता है। नीचका शुक्र लक्ष्मी बिल्कुल नहीं देता। किन्तु सुखी लग्न-जीवन देता है। पाप ग्रहोंके नीच होने और शुभ ग्रहोंके उच्चको अच्छा माना जाता है। क्यों कि नीचस्थ शनि मंगल मानवको चरित्र और सिद्धान्तोंमें ऊंचा स्थान देकर जीवनमें बाह्य सफलता प्रदान करता है। इसी रीतिसे गुरु-शुक्र सुखी और सफल जीवन प्रदान करते हैं, अतः इनको शुभ माना जाता है, और शनि, मंगल दुःख संग्राम और अशान्ति देते हैं, अतः उनको अशुभ माना जाता है। सूर्य आत्मा का कारक माना जाता है। और सूर्य जो दृढ़ मनोबल देता है, वह और कोई नहीं दे सकता। उच्चस्थ सूर्य राजयोग-कर्ता गिना जाता है। नीचराशिस्थ सूर्य राज-योगका भंग करने वाला माना जाता है। स्वगृही चन्द्र आन्तरिक शुद्धि देता है, जबकि वृश्चिकका नीच चन्द्र मनुष्यको नीच बनाता है। किन्तु सुखी और सरल जीवन को हम सद्गुणी नहीं कहते और दुःख व अशान्तिके जीवनको हम पापी जीवन नहीं कहते।

स्वगृही गुरु दसवें स्थानमें जितना काम दे सकता है— उतना काम मंगल नहीं दे सकता। शनि, राहु दसवें होते हुए मनुष्य को ऊंचा ले जाते हैं और कोई ग्रह ऊंचाई पर नहीं ले जा सकता। (शनि चढ़ती पड़ती साया है, इस मान्यतासे मैं सहमत नहीं हूं। इस प्रकारकी कुण्डलियोंको बारीकीसे परीक्षा अवश्य करनी चाहिए।) आन्तरिक दृष्टिसे देखिए या बाह्य दृष्टिसे देखिए, बलवान् सूर्य हो या मंगल, शुभ परिणाम देने वाला बलवान् गुरु हो या शुक्र, कोई किसीसे कम नहीं उतरता। परिणाके प्रकार, स्वरूपमें भेद जरूर होता है, गुरु सुख देता है, शुक्र वैभव देता है, मंगल सत्ता प्रदान करता है, शनि आध्यात्मिकता देता है। यह इनकी मूल-

भूत प्रकृति है। यह इनके विभिन्न कार्य करने और परिणाम पैदा करनेका वास्तविक कारण है। परन्तु इसी कारणसे गुरु-शुक्रको शुभ और सूर्य-शनि-मंगल-राहूको पाप ग्रह हम नहीं कह सकते। तत्वज्ञानके अभ्यासमें उड़ान केतु देता है।

सत्य तो यह है कि कोई भी ग्रह शुभ और अशुभ फल दे सकता है। इसका आधार, इसकी राशि, इसका स्थान, इन पर पड़ती दृष्टि, इनके सामने पड़ता ग्रह आदिके संयोग से यह शुभ व अशुभ फल होता है। अच्छे संयोगमें रहा ग्रह अच्छा फल देता है। चाहे वह गुरु हो, या शनि हो, खराब संयोगमें पड़ा ग्रह खराब फल देता है। जब वह अच्छा फल देता है, तो वह शुभ होता है, जब वह खराब फल देता देता है, तब वह अशुभ बनता है। मूलतः कोई ग्रह शुभ या अशुभ है, यह कहनेको मैं तैयार नहीं। क्योंकि प्रत्येक ग्रह सूर्य मण्डलमें अपना-अपना नियत कार्य करता है और जीवनकी जरूरी वृत्तियोंको सम्भालता है। सब वृत्तियोंके सप्रमाण समन्वय से सुगंधित व्यक्तित्व जन्म पा सकता है। वे सब ग्रहोंके बलवान् होनेका फल होता है। जब उनके साथ उनका सम्बन्ध अच्छा होता है, तब दैवीय व्यक्तियोंका जन्म होता है। इसी कारण श्रीकृष्ण श्रीराम आदि अवतारी पुरुषोंकी कुण्डलियोंमें सब ग्रह स्वगृही दिखाई देते हैं। सामान्यतः गुरुकी व्यवहार कुशलता मंगलकी निर्भय ताकत और शनिकी नीति-परायणताका जब समन्वय होता है, तब महान् पुरुष जन्म लेते हैं। आदर्श कुण्डली उनकी ही कही जा सकती है— जिसमें सूर्यका आत्मबल हो, चन्द्रकी आन्तरिक विशुद्धि हो, मंगलकी प्रमाणिक ताकत हो, बुधकी कुशाग्र बुद्धि हो, गुरुकी व्यवहार कुशलता हो, शुक्रकी ओजस्विता हो और शनिकी आध्यात्मिकता हो।

अन्ततोगत्वा शुभ व अशुभ, अच्छा व बुरा, सत्य व असत्य, सद्गुण और दुर्गुण, ये वास्तविक जगत्की मर्यादाएं हैं। अनन्त विराट् विश्वमें ये विलीन हो जाते हैं। क्योंकि नीति और अनीतिके द्वन्दों पर रहते हुए ही विराट् विश्वकी अनन्तताओंका मनमें ख्याल आ सकता है।



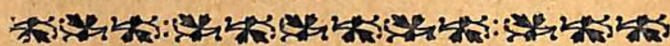
स्वप्न द्वारा प्रश्नका उत्तर प्राप्त करनेका

अनुभवसिद्ध मंत्र

ॐ नमो मणिभद्राय चेटकाय सर्वार्थसिद्ध-करणाय ममस्वप्ने दर्शनाय कुरुकुरु स्वाहा।

विधि :— रक्त पुष्प कनेरका लावें १०८ बार मंत्र जपके सिरहाणे रख कर शयन करें। दिन ३ तथा ७ दिन करें। स्वप्नमें चिन्तित प्रश्न का उत्तर मिलेगा।

—कालीचरण शर्मा



लघुसप्तशती (गौड़मतेन पाठानुक्रमः)

[लेखक :—एक मातृचरण-चञ्चरीक]

[जो सज्जन समयाभावसे नित्य पूरी सप्तशतीका पाठ सवाडेढ घण्टेका न कर सकें, उनके लिए अतिस्वल्प समयमें पूर्ण होने वाली यह लघुसप्तशती बीजमंत्रों सहित एक वयोवृद्ध उपासकके हस्तलिखित-ग्रन्थसंग्रहसे यहां जिज्ञासू पाठकोंके लाभार्थ प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक]

अथ-कवच—

ऊों ऐं ह्रीं क्लीं नमः। शूलेन पाहिनो देवि ! पाहि खड्गेन चाम्बिके ! घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ मः न क्लीं ह्रीं ऐं ऊों ॥१॥ ऊों ऐं ह्रीं क्लीं नमः। प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके! रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ! मः न क्लीं ह्रीं ऐं ऊों ॥२॥ ऊों ऐं ह्रीं क्लीं नमः। सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरंति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथाभुवम्। मः न क्लीं ह्रीं ऐं ऊों ॥३॥ ऊों ऐं ह्रीं क्लीं नमः। खड्गशूलगदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ! करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः। मः न क्लीं ह्रीं ऐं ऊों ॥४॥ इतिब्रह्म कवचम् ॥

अथ अर्गला पठनम्—

ऊों ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः॥ ऊों एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय भूषितम्। पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि ! नमोऽस्तुते ॥ मः न च्चे वि यै डा मुं चा क्लीं ह्रीं ऐं ऊों॥१॥ ऊों ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः। ज्वाला कराल मत्युग्रमशेषासुरसूदनम्। त्रिशूलं पातु नो भीतेभर्द्रकालि ! नमोऽस्तुते ॥ मः न च्चे वि यै डा मुं चा क्लीं ह्रीं ऐं ऊों ॥२॥ ऊों ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः। हिनस्ति दैत्य तेजांसि स्वनेना पूर्ययाजगत्। सा घंटा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ मः न च्चे वि यै डा मुं चा क्लीं ह्रीं ऐं ऊों ॥३॥ ऊों ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः। असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्वलः। शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्॥ मः न च्चे वि यै डा मुं चा क्लीं ह्रीं ऐं ऊों ॥४॥

अथ कीलकम्—

नमश्चण्डिकायै। मूलमंत्रेण विन्यस्य ध्यात्वा-मानसोपचारैःसंपूज्य मूल मंत्रः-ऊों ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे क्लीं ह्रीं ऐं ऊों नमः स्वाहा, यथाशक्ति प्रजप्य समर्प्य ॥ उत्कीलनम् ॥ ऊों ह्रीं श्रीं क्लीं चण्डि ! सकल मंत्राणां शाप विमोचनं कुरुकुरु स्वाहा ॥ त्रिर्जपेत् ॥ ऊों श्रीं ह्रीं क्लीं चण्डि ! सप्तशतिके ! सर्व मंत्राणां उत्कीलनं कुरुकुरु स्वाहा ॥ त्रिर्जपेत् ॥

अथ रात्रि सूक्तम्—

ब्रह्मोवाच— मः न क्लीं ह्रीं ऐं ऊों ॥१॥ ऊों ह्रीं श्रीं क्लीं नमः। त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका। सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता ॥ मः न क्लीं श्रीं ह्रीं ऊों ॥२॥ ऊों ह्रीं श्रीं क्लीं नमः। अर्द्धं मात्रास्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः।

त्वमेव सन्ध्यासावित्री त्वं देवि ! जननीपरा ॥
मः न क्लीं श्रीं ह्रीं उों ॥
॥ इति रात्रि सूक्तम् ॥

अथ लघु सप्तशती प्रारंभः —

उों अस्य श्री गर्भ सप्तशती मालामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरादि ऋषये नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे ॥ श्रीं शक्ति स्वरूपिणि महाचण्डि देवतायै नमः हृदि । वाग्भव बीजायै नमः गुह्ये । क्लीं शक्तिकायै-नमः पादयोः । हृल्लेखायै कीलकाय नमः नाभौ । मम चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥

अथ करषडङ्गन्यासः —

उों ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । हृदयाय नमः ॥
उों ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । शिरसे स्वाहा ॥
उों ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । शिखायै वषट् ॥
उों ह्रैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । कवचाय हुम् ॥
उों ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
उों ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । अस्त्रायफट् ॥
सूलमंत्रेण त्रिवार सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात् ।

ध्यानम्—

शुद्धस्फटिक संकाशां रविबिम्बाननां शिवाम्,
अनेक शक्ति संयुक्तां सिंहपृष्ठे निषेदुषीम् ।
अंकुशं चाक्षसूत्रं च पाशं पुस्तकधारिणीं,
मुक्ताहार समायुक्तां चंडींध्यायेच्चतुर्भुजाम् ॥
सितेन दर्पणाब्जेन वस्त्रालंकार भूषितां,
जटा कलाप संयुक्तां सुस्तनीं चन्द्रशेखराम् ।
कटकैः स्वर्ण रत्नाढयैर्महावलय शोभिताम्,
कम्बु कंठीं सुताम्रोष्ठीं सर्पनुपूरधारिणीम् ॥
केयूर मेखलाद्यैश्च द्योतयन्तीं जगत्त्रयम्,
एवं ध्यायेन्महाचण्डीं सर्व कामार्थसिद्धिदाम् ॥

उक्तमुद्रा प्रदर्शयेत् ॥
पाश१, अंकुश२, अक्षसूत्र३, पुस्तक४,
मुष्टिं प्रणम्य ॥ उों नमश्चण्डिकायै ॥

उों ऐं ह्रीं क्लीं नमः ब्रह्मोवाच मः न क्लीं ह्रीं ऐं उों ॥ उों ऐं ह्रीं क्लीं नमः । यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सात्वं किं स्तूयसे तदा ॥ मः न क्लीं ह्रीं ऐं उों ॥१॥

उों श्रीं नमः । सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः ॥ तस्या नादेन घोरेण कृत्स्न मापूरितं नभः ॥ मः न क्लीं ह्रीं ऐं उों ॥२॥

उों श्रीं नमः । अद्धानष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः । तया महासिना देव्या शिराश्छत्वा निपातितः ॥ मः न श्रीं उों ॥३॥

उों श्रीं नमः । दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्रयदुःखभयहारिणी का त्वदन्या । सर्वोपकारकरणाय सदाद्रचित्ता ॥ मः न श्रीं उों ॥४॥

उों क्लीं, इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु सतत तस्यै, व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥ मः न क्लीं उों ॥५॥

उों क्लीं नमः, इत्युक्त ! सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः । हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥ मः न क्लीं उों ॥६॥

उों क्लीं नमः । भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम् । काला ! करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥ मः न क्लीं उों ॥७॥

उों क्लीं नमः । ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः । शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥ मः न क्लीं उों ॥८॥

उों क्लीं नमः । अट्टाट्टहासमशिवं शिव-

दूती चकार ह । तैः शब्दैरसुरास्त्रेषु शुंभः कोपं परं ययुः ।। मः न क्लीं ओं ।।९।।

ओं क्लीं नमः । एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा । पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ।। मः न क्लीं ओं ।।१०।।

ओं क्लीं नमः । सर्वस्वरूते सर्वेशे ! सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे ! देवि नमोऽस्तुते ।। मः न क्लीं ओं ।।११।।

ओं क्लीं नमः। सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्यसुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ।। मः न क्लीं ओं ।।१२।।

ओं क्लीं नमः । देव्युवाच मः न क्लीं ओं ।

ओं क्लीं नमः । यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप ! त्वया च कुलनन्दन ! मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ।। मः न क्लीं ओं ।।१३।।

जय जय श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सत्याः सन्तु मनसः कामाः।

।। इति लघुसप्तशती संपूर्णा ।।

अथाग्रे देवीसूक्तम् पठेत्—

ओं क्लीं नमः । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।। मः न क्लीं ओं ।।१।।

ओं क्लीं नमः । रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः । ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ।। मः न क्लीं ओं ।।२।।

ओं क्लीं नमः । कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै सिद्धयै कूर्म्यै नमोनमः । नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै सर्वाण्यै ते नमो नमः ।। मः न क्लीं ओं ।।३।।

ओं क्लीं नमः । दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्व कारिण्यै । ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ।। मः न क्लीं ओं ।।४।।

ओं क्लीं नमः । अति सौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ।। मः न क्लीं ओं ।।५।।

।। इति देवी सूक्तम् ।।

अथाग्रे रहस्यत्रयम्—

ओं ह्रीं नमः । गुरूपदेशविधिना पूजनीया प्रयत्नतः ।। मन्त्रोद्धार प्रयत्नेन ज्ञातव्या सा नृपात्मज ! मः न ह्रीं ओं ।।१।।

ओं श्रीं नमः । प्रदक्षिणां नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः । क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहूरतंद्रितः ।। मः न श्रीं ओं ।।२।।

ओं क्लीं नमः । जगन्मातुश्चण्डिकाया कीर्तिता कामधेनवः । मेधां प्रज्ञां तथा श्रद्धां धारणां कांतिमेव च ।। मः न क्लीं ओं ।।३।।

इति रहस्यत्रयम् । अग्रे सूक्तत्रयं पठनम् ।

ओं ऐं नमः । ब्रह्मसरस्वतीसूक्तं लक्ष्मीसूक्तंजनार्दनं ह्रीं ओं ।।

अस्य मंत्रस्य लक्षजपं तदासिद्धिभवद् ध्रुवम् ।

"श्रीं श्रीं श्रीं ओं नमः ।।"

।। इति श्री लघुसप्तशती संपूर्णा ।।

अनुभवसिद्ध मंत्रप्रयोग

[लेखक—श्री मोतीलाल जैन ज्योतिषी, नई दिल्ली]

अपने पचपन वर्षके जीवनमें अनेकबार स्वयं व अन्य धर्मप्रेमी बन्धुओंका अनुभवसिद्ध प्रयोग पाठकगणोंके लाभार्थ लिख रहा हूँ, आप भी एक बार अनुभव करके इच्छानुसार लाभ उठावें।

जैनधर्मानुयायी पाठकोंके लिये

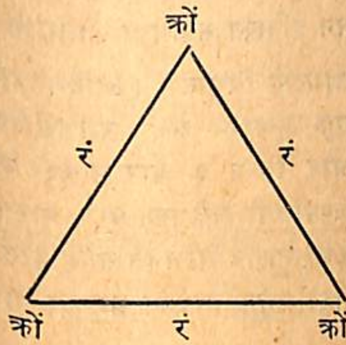
कूष्मांडिनी देवीका साधन विधान

स्वप्नेश्वरी मंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीं कूष्मांडिनी कनकप्रभे सिंह मस्तक समारूढे जिन धर्मानुवत्सले ! महादेवी मम चिंतित कार्य शुभाशुभं कथय कथय अमोघ वागेश्वरी सत्य वादिनी सत्यं दर्शय दर्शय नमः स्वाहा।

विधि—मंगलके दिन प्रारंभ करें, उसी दिन उपवास करें। गुलाबका इत्र वदनमें लगावें। फूल चढ़ावें, आले या चौकी पर चमेलीके फूलोंका चबूतरा बनावें। धूपबत्ती जलावें या खेवें, धूपमें जावत्री अवश्य होनी चाहिए। दीपक गायके घीका होना चाहिए (घी एक वरणी गायका हो)। नेमिनाथ भगवान्की पूजा करें। मंगलको स्तोत्र व माला मंत्रका जाप करें। मूलमंत्र का जाप अर्धरात्रिमें स्नानादिसे शुद्ध हो, नए वस्त्र (धोती बनियान) पहर कर धूप दीप फल पुष्प चढाएं। अक्षत द्रव्यसे पूजा करें, फिर लाल माला (मून्गे या लाल चंदन) की होनी चाहिए, १० मालाका जाप करें। दिन दस तक करें। सुबह श्रीनेमीनाथ भगवान्की अक्षत द्रव्यसे पूजा करें। कूष्मांडिनी देवीको अर्घ चढावें। एक समय भोजन, पृथ्वी शयन, ब्रह्मचर्य पालें। पांचों पापोंका मन-वचन-काय से त्याग करें। जपनेसे पूर्व प्रथम दिन इच्छित-कार्यका संकल्प करके मंगल कलशकी स्थापना करें, तो इच्छित कार्यकी सफलता निश्चित होती है। मंगलवारको मीठेमें पेठा (कूष्मांड भी कहते हैं)। खांडमें पका हुवा चढावें। फलों में आम या नींबू चढावें। अगले दिन बच्चों को देना (या माली को)। लाल माला, लाल आसन बिछाना।

ध्यान इस प्रकार करना— तपाए हुए सोनेके समान रंग वाली, सिंह पर चढ़ी हुई, चतुर्भुजा दायें हाथोंमें बिजोरा (नींबू) दूसरे में कूष्मांड (पेठा), बायें हाथोंमें आम व वरद (आशीर्वाद) देती हुई, दोनों बगलोंमें दो बालक हैं, मस्तक पर पद्मराग मणिका "हस्क्ल्ह्रीं" बीज लिखा हुआ है। दस हज़ार मत्रोंसे दस दिनमें जाप करें। ११वें दिन दशांश आहूती १००० से देवें (हवन करें)। समिधा लाल चंदनकी होनी चाहिए। घी इकवरणी गायका होना चाहिए (दो रंग या चिकतेदार गायका घी नहीं चलेगा। ये असूल की बात है, विकार रहित गाय हो) हवनकुण्ड त्रिकोण केशरसे बनावें। तीनों कोनों पर 'क्रों' बीच में 'रं' लिखें। अग्निवीज लिखे पूर्व दिशा पद्मासन अर्द्धासन पलोथासनसे जाप करें। जाप पूरा होने पर ५०० बार यानी पांच



माला जाप करके बाईं करवट सोवें, तो देवी इच्छित कार्यका उत्तर स्वप्नमें देती है। अपनी साधककी भावनानुसार जपकालमें कान में आवाज आ जाती है। भक्ति विशेषसे दैविक आवाज अथवा प्रत्यक्षका भी संयोग बन जाता है। जो भी उत्तर मिलेगा उसे अब तक मेरे अनुभवमें आईना समान सत्य ही हुआ है।

मालामंत्र या ताटंक १ बार नित्य पढ़ें

मंत्र— ॐ नमो ह्रीं जय जय परमेश्वरी अम्बिके आम्रहस्ते महासिंह जानुस्थिते किंकिनी नूपुर एव केयूर हाणां दानंक सद्भूषणै भूषितां गो जिनेन्द्रस्य भक्ते कले निष्कले निर्मले निः प्रपंचे महोआनने सिद्धि गंधर्व विद्याधरैरर्चिते मंत्ररूपे शिवे शंकरे सिद्धि बुद्धि धृति कीर्ति हृदिस्थिते शांति पुष्टि निधिस्तुष्टि हृष्टिश्रिये शोभने सुखे हासे ज्वरे जृंभिणी स्तंभिणी मोहिणी दीपिनी शोषिणी त्रासिनी दुष्ट विनाशिनी क्षुद्रे विद्रावणी धर्मसंरक्षणी देवी अम्बे महाविक्रमे भीमनादे सुनादे अघोरे सुघोरे, रौद्रे रौद्रानने चंडिके चंडिरूपे सुचक्रे सुनेत्रे सुगात्रै तनुर्मध्यभागे जयंती जयंती पुरंध्री कुमारी सुभद्रे पवित्री सुवर्णे महामूले विन्ध्यस्थिते गौरी गंधारी गंधर्व यक्षेश्वरी काली काली महाकाली योगेश्वरी जैनमार्गस्थिते सुप्रशस्ते शरण्ये धनुर्नंदी दंडासि चक्रैक चक्रांकुशानेक शस्त्रोदिते सृष्टि संहार कान्तार नागेन्द्र भूमेन्द्र देवेन्द्र स्तुतै किन्नरैर्यक्ष रक्षाधिपै ज्योतिषै पन्नगेन्द्रैः सुरेन्द्रार्चिते वंदिते पूजिते सत्वोत्तमे सर्व मंत्राधिष्ठिते ओंकार वषट्कार हुंकार ह्रींकार सुधाकार वीजान्विते कुल दौर्भाग्य निर्नाशनी रोग विध्वंसनी लक्ष्मी धृति कीर्ति कांति विस्तारणी सर्व दुर्गेषु निस्तारणी दुस्तरोत्तारिणी श्रां क्रों ह्रीं नमो यक्षिणी ह्रीं महादेवी कूष्मांडिनी ह्रीं नमो योगिनीं ह्र् सदा सर्व सिद्धि प्रदे रक्षमां देवी अंबे अंबे विवादें रणे कानने शत्रुमध्ये समुद्र प्रवेशागमे गिरौ कृष्णरात्रौ वने संध्याकाले विहस्तं निरस्तं निहीनं निशांतं प्रशनं प्रनष्टं प्रहृष्टं गृहैर्यक्ष रक्षोरुगैर्दैत्य भूतै पिशाचैर्गृ हितं ज्वरेणाभि भूतं गजैर्व्याघ्रसिंहौ निरुद्धं व्याल वैतालग्रस्तं खगेन्द्रेण नीति कृतां तेनग्रस्तं मृतं चापि संरक्ष मां देवी अम्बालये त्वत्प्रसादात् शांतिकं पौष्टिकं वश्यमाकर्षणोच्चाटनं स्तंभनं मोहनं दीपनं चैव एतन्महां तांडकं एतानि सर्व कार्याणि सिद्धिर्नयति संक्षेपतः सर्व रोगाः प्रणश्यंति न संशयं भवेदिह ॐ ह्र् फट् स्वाहा।"

इति ताटक व माला मंत्र समाप्तम्

श्रीकूष्मांडिनी स्तोत्र व मूलमंत्र

मंत्र—ॐ ह्रीं ह्रक्ल्ह्री ह्सौं नमः ॥

ॐ महातीर्थ रेवत गिरि मंडने,
जैन मार्गस्थिते विघ्न भी खंडने।
नेमिनाथांघ्रि राजीव सेवापरे,
त्वं जयाम्बे जगज्जंतु रक्षा करे ॥१॥
ह्रीं महामंत्ररूप शिवे शंकरे,
देवी वाचाल सत् किंकिनी नूपुरे।

तात हारावली राजितोरुस्थले,
कर्णताटंक रुचिरम्य गंड स्थले ॥२॥

अम्बिके ह्राँ स्फुर वीज विद्ये स्वयं,
ह्रीं समागच्छ मे देहि दुःखक्षयम् ।
द्रुतं द्रावय द्रावयोपद्रवान्,
द्रीं द्रुही क्षुद्र सर्पेव कंठी रवान् ॥३॥

क्लीं प्रचंडे प्रसीद प्रसीद क्षणं,
ब्लूं सदासुप्रसन्ने विदेहि क्षणं ।
सदसतां दत्त कल्याण मालोदये,
हृस्क्ल्ह्रीं नमस्तेऽबिकें कर्षी पुत्रद्वये ॥४॥

इत्थमद्भुतं महात्म्यं मंत्र स्थले,
क्रों समालीढ षट्कोण यंत्र स्थिते ।
ह्रीं युतं वे मरुत मंडलालंकृते,
देहि मे दर्शनं ह्रीं त्रिरेखावृते ॥५॥

नाहिता शेष मिथ्यां दृशां दुर्मदे,
शांति कीर्ति दुति स्वस्तिसिद्धि प्रदे ।
दुष्ट विद्या स्वोच्छेदनं प्रत्यले,
नंद नंदाम्बिके निश्चले निर्मले ॥६॥

देवि कौष्मांडि दिव्य शुभे भैरव,
दुस्सहे दुर्जये तप्त हेमच्छवे ।
नाम मंत्रेण निर्नाशितोपद्रवें,
पाहि मां मंघी पीठस्थ कंठीरवे ॥७॥

देव देवी गणै सेवितांघ्रि जये,
जागरु कि प्रभावैक लक्ष्मी मये ।
पालितां शेष जैनेन्द्र चैत्यालये,
रक्षमां रक्षमां देवि अम्बालये ॥८॥

इति कूष्मांडिनी स्तोत्राष्टक समाप्तम् ॥

यदि इसी अष्टक स्तोत्रका त्रिकाल पाठ व मूल मंत्रका सवा लक्ष जाप्य तेला करके पूर्ण विधिसे मन वचन कायसे विधान करे तो साधक मन इच्छित सफलता को प्राप्त होगा ।

नोट—सामान्य विधानमें १० दिन तक १००० एक हज़ार अर्ध रात्रिमें जाप करें और नित्य ३ वार माला मंत्रको व कूष्मांडनी स्तोत्रका पाठ करता है उसे इच्छानुसार लाभ निःसंदेह होता है । यह मेरा अनेक वारका अनुभूत विधान है ।

श्रीशांतिनाथ विधानका मूलमंत्र

मन इच्छित कार्यकी सफलता व तीव्र पूर्व संचित अशुभ कर्मोंका नाश करने वाला मानव कल्याणके लिए श्रीशांतिनाथ विधानका मूल मंत्र यह है :—

मंत्र—ॐ **नमोऽर्हते भगवते श्री शांतिनाथाय सकल विघ्नहराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अमुकस्य सर्वोपद्रव शांति लक्ष्मी लाभं च कुरुकुरु नमः स्वाहा ॥**

विधि—इस विधानको जो मासका शुक्ल पक्ष सोलह दिनका होता है, उसी पक्षमें यह शांतिनाथ विधान होता है । यदि वगैर विधान किए भी इस मूल मंत्रका जाप १० मालाका नित्य किया जाय और संयम पूर्वक रहते हुए भाव पूजासे भी पूजाकी जावे तो भी निःसंदेह तीव्र अशुभ कर्मको क्षय करके सर्व प्रकारसे शांति व लक्ष्मी प्राप्त होते भी देखा गया है ।

सर्व सिद्धिदायक लघु सिद्धचक्र यंत्रका मंत्र

मंत्र—"ॐ ह्रीं अर्हं असि आउसा अनाहत विद्यायै नमः ।"

विधि—इस मंत्रका नियम पूर्वक जो महानुभाव पांच वर्ष तक दोनों समय संयमपूर्वक पांच-पांच मालाका जाप करता है, उसकी सब परेशानियां दूर हो कर अचिन्त्य लाभ होता देखा गया है।

** वैष्णवधर्मावलम्बियोंके लिए **

महालक्ष्मी सिद्धमंत्र

मंत्र—"श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल-निवासे श्रीमहालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई सतकी सवाई, आवो चेतो करो भलाई, ना करो तो सात समुद्रोंकी दुहाई, ऋद्धि सिद्धि खगै तो नौनाथ चौरासी सिद्धोंकी दुहाई" ॥

विधि—दुकानदार दुकान खोले जब महादेवका थड़ा अर्थात् दुकानकी गद्दी पर बैठ कर इस मंत्रकी प्रथम एक माला जप लें फिर लेन-देन करें। धूप-दीपसे, तो लाभ होवे, धनकी वृद्धि होय, न्याय नीतिसे कारोबार करें, दशांश दान पुण्यमें लगावें, सभी प्रकारके सुख-शान्ति को प्राप्त करता है। यदि पहले इस मंत्रका ४१ दिनमें सवा लक्ष जाप, दीप-धूप-पुष्प-फल-नैवेद्यादि विधानसे करके फिर १ मालाका नित्य जप करे तो लक्षाधिपति वैभव संपन्न जीवनका अक्षय सुख प्राप्त हो।

स्वप्न वाराही मंत्र

मंत्र—ॐ नमो भगवती कुमार वाराही गुग्गुल गंध प्रिये सत्यवादिनी लोकाचार प्रचार रहस्य वाक्यानि मम स्वप्ने वद वद सत्यंब्रू हि सत्यं ब्रू ही आगच्छ आगच्छ ह्रीं वौषट् नमः।

विधि—इस मंत्रके दस सहस्त्र जपनेसे कार्य की सिद्धि होती है। शुक्रवारके दिन पवित्र हो कर अर्धरात्रिमें सुन्दर कलशको स्थापन करके उसके ऊपर पान रक्खें उसके ऊपर हल्दीकी देवीकी प्रतिमा बना कर स्थापन करें, फिर "वाराह्यै नमः" इस नाम-मंत्रसे भक्तिपूर्वक प्राण प्रतिष्ठा करके भक्त-द्रव्यको मादक पदार्थको निवेदन करे, फिर सांग पूजा करके मंत्र जपे। देवीके आगे मस्तक झुकाकर एकासनसे जप करें और देवीके चरणोंमें सिर करके सो जावें तो देवी स्वप्न में शुभाशुभ को कहती है, जिसके द्वारा साधक इच्छानुसार लाभ उठा सकता है। भक्तिके प्रसादसे साक्षात्कार भी संभव है।

मनइच्छित सफल श्रीदुर्गाजीका मंत्र स्वप्नेश्वरी व दैविक आवाज का प्रत्यक्ष मंत्र

मंत्र—ॐ जयंती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।

विधि—स्नानकर शुद्ध होय, कोरे धुले वस्त्र पहन कर सवागज जमीन लीप करके आसन डाल कर बिछावे। ऊपर लाल दूल बिछावे। सामने दुर्गाजीकी मूर्ति (फोटो) का स्थापन करें। भोग के वास्ते—आधा सेर गाय का दूध, दो पेड़े, एक छटांक चावल, मिट्टीके सकोरेमें डाल कर, सफेद वस्त्रसे ढक दें। मंत्र की २१ मालाका जाप अर्धरात्रिमें करें। फूल चढ़ावें, दीप-धूप फल चढ़ावें, जपनेसे पूर्व प्रथम लौंग-सुपारी-पुष्प ले कर इच्छित कार्यका संकल्प करें और उसे मंगल कलशमें डाल दें।

इस प्रकार यह जाप ६ दिन तक नवरात्रीमें ही करें तो कार्यकालमें कभी भी स्वप्न या प्रत्यक्ष आवाजसे सही अनुभव हो जाता है। परन्तु कर्म संयोगसे मुझे तो दूसरे दिन ही साक्षात्कार में दर्शन हुए, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती और १५-२० मिनट तक शेर पर सवार हुए श्रीदुर्गाजीसे काफी वार्तालाप हुई। दुर्गादेवीजीने कहा, "भक्त क्या चाहते हो?" मैंने दो बार कहा, "आपकी पूर्ण कृपासे सब आनन्द है।" जबावमें कहा, "भक्त अब विना मेरे कहे तीसरी बार इन्कार न कहना, तुम्हारे मनकी भावना में समझ गई और उसका उत्तर यह होता है, सो तुम मेरी आज्ञा से इसी प्रकार करना और भविष्यमें भी वक्त जरूरत पर मुझे याद करना।" इतना कह कर देवी अन्तर्धान हो गई। और उनका वचन भगवान् वचन समान पूरा हुआ, स्वर-व्यंजन का भी फरक नहीं था। ये सब क्रिया मन-वचन-काय स्थानकी शुद्धता एकाग्रता पूर्वक करनी होगी। अगले दिन उस कुल्लड फलादिको कन्याको देना या दरया व तालाबमें डाल देना। कपड़ा धोकर अगले दिन कुल्लड पर रखना, सफलता निश्चित होगी। ये अनुभूत क्रिया है। बाकी फिर कभी लिखेंगे।

●

अनुभवसिद्ध मंत्र-औषधप्रयोग

सर्व ज्वरनाशक स्वानुभूत मंत्र प्रयोग

मंत्र—ॐ त्रिशिरस्त्रे प्रसन्नोस्मि व्येतु मे मद्ज्वराद्भयम्। यो नो स्मरति संवादं तस्य त्वन्न भवेद् भयम् ॥ श्रीमद्भागवत।

विधि—चंदनकी लकड़ीको घिसकर एक तांबेके लोटेमें उसका घोल तैयार कर लेवें। फिर रोगीको उत्तराभिमुख लेटा कर एक लाल रंगका विकसित पुष्प लेकर चंदनके घोलमें डुबोकर उस पुष्प पर सात बार उक्त मंत्र पढ़ कर शिर पर एक बार पुष्पसे चंदनका जल छिड़के। ऐसे ही मंत्रको सात-सात बार पढ़ कर कंधे, हृदय, उदर, कमर, जानु और पिंडलियों पर जल छिड़के, ज्वर तुरन्त उतर जाएगा। कोई भी कैसा भी ज्वर क्यों न हो वह उसी समय उतर जाएगा।

विशेषता— इसमें सन्देहको स्थान नहीं दिया जा सकता। मैंने उक्त प्रयोग अपने पिता जी पर भी आजमाया था एवं आज भी चिकित्सालयमें मैं सफल प्रयोग कर रहा हूँ।

नोट—मंत्रका पाठ सातों अंगों पर सात-सात बार किया जाएगा। कुल ४६ बार पाठ किया जाना चाहिए। ज्वर (बुखार) आनेसे आधा घण्टा पहले यदि किया जाए तो ७-८ दिनोंमें बिना औषधि सेवनके ही बुखार समाप्त हो जाता है।

आसान और अक्सीर चिकित्सा प्रयोग

पीलिया (पाण्डु रोग)

लक्षण—सर्वाङ्ग पीतवर्ण, दुर्बलता, नेत्रोंमें पीलापन, हल्कासा ज्वर, यकृत-विकृति, चक्कर, कब्जियत, पेशाबकी कमी एवं पुराना होने पर शोथ इत्यादि।

चिकित्सा—केवल श्वेत पुनर्नवाकी मूल (जड़)को लेकर कमसे कम दस ग्राम मूल थोड़ा पानी डाल कर किसी पत्थर पर पीस लें फिर उसका चीनीका मीठा शर्बत बना लें और उसे पाण्डु रोगीको पिलाएं। शर्बत उसकी इच्छाके अनुसार भर पेट पिलाना चाहिए। दिनमें तीन बार तक पिला सकते हैं। यही क्रम तीन दिनों तक चलाएं। पीलिया निश्चित ही तीन दिनोंमें ठीक हो जाएगा। यदि न ठीक हो तो चार-पांच दिन तक भी दे सकते हैं। गन्नेका रसभी भर पेट पिला सकते हैं।

परहेज—कटु, तिक्त एवं लवण मुक्त विरुद्धाहारवर्जित। ठीक होनेके कुछ समय बाद तक भी लौहासव, और कुमार्यासव पिलाते रहें।

बवासीर (अर्श रोग)

लक्षण—बवासीर खूनी व बादी दो प्रकार की होती है। निम्नोक्त योग दोनों बवासीरोंमें स्वानुभूत है। एक बार प्रयोग करके आजमाएं—

नागकेसर ५० ग्राम, रसौंत १०० ग्राम, नीमकी निबोंलीकी गिरी १०० ग्राम, बकैनाकी गिरी ५० ग्राम, त्रिफला चूर्ण १०० ग्राम। सब का इकट्ठा चूर्ण बनालें।

सेवनविधि—उपरोक्त चूर्णको प्रातः सायं १०-१० ग्राम (२ छोटे चम्मच) तक्र (छाछ-मठे) के साथ, अभयारिष्ट और खदिरारिष्ट भी

सेवन कराएं। हल्का एवं सुपाच्य भोजन पथ्य में दें। बवासीरके मस्से सूख जाएंगे एवं १५ दिन सेवनसे ही लाभ होना निश्चित है।

सूर्यावर्त वात (आधा शीशी)का दर्द—स्वानुभूत

लक्षण—यह सूर्योदयकालसे पहले ही होने लगता है और मध्याह्नकाल तक दर्दका वेग बढ़ता ही जाता है, फिर जसे ही सूर्य छिपनेको जाता है, वैसे ही दर्द भी शांत हो जाता है। यह दर्द बड़ा ही दुःसहनीय है एवं चिकित्सा भी दुर्गम है। किन्तु जनलाभ-हितार्थ भिक्षु-प्रद एक नुस्खा लिखकर चिकित्सा का रास्तानिष्कण्टक कर रहा हूं। पाठकगण लाभ उठाएं और लिखें। यद्यपि मैंने एवं कुछ अन्य लोगोंने भी सैंकड़ों रोगियों पर अनुभव सिद्ध किया है।

चिकित्सा—आक (मदार)के पौधेमें जो पुष्प होता है, उस पुष्प (घुण्डी)को प्रातःकाल तोड़ लाइए और हाथमें ही मसल कर थोड़ेसे गुड़में मिला कर एक गोली बना लीजिए। प्रातःकाल सूर्योदयसे दो घण्टे पहले ही यह कार्य कर लीजिए, फिर सूर्योदयसे एक घण्टा पहले ही मरीजको बुला कर एक गोली पानी से ही निगलवा दीजिए। कुछ देर बादमें उसे पहली ही खुराकसे लाभ मिलेगा। ध्यान रहे कि यह गोली नित्य प्रति ताजे पुष्पकी ही बनानी चाहिए और सूर्योदयसे पहले एक गोली खिला दें। इस प्रकार खिलानेसे आधा शीशी का दर्द जो महीनोंसे भी ठीक नहीं हो रहा था वह भी तीन दिनमें हीठीक हो जाएगा।

उपरोक्तलिखित लेखमें किसी प्रकारकी शंका होने पर निम्न पते पर संपर्क करें:—

वैद्यराज ओम् प्रकाश शर्मा त्रिवेदी
ए-३ न्यू गोविन्द पुरा, दिल्ली-५१

सिद्धामृत

बनानेकी विधि— दालचीनी १ तोला, छोटी इलायची २ तोला, छोटी पीपल, मुलहठी, वनफशाके फूल, गाजवां और तालीस पत्र ४-४ तोले, कैलसीयम गुलूकेनेट ८ तोला, गुलूकोश १६ तोले लें। फिर सबको कूट-पीस कर बारीक छान कर चूर्ण बना लें। फिर खरलमें घोट कर एक-जान बना कर कांचकी अच्छे डाट वाली शीशीमें सम्हाल कर रखना चाहिए।

मात्रा—२-४ माशे दिनमें तीन बार शहद या अनुपान भेदके साथ प्रयोग करें।

उपयोग— इसके सेवनसे सब प्रकारकी खांसी, श्वास, जुकाम, मद ज्वर, दाह और मन्दाग्नि आदि दूर हो जाते हैं। निमोनियामें भी अति हितकर है। यह श्वास-वाहिनियोंकी श्लैष्मिक कलाके क्षोभको दूर करता है, जिससे शुष्क कॉस ज्वरसह सरलता पूर्वक शमन हो जाता है।

नोट— यह हमारे चिकित्सालयके गुप्त अनुभूत प्रयोगोंमेंसे एक है, जो मेरे गत जीवन के ५० वर्षोंसे सफलता पूर्वक प्रयोग किया जा रहा है।

—डाक्टर आर० एस० अंगारे
रेलवे स्टेशन, ताखा (NR)

विश्वकी स्मरणीय भविष्यवाणी

[लेखक—परम योगेश्वर डा० सदानन्द त्यागी, निर्देशक दैवी भविष्यवक्ता]

[यह लेख हमारे पास गत जून मास १९८१ में आया था। इसमें की कुछ भविष्यवाणियां गल्त हो चुकी हैं, लेखक योगी "दैवी भविष्यवक्ता" होनेका दावा करते हैं। अतः पाठकोंके मनोरंजनार्थ इस अंग्रेजी लेखका हिन्दी अनुवाद हम यहां प्रकाशित कर रहे है। —सम्पादक]

अमेरिकाकी तुलनात्मक भविष्यवक्ता जीन डीक्शनने अपनी भविष्यवाणीमें भारत तथा अन्य अरब राष्ट्रोंके विभाजनकी बात कही थी जोकि सत्य सिद्ध नहीं हुई। मेरी भविष्यवाणी है कि भारत कभी भी अखंडित नहीं होगा और रोनाल्ड रीगन तथा उसके प्रसिद्ध जनरल हेगके भारतको नष्ट करने और हानि पहुँचानेके सभी पैशाचिक कृत्योंको अवरोधका सामना करना पड़ेगा। सी०आई०ए० की अनेक भ्रष्ट और भेदपूर्ण घटनाएं हमारे विशेष गुप्त-प्रतिनिधियों द्वारा दबा दी जाएंगी तथा कुछ विदेशी प्रतिनिधि हमारे प्रतिनिधियों के हाथों मारे जाएंगे। योजनाबद्ध हड़तालियों का तोड़-फोड़ का कार्य असफल रहेगा।

श्रीमती इन्दिरा गांधी सितम्बर और दिसम्बर १९८१के मध्य हमारे लोकप्रिय जनरलके साथ पूर्ण एकीकरण करके स्वयं युद्ध की रङ्गभूमि तैयार करेंगी।

एयर चीफ़ लतीफ़को अपमानपूर्ण सेवा-निवृत्तिका सामना करना पड़ेगा। १९८२का वर्ष भारतके राष्ट्रपति, ब्रेझनेब, जे० बी० कृपलानी, जगजीवनराम और चौ० चरणसिंहके लिए मृत्युकारक है। मोरारजी देसाई अपनी मृत्युसे पूर्व १९८२में जेल जाएंगे।

राजीव गांधीको १९८२-८३में बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त होगा। एक विदेशी ताकत उन्हें मुजीबको भांति समाप्त करनेका प्रयत्न करेगी और प्रधानमन्त्रीके एक या दो विश्वसनीय सेवक अपने स्वामीको धनके लिए धोखा देंगे। यह वर्ष उन्हें चुनाव जीतनेके लिए बहुत उत्तम है। वे ध्यान देने योग्य धूर्तता और कूटनीतिके गुण दिखाएंगे। उनके सभी विरोधियों और प्रतिवादियोंको हार और लज्जाका सामना करना पड़ेगा। यह तीन मास १४ अप्रैल १९८१से १५ जुलाई १९८१ तक उनके लिए सर्वश्रेष्ठ हैं।

पाकिस्तानके जिया-उल-हक एक विमान दुर्घटनामें मारे जाएंगे। मई और अगस्त १९८१ उनके लिए विशेष दुर्भाग्यपूर्ण मास है।

कमाल अमरोहीकी "रजिया सुल्ताना" को उनकी अचानक बीमारीके कारण अनेक रुकावटोंका सामना करना पड़ेगा और यदि वह पूर्ण भी हो गई तो भी बॉक्स ऑफिस पर हिट नहीं होगी तथा यह उनकी अन्तिम जोखिम बढ़ाने वाली फिल्म होगी।

"बुलन्दी" १९८१की सर्वश्रेष्ठ फिल्म होगी तथा इसे अकेडमी और राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त होगा।

ए.आर. अन्तुले, वी.पी. सिंह, वसन्त साठे, शेख अब्दुल्ला और बंगालके ज्योतिवसुको उन के पदसे हटा दिया जाएगा।

आसाम समस्याको प्रधानमन्त्री सुलझा देंगी। उनके सभी दूत आसामकी हलचलमें इच्छित परिणामोंको पानेमें असफल रहेंगे। आन्दोलनकारी उनके युद्धकौशल के समक्ष चित्त हो जाएंगे। १९८१का वर्ष आसामसे विदेशियोंको हटानेके लिए मृत-वर्ष साबित होगा।

मेरठ या अन्य पश्चिमी जिलोंके लिए उच्च न्यायालयकी शाखा स्थापित नहीं हो सकेगी क्योंकि इसे जनताकी सहानुभूति प्राप्त नहीं होगी। आन्दोलनकारियोंको जब आन्दोलन समाप्त करनेके लिए बिवश किया जाएगा तो वे इसे समाप्त कर देंगे।

मास्को अफगास्तिान तथा अन्य अरब राष्ट्रोंमें युद्धास्त्र तीव्र गतिसे एकत्रित करेगा। एक छोटा किन्तु प्रभावपूर्ण तथा भयंकर युद्ध १२-९-१९८१ और १५-१२-१९८१के मध्य होगा। १९८२ और १९८५में एक छोटा प्रादेशिक युद्ध तथा विश्वयुद्ध बारी-बारीसे होंगे जिसके फलस्वरूप बहुत अधिक जनसंख्या और पशु मारे जाएंगे। बहुतसे छोटे और नए राष्ट्र समाप्त हो जाएंगे।

भारतमें आर्थिक और सामान्य शान्ति रहेगी। कोई भी राजनैतिक प्रतिवादी या दल श्रीमती गांधीके नेतृत्व वाली कांग्रेसका सामना करने योग्य नहीं होगा और वर्तमान प्रधानमन्त्री अपना शासनकाल सफलतापूर्वक पूर्ण करेंगी। उनका स्वास्थ्य चिन्ताजनक हो सकता है, तथा उन्हें व्यक्तिगत सुरक्षाकी अत्यधिक आवश्यकता हैं। उन्हें एक वीरका गौरव प्राप्त होगा तथा वे शक्ति, आत्मसम्मान तथा प्रसिद्धिकी पराकाष्ठा तक पहुंच जाएंगी, जैसी किसी भी स्त्री अथवा पुरुषको इस धरती पर पहले प्राप्त नहीं हुई।

१९८२ और १९८५के युद्धमें पाकिस्तान और बंगला देश नष्ट हो जाएंगे, तथा दुनियां का नक्शा बदल जायेगा। बहुतसे मुस्लिम राज्य नष्ट हो जाएंगे।

१९८५के युद्धमें चीन, अमेरिका तथा रूसकी सेनाओंके बीच दब जाएगा जबकि दोनों देश चीनके विरुद्ध लड़ेंगे। १९८४-८५के बाद भारतके पास विशाल सैनिक शक्ति होगी।

अगले चार वर्षोंमें भारतमें अन्नकी पैदावार बहुत होगी। असाधारण रूपसे बढ़ती हुई जनसंख्याको रोकनेके लिए सरकार द्वारा बलपूर्वक परिवार-नियोजन लागू किया जाएगा। अमेरिका का अगला राष्ट्रपति दोगला व्यक्ति होगा जिसका पिता एक नीग्रो तथा माता अंग्रेज होंगी। यह तीन वर्षोंके बाद होगा।

१९८२-८३में नौकरियोंके लिए पदोंका आरक्षण और धर्म पर आधारित शैक्षणिक संस्थाएं बंद हो जाएंगी और आर्थिक धरातल पर इसमें सुधार किया जायेगा। आर्थिक दृष्टिसे कमजोर सभी व्यक्तियोंकी सरकार द्वारा सहायताकी जाएगी।

अगले तीन वर्षोंमें सम्पूर्ण भारतमें अच्छी वर्षा होगी। भारत विज्ञान और टेक्नालोजी में आश्चर्यजनक उन्नति करेगा। १९८१-८२ में पांच बड़ी विमान दुर्घटनाएं होंगी तथा तीन भूकम्प आएंगे जिनका प्रभाव चीन, लेटिन-अमेरिका, मध्य यूरोप और जापान पर पड़ेगा।

१९८३-८४ में भारत द्वारा अन्तरिक्षमें प्रसिद्ध उपग्रह छोड़ा जाएगा जो कई वर्षों तक पृथ्वीका चक्कर काटता रहेगा। १९८२-८३में दक्षिणी अफ्रीकामें एक भयंकर युद्ध होगा और गोरोंकी शासन पद्धति समाप्त हो जाएगी।

राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन पर प्राणघातक हमला करने वाले अपराधी, जॉन वारनक हान्कलीको उसके अपराधके लिए फांसी नहीं दी जाएगी। दूसरी ओर वह किसी भी न्यायालयके दण्डसे बच जाएगा क्योंकि अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों तथा मानसिक चिकित्सकों द्वारा उसके पक्षमें प्रमाणपत्र जारी किए जाएंगे। वह पिस्तौलकी गोलीसे मारा जाएगा।

ईरानका मुस्लिम हठधर्मी खुमेनी अपने ही विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा नवम्बर-दिसम्बर १९८१में मारा जाएगा।

१९८२का वर्ष टाटाके स्वास्थ्यके लिए चिन्तनीय है। १९८३में बिरला अस्वस्थताके कारण हस्पतालमें होगा। दोनों ही हृदय-रोग और रक्त जमावका कष्ट उठाएंगे, जो कि टाटा के लिए अधिक यातनापूर्ण होगा।

जेम्स ब्रेडले गोलीसे घायल होगा और ऑपरेशन तथा चिकित्साके बावजूद भी उसे बचाया नहीं जा सकेगा। उसका घाव ही उसकी मृत्युका कारण बनेगा। अमेरिकाके राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगनकी तीन वर्षोंमें मृत्यु हो जाएगी तथा वे अपना शासनकाल पूर्ण नहीं कर सकेंगे। वे भी गोली लगनेसे मारे जाएंगे।

अफ़गानिस्तान सोबियत रूसका एक प्रान्त बन जाएगा, जहांसे अरब सागरकी ओर सीधा मार्ग ईरान और ईराककी सीमा-रेखासे होता हुआ जायेगा।

श्रीमती रीगनकी मृत्यु एक वर्षके बाद होगी वह वर्ष उनके लिए मारक होगा। जापान आने वाले युद्धमें अमेरिका का साथ नहीं देगा।

१९८४-८५का वर्ष हमारी प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधीके लिए बहुत संकटपूर्ण होगा। उन्हें अपनी सुरक्षाके लिए विशेष प्रबन्ध करना चाहिए।

दक्षिण कोरियाके किम-डे-जुन्गको छोड़ दिया जाएगा और वे आजीवन कारावास पूर्ण नहीं करेंगे। मैं ज़िला न्यायाधीश मेरठके समक्ष पहले भी यह भविष्यवाणी कर चुका हूँ कि उन्हें मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाएगा केवल आजीवन कारावास होगा, यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई है और यह समाचार भारतके सभी प्रसिद्ध समाचारपत्रोंमें २४-१-१९८१ को छपा।

महाराष्ट्रके अगले मुख्यमन्त्री अपने ग्रहों की स्थितिके अनुसार बसंत दादा पाटिल होंगे। (जून २३ को वे मर गए –सं०) नुसरत भुट्टो पाकिस्तानकी अगली प्रधानमन्त्री होंगी और वह भारतकी दुश्मन साबित होंगी। बेनजीर भुट्टो फेफड़ोंके क्षय रोगसे ग्रस्त होंगी तथा वे हस्पतालमें रहेंगी। उन्हें फांसी नहीं दी जाएगी। एक विदेशी शक्ति उन्हें एक झटकेसे पाकिस्तान बाहर कर देगी।

भविष्यवाणी

[लेखक—श्री पं० जय शर्मा, ज्योतिर्विद, अलवर (राज.)]

सबसे पुराना शास्त्र वेद माना जाता है। वेदमें भी ज्योतिषका यथेष्ट उल्लेख है। बल्कि ज्योतिषको वेदका नेत्र बताया गया है। प्राचीन कालसे ही मानव ज्योतिष शास्त्रके ज्ञान का इच्छुक रहा है। तभी कहा जाता है कि मानवकी प्रकृति एवं स्वभाव ही है कि वह भविष्यज्ञानके लिए ज्योतिषका सहारा लेता है। हमारे पूर्वज १८ ऋषिगण भारद्वाज आदि तो विशेष ज्योतिषज्ञानसे भरपूर थे। पराशर ऋषिका नाम भी ज्योतिषशास्त्रमें सर्वोपरि है। वराहमिहिरजीने वृहत् होरा शास्त्र लिखा है। आयुर्वेदके ज्ञाता वैद्य लोग ज्योतिष ज्ञानी होते थे। रोगीके यहाँ जानेसे पूर्व ज्योतिष-ज्ञानसे रोगीका भविष्य मालूम कर, तब रोगी देखने जाते थे। यजुर्वेदमें अनेक स्थलोंमें ज्योतिषका उल्लेख है। पुराणोंमें एक पुराण ही "भविष्य-पुराण" है। जिसमें चमत्कृत भविष्य वाणियां हैं। भृगु ऋषिकी भृगुसंहिता एवं रावणकी रावणसंहिता प्रसिद्ध है।

प्रत्येक मानव नर या नारी अपना व्यक्तिगत तथा समाज और देशका भाग्य भविष्य जाननेके प्रति जिज्ञासु रहता है। मेरे पास भी इस विषयमें मित्रगण प्रश्न करते रहते हैं। सो मुझे भी इन प्रश्नों पर विचार करना ही पड़ता है।

वर्तमानमें "विश्व-युद्ध"के बारेमें प्रश्नका ही विवेचन किया जाता है। इसमें सन्देह नहीं विश्वमहायुद्ध होगा। इस युद्धके लिए प्रलय मचाने वाले शस्त्र, अमेरिका व रूसने तैयार कर लिए हैं। न्यूट्रोन बम्ब, गैस बम्ब, हाइड्रोजन बम्ब और न जाने कैसे-कैसे भयंकर शस्त्र तैयार किये हैं। यह जो बने या बनाये गए हैं, क्या व्यर्थ हैं? कार्यके पहले कारण व साधन होते ही हैं। सो विश्वमहायुद्ध अनिवार्य है। इसमें सन्देह नहीं। देखिए—अन्य विद्वान् इस विषय में क्या भवियष्वाणी कर रहे हैं :—

(१) १९८२ में रूस - चीन, अमेरिका - पाकिस्तानके प्रयासोंसे विश्वयुद्ध आरम्भ हो जावेगा, जो १९९० तक चलेगा।

(२) एक महानुभावका कथन है १९८५ से पूर्व विश्वयुद्ध आरम्भ हो जावेगा, १९९४ तक चलेगा।

(३) ९-२-८६ से २२-३-८९ तक निश्चित रूपसे विश्वयुद्ध आरम्भ हो जावेगा।

(४) १९८२ में नौ-ग्रहोंके सूर्यकी एक ओर हो जानेके कारण पृथ्वी पर महाभयंकर युद्ध, महामारी, बाढ़, अकाल, भूचाल चलेंगे।

(५) जीन डिक्सनने १९८१ से १९८४ तक विश्वयुद्धकी भविष्यवाणी की हुई है।

(६) पीटर हरकौसने १९८० में विश्व-युद्ध आरम्भ होनेकी भविष्य वाणी की थी जो असत्य सिद्ध हो रही है।

(७) डाक्टर जूलवर्नने १९८८ तक विश्व-युद्ध आरम्भ होनेकी भविष्य वाणी की है।

(८) नेस्त्रदेमस ने १९८२में, जैरसेंवेज ने १९८४में, पादरी प्रियो ने १९८०में, श्रीआनन्दाचार्य ने १९८४में, श्रीएण्डर सन ने १९८०में, वाल्टर सेन ने १९८३में विश्वयुद्ध आरम्भ होने की भविष्यवाणियां कीं हुई हैं।

अत: उपरोक्त तथ्यों से पता चलता है कि विश्वयुद्ध तो होगा ही, भले ही समय भिन्न बताया गया है।

मेरा मत

उपरोक्त प्रकारमें मेरे मतसे १९८२ में विश्वयुद्धकी चिनगारी लग जावेगी तथा धीरे-धीरे १९८५ तक यह चिनगारी अग्नि रूपमें भयंकर रूप धारण कर लेगी। इसका स्थान मध्य एवं पश्चिम एशिया ही होगा। सन् १९९० तक यह शांत हो पावेगा। भारत भी झुलसेगा। संभव है मुसलिम देश बर्बाद हो जाएं। सबसे बड़ी हानि इस्लामी देशोंकी होगी, ऐसी धारणा है। तिब्बत स्वतंत्र हो जाने की आशा है। पाकिस्तान भी टूट जावेगा। कदाचित् भारत इस युद्धसे बच निकले तथा शांति स्थापनामें योग दे कर संसार शिरोमणि बन जावे। भारतका भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है।

●

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक :—श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त, खोरी, ज़िला महेन्द्रगढ़—हरियाणा]

कार्तिक मास सं. २०३८ विक्रमी

वदी १ बुधवार—

कार्तिके प्रथमे पक्षे, प्रथमा बुध संयुता।
जायते मध्यमा वृष्टिरनावृष्टिः क्वचिद् भवेत्।

बुधवारी एकम् वर्षामें कमी करेगी (और कहीं वर्षा होगी भी नहीं, ऐसा भी लिखा है)। 'प्रतिपत्सर्वं-मासेषु बुधे दुर्भिक्ष कारिणी'। हर एक मासमें बुधवारी प्रतिपदा दुर्भिक्ष कारिणी होती है। इस पक्षमें आलू अदरक सोंठ प्याज मूंगफली गाजर मूली हलदी, अरबी बेंगन गोभी आदि सभी शाक सब्जी विशेष तेज रहेंगी।

अक्टूबर मास—ता. १५ अक्टूबर गुरुवार, नमक रुई कपास, चांदी कांसी मन्दी। १६ अक्टूबर चांदी मन्दी रुई घट बढ़से तेज। वदी ४ का क्षय मन्दीके झटके देगा। १७ अक्टूबर तुला संक्रांति—

तुला राशि यदा भानुरेतदेव महार्घता।
धान्यानां हेम द्रव्याणां कुञ्जराणां तथैव च॥

सभी प्रकारका अनाज सोना तेज, और हाथियोंकी हानि, चन्द्रमा माहेन्द्र मण्डलमें है वर्षा और रोग कारक हैं। शनिवारी संक्रांति अनाजमें अच्छी तेजी, रोग भय, युद्धभय, तिल तेल तिलहन तेज और कष्टकारी है। १८ अक्टूबर ज्येष्ठाका शुक्र, सोना, चांदी रुई सूत कपास सन, खाण्ड चीनी मन्दी करेगा। गल्ला सरसों तिल तेल तिलहन तेज करेगा। रविवारी षष्ठी अनाज और रस पदार्थोंकी तेजी बढ़ाएगी। १९ अक्टूबर—सोना चांदी, गुड़ खांड नमक खार, लोहा ताम्बा मन्दा। बक्री बुधका कन्या राशि पर गमन अनाज मन्दा करेगा। २० अक्टूबर—जौ गेहूँ चणा उर्द मूंग मोठ, रुई



श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त

कपास सरसों तेज। २१ अक्टूबर—सोना चांदी, गुड़ खांड, रुई कपास, मूंगफली गेहूँ मन्दा। २०-२१ दो दिन चांदीमें अच्छी तेजी रहेगी। २२ अक्टूबर—राहु केतुका नक्षत्र चरण परिवर्तन घट-बढ़कारी। २३ को कन्या गत शनि उदय हो कर अनाजका नाश, वर्षा में कमी, पशुओंको पीड़ा, गुड़ खांड शक्कर तेज करेगा। २४ शनिवार—गुड़ खाण्ड, गेहूँ जौ चणा, सोना चांदीमें साधारण मन्दी। तेल तिलहन, लोहा जस्ता मशीनरी तेज। स्वाति

का सूरज गुड़ खांड, तेल, हींग, लाख चपड़ा, गूगल किराणा हल्दी तेज करेगा। २५ अक्टूबर रविवार पूर्वमें बुधोदय, दुर्भिक्ष तथा रोग कारक, जुवार बाजरा मकईकी उपज उत्तम होगी। आज त्रयोदशी है।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी जो आवै रविवार।
तो जौ गेहूंमें चले तेजी वारम्बार॥

२६ को गुरुका उदय एक दम तेजी भड़काएगा। यह तेजी ५-७ दिन चल कर खत्म हो जाएगी। मंगलवारी अमावस्या तेजी कारक। अग्निभय तथा रोग कारक है। रात को दीपावलीमें महालक्ष्मी पूजन होगा। मार्गी बुध बाजारकी लाइन बदलेगा। सुदी १ बुधवारी है। सं० २०३५में यह योग आ चुका है! आज सोना मन्दा रहेगा। ता. ३१ को रुई कपास, चांदी मन्दी, लिहन तेल, लोहा मशीनरी, स्टीलके बर्तन तेज।

नवम्बर मास— ता. २ सुदी ५ सुख सुभिक्ष कारक। पू. फा.का भौम गुड़ खांड शक्कर नमक घी तेल मूंगफली तेज करेगा। ता. ४ गुड़ खांड नमक और फल मन्दे, रात को तुलागत बुध, वर्षा वायुका वेग वढ़ायेगा, रोग वृद्धि, अनाज तेज। ता. ६—सब धातुएं गुड़ खाण्ड तेज। विशाखाका सूर्य, रुई कपास सन गुड़ खांड, तिल तेल घी, प्रामेसरी नोट शेयर्स तेज, दक्षिणमें उपद्रव, अग्निभय कारक। १० नवम्बर—सभी धातुएं तेज। ११ नवम्बरको पूनमका क्षय, तेजी कारक। कार्तिकमें सभी वस्तुएं तेज रहेंगी, मंगलवारी दिवाली है, "शनि मगल आवै दीवाली, मरैं रंक जीवै भण्डसाली" रंकका अर्थ गरीब लोग। भण्डसाली=स्टाकिस्ट।

मार्गशीर्ष मास सं. २०३८ विक्रमी

बदी १—चांदी कांसी मन्दी, रुई घट बढ़ से तेज। ता. १३ नवम्वरको बाजारमें तेजी रहेगी। १४ को भी यही लाइन चलेगी। १६ नवम्बरके ११ बजेसे १८ के १२ बजे तक चांदी तेज रहेगी। १६ को वृश्चिक संक्रांति है। लाल रंगकी सभी चीजें मंदी। मन्दीके मौके पर खरीदें, छः मासमें लाभ। १७ मंगलवार—सोना चांदी ताम्बा, गुड़ खांड, रुई गेहूँ मूंगफली तेज। १८ को बाजार मन्दा रह कर १९-२०-२१ तीन दिन तेज रहेगा।

एकादशी शनिवारी है—

मँगसिर बदी एकादशी शनिवारका संग!
भय भासे नासे प्रजा मन्त्री मण्डल भंग॥

सन् १९७२ में यह योग आ चुका है। ता. २४ नवम्बर— सोना चांदी, रुई सरसों तेज। २५ को भी यही लाइन रहेगी, परन्तु तिलहन मन्दा रहेगा। अमावस्या गुरुवारी वर्षा तथा मन्दी कारक। सुदी १ शुक्रवार—खुलते बाजार धातुएं मन्दी, बादमें तेज। सुदी २ रुई चांदी मन्दी। लोहा जस्ता, तिलहन, तेल साबुन, टाटा आयरन शेयर्स तेज। ३० को मकरे शुक्र खेती नष्ट करेगा, बाजारमें तेजी भड़केगी, सर्दी बढ़ेगी।

दिसम्बर मास — ता० १, गल्ला गुड़, खांड, शक्कर तेज, सोना ताम्बा पीतल तेज। ता० २—अलसी, अरण्डी, गुड़ खांड, पारा हींग गल्ला तेज। ता. ३—कन्याका भौम, चन्दन रेशमी वस्त्र, लाल रंगके पदार्थ, गुड़ सरसों अलसी मसूर तिल तेल लालमिर्च, रुई कपास, चीनी चावल चांदी तेज। ५ दिसम्बर बाजार तेज। ७-८ दिसम्बरको भी तेजी रहेगी।

पूर्णिमा शुक्रवारी मन्दी कारक। आज बादल घटा हो तो गल्ला और घीका स्टाक करें। आकाश साफ रहे, बादल न हों तो केवल गल्लाका स्टाक करें। मार्गशीर्षमें ५ गुरुवार तथा शुक्रवार हैं। गल्ला किराणा तिलहनमें घट बढ़से मन्दी रहेगी। सुदी पक्षमें शनि मंगल युति तेजी रखेगी।

पौष मास सं. २०३८ विक्रमी

शनिवारी एकम बाजार तेज, चित्राके दूसरे चरण पर शनि, द्रविड, मगध सौराष्ट्र देशोंमें हानि, गल्ला और रस पदार्थ तेज। ता. १४ दिसम्बर—सोना, गुड़ खाण्ड, रुई मूंगफली गेहुँ मन्दा। श्रवणे शुक्र पशुओंको रोग, रुई मन्दी। १४-१५ तारीखोंमें चांदी तेज रहेगी। १५ दिसम्बर धनु संक्रांति, सुभिक्ष कारक। तिल तेल रुई कपास रेशम ऊन तेज। परन्तु मंगलवारी संक्रांति प्रायः तेजी कारक होती है। ता. १७ को बाजार मन्दा रह कर १८ को तेज रहेगा। ता. १८ शनिवारी नौमी है। छः मास तक अनाज संग्रह करें। ता. २२ दिसम्बर पूषाका बुध सोना चान्दी मन्दी, रुई सरसों तिल तेल तेज। २३ दिसम्बर मिथुने राहु, गल्ला घी तेज, दुर्भिक्ष, पश्चिमी राजाओं की हानि, पशुओंका नाश, प्रजा पीड़ा। परन्तु मिथुनका राहु उच्चका होनेसे गल्ला मन्दा भी हो सकता है, बाजारका रुख देखो। २४ को हस्ते भौम घी गुड़ खांड, नमक गल्ला तेज करेगा। अमावस्या शनिवारी है परन्तु मूल नक्षत्र सब दोषोंको हटाकर सुख शांति करेगा—

पौषी मावस मूल रिख शनि रवि मंगलवार।
जल वर्षे हर्षे प्रजा लाभै अन्न अपार॥ भ.भा.

सुदी १ रविवार पू. षा. नक्षत्र इस पक्षमें अनाज तेज रखेगा। २८ दिसम्बर पूषायां रवि, सर्दी बढ़ेगी, अलसी गुड़ ऊन, खांड चांदी कपड़ा तिल तेल, सोना, सन हल्दी, लाख चमड़ा तेज, गल्ला मन्दा करेगा। ३० दिसम्बर सोना चांदी तेज, गुड़ खांड मन्दी। ३१ दिसम्बर शुक्र वक्री सोना चांदी, रुई, घी तेज, अग्नि भय कारक।

जनवरी १९८२ — ता. १ गल्ला सोना चांदी रुई मन्दी। रातको मकरे बुध सोना चांदी में तेजी और रुईमें अच्छी तेजी करेगा। ता. २ जनवरी—बुधोदय मन्दी कारक। ४ जनवरी बाजार मन्दे, ५ को तेज। ६ जनवरी कृत्तिका नक्षत्र है, सोना और लाल रंगकी सभी चीजे तेज होंगी। गत वर्ष यही योग १६ जनवरी को था। सुदी त्रयोदशी शुक्र वारी है, गेहूँका स्टाक करें लाभ होगा। पूनम शनिवारी तेजी करेगी। रातको चन्द्रग्रहण होगा, गुड़ खांड, गोला घी तेल तेज। जुवार तथा काले रंगकी वस्तुएं तेज। पौषमें मंगलवारी संक्रांति धान्य का भाव चौगुणा तेज कर देती है। गत वर्ष यही योग था। अनाजमें घोर तेजी आई थी।

शकुनावली

कार्तिक

शनिवारी संक्राति हो तिलहण तेज अनाज।
होय युद्ध भय रोगसे जगमें अमित अकाज॥
जब जब बुध बृहस्पति मिल बैठें इक गेह।
तब तब ही संसारमें वर्षे नांही मेह॥
कातिक पडवाके दिन जो रवि मण्डल होय।
सरसों तिलहन तेलका काम करो मत कोय॥
कातिक एकम को रहै सूरजके परिवेष।
सरसों अलसी तेल तिल मँहगे बिकें विशेष॥
कातिक शुकला पूर्णिमा अश्विनी नखत बिचार।
फसल सावनीकी रहै, मध्यम पैदावार॥

मार्गशीर्ष

मगसिर चौदस मावस्या घटा रहै आकास।
मँहगे भावोंमें बिकें गल्ला चारा घास ।।
बरसै संक्राति दिना कातिक मंगसिर मेह।
खेती मध्यम, पौषमें तेजी निस्सन्देह ।।
मगसिर पूनम निर्मला अथवा ग्रहण मयंक।
लाभ मिले आगे, करो संग्रह नाज निशंक ।।
मगसिर बदी त्रयोदशीके दिन पडै जो वर्फ़।
बढ़ै धान्य धन सम्पदा मंगलमय चौतर्फ ।।
मँगसिर सुदी दोयज दिवस जो आवै शनिवार।
दक्षिणका वायु चलै दुख दायक संसार ।।

पौष

मंगलवारी पंचमी पौष बदी बरसाय।
उत्तम वर्षा उपज अति मन्दा धान्य बिकाय ।।
बादल गर्जे पूर्वमें नौमी लागत पौष।
समझो खेती नाशका करते हैं यह घोष ।।
पड़वा दोयज पोषसुदि, बिजली बादल देख।
वर्षासे खेती बढ़ै उपजै अन्न विशेष ।।
पोष सुदी तेरस दिना भौम शुक्र शनिवार।
वर्षे तो भर लो सभी गेहूंके भण्डार ।।
मेघ छवै आकाशमें पौषी पूनम पाय।
सोना चांदी धातुएं संग्रह लाभसिवाय ।।

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[लेखक :— श्री मोतीलाल जैन ज्योतिषी]

कार्तिक मास सं. २०३८ विक्रमी
[ता. १४-१०-८१ से ११-११-८१ तक]

ता. १४ बुधवारा— मासारम्भ दुर्भिक्षका रूप धारण करेगा। अमावस्या मंगलवारी व पूनम बुधवारा होनेसे अनाजमें तेजी, जिससे जन जीवन संकटमें पड़ जायेगा, यहां पर सभी ग्रहोंका समावेश राहु-केतुकी परिधिमें होनेसे ब्लैक हाल जैसा निमित्त बनेगा। मानव बुद्धि-हीनताको प्राप्त होगी, ऐसे विकट समयमें भगवान् भजन ही सार होता है। ता. १६ शुक्र-वार—योगका क्षय होनेसे खाद्य-पदार्थोंमें मंदी होती है। ता. १७ शनिवार— तुला संक्रांति माहिन्द्रमंडल पूर्णा तिथिमें लगनेसे सुगंधित पदार्थोंमें भयंकर तेजी लाएगी तथा राज्य विग्रह होंगे। अनिष्ट कार्योंकी वृद्धि होगी। ता. १८ रविवारी— छठ होनेसे अनाज घी रुईमें मोटी तेजी होगी, तथा ज्येष्ठा पर सूर्य आनेसे भविष्यमें सोना चांदी, चावल कुछ मंदा होगा। अनाज, रुईमें भयंकर तेजी आएगी। ता. १९ सोमवार—सप्तमी आकस्मिक घटनाको जन्म देती है, तथा बुध वक्री होनेसे शनिका संयोग पाय रुई चांदीमें मंदा, जो चना खांड चीनीमें तेजी आएगी। ता २० मंगलवार—को चन्द्र राहु युति होने तक तेजी फिर मंदा लाती है। ता. २२ गुरुवार— राहु केतुका नक्षत्रचरण परिवर्तन तेल पदार्थोंमें भयंकर तेजी लाएगा। ता. २३ शुक्रवार— को स्वाति नक्षत्र पर सूर्य आनेसे दिन १३ में रुई सुपारी बिनोला मिर्च सरसों गुड़ खांडादि किराना तेज होगा, तथा पूर्वोदय शनि होनेसे वर्षा नेष्ट व रुई शेयर अलसी सरसों अरंडा कपासिया मूंगफली

मंदी होती है। अनाज जस्तारांगा घास लकड़ी गुड़ खांड तेज होते हैं। ता. २५ रविवार—बुध का पूर्वोदय होनेसे रुई सोना चांदी अनाज मंदा होता है। ता. २६ सोमवार—पूर्वोदय गुरु होने से वर्षा योग बनेगा, भविष्यमें रुई तेज, चांदी अनाज सोना मंदा होगा। चन्द्रबुध व चन्द्र-शनिकी युति होनेसे चालू मंदीकी लाइनमें तेजीकी अंगारी निकलने लगेंगी। ता. २७ मंगलवार— अमावस अनिष्टकारक होती है। बुध मार्गी होनेसे चांदीमें मंदा करके तेजी लाएगा। गेहूं चनेमें मोटी तेजी आएगी तथा तुला राशि पर गुरु आनेसे सिंह राशि वाले महानुभावोंका शांतिका संयोग बनेगा। यहां राजनीतिमें भी भयंकर मोड़ आएगा। रुई कपास चनामें अच्छी तेजी आएगी। ता. २८ बुधवारी—एकम् इस पक्षमें अनाज घी तेल गुड़ खांडादिमें तेजी आएगी। ता. २९ गुरुवार—चन्द्र दर्शन ४५ मुहूर्ती होनेसे रुई मंदी हो कर तेज। गुड़ खांड मंदा, धी तेल तेज होंगे। ता. ३० शुक्रवार—धनु राशि पर शुक्र आनेसे रुई चांदी मंदी होती है, अनाज शेयर तेज होंगे। आज गुर्रा होनेसे साढीकी फसल तक अनाज में एक रुपएके दस आने रह जाएंगे। ता. २ नवम्बर सोमवार—नक्षत्रकी वृद्धि मन्दा लाती है (चांदी रस अनाजमें) मूला नक्षत्रका योग रुईमें १००) १५०) रुपएकी लाइन तेजीकी शीघ्र बनाएगा। पूर्वाफालगुणी पर मंगल आने से रुई तेलोंमें तेजी लाएगी। ता. ४ बुधवार—तुला राशिमें बुध आनेसे गुरुका संयोग पाय, रुई गुड़ खांड सोनामें तेजी। लड़ाईका संयोग बनेगा। ता. ६ शुक्रवार— विशाखा नक्षत्र पर सूर्य आनेसे जौ गेहूँ मूंग मोठ चांदी तेलादि अलसी तेज होगी। ता. ९ सोमवार— स्वाति पर बुध आनेसे रुई मंदी होती है। चित्रा पर शनि आनेसे अनाज तेल शेयर मंदे होते हैं। ता. १० मंगलवारी तेरस—लाल वस्त्र व गुड़ खांड तांबा हीरा अफीम तेज होंगे। चौदसका क्षय अशुभ चिंतक रहेगा। ता. ११ बुधवारी पूनम नक्षत्रका क्षय किसी महान् व्यक्तिका निधन व अशुभ घटनाका सूचक होगा। पश्चिमी राष्ट्रोंमें गड़बड़ होगी।

मँगसिर मास सं. २०३८ विक्रमी

[ता. १२-११-८१ से ११-१२-८१ तक]

ता. १२ नवम्बर गुरुवार— पूर्वाषाढ़ पर शुक्र आनेसे मूंग मोठ उड़द तेज होंगे। गुड़ खांडादि मंदी होगी। ता.१३ शुक्रवार—रोहिणी नक्षत्रका योग वर्षाकि ठाठ लगायेगा। ता. १४ शनिवार—सूर्यगुरु युति प्रायः सभी वस्तुओंमें तेजी लाएगी, युद्धको साकार करनेमें मदद देगी। ता. १६ सोमवार— वृश्चिक संक्राति ४५ मुहूर्ती पूर्णातिथि वायुमंडल नक्षत्रका योग होनेसे भविष्यमें राजाओंमें संधि होना संभव है, अनाज, धान्य धातु तेज होंगे। ता. १७ मंगलवार— बुधका पूर्वास्त होनेसे रुई मंदी, चांदी तेज होती है। ता १८ बुधवार—विसाखा पर बुध आनेसे अनाज भाव सस्ता होता है। ता. १९ गुरुवार—अनुराधा पर सूर्य आनेसे सोना चांदी मंदा हो कर तेज होगा, तथा धनु राशि पर नैपचून आनेसे भविष्यमें सूत कपड़ामें स्थाई तेजी आएगी। भयंकर दुष्कालकी संभावना बढ़ेगी। ता. २० शुक्रवार —अनुराधा पर हर्षल आनेसे पश्चिमी देशोंमें युद्ध संग्राम बढ़ेगा। चन्द्र-मंगल युति इसको सपोट करेगी। ता. २२ रविवार— सूर्य हर्षल चन्द्र शनिकी युति तेजीको बढ़ावा देवेगी।

ता. २४ मंगलवार— वृश्चिक पर बुध आनेसे भविष्यमें रुई सोना चांदी घी तेल अनाजमें मंदा, पशुओंमें तेजी रहेगी। ता. २६ गुरुवारी अमावस्या श्रेष्ठ होती है, अनुराधा पर बुध आनेसे दुर्भिक्षको बढ़ावा मिलेगा। उतराफाल्गुणीका मंगल उत्पातक योग बनाता है, तथा उतराषाढ़ पर शुक्र आनेसे भविष्यमें अलसी रुई रसकसमें मंदा। सूर्य चन्द्र युति सफेद वस्तुमें तेजी लाएगी। चन्द्र सूरज युति तेजीको सपोट करेगी। ता. २७ शुक्रवार— आज रुईमें आश्चर्यकारक घटना घटेगी। मंदी के झटकेमें लेने वाला निहाल हो जाएगा। ता. २८ शनिवार— ज्येष्ठा नक्षत्रका योग चन्द्र दर्शन ३० मुहूर्ती होनेसे रुई चांदीमें तेजी, सोना घी तेल मंदा होगा। स्वाति नक्षत्र पर गुरु आनेसे रुई रस तेज, अनाज मंदा होता है। चन्द्र नैपचून युति तेजीको सपोट करेगी। ता. २९ रविवार—शूल योगमें बुध हर्षलका युद्ध तेजीमें कमाल दिखाएगा। ता. ३० सोमवार— मकर राशि पर शुक्र आनेसे तुरन्त चांदी शेयर गुड़ खांड घी गेहूँ चना आदिमें तेजी लाएगी। ता. १ दिसम्बर मंगलवार— पंचमी चांदीमें १००) १२०) रुपएकी तेजी ८ दिनमें लाना सम्भव है। ता. २ बुधवार— ज्येष्ठा नक्षत्र पर सूर्य आनेसे १३ दिनमें सोना चांदी शेयर गुड़ खांड तेलादिमें आश्चर्यकारक तेजी आएगी। कन्या पर मंगल आनेसे रुई सोना चांदी गुड़ खांड गेहूंमें अच्छी तेजी आएगी (यह कखपतिको लखपति बनानेका योग है, सावधान।) ता. ५ शनिवार—ज्येष्ठा पर बुध आनेसे भविष्यमें धान्य घी चावल तेज होते हैं। तिथिका क्षय होनेसे घी गेहूं अनाज दो मास तक तेज रहेगा। ता. ६ रविवार—दशमी घीमें तेजी लाती है। ता. ८ मंगलवार— योगका क्षय होनेसे मंदा होता है। ता. ११ शुक्रवारी पूनम— वर्षाकी झड़ी लगाएगी। रुई मन्दी, मिल शेयर चांदी अनाज तेज होंगे। फसलोंको नुकसान पहुंचेगा।

पौष मास सं. २०३८ विक्रमी

[ता. १२-१२-८१ से ६-१-८२ तक]

ता. १२ दिसम्बर शनिवार— मासारम्भ नक्षत्र, तिथिका क्षय होनेसे पृथ्वीको डांवाडोल करने आया है, अवावस्या पूनम भी शनिवारी होनेसे अनिष्टकी सूचक है। इस मासमें तेलमात्र रस पदार्थ व लोहा आदि धातु मात्रमें आश्चर्य कारक तेजियां आएंगी। ता. १३ रविवार—धनु राशि पर बुध आनेसे निकट भविष्य में रुई कपास चांदी मन्दी तथा परस्पर राजयुद्ध होगा। चित्रा पर शनि आनेसे अनाज में तेजी, शेयर मन्दे होते हैं। ता. १४ शनिवार —श्रवण नक्षत्र पर शुक्र आनेसे रुई तिल तेल तेज होते हैं। सोना चांदी, गुड़ खांड मन्दा होगा। ता. १५ रविवार— धनु संक्रांति वरुणमंडलका संयोग पाय अनाज मात्रमें भयंकर संकट, युद्ध विग्रह बढ़ेगा। सोना चांदी घी तेल सूत रसकस तेज होंगे। सूर्य नेपचूनके युद्धसे विग्रह बढ़ेगा, सोना चांदी घी तेल सूत कपासमें मोटी तेजी लाएगी। ता. १६ बुधवार —स्वाति २ पर गुरु आनेसे अनाज मन्दा, रस कस रुईमें तेजी होगी। सूर्य नैपचूनका युद्ध अग्निज्वाला भड़काएगा। ता. २० रविवारी— दसमी रुईमें मन्दा, घी गेहूँमें मोटी तेजी आएगी। चन्द्र शनि युति तेजीको सपोट करेगी। ता. २२ मंगलवार—पूर्वाषाढ पर बुध आनेसे बिनोला तेल धान्य मन्दा होता है। ता. २३

बुधवार—हस्त पर मंगल आनेसे वर्षाको कमी, अनाज तेज, घी मन्दा हो कर तेज होगा। आज पुनर्वसु ३ पर मिथुनका राहु व धनु पर केतु राशि परिवर्तन करेगा, जिससे निकट भविष्यमें रुई चांदी सोना घी अनाज ७ मास पछेती धान्य सस्ता, सन सूतमें तेजी होगी। यहांसे राहु केतुके मध्य ग्रहोंकी पकड़ खुल जाएगी, नया मोड़ आएगा। व्यापारी निहाल हो जाएगा। ता. २५ शुक्रवार—ज्येष्ठा नक्षत्र में चन्द्र नैपचूनकी युति। तेल पदार्थोंमें तेजी लाएगी। ता. २६ शनिवारी अमावस्या—नेष्ट होती है। टिड्डी आनेका खतरा बढ़ेगा, सूर्य चन्द्र युतिसे सफेद वस्तुमें तेजी आएगी। ता. २७ रविवार—चन्द्र बुध युति तेजीको सपोट करेगी। ता. २८ सोमवार—पूर्वाषाढ नक्षत्र पर सूर्य आनेसे १३ दिनमें तिल तेल गोला हल्दी ऊन चांदी, गेहूं चावल घी चना बिनोला खांडमें दिलखुश तेजी आएगी। चन्द्र-दर्शन ४५ मुहूर्ती होनेसे रुई तेल सोना चांदी मंदा होगा। ता. ३० बुधवार— उत्तराषाढ पर बुध आनेसे धान्य पैदायश अच्छी होगी। ता. ३१ गुरुवार—को शततारा नक्षत्र होनेसे वायु तेज, दुष्काल पड़ेगा। शुक्र वक्री होनेसे भविष्य में घी तेल गुड़ खांड गेहूं, चना तेज होंगे। ता. १ जनवरी ८२—को मकर राशि पर बुध आने से सोना चांदी अफीम तेज होती है। ता. २ शनिवार— बुध पश्चिमोदय होनेसे रुई शेयर मन्दे, चांदी रस घी तेल बिनोला सरसों तेज होगी। ता. ३ रविवारी अष्टमी— रेवती नक्षत्र युक्त होनेसे अनाज संग्रह नहीं करना सारवान है। ता. ५ मंगलवारी—दसमी होने से रुईमें मोटी तेजी आती है। ता. ६ बुधवार एकादसी कृतिका नक्षत्रका योग ३ मास तक सोनेमें मोटी तेजी लाएगा, पहली वर्षा तक अनाज तेज होगा। ता. ७ गुरुवार— रोहिणी नक्षत्रका योग होनेसे रोग बीमारी बढ़ेगी, श्रवण नक्षत्र पर बुध आनेसे गोला अलसी चने की फसलको नुकसान पहुँचेगा। ता. ८ शुक्रवारी —तेरस होनेसे गेहूँ घी तेज होंगे, तिथिका क्षय होनेसे जौ गेहूं अनाजमें तेजी रहेगी। ता. ९ जनवरी शनिवारी पूनमको खंडगास चन्द्र-ग्रहण होनेसे रुई सन कपास कपड़ा घी तेज, गुड़ खांड आदिमें शीघ्र तेजी आएगी। अलसी सरसों उड़द काली दाल जुवार बाजरा तेज होगा, इस ग्रहणसे वर्षाकी कमी रहेगी। यहां भयानक हिमपात हो जाए तो ताजुब नहीं होगा। सूर्य केतु नेपचूनका शनि मंगलसे दसवें दृष्टि योग भी अनिष्टका सूचक है। यहां डांवाडोल स्थिति विदेशोंमें बन जाए तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं होगी, आगे भगवान् सब भली करेंगे।

पं० मानचन्द ज्योतिष निबन्ध प्रतियोगिता

इस वर्ष १९८१ में प्रतियोगिताका विषय "ज्योतिष और सूर्य" निर्धारित किया गया है। प्रथम पुरस्कार १५१) रुपए, द्वितीय १०१) रुपए एवं तृतीय ५१) रुपए मय प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर ८१ है। निवन्ध नीचे लिखे पते पर भेजे जाएं, एवं विशेष जानकारी हेतु यहींसे सम्पर्क किया जाए।

द्वितीय वर्ष १९८० के पुरस्कार गत १५ अगस्तको राजस्थान प्राच्य विद्या-प्रतिष्ठान के उप-निदेशक श्री पद्मधरजी पाठकके कर-कमलों द्वारा प्रदान करवाये गए। पं० श्री राधेश्याम व्यास 'प्रथम' तथा पं० श्री रामाकिशन जोशी एवं श्री जगदीश सिंह सिसोदिया 'द्वितीय' रहे।

पता— पं० अमरचन्द महेशचन्द ज्योतिषी
पं० मानचन्द मार्ग, पुंगलपाड़ा, जोधपुर (राजस्थान)

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

[लेखक :—श्री प्रेमचन्द जैन ज्योतिषी पोरसा वाले]

अक्टूबर १९८१ ई.

१४ अक्टूबर १९८१ को सूर्य-गुरु युति चांदी सोनामें, गुड़ खांडमें (चांदीमें खास तरह से) ४ दिन पहलेसे युति तक या ५-७ दिन बाद तक अच्छी तेजी आकर, बादमें मन्दी आवेगी। उत्तम मध्यम प्रभाव दलहन तिलहन पर भी तेजीकी उम्मीद है। १८ अक्टूबर १९८१ को वक्री बुधकी सूर्यसे युति होगी। जिसके फलस्वरूप तिलहन वायदे-हाजिर दालवाना, देशी घीमें एकाएक तेजीकी चमक आवेगी। ५-७ दिन बाद तिलहन वायदोंमें मन्दीका झटका ५ नवम्बर तक आवेगा। ता. २७ अक्टूबर मंगलकी दीपमालिका हैं— और आज अमावस्या को बुध मार्गी होगा। मंगलवारो दीपावलीसे कभी-कभी बड़ा अच्छा मन्दा १५ दिन तक या फिर ३ महीने तक चलता है। आजसे तीन वर्ष पूर्व १९७८ में मंगलवारी दीपावली पड़ी थी—करीब ३ महीने तक किराना तिलहनमें मन्दी अच्छी आई, व्यापारियोंके हौंसले पस्त हो गए। लाभ हानिमें जिम्मेदारी नहीं होगी। कभी-कभी ३ वर्षके अन्तरसे ३ वर्ष वैसे ही चमत्कारी चलते हैं, जैसे पहले चले थे। जैसे सं. २००८, सं. २०११-२०१४ में मंगलवारी दिवाली होने पर मन्दीका क्रम तीन बार चला। बाजारकी लाइन अवश्य ही देखें। तीन वर्षका चमत्कार भी देखें।

(१) २३-११-१९७४ सरसों ४२०) रु., १५-९-१९७७ को सरसों ५२०) रु., १६-१०-१९८० को सरसों ६००) रु. के नए ऊंचे भाव, तीन वर्षके अन्तर पर टच हुए।

(२) १८-२-१९७५ को सरसों २००) रु. करीब २२-१-१९७८ सरसों ३००) रु., २२-२-१९८१ सरसों भाव ४०० रु. रहे। अर्थात् सन् १९७२ - १९७५ - १९७८ मन्दीके चपेटमें व सरकारी प्रतिवन्धसे व्यापारी घाटेमें रहे।

(३) १९७३ - १९७६ - १९७९ में तेजी अच्छी आई, परन्तु भाव रिकार्ड नहीं टूटे।

ध्यानसे उपयोग कर वर्षकी औसत मान उतार चढ़ाव जानें।

नोट—२६ तारीखसे ३१ अक्टूबर तक वायदे अच्छे चलेंगे, शायद तेजी आवेगी।

नवम्बर १९८१ ई.

२ नवम्बर सूर्यसे बुध-शुक्र अधिक दूरी पर हैं फलतः चांदी सोनाके बाजार अब विशेष २००) ७००)के चल सकते हैं। ता. २ से ६ तक तिलहन बायदे मन्दे। ता. ११ को कार्तिक पूर्णिमाको चन्द्र बुध प्रतियुति—शुक्र परम दूरी सूर्य ४७ अंश पर है। तारीख १५ नवम्बरको चन्द्र शुक्र प्रतियुति फलतः चांदी सोनामें तेजी, तो तूअर मसूर चना मूंग, सरसों अलसी तिलहन तेलमें अच्छी मंदीका झटका २०-२५ नवम्बर तक चल सकती हैं। अतः तेजी मन्दी लगाने वाले ता. १२ से १५ के मध्य लगाएं। ता. २६ की अमावस्या को 'चन्द्र बुध युति' ता. ३० को शुक्र युतिसे

बाजार विशेष चलेगा। परन्तु इक तरफा शायद तिलहनकी मंदेकी, चांदी सोनेकी तेजीकी १६ से २५ नवम्बर तक विशेष चलेगी। चलती लाइनका उपयोग करें। लिखी तेजीमें यदि मन्दी चले तब मन्दीका व्यापार करें।

दिसम्बर १६८१ ई.

२६ नवम्वरसे ७ दिसम्वर १६८१ चांदी सोनामें "अच्छी लाइन" ध्यान तेजीका है। ११ दिसम्बर अगहन पूर्णिमा, १० दिसम्बर "सूर्य बुध युति" पूर्णिमाके नजदीक होनेसे सभी बाजार १०-१५ दिन खतरनांक चलेंगे। ता. ११ को ही चन्द्र-बुध प्रतियुति, १४ को चन्द्र-शुक्र प्रति-युतिसे ता. १६-१७ तक चांदी सोनामें अच्छी इकतरफा तेजी आ सकती है, तो तिलहन वायदोंमें अच्छी मन्दी का झटका आ सकता है।

नोट—३ दिसम्वर, १६८१ से २५ जुलाई, १६८२ तक साढ़े सात महीने तक कन्या राशिमें मंगल रहेगा, जो तिलहन दलहन गुड़ खांड में जनवरी ८२ से मार्चके मध्य एक बड़ी मन्दी आ सकती है।

ता.२६ दिसम्बर अमावस्या है। अत: १६ से २६ के बीच चांदी सोना तिलहनमें अच्छी लाइन तेजी मन्दी, ध्यान मंदीका है। यदि १७ दिसम्बर तक तेजी आई हो तो मंदीकी उम्मीद करना। और २६ तक मन्दी बने तो तुरन्त खरीदें व तुरन्त तेज होने पर बेच भी दें। तिलहनमें एक मन्दी १ जनवरी १६८२ से १० या आगे वढ़ी तो ३० तक भी चल सकती हैं। लाभ हानिमें जिम्मेदारी नहीं होगी। तेजी मंदीका संकेत जवावी पत्र भिण्ड के पते पर आने पर संकेत भेज दिया जावेगा।

नोट—यदि भिण्डसे जवाब न मिले (स्थान परिवर्तन वश) तब पोरसा पत्र डालें।

विशेष नोट—

अभी-अभी भूकम्पकी खोज शुरू की है, उससे थोड़ा-थोड़ा ज्ञात हुआ कि मई-जून १६८४ की अवधि पूर्णिमा - अमावस्याके आस-पासके दिनोंमें भयंकर भूचाल-भूकम्पकी सम्भावना है। यह भूकम्प सन १६१८ आसाम, १५-१-१६३४ विहार, १५-८-१६५० आसाम, ११-१२-१६६७ कोयना। जैसा लाखों लोगोंको प्रभावित कर सकता है। यह भी संभव है कि 'तुला' राशिमें गुरु भ्रमण करने पर पहले १६८२ में आवे, परन्तु खोज अधूरी है। सही तो भगवान् जानें।

ज्योतिष्मती प्रश्नोत्तर विभाग



पाठकोंकी बेहद मांग पर दो वर्ष पूर्व ज्योतिष्मतीके २३वें वर्षके प्रथमांकसे एक प्रश्नोत्तर विभाग स्थापित किया गया था। इसका कार्यभार अपने परम स्नेही जोधपुरके सुप्रसिद्ध ज्योतिषी पं० श्री अमरचन्द जी के सुपुत्र चि० महेशचन्दको सौंपा। प्रथम वर्षमें कूपनकी अवधि निर्धारित न थी, अतः चतुर्थ अंक प्रकाशित हो जाने तक भी प्रथम अङ्कके कूपन प्राप्त होते रहे। इस प्रकार प्रतिदिन औसतन आठ प्रश्न पत्र प्राप्त हुए। इस अत्यधिक कार्य-भारको ध्यानमें रखते हुए द्वितीय वर्षसे कूपनकी अवधि निर्धारित करनी पड़ी। इस वर्ष प्रतिदिन औसतन तीन प्रश्न पत्र प्राप्त होते रहे। प्रश्नोत्तर विभागसे अनेक पाठकगण लाभान्वित हुए हैं और कई प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए हैं। यह ज्योतिष्मतीके प्रति रुचि एवं प्रश्नोत्तर विभागकी कार्य कुशलताका प्रमाण है।

कुछेक प्रश्न पत्र बिना कूपन या बिना स्पष्ट पतेके होनेसे उत्तर नहीं दिया जा सका। इच्छुक सज्जन अपनी जन्मपत्री या प्रश्नपत्र लिखनेका समय लिख कर एक कूपनके साथ एक प्रश्न पूछ सकते हैं। इस अंकके कूपनकी अवधि ३० नवम्बर, १६८१ है। प्रश्नकर्ताको एकसे डेढ़ महीने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए, कारण प्रश्नोत्तर बिभागके संचालकके पास ज्योतिषका और भी कार्यभार अधिक मात्रामें रहा करता है।

—व्यवस्थापक 'ज्योतिष्मती'

त्रैमासिक व्यापार दिग्दर्शन

[लेखक—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन अर्धकाण्ड-वाचस्पति, प्रणेता- वार्षिक 'भविष्यदर्पण']
११६ कटरा स्ट्रीट, मैंनपुरी (उ०प्र०) पिन २०५००१

कार्तिक मास सं० २०३८ विक्रमी

इस मासमें ५ बुधवारसे सोना चांदी सर्व-धातुमें भयानक कोई चाल या घोर तेजी। १४ अक्टूबर ८१ को कृष्णा १ बुधवारीसे देशी घी आलू अरबी (घुइयाँ) प्याज लहसुन हल्दी सोंठ, तिलहन-दलहन खली गुआर गेहूँ चना मटर (बटला) तेज। अगले वर्ष कहीं-कहीं सूखा अकाल। आज सूर्य-चन्द्र पर कुण्डल १३-१४ अक्टूबरको देखने सुनने पर सभी खाद्य वस्तुओं में घोर तेजी। आज सूर्य-गुरु युति (युद्ध) से तूफानी चाल, सभी वायदे एकदम तेज, या एकदम मन्दे, अथवा १७ सितम्बरसे चली व्यापारकी वस्तुओंकी चाल बदलेगी। ता. १५ वृश्चिकांशे बुध-शुक्र कल रात तक कहीं-कहीं बादल वर्षा वायुवेग या शीत वृद्धि, सभी वस्तुयें गुड़ खांडके साथ मन्दी, ता. १६ तेजी। ता. १७ को श्री सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे वार व नक्षत्रात् ४ (भूखी अवस्था ४५ मुहूर्ता) माहेन्द्र मण्डलके नक्षत्रमें बुधसे युक्त होकर तुला राशिस्थ होंगे। बारफलसे ३ दिनमें देशी घी के साथ सभी खाद्य वस्तुओंमें तेजी। ता. १८ को भौम-हर्षल केन्द्रसे भारतीय सीमा पर महोत्पात, नेताओंका पतन व अवसान, यान दुर्घटना, हड़ताल, आन्दोलन, अग्निबिस्फोट, भूकम्पादिसे त्राहि-त्राहि होगी। वायदेकी वस्तुओंमें अकल्पित चाल, सायं ४ बजे सूर्य-बुधकी अन्तर्युति ता. १७ को चली वस्तुओं की लाइन ता. १९ को वड़े जोरसे बदल देगी, दैनिक मन्दीकी आशा है। ता. १९ को सायं ७ बजे वक्री पुनः कन्यायां बुध होकर शनि+गुरु+बुधयोग (कन्यांशे गुरु बुध ता. २२ तक वायुवेग, शीतवृद्धि, बादल वर्षा) ३० अगस्त से विपरीत चाल अथवा तेजी होगी। ता. २० को भौम पुष्यामृतसे रुई पाट रेशम ऊनके साथ सभी वस्तुएं तेज। ता. २१ को बुध-गुरुसे कहीं-कहीं बादल वायुवेग या शीतवृद्धि, सभी वायदे तेज। ता. २२ को १ बजे पुनवसौं ४ चरणे राहु (८ नक्षत्र पर्यन्त १६ मास तक) चन्द्रमा द्वारा रोहिणी शकट भेद होते रहने से कभी कहीं विश्व व्यापी सूखा तो कभी कहीं जल प्रलय (श्रीरामजी व श्रीसीताजीके जन्मकाल तथा महाभारतके युद्ध समय) महोत्पात युद्धादि काण्ड सभी वस्तुएं तेज। ता. २३को मन्दा, सायं ४-३५ बजे पूर्वोदयी शनि से कहीं वर्षा, कहीं सूखा, कल तेजी हो कर १ मास तक हर वस्तुमें मन्दा, लाख चपड़ा तेज। ता. २५ को पूर्वोदयी बुधसे बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि, रातको बुध-शुक्र त्रिरेकादश सभी वस्तुओंमें ऐसी लम्बी जोरदार चाल देगा कि व्यापारियों पर संकट आवेगा। ता. २६ को पूर्वोदयी गुरुसे बादल वर्षा वायु-वेग या शीतवृद्धि (यहां एक ही सप्ताहमें शनि-बुध-गुरुका एक साथ ही उदय होनेसे कहीं रक्तपात) ३० सितम्बरसे चली लाइन जोरशोरसे बदलेगी। ता. २७ को डेढ़ बजे शी० तुला गुरु तथा ढाई बजे मार्गी बुधसे

बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि महोत्पात सभी वस्तुओंमें भयानक चाल निकलेगी। ता. २७ को मंगलवारी दिवालीका फल—

मंगलबारी परै दिवारी।
हँसै किसान रोए भंडसारी ॥

अतः बहुत सोच समझ कर आगामी व्यापार करें। अब किसान ही उत्पादक तथा वही भंडसारी हो रहा है। संवत् १९६४, २००८-११-२४-३५ के शीतकालमें भयानक मन्दी आई थी। यहांसे किसी वस्तुकी चली लाइन दो मासतक भी चल सकती है। दिवाली तक चीनो ५)रु. तक बिक जानेकी आशा है। ता. २८ शुक्ला १ बुधवारीसे १ मासमें सोना चांदी सर्वधातु २००८-११-१४-३५ की भान्ति मन्दे, सभी खाद्य वस्तुएं मार्गशीर्ष मास तक मन्दीमें खरीदें, १४ अक्टूबरको लिखी वस्तुएं यहां भी तेज। फाल्गुन शुक्लाकी तेजीमें बेच देवें। शुक्ला १ बुधवारी शुक्ला ५ रविवार संयोगीसे रुई पाट सूत ऊन कार्तिकी पूर्णिमा अथवा उसके बादसे तेज। ता. २९ को गुरुवारा (४५ मुहूर्ता - उत्तरश्रृङ्गी) चन्द्रोदयसे अच्छा मन्दा। यदि आज सन्ध्या-फूले आकाश लाल पीला हो तो अगली उपज भी श्रेष्ठ होती है। शुक्ला ३ की वृद्धिसे गत वर्ष की भांति देशी घी उड़द मूंग मोंठ रमास (लोबिया) तुअर मन्दे होंगे। ता. ३० को सायं ४।६ बजे धनुषि शुक्र होते ही गुरुसे राशि परिवर्तन होनेसे गुड़ खांड शेयर्स संवत् २०२६ मार्गशीर्ष पूर्णिमाकी भांति तेज होनेकी आशा है। मुसलमानी सन् १४०२ हिजरीका प्रारम्भ शुक्रवारमें होनेसे सभी खाद्य वस्तुओंमें मन्दी सूचक है। २ नवम्बरको मूला शुक्रको चित्रा गुरुका च० वेध रातसे ता० ५ तक चांदी तेज, कहीं-कहीं वर्षा। कार्तिक शुक्ला ५ सोमवारी (शुभवारी) संवत् २००४-१७-२१-२४-३१-३५ की भांति आगामी शीतकालमें आकाशी कौन्सिलके जजमेण्टसे भयानक मन्दीसे किसी-किसी वस्तुके भाव आधे तक हो कर अगले वर्ष ६२% तक की तेजी होगी, सुपरीक्षित योग है। अविश्वासियोंको चुनौती है। किन्तु आज तेजी, ता. ४ को रातमें तुला बुध हो कर सूर्य+गुरु+बुध योग (तुलांशे गुरु-बुध ता. ७ को १ बजे तक) से बादल वर्षा उ.प्र हरयाना- पञ्जाब- राजस्थानमें होनेकी आशा है, ता. ६ विशाखायां रविसे शेयर्स तेज। ता. ७ को मन्दी वस्तुएं खरीदो। ता. ९ को रात में शी. चित्रा शनिसे वर्षा और तेजी विशेष होगी। ता. ११ कार्तिकी पूर्णिमा बुधवारी भरणी संयोगीके क्षयसे आगे खाद्य वस्तुओं में घोर तेजीकी आशा है। बाजारका प्रसङ्ग देखिए। रुई पाट रेशम ऊनमें मन्दा होगा। मीनांशे बुध-शुक्रसे ता. १३ तक बादल वर्षा भी कहीं-कहीं होगी।

मार्गशीर्ष मास सं० २०३८ विक्रमी

१४ नवम्बरको धनुषि बुध (भौम दृष्ट) को पुनर्वसौ राहुका च. वेध कल तक सोना चांदो मन्दे, खाद्य वस्तुएं तेज, ता. १६ को श्रीसूर्यदेव गत संक्रान्तिसे वारात् २ नक्षत्रात् ४ (४५ मुहूर्ता - सोती अवस्था) वायुमण्डलके नक्षत्रमें शनिसे तृतीयस्थ मंगलसे चौथे (राशि परिवर्तन करते हुए) शुक्र व बुध-गुरुके शुभ मध्यत्व प्राप्त करते हुए वृश्चिक राशिस्थ होंगे। फलतः सोना चांदी सर्व धातु तिलहन-दलहन गुड़ खांडमें तेजीका दौर चलायेंगे। यहीं

से तुला राशिमें गुरु-बुध योगसे बादल वर्षा, सोना चांदी सर्व धातुमें अच्छी तेजी आनेकी आशा है। दलहन रुई पाट, रेशम ऊन चावल सूत कागज कालीमिर्चमें भी तेजी होगी। ता. १७ को सायं पूर्वास्त बुधसे बादल वर्षा वायु वेग शीतवृद्धि सोना चांदी सर्व धातु रुईके साथकी वस्तुएं तेज। खाद्य वस्तुएं एकदम मन्दी अथवा चलती लाइन बदलेगी। आज ही २।५० बजे बुध-शुक्र त्रिरेकादश कोई ऐसी चाल देगा जिससे व्यापारियों पर सङ्कट आवेगा। ता. १६ को अनुभे रवि २।१३ बजेसे चांदीमें मन्दीका झटका, अन्य सभी वस्तुएं तेज, दलहनमें कभी-कभी मन्दा भी आ जाता है। कृष्णा ६ गुरुवारी गुड़ खांडमें तेजी कारक। ता. २० को धनुषि नेपच्यून, १६ जनवरी ८१ के पश्चात् पुनः आया जो वहां मन्दी, यहां तेजी ला सकेगा सचेत ! ता. २१ कृष्णा ११ शनिवार संयोगीसे अनावृष्टि, प्रजानाश, किसी नेताका पतन या अवसान, सभी खाद्य वस्तुएं तेज। ता. २३ को तुला राशिमें गुरु+बुध+चन्द्र योगसे बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि ता. २५ की रात तक होगी। ता २४ कृष्णा १३ को पहाड़ों पर वर्फ गिरे तो पृथ्वी धन-धान्यसे पूर्ण होगी। कृष्णा १४।३० को सूर्य-चन्द्र उ.प्र. हरयाना पञ्जाब राजस्थान म.प्र.में बदलोंमें ही रहें तो ४-५ मास बाद भयानक मन्दी, ता. २५ को वृश्चिके बुध हो कर सूर्य+बुध योगसे दलहन मन्दे, कक राहुका राश्यन्त गजबकी चाल देगा। ता. २६ गुरुवारी अमावस आगे मन्दी कारक है। ता. २८ को सायं स्वात्यां गुरु रुई सूत पाट रेशम ऊन कपड़ा कागज, कालीमिर्च सोना चांदी सर्व धातु तिलहन-दलहन गुड़ खांडमें मन्दीको लाइन देगा। ता. ३० को सायं मकरे शुक्र होकर केतु+शुक्र योगसे रुईके साथकी वस्तुएं मन्दी, चावल तेज, तिलहन-दलहन गुड़ खांड ज्वार बाजरा मक्का उपज खपतके आधार पर विशेष मन्दे अथवा तेज भी हो सकेंगे। बढ़े भावों सोना चांदी सर्व धातु बेचना उचित होगा।। १ दिसम्बर शुक्ला ५ मंगलवारीकी वृद्धिसे सभी वस्तुएं मन्दी। ता. २ को सायं ६।२४ बजे ज्येष्ठायां रविसे गेहूँ और मटर (बटला) तुअर मसूर चना गुड़ खांड हल्दी धनियां जीरा हींग तेज। दिसम्बर मासमें सर्दी कम पड़े तो शीतकालमें अच्छी वर्षा, अन्यथा वर्षा नहीं, अथवा कम होती है ! ता. ३ को शुक्ला ७ गुरुवारीसे सफेद वस्तुएं तेज, आज ही कन्या भौम होकर सनि + भौम योगसे वायुवेग ऋतु विपर्यय, कहीं घोर वर्षा ओलापात या पालेका जोर, २७ जुलाई ८० की भान्ति गुड़ खांडमें भयानक मन्दी। रुईके साथ की वस्तुएं तिलहन-दलहन ज्वार बाजरा मक्का में तेजी, सोना चांदी सर्व धातुमें कोई चाल। यह योग २२ जुलाई १६८२ तक वक्री-मार्गी स्थितिमें चलता हुआ गजबकी चाल देता रहेगा। ता. ५ ज्येष्ठायां बुध (३ बजेसे धनांशे, गुरु-बुध ता. ७ तक कहीं-कहीं बादल वर्षा) सभी वस्तुओंमें मन्दीका झटका। ता. ६ शुक्ला १० का क्षय (फाल्गुन शुकला तक शुक्ल पक्षमें तिथि क्षय संवत् २०३६ की भांति सीधी तेजी) देशी घी तेज होगा। ता. १० की रातको सूर्य-बुधकी वहियुति १६ नवम्बरसे वस्तुओं की चली लाइन बदले। मार्गशीर्ष पूर्णिमाको अपना जोरदार प्रभाव ता. ११में दिखावेगी।

ता. ११ से ता. १३ तक मीनांशे शुक्र-बुध कहीं-कहीं वर्षा लावेंगे। गुड़ खांड मन्दे होंगे।

पौष मास सं० २०३८ विक्रमी

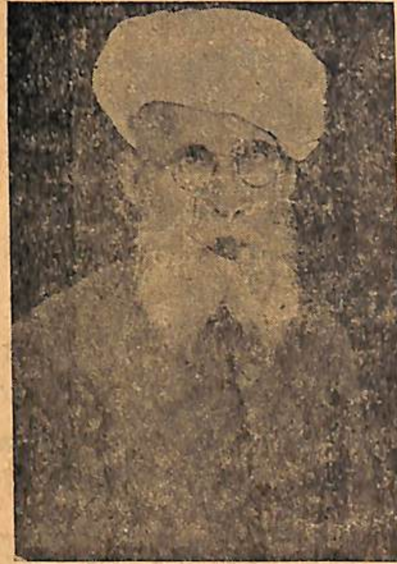
उ०प्र० हरयाना पञ्जाब राजस्थान म०प्र० में दक्षिणी वायु जितनी जोरसे चलेगी, तदनुसार वहां वर्षा होती रहेगी। पूर्वी वायु चलने पर सरसोंमें कीड़ा लग जाता है। १४ दिसम्बर को भौम दृष्ट धनुषि बुधसे शीत वृद्धि, २ दिन में शेयर्स रुई चांदी मन्दे, पेट्रौल तेज। ता. १५ को कृष्णा ५ मंगलवारीसे उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा भी हो तो संवत् २०१५-३५ की भान्ति अन्न तिलहनकी श्रेष्ठ उत्पत्तिसे आगामी बैशाख में अच्छा मन्दा होगा। आज ही मंगलवार की रातको श्रीसूर्यदेव गत संक्रान्तिसे वार व नक्षत्रात् ३ (३० मुहूर्ता-सोती अवस्था) वारुण मण्डलके नक्षत्रमें बुधसे युक्त मंगलसे संदृष्ट होकर धनु - राशिस्थ होंगे, फलतः शेयर्स तिलहन तेज, यदि उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा हो तो मन्दा, सभी खाद्य वस्तुएं मन्दी होंगी। ता. १६ से ता. २२ तक मन्दीकी आशा है। ता. २१ या कृष्णा ६।११ को प्रातः पूर्वमें मेघ गर्जना हो तो खेतीका नाश, तेजी। पश्चिमी वायु जोरसे चले तो भी तेजी आती है। कृष्णा ११ स्वाति नक्षत्रसे आगामी आषाढादि ४ मास में अच्छी वर्षा होगी। ता. २४ को हस्ते भौम से सभी वस्तुएं तेज, आज ही १०।३३ बजे शनि दृष्ट (दसवीं दृष्टि) मिथुने राहु तथा धनुषि केतु हो कर बुध+सूर्य+केतु योमसे सोना चांदी सर्व धातु रुई सूत ऊन कपड़ा रेशमी धागा पाट बारदाना कागज काली-मिर्चमें भयानक मन्दा, तिलहन-दलहन देशी घीमें तेजी की आशा है। ता. २६ पौषी अमावस शनिवार मूल संयोगीसे आगामी माघ शुक्लामें किसी महान् नेताके अवसानके साथ ही किसी कारण को ले कर सभी खाद्य वस्तुओंमें भयानकतम मन्दी की आशङ्का है। आजसे १० दिनमें उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा होगी तो तुरन्त ही अच्छा मन्दा चल पड़ेगा।

गुजराती पौष मास (ता. २७ दिसम्बरसे २४ जनवरी तक) में ५ रविवार होनेसे रस-कस तेज होगा। ता. २८ की रातको पूषायां रविसे तेजी, ता. ३० को रातमें उषायां बुधसे फल मन्दी। ता. ३१ को १ बजे बुध-शनि केन्द्र से तेजी, आज ही शुक्ला ५ शततारा नक्षत्र संयोगीसे वर्षा रहित चारों ओरकी वायु चले तो घोर तेजी, किन्तु बादल वर्षा हो तो आगामी आषाढ़ कृष्णा ४ से एकादशी पर्यन्त उसी क्षेत्रमें वर्षा भी होगी। १ जनवरी ८२ का प्रारम्भ गुरुवारकी रातको होनेसे यह वर्ष गुरुत्वपूर्ण अध्यापक व विद्यार्थी वर्गकी समस्याओंका समाधान करावेगा। जब कभी जनवरी मासमें अधिक मन्दे हो जाते हैं तो मार्च मासके अन्तसे विशेष तेजीका दौर चला करता है। आज ही मकरे शुक्र-वक्रीसे बादल वर्षा वायुवेग, ओला या पाला प्रकोपसे शीत-वृद्धि। ढाका - पावना - बगुडा - राजशाही - फरीदपुर - गौड़ - कर्नाटक विदर्भ प्रान्तोंमें राजा-प्रजाको भय, सोना चांदी सर्वधातु, रुई पाट रेशम सूत ऊन रेशमी धागा कपड़ा कागज़ कालीमिर्च तेज। आज मन्दीके झटकों में मन्दी वस्तुएं खरीदें। किन्तु शुक्ला ६ शुक्रवारी रुईके साथकी वस्तुओंको १ मास तक मन्दीका संकेत कर रही है। शुक्ला ८ को रेवती नक्षत्रसे यदि उ०प्र० हरयाना पञ्जाब

म०प्र० राजस्थानमें आज बादल रहें, तो खाद्य वस्तुओंका स्टाक नहीं रखें, और न करें। आज जो-जो लक्षण जहां भी आकाशमें होंगे, वे ही आगामी पूर्णिमाको ग्रहण-काल में भी दिखाई देंगे। ता. ६ शुक्ला ११ को कृत्तिका नक्षत्र होनेसे सोना होली तक तेज रहे. गुड़ खांड चमड़ा मूंगफली चना ग्वार किराना लालमिर्च मसूर आगे आषाढ़ मासमें तेज। ता. ८ श्रवणे बुधसे सभी वस्तुओंमें मन्दीका झटका। पश्चिमी हिन्दमें विग्रह किन्तु शुक्ला १४ के क्षयसे सभी खाद्य वस्तुएं तेज। ता. ६ पौषी पूर्णिमाको शनिवार पुनर्वसु नक्षत्र (मिथुन राशि) में खग्रास (पूरा) चन्द्र-ग्रहण रातको ११।४४ बजे पूर्व दिशासे स्पर्श रातको ३।६ बजे पश्चिम दिशामें मोक्ष होगा। मास फलसे रस-कस रुई कपास घी गुड़ खांडके संग्रहसे २-३-५-६ मास तक लाभ। नक्षत्र व राशिफल से ज्वार बाजरा अफीम पोस्ता किराना व काली वस्तुयें कालीमिर्च लोहा गेहूँ तिलहन-दलहन उड़द घी मन्दीमें संग्रह करें। शनिकी दृष्टिसे काली वस्तुयें सोना चांदी सर्व धातु तेज, किन्तु गुरुकी दृष्टिसे भी सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी। ग्रहणसे ४-४ दिन पहले पीछे बादल चाल, विशेष कर ग्रहण कालमें बादल हों, जिससे ग्रहण दिखाई ही न दे तो सभी अशुभ फलोंका नाश हो कर खाद्य वस्तुमात्रमें घोर मन्दा चल पड़ेगा, सुपरीक्षित है। लाभ-हानिका पूर्ण उत्त दायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जान कर बाजारकी स्थितिको भी देखते हुए व्यापार करें।

दिवंगत दैवज्ञका जीवन परिचय—

दैवज्ञभूषण पं० श्रीमीठालालजी व्यास



जन्म— संवत् १९१६ वि० कार्तिक कृष्ण १०, जोधपुर।

स्वर्गवास— संवत् २००० वि० ज्येष्ठ कृष्ण ६, जोधपुर।

जाति— पुष्करणा व्यास।

पिता— श्री महीधरदास जी व्यास (जो एक प्रसिद्ध व्यापारी थे)। मीठालालजी के १६वें वर्षमें ही पिता स्वर्गवासी हो गए।

पुष्करणा जातिका इतिहास (टॉड राजस्थान की भूल) पर बीकानेर पुष्करणा ब्राह्मण-समाजने 'पुष्करणा कुल कमल-दिवाकर'' उपाधिसे सुशोभित किया और आपकी अद्भुत प्रतिभा एवं ज्योतिश्शास्त्रीय शोधसे प्रसन्न हो कर अनेक धार्मिक संस्थाओंने आपको 'दैवज्ञभूषण' 'ज्योतिषरत्नादि' मानद उपाधियोंसे अलंकृत किया।

रचित पुस्तकें—

वृहदर्घ्यमार्तण्ड, सर्वतोभद्र चक्र (त्रैलोक्य दीपक), वृष्टि-प्रबोध (भारतका वायु शास्त्र), संवत्सर सुबोध, संक्रान्ति फल-प्रकाश, ग्रहणफल, स्वर सुबोध, ग्रह योग, ग्रह प्रभाव, भावी फल, एवं संध्या मीमांसा। (अब ये सब ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। हम चाहते हैं कि ये पुनः प्रकाशित हों)।

पुत्र न होनेसे अपने भ्रातृज पुरुषोत्तम लाल व्यासको गोद लिया, जो कुशल राजनीतिज्ञ एवं चक्षुरोग विशेषज्ञ थे। उनका कुछ वर्ष पूर्व स्वर्गवास हुआ। दो पौत्र चि० नन्द-किशोर एवं जुगल-किशोर हैं। मृत्युके कुछ दिन पूर्व आपने जोधपुरके पं० श्री अमरचन्द ज्योतिषी को उनकी योग्यता एवं सेवाके कारण अपना पट्ट-शिष्य घोषित किया। इससे पूर्व भी स्व० श्री पं० बिहारीलाल शर्मा दैवज्ञ, पं० छत्रधर शर्मा आदि अनेक ज्योतिर्विदोंने आप से अर्धकाण्डका ज्ञान प्राप्त करके पर्याप्त यश वैभव प्राप्त किया। अभी भी उनके कुछ शिष्य विद्यमान हैं, उन्हें चाहिए कि उनकी ग्रन्थ-सम्पत्ति प्रकाशित करवाएं।

आजसे लगभग ४८ वर्ष पूर्व मैंने स्वदेश

मेवाड़ आते हुए 'ब्यावर'में स्व० श्रीमीठालालजी व्यासके दो बार दर्शन करके शास्त्रीय चर्चा का सुअवसर प्राप्त किया था। उनकी तेजस्वी भव्यमूर्ति, मिलनसारिता एवं सहृदयताकी अमिट छाप मुझ पर पड़ी। उन दिनों मैं 'श्रीमार्त्तण्ड-पञ्चाङ्ग' प्रकाशनके कार्यमें अत्यधिक व्यस्त था, अतः व्यासजीके अनुग्रहपूर्ण आग्रह करने पर भी मैं अधिक समय उनके पास ठहर नहीं पाया। इसका मुझे आज भी खेद है। ४० वर्ष पूर्व संवत् १९९८ विक्रमीमें 'श्रीस्वाध्याय' का प्रथम अङ्क मैंने श्रद्धेय व्यासजीको भेजा तो वे बहुत प्रसन्न हुए और अभिनन्दन आशीर्वाद के रूपमें ये पंक्तियां लिखीं—

"श्रीस्वाध्याय को आद्योपान्त देखनेसे विदित हुआ कि यह पत्र ज्योतिर्विज्ञानके क्षेत्रमें भी काफी ख्याति प्राप्त कर सकेगा ... ... ज्योतिषियोंका अच्छा उपकार किया है अब अंग्रेज़ी रैफलज एफैमेरीज एलमानाक की आवश्यकता ही नहीं रहती।"

सर्व प्रथम आपकी उक्त शुभ सम्मति प्राप्त हुई थी इसे मैंने 'श्रीस्वाध्याय' प्रथमवर्षके दूसरे अङ्क (सं० १९९८ वि० पौष मास) में पृष्ठ ५ पर अक्षरशः प्रकाशित की थी, अस्तु।

आज अब स्व० व्यासजी जैसे ज्योतिर्विज्ञानके अनुसन्धानमें जीवन समर्पित करने वाली लगनके प्रतिभाशाली विद्वानोंके दर्शन नहीं होते।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

संरक्षक सहायकोंका संक्षिप्त परिचय

गताङ्कमें लिखा था कि 'रजतजयन्ती अङ्क' में ज्योतिष्मतीके संरक्षक एवं सहायकोंका सचित्र-परिचय प्रकाशित करेंगे। पत्रिकाके सभी संरक्षक सहायक आत्मश्लाघासे दूर रहने वाले उदारमना महानुभाव हैं, अतः प्रकाशनार्थ चित्र नहीं भेजे। हमारे परम स्नेही स्व० सेठ श्री हरिरामजी साबू का 'ज्योतिष्मती' पर अनन्य स्नेह रहा, हमारे अनुरोध करने पर भी कभी उन्होंने अपना नाम तक संरक्षकोंमें प्रकाशित करनेकी स्वीकृति नहीं दी। गत वर्ष उनके दिवंगत होने पर श्रद्धाञ्जलि रूपमें उनका सचित्र परिचय 'ज्योतिष्मती' २३/४ में पृष्ठ १३-१६ पर दिया था। अस्तु।

ज्योतिष्मतीके संरक्षक

(१) भू०पू० हिज हाईनेस महाराजा श्री गजसिंहजी बहादुर, जोधपुर (राजस्थान)—

आप 'ज्योतिष्मती' के सर्व प्रथम सम्मान्य आजीवन संरक्षक हैं। बाल्यावस्थामें ही आपको पितृवियोग हो गया था। अपनी ममतामयी आदर्शजननी (राजमाता कृष्णा कुमारीजी भू०पू० संसद सदस्या) के संरक्षण में आपने उच्चशिक्षा (विदेशमें) प्राप्त की। राज्यके विलय होने पर भी

न केवल जोधपुर नगर ही, अपितु सम्पूर्ण मरुधराकी प्रजाका आज भी राजमाता और भू०पू० महाराजाके प्रति हार्दिक स्नेह विद्यमान है। विगत ३ वर्ष तक आप वेस्टइण्डीज ट्रिनीडाडमें भारतीय राजदूतके सम्मानित पद पर रहे। अपने सरल सौम्य स्वभावके कारण उस देशकी प्रजामें आप अत्यधिक लोकप्रिय सिद्ध हुए। विगत १७ वर्षसे आपके शुभ नाम पर जोधपुरका 'श्रीगजेन्द्रविजय-पञ्चाङ्ग' भी हम प्रकाशित कर रहे हैं।

(२) स्व० श्री हरिरामजी साबू, जयपुर (राजस्थान)—



आपका 'ज्योतिष्मती' पर आरम्भसे ही जो अनन्य स्नेह रहा है वह अविस्मरणीय है। साबूजी ने अपने जीवनकाल में अनेक पारमार्थिक कार्य किए हैं, उनमें एक यह भी है—जयपुर में आपने एक मन्दिर और आगरारोड़ पर हरिराम साबू राजकीय चिकित्सालय (हस्पताल) ५ लाख रु० लागतका बनवाया है, जिससे ग्रामीण जनताको विशेष लाभ हो रहा है। अब हरिराम साबू चेरीटेबल-ट्रस्टकी ओरसे छः-सात लाख रुपए की लागतसे एक धर्मशाला और स्कूल बन रहा है। स्व० श्री साबूजीकी धर्मपरायणा लक्ष्मीरूपा पत्नी श्रीमती गोमती देवी जी भी एक आदर्श शान्त गम्भीर उदार विचारकी महिलारत्न हैं। मातृस्नेहसे ओतप्रोत आपका निर्मल स्नेह आज भी हमें भाव-विभोर बना देता है।

(३) श्री सी. धर्मीचन्दजी जैन, सोलन (हि०प्र०)—

आप हिमाचल कण्डक्टर्स सोलनके संस्थापक सञ्चालक हैं। राजस्थानके सफल उद्योगपति हैं। आप एक धर्मनिष्ठ उदारचरित सरल सौम्यप्रकृतिके मिलनसार निरभिमान गुणग्राही सज्जन हैं। महतपुर, चण्डीगढ़, परवाणूमें भी आपके द्वारा कई उद्योग सञ्चालित हो रहे हैं। राजस्थानके नाते से भी ज्योतिष्मती-परिवारसे आपका आत्मीय स्नेह है।

(४) श्री द्वारकाप्रसादजी साबू, पटना (बिहार)—

आप स्व० श्री हरिरामजी साबू के सुपुत्र हैं। कार्यदक्षता, धार्मिकता, उदारता, सरलता और गुणीजन सेवाके सभी सद्गुण आपमें पैतृकसम्पत्तिके रूपमें विद्यमान हैं। विगत ३ वर्षसे आपने तो संरक्षकत्व स्वीकार किया ही है, साथ ही अब आपने स्वर्गीय पिताश्रीकी वार्षिक संरक्षक द्रव्यराशि भी स्वयं देकर पितृभक्तिका आदर्श उपस्थित किया है। पटनामें मुजफ्फरपुर होजरी इण्डस्ट्रीज एण्ड एजेन्सीज़ प्रायवेट लिमिटेडके आप संस्थापक संचालक हैं। कलकत्ता, रांची, मुजफ्फरपुर, गोहाटीमें भी आपके उद्योगकी शाखाएं हैं।

(५) श्री प्रभुदयालजी अग्रवाल, कलकत्ता—

आप ट्रान्सपोर्ट कार्पोरेशन आफ इण्डिया लि० कलकत्ताके चेयरमेन हैं। राजस्थानके यशस्वी सफल उद्योगपति हैं। धार्मिकता उदारता, निरभिमानता और सज्जनगुणीजन सेवाके आप प्रतीक हैं। ३ वर्ष पूर्व आप सोलन ज्योतिष्मती-निकेतनमें पधारे थे। प्रथमपरिचयमें ही आपके धार्मिक सरल सौम्य स्वभावने हमें प्रभावित किया।

(६) डा० अमरनाथ जैन, सोलन (हि०प्र०)—

आप भारतीय हिन्दू संस्कृतिके अनन्य उपासक सदाचारनिष्ठ सफल चिकित्सिक हैं। हमारा इनसे लगभग ५४ वर्ष पुराना स्नेह सम्पर्क है। रावलपिण्डीके प्रसिद्ध जैन परिवारमें इनका जन्म हुआ था। गत ३५ वर्षसे सोलनमें डेण्टिस्ट और होम्योपेथिकके डाक्टरके नामसे प्रसिद्ध हैं। हिन्दी में इन्होंने अपने अनुभवके आधार पर एक "होमियोपैथिक चिकित्सा रत्न" नामक पुस्तक लिखी जो अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुई है।

❧ ज्योतिष्मतीके सहायक ❧

(१) श्रीमती तारामणी बंसल, रूपनगर, दिल्ली—

यह उदार विचारकी आदर्श गृहिणी हैं। श्री सेठ मीनारामजी गोयलकी सुपुत्री एवं श्री बनवारीलालजी बंसलकी धर्मपत्नी हैं। प्रत्येक धार्मिक सामाजिक सार्वजनिक सेवाकार्योंमें भाग लेती हैं। गृहस्थके समस्तकार्य अतिथिसत्कार और परिवार सेवामें स्वयं जुटी रहती हैं। इनका ज्योतिष्मती-पारिवारसे परिवारिक स्नेह सम्बन्ध है।

(२) श्री शाह तेजराज कस्तूरचन्द जैन, जमखण्डी (कर्नाटक)—

आप धार्मिक विचारोंके गुणग्राही वयोवृद्ध सज्जन हैं। ज्योतिषमें आपकी विशेश श्रद्धा है। जमखण्डी आनेका कई बार आपने स्नेहामंत्रण दिया। पर हम जा न सके। आपसे पत्रव्यवहारसे ही परिचय है, साक्षात्कार नहीं हुआ।

(३) श्री बनवारीलाल-प्रेमचन्द, कूचा महाजनी, दिल्ली—

श्री ला० बनवारीलालजी से हमारा ३५ वर्ष पुराना स्नेहसम्पर्क है। आप धार्मिक विचारके सरल सहृदय सफल वस्त्र-व्यवसायी हैं। कूचा-महाजनी चांदनी-चौकमें कपड़ेकी थोक मालकी कोठीमें ऊपर अतिथि निवास है। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री प्रेमचन्द गाडोदिया मिलनसार समाजसेवी सहृदय नवयुवक हैं, गत वर्षसे आप दिल्लीके सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक श्रीगौरीशंकर मन्दिर ट्रस्टके सचिव चुने गये हैं। ज्योतिष्मती-परिवार पर आपकी अनन्य श्रद्धाभक्ति है।

(४) श्री सीताराम गर्ग, अम्बाला छावनी—

आप भारतीय संस्कृतिके श्रद्धालु सहृदय उदार विचारके गुणज्ञ सज्जन हैं। बैजनाथ अशर्फीलाल फर्मके आप अधिपति हैं। अम्बाला छावनीमें टेण्ट तम्बू आदिका आपका बहुत बड़ा व्यवसाय है। चण्डीगढ़, बम्बई और जयपुरमें आपकी शाखाएं हैं।

(५) श्री नागरमल गोयल, सोलन (हि०प्र०)—

आप भारतीय हिन्दू संस्कृतिके अनन्य भक्त नवयुवक हैं। धार्मिक सामाजिक साहित्यिक गतिविधियोंमें आप विशेष रस लेते हैं। सोलन नगरके आप प्रमुख संघचालक हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमदेवी भी धार्मिक सामाजिक कार्यों और महिला संगठनमें विशेष रुचि लेती हैं।

(६) श्री रामनिवास लाखोटिया अरांई (राजस्थान)—

आप धार्मिक वृत्तिके माहेश्वरी नवयुवक हैं। सनातनधर्म और ज्योतिर्विज्ञानमें आपकी विशेष श्रद्धा है। किशनगढके समीप अरांई (राजस्थान) में आपका निजी व्यवसाय है।

आभार प्रदर्शन

संरक्षक सहायक और आजीवन सदस्य बन कर जिन सज्जनोंने सहयोग दिया उन सबकी 'ज्योतिष्मती' आभारी है। विद्वान् लेखकोंकी ज्योतिष्मती सर्वाधिक आभारी है। ऐसे लेखकोंमें प्रमुख हैं—डा० शशिधर शर्मा वाचस्पति, डा० रुद्रदेव त्रिपाठी, कवि-पुण्डरीक श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र, डा० वेदप्रकाश शास्त्री, डा० भवानीशङ्कर त्रिवेदी, भक्त श्रीरामशरणदास जी, श्री पं० चन्द्रकान्त-बाली शास्त्री, काव्यतीर्थ श्री पं० चन्द्रभूषणजी शास्त्री, श्री विक्रमसिंह जी, श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा, श्री पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा, विद्यावाचस्पति श्रीगणेशदत्तजी 'इन्द्र', डा० भूपसिंह राजपूत, श्री श्याम कसेरा 'कुलसेवक', श्री केवल आनन्द जोशी, श्री मोतीलाल जैन ज्योतिषी, श्री राजाराम जैन ज्योतिषी, श्री ओंकार नाथ त्रिवेदी, श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त, श्री ओंकार प्रसाद शर्मा ज्योतिषी, श्री पं० शङ्करलाल गौड़ 'शम्भुकवि' आदि।

जोधपुरके प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् श्री पं० अमरचन्दजी ने ५० नये ग्राहक बनाए, इसी प्रकार सुप्रसिद्ध जातिसमाजसेवी श्री दुर्गाशंकरली सांखीने भी जोधपुरमें कई आजीवन सदस्य बनाये। एवं श्री हरिश्चन्द्रजी खन्ना आई०ए०एस०, श्री मोहनलालजी मूंदड़ा, श्री नवीन कुकार जैन, श्री रमेशचन्द्र गुप्ता और श्री कुलदीप शर्माने इस अङ्कके लिए विज्ञापन जुटानेमें पर्याप्त सहयोग दिया अतः 'ज्योतिष्मती' इन सब सज्जनोंकी विशेष अभारी है।

मंगल-शनि युतिका प्रभाव

[डॉ० हरिकृष्ण छँगाणी, एम.ए.,पी एच डी., फलोदी (राज०)]

मंगल-शनिकी युति कन्या राशिमें दि० ३-१२-१९८१ से जुलाई १९८२ तक होगी। यह युति सर्वदा अशुभ मानो गई है। अतः इसका प्रभाव विश्व व अनेक जातकों पर बहुत ही बुरा होगा। मेष, वृषभ, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ व मीन राशि व लग्नमें उत्पन्न जातक अधिक प्रभावित होंगे। साथ ही कृत्तिका, आर्द्रा, मृगशिर, पुनर्वसु, हस्त, विशाखा, मघा, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़, पूर्वाषाढ़, शतभिषा, धनिष्ठा व उत्तराभाद्र नक्षत्रोंमें उत्पन्न जातकोंके लिए भी अशुभ रहेगी। जिन जातकोंको मंगल, शनिकी महादशाएं अथवा अन्तर्दशाएँ चल रही हैं, वे भी किसी न किसी रूपमें इस युतिसे भयंकर रूपसे प्रभावित होंगे।

यह युति विश्व-शान्तिमें बाधक होगी और जन-धनका भारी विनाश होगा। तूफान दुर्घटनाएं, प्रकृति-प्रकोप, अकल्पित उलट-फेर तथा विध्वंसात्मक गतिविधियाँ बढ़ेंगी। भारत को सीमाओं पर तनाव तथा युद्धकी ज्वालाएँ भड़क उठनेके योग हैं। अतः हमारी सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

विवाहकारक—

कामाक्षा वरद स्तोत्र

[रचयिता :—कविपुण्डरीक श्री सम्पूर्ण दत्त मिश्र M.A. (Sans), M.A. (English)]

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ ध्यानम्—

कामाक्षिकामक्षिरुचा दिशन्तं
कामार्थसद्बुद्धिसमर्पणाय
सौभाग्यलक्ष्मी सुखदं महेशं
कामार्त्तवामावरदं नमामि ॥ १ ॥

अर्थ :—मैं कामार्त्त लड़के लड़कियोंको वर देने वाले, सौभाग्यलक्ष्मी सुख देने वाले उन महेश (कामाक्षावरद शिव) को प्रणाम करता हूं जो भगवती कामाक्षाको आंखसे इंगित कर यह आदेश दे रहे हैं कि भई, चलो इन लोगोंको कामसुख, अर्थसुख और सद्बुद्धि (धर्मसुख) दे दो ॥ १ ॥

अथ संप्रार्थना

धर्मकामार्थनाथाय कामाक्षावरदाय ते ।
विद्याश्रीबुद्धिसौभाग्यकुलसौख्यकृते नमः ॥१॥

अर्थ :—मैं आप ऐसे कामाक्षावरदको प्रणाम करता हूँ जो धर्म, काम और अर्थके नाथ हैं तथा विद्या, लक्ष्मी, बुद्धि, सौभाग्य, कुल और सुख दे सकते हैं ॥ १ ॥

कामाक्षिके वरदगेहिनि योगदक्षे
दुर्भाग्यलेखलघुलुम्पनलम्पटा त्वम् ।
धर्मार्थकामजसुखाय समुत्सुकोऽहं
सौभाग्यभावनपरे शरणं त्वमेव ॥ २ ॥

अर्थ :—हे कामाक्षे ! आप वरद (शिव) की धर्मपत्नी हैं, योगमें निपुण हैं और दुर्भाग्य के लेखोंको शीघ्र मिटा डालनेमें रस लेने वाली हैं । मैं धर्म, अर्थ और कामके सुखको मरा जा रहा हूं । हे सौभाग्यको जन्म देने वाली, आप ही मुझे बचा सकती हैं ॥ २ ॥

याः पाणिग्रहणोत्सुका युवतयो बाधाविलम्बार्दिता
ये चाप्यत्रनरा विवाहविधिना वाञ्छन्ति नारीमणीन्
तास्तान् योजयते वरैर्युवतिभिर्वैवाहिके मंगले
कामाक्षावरदायते बहुविधश्रीसौख्यदात्रे नमः ॥३॥

अर्थ :—ऐसी अनेक विवाह चाहने वाली युवतियां हैं जिनके विवाहमें या तो कोई बाधा पड़ रही है या देर हो रही है । ऐसे अनेक लड़के हैं जो श्रेष्ठ लड़कियोंसे विवाहके लिये तरस रहे हैं । मैं अनेक प्रकारके सुख और लक्ष्मी कृपा प्रदान करने वाले आप ऐसे कामाक्षावरदके लिये प्रणाम करता हूं जो उन युवतियोंको वर और उन लड़कोंको मंगल विवाहके द्वारा बहुएं प्रदान करते हैं ॥ ३ ॥

अथ कामाक्षावरदाष्टकम्

सुखावाप्तौ बाधा विकृतविधिलेखापरिणता—
स्तथा चासौ लेखा दुरितमतिदुष्कर्मजनिता ।
तदालोच्यापि त्वामुपचरति लोकोऽतिलुलितो
यतस्त्वं कामाक्षे निटिलकुलिपीलोपरसिका ॥१॥

अर्थ :—दुर्भाग्यके लेख सुखप्राप्तिमें बाधा बनते हैं और ये लेख पापबुद्धि और दुष्कर्मोंके परिणाम होते हैं । हे कामाक्षे ! इस बातको जानते हुए भी ये जो लोग आपकी सेवा पूजा को लपक रहे हैं इसका एक ही कारण है कि

आप दुर्भाग्यकी लिपिको मिटानेमें रस जो लेती हो ॥ १ ॥

दृढं दुर्वृत्तानामपि परमसौभाग्यमनिशे
भविष्यद्भीत्या ते यदि तव सपर्यां विदधते ।
वराकी पूजा का समुपचितपापोपकलिता
समक्षं कामाक्षे त्वदुपकृतिपक्षप्रतिपदाम् ॥ २ ॥

अर्थ :—बड़ेसे बड़े पापियोंका भी यह परम सौभाग्य समझा जाना चाहिए यदि वे और कुछ नहीं तो भविष्यके डरसे ही आपकी पूजा-सेवामें लग जायं। हे कामाक्षे ! आपके उपकारोंके पक्षोंकी प्रतिपदाओंकी तुलनामें उनके संचित पापोंसे संजोई बेचारी पूजा कहां ठहरती है? अर्थात् आप उन पर भी इतनी कृपा कर बैठती हो कि उसके सामने उनकी पूजा बेचारी कुछ भी नहीं है ॥ २ ॥

विपाके लिपाका विगुणवति दृष्टाः शतमुखै–
र्विनिन्दिन्तो देवान्निकृतिनिशिते क्लेशनिवहे ।
प्रशस्तास्ते येषां नरकपतितानामपि मतिः
कलां ते कामाक्षे धृतिललितशान्ता प्रणमति ॥३॥

अर्थ :—दुर्भाग्यका फल आरंभ होने पर ऐसा दुर्भाग्यफल जिसमें क्लेश पर क्लेश आ रहे हों और अपमानसे कड़वाहट बढ़ रही हो—सैकड़ों प्रकारसे गधे देवताओंको गाली देते देखे जा सकते हैं। हे कामाक्षे! उन लोगोंको मैं अच्छा मानता हूं, नरक भोगते हुए भी जिनकी बुद्धि धैर्यके कारण शान्त और ललित बनी आपकी कलाको प्रणाम करती है ॥३॥

कृपालाकामाक्षे प्रकृतिकमनीया तव कला
सुखोपान्तं प्रीत्या वहति विकलान् किल्बिषकुलैः ।
बहुत्राप्यालक्ष्य प्रथितसुखदायाः सुखकृति–
र्नमन्ति त्वां ये नो नहि तदभिधाने मम रुचिः ॥४॥

अर्थ :—हे कामाक्षे, कृपाका पोषण करने वाली, प्रकृतिकमनीय आपकी कला पापोंसे छटपटाते लोगोंको भी प्रेमसे सुख तक पहुंचा देती है। मानी हुई सुख देने वाली आपके सुख देनेके अनेक उदाहरण देखकर भी जो लोग आपको प्रणाम नहीं करते मैं उनका नाम भी लेना नहीं चाहता ॥ ४ ॥

प्रमाथे पापानाममितगतिकानामपि च ते
सुदाक्ष्यं संवीक्ष्य प्रमथपतिपत्नि ! श्रितिमितः ।
रमे योगक्षेमं तव पदि निधायाहमधुना
कला ते कल्याणी घनविपदि जागर्ति जगताम् ।५।

अर्थ :—हे प्रमथपतिपत्नि ! बड़े विकट पापोंको नष्ट करनेमें भी आपकी प्रवीणताको देखकर ही मैं आपकी शरणमें आया हूँ। अब मैं अपने योगक्षेमका भार आपके चरणों पर छोड़कर निश्चिन्त रहता हूँ। लोगोंके बड़ेसे बड़े संकटोंमें भी कल्याण करने वाली आपकी कला कभी भूल नहीं करती ॥ ५ ॥

नितान्तं नैराश्यं कियदवनिजातं परिभवे–
न्न चेल्लब्धा लोके क्वचिदपि समुद्धारसरणिः ?
परं नः सौभाग्यादपरिचितपुण्योशफलिता
वरीदानोद्दामा वरदवरवामा विजयते ॥ ६ ॥

अर्थ :—लोगोंको कितनी निराशा हो, यदि उद्धारका कोई मार्ग न हो ? पर हमारे सौभाग्यसे, किन्हीं अपरिचित पुण्यांशोंके फल से भगवान् वरदकी श्रेष्ठ पत्नीने हमें शरण देनेका बीड़ा उठा रखा है। ॥ ६ ॥

मयाभिज्ञायापि स्थितिमनुचितं भूरि विहितं
कथा का पुण्यानां परिणमनवेलाफलवताम् ?
अतोऽहं निर्दम्भं जननि ! पतितस्त्वच्चरणयो–
र्दयार्थी त्वद्द्वारा वरदवरलाभाय विकलः ॥ ७ ॥

अर्थ :—मैंने स्थितिको समभकर भी बहुत कुछ अनुचित काम किये हैं। फिर समय पर फल देने वाले पुण्योंका तो प्रश्न ही कहां उठता है ? इसलिये माँ, मैं दम्भ छोड़कर दया के लिये आपके चरणोंमें गिर गया हूं। आप भगवान् वरदसे कह दीजिए कि वे मुझे वर दें। ॥ ७ ॥

विवाहोत्को लोकः सपदि वरपत्नीसुखमलं
पतीयन्ती नारी पतिसुखमवाप्नोति तरसा।
ततो दुर्भाग्याङ्कप्रकटपरिणामापि जगती
सकामा कामाक्षे वरदरमणि त्वां प्रणमति ॥ ८ ॥

अर्थ :—विवाहके लिये उत्सुक पुरुष शीघ्र श्रेष्ठ पत्नीका पूर्ण सुख प्राप्त करते हैं और पति चाहने वाली नारियां तत्काल पतिसुख प्राप्त करती हैं। इसलिये भगवान् वरदके मन में बसने वाली हे भगवती कामाक्षे ! वे लोग भी कामना लेकर आपको प्रणाम करते हैं जिनके दुर्भाग्यके लेखोंके परिणाम स्पष्ट रूपसे सामने आ रहे हैं ॥ ८ ॥

वसुरामाभ्रनेत्राब्दे श्रीगंगादशमीगुरौ।
कृतवान्मिश्रसम्पूर्णः कामाक्षावरदाष्टकम् ॥ १ ॥

अर्थ :—विक्रमसंवत् २०३८ में गंगा दशहरा गुरुवारको सम्पूर्णदत्त मिश्रने इस कामाक्षावरदाष्टककी रचना की ॥ १ ॥

स्त्रीपुंल्लोको विवाहार्थी धर्मकामार्थचोदितः।
पठित्वा सफलो भूयात्कामाक्षावरदाष्टकम् ॥ २ ॥

अर्थ :—धर्म, काम और अर्थसे प्रेरित, विवाह चाहने वाले, स्त्री-पुरुष इस कामाक्षा-वरदाष्टकका पाठ करके सफल हों ॥ २ ॥

जपध्यानानु संप्रार्थ्य कामाक्षावरदाष्टकम्।
यः पठेद्विधियोगेन कामाक्षा वरदायते ॥ ३ ॥

अर्थ :—जप और ध्यानके बाद संप्रार्थना करके जो विधियोगसे इस कामाक्षावरदाष्टकका पाठ करेगा उसको भगवती कामाक्षा वरदान देने वाली हो सकती है ॥ ३ ॥

भक्तस्याप्यलसस्यापि जपस्तोत्रपरात्मनः।
धाता धर्मार्थकामानां कामाक्षावरदः शिवः ॥४॥

अर्थ :—चाहे मनसे या विना मनसे, जो भी जप और स्तोत्रपाठ करता रहता है उसके धर्म, अर्थ और कामके रक्षक भगवान् कामाक्षा-वरद बन जाते हैं ॥ ४ ॥

वरं विवाहकामाय स्त्रीपुंल्लोकाय निर्मितम्।
सर्वकामहितं नित्यं कामाक्षावरदाष्टकम् ॥ ५ ॥

अर्थ :—चाहे मैंने विवाह चाहने वाले स्त्री-पुरुषोंके लिये इस कामाक्षावरदाष्टकका निर्माण किया है, परन्तु यह सदा सब कामोंमें हितकारक सिद्ध होगा ॥ ५ ॥

नमः शिवाय कामाक्षावरदाय नमो नमः।
नमः शिवाय बालेन्दुगंगाध्यायनमो नमः ॥ ६ ॥

अर्थ :—भगवान् कामाक्षावरदके लिये बार-बार प्रणाम। माथे पर बालचंद्र और गंगा धारण करने वाले भगवान् शिवको बार-बार प्रणाम ॥ ६ ॥

नमः शिवाय कामेशीप्राणेशाय नमो नमः।
नमः शिवाय सम्पूर्णकामेशाय नमो नमः ॥ ७ ॥

अर्थ :—भगवती कामेशीके प्राणेश भगवान् शिवको बार-बार प्रणाम। सब कामनाओंके स्वामी (सम्पूर्णदत्त मिश्रकी कामनाओंके स्वामी) भगवान् शिवको बार-बार प्रणाम ॥७॥

★

विवाहमुहूर्त्त निकालनेके दोहे

[प्रेषक :—पं० महेशचन्द ज्योतिषी, जोधपुर]

[जैनमुनि श्रीमतिकुशल सूरि द्वारा रचित विवाह-मुहूर्तके दोहे प्रकाशनार्थ चि० महेशचन्दने भेजे हैं। ये जोधपुरके सुप्रतिष्ठित ज्योतिषी मेरे अनन्य स्नेही, कनिष्ठ बन्धु तुल्य, पं० श्री अमरचन्दजीके सुपुत्र हैं। गत छः पीढ़ीसे इनके यहां ज्योतिषका कार्य होता आया है। चि० महेश गणित फलितमें विशेष अभिरुचि लेने लगे हैं। गत दो वर्षोंसे 'ज्योतिष्मती-प्रश्नोत्तर विभाग,का कार्य-भार सुचारूरूपेण संचालित कर रहे हैं। जैनमुनिके दोहे ज्योतिषमें अभिरुचि रखने वाले संस्कृतानभिज्ञ पाठकोंके लिए उपयोगी हैं। श्रीमतिकुशल सूरिने २०६ वर्ष पूर्व सं० १८३२ में ये ६० दोहे लिखे थे जो अभी तक अप्रकाशित हैं, इनमेंसे ३० दोहे यहां प्रकाशित कर रहे हैं। शेष ३० आगामी अङ्कमें देंगे।

—सम्पादक]

विवाह का साव्हा निकालनेका मुहूर्त—

सद् गुरु चरण नमो करी प्रणमु सरस्वति माय।
दश दोष हवे साव्हा तणा वर्ण तेहूं चित लाय॥

विवाहमें त्याग करने योग्य दोष—

व्यतिपात तिथि छेद मिलि चौमासो वलि टाल।
अस्त तजो सुरगुरु कवि साव्हो करो सम्भाल॥ १॥
लुण्ड मास भद्रा ग्रहण वद-पक्ष अन्त तजीह।
होलाष्टक सिंहराशि गुरु टाली करो निरबोह॥ २॥

रवि-गुरु-चन्द्र-बल निर्णय—

वरने रवि बल लीजिये कन्या सुरगुरु लेह।
चौथे अष्टम बारमो रवि गुरु चन्द्र तजेह॥ ३॥
एकादश षष्ठे दशम तीजो रवि श्रीकार।
अवर सूर्य पूजाल है पण्डित कह्यो विचार॥ ४॥
तीजी छठी जन्मरी दशमी पूजा लेह।
अन्य जीव उत्तम कह्या न करो को ऊ सन्देह॥ ५॥
शुक्ले पञ्चम कर नवम चन्द्र कह्या श्रीकार।
अन्य चन्द्र विहु पक्ष भला शास्त्रे कह्यो विचार॥ ६॥

पुरुष घात चन्द्र निर्णय—

मेष जन्म वृष पञ्च गणिए मिथुने नवम तजेह।
कर्क वीह, सिंह छठो सही, कन्या दशम तजेह॥ ७॥

तुल तीजो, वृश्चिक सातमो, धन नै चौथा जाण।
मकर अष्ट कुम्भ रुद्रे सही द्वादश मीन पिछाण॥ ८॥

स्त्री घात चन्द्र निर्णय—

मेष जन्म, वृष अष्टम तजै, मिथुन सातमो नेष्ट।
कर्क नवम, सिंह छठो, सही कन्या त्रय ह नेष्ट॥ ९॥
तुल चौथो, दूजो वृश्चिक, धन ने दशमो घात।
मकर रुद्र, कुम्भ पाञ्चमो, द्वादश मीन विख्यात॥ १०॥

वैवाहिक नक्षत्र निर्णय—

मृग हस्त मूल अनु, रेवती उत्तरा तीनों जेह।
रोहिण मघा स्वाति तिम साम्हा नक्षत्र लेह॥ ११॥

पञ्चशलाका वेध निर्णय—

पाञ्च आड़ी पाञ्च ऊभी लिखे दो दो कूणे रेख।
कृत्तिका धरो ईशान में अनुक्रम सहु विशेख॥ १२॥
जिणही नक्षत्र ग्रह हुवै तिण हीज धरो सुजाण।
विवाहिक नक्षत्र सामो ग्रह पण्डित तजो पिछाण॥ १३॥

वेध फल ज्ञान—

रवि वेधे विधवा हुवें, कुज वेधे कुल नाश।
बुध वेधे वन्ध्या हुवे ताव स जीव प्रकाश॥ १४॥
अ पुत्रिणी भृगु वेधे तिय दासी मन्द वखाण।
राहु वेधे वेश्या हुवे स्वच्छन्द केतु प्रमाण॥ १५॥

लात निर्णय—

सूर्ये द्वादश लात तिम चन्द्रे पुन्यम अष्ट।
भौम अग्नि बुध तेईशमी, सुरगुरु जाणो षष्ठ॥ १६॥
लात भृगु पञ्चविंश में रवि सुत अष्टम टाल।
राहु तणी नवमी गिणे अनुक्रम लात सम्भाल॥ १७॥
राहु चन्द्र बुध असुरगुरु लात अपुठी जोय।
शुक्ल पक्ष वलि शशि तणी, लात बावीशी होय॥ १८॥

लात फल ज्ञान—

वित्त हरे रवि चन्द्र तिम, रवि सुत कुज बुध राह।
मरण करे बन्धु-नाश गुरु-शुक्र कार्य विणाह॥ १९॥

उपग्रह निर्णय—

रवि ऋक्ष थी गिण दिन ऋक्षी दोष उप ग्रह होय।
पञ्चम अष्टम चवदमो अठारमो बलि जोय ॥ २० ॥
ऊगणीशमो, बावीशमो, तेवीशमो चौवीश।
इण विध उपग्रह टालियै निश्चय विश्वा वीश ॥ २१ ॥

उपग्रह फल ज्ञान—

पुत्र पत्यु सन्निपात हुई देवर द्रव्य विनाश।
कुशीलणी धन नाश तिय तिय कुल संहार निराश ॥ २२ ॥

युति निर्णय—

युति दोष इण विध हुवे शशि भेलो ग्रह जाण।
अति सुखकारी सौम्य ग्रह अधम क्रूर वखाण ॥ २३ ॥

जामित्र निर्णय—

लग्न थकी सप्तम ग्रहा जामित्र स्थूल वखाण।
चन्द्र थकी सप्तम भवन सूक्ष्म जामित्र जाण ॥ २४ ॥

जामित्र फल ज्ञान—

विनाश करे निश्चय रवि, वर कन्या कुज हान।
दालिद्रणी शशि अंगजे, सुरगुरु मृत्यु सन्तान ॥ २५ ॥
वैर पड़े बहु असुर गुरु, रवि-सुत हानि करन्त।
राहु केतु हो तापसी जामित्र दोष तजन्त ॥ २६ ॥

पात निर्णय—

सूर्य नक्षत्र सुमाँडिये अनुक्रम सऊ समावीश।
जहां आवै वांका नक्षत्र तहं ही धरो जगीश ॥ २७ ॥
चित्रा श्रवण अनु रेवती अश्लेषा रु मघा ह।
ए षट् वाका जानिये अश्विनी आदि गिणेह ॥ २८ ॥
विवाहिक ऋक्ष वांको कदा तेहिज जाणो पात।
पात दोष टाली करी साव्हो करो विख्यात ॥ २९ ॥

पात फल ज्ञान—

पेली पावक पवन बिय तीजो जाण विकार।
चौथी कलह मृत्यु पांचमी कुल क्षय षष्ठ विचार ॥ ३० ॥

(क्रमशः)

सुख और सफलताका रहस्य

[लेखक :—श्री पं० सत्यनारायण ओझा एम.ए.एल.एल.बी. ज्योतिषरत्न]

प्रत्येक मनुष्य सुखी होना चाहता है, लेकिन क्या आप यह भी जानते हैं कि सुख मिलता किस चीजसे है । सुख केवल साधन सम्पन्नतामें ही निवास नहीं करता, बल्कि सच्चा सुख तो मनुष्यके श्रमका सफलता रूपी फल है। मनुष्य अपने सतत उद्योगके फलस्वरूप अपनी योजनाओंकी सफलतासे प्राप्त जो आनन्द अनुभव करता है, वही सच्चा सुख है वह केवल अनुभव ही किया जा सकता है, वर्णन नहीं किया जा सकता । अतः सच्चा सुख प्राप्त करनेके लिए प्रत्येक मनुष्य अपने कार्योंमें सफलता प्राप्त करना चाहता है, परन्तु इस सफलताका रहस्य आपके शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक दूरदर्शिता एवं आत्मिक-विकास पर अवलम्बित है । अतः प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि वह स्वास्थ्यके नियमोंका पालन करते हुए अपने शरीरको स्वस्थ रखे क्योंकि स्वस्थ शरीरमें ही, स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है तथा स्वस्थ शरीर ही श्रम करनेमें समर्थ होता है। आपका किया हुआ श्रम व्यर्थ तथा असफल न हो, इसके लिए आपको दूरदर्शितासे काम लेना होगा, क्योंकि कहावत है कि "बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय, काम बिगारे आपनो जग में होत हंसाय।" अतः प्रत्येक कार्य करनेके पहले उसे खूब सोच-विचार लीजिए और फिर अपने अनुकूल दिनोंमें किसी शुभ घड़ी व शुभ वार या मुहूर्तमें उसका आरम्भ कीजिए, आपको अवश्य सफलता मिलेगी ।

अन्ततोगत्वा यह ध्यानमें रखिए कि सफलता प्राप्त करनेके अन्यान्य साधनोंमेंसे निम्नलिखित दो साधन आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण हैं :—

१—कार्य करने वालेके दिन अनुकूल व अच्छे हों। कहावत है कि "मनुष्य बुरे दिनोंमें भला करता है तो भी बुरा होता है और अच्छे दिनोंमें मिट्टीको हाथ लगाता है तो वह भी सोना हो जाती है ।"

२—कार्यका आरम्भ शुभ घड़ी व शुभ मुहूर्तमें किया जावे, इसके लिये भी कहावत है कि "किस शुभ घड़ीमें यह कार्य आरम्भ किया गया था कि जो दिन-दूना और रात-चौगुना फला तथा किस बुरी घड़ीमें यह कार्य आरम्भ कर दिया गया कि सदा इसमें असफलता ही मिली।" इसीलिये प्रत्येक आदमी अनेक पत्र-पत्रिकाओंमें लिखित भविष्य-फल द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी पंडितसे यह जाननेकी इच्छा करता है कि उसके ग्रह कैसे हैं ? उसके दिन अच्छे हैं या बुरे ? अथवा किसी शुभ कार्यको करनेके लिये कौन सा वार, घड़ी या मुहूर्त्त अनुकूल रहेगा कि— जिससे कार्यमें सफलता मिले ।

हम आपको इसी विषयमें कुछ बताना चाहते हैं। यदि आपको सचमुच जाननेकी उत्कण्ठा है तो अवश्य पढ़िए—

अनुकूल व अच्छे दिनोंकी जानकारीके लिये—

दैनिक भविष्य अत्यन्त शीघ्रगामी, द्रुत गति मानव मनके प्रतीक चन्द्र ग्रहकी शुभाशुभ दृष्टिके आधार पर लिखा जाता हैं। हमारे दैनिक जीवन पर जितना प्रभाव चन्द्र ग्रहका पड़ता है, उतना अन्य ग्रहोंका नहीं पड़ता क्योंकि चन्द्रमा भूमिके अधिक निकट है। दूसरे इसकी उत्पत्ति समुद्रसे हुई है अतः यह जलको विशेष रूपसे प्रभावित करता है। पूर्णिमाको जब चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओं से उदित होता है तो समुद्रमें ज्वार भाटा आ जाता है, यह इसीका ज्वलन्त उदाहरण है। चूंकि मानव शरीरमें ७० प्रतिशत जलकी मात्रा है अतः चन्द्रमाकी स्थिति मानवको अन्य ग्रहोंसे अधिक प्रभावित करती है। चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहोंकी स्थितिका ज्ञान हमें ज्योति-विज्ञानसे प्राप्त होता है तथा उन स्थितियोंका मानव पर क्या फल होगा, इसका बोध हमें ज्योतिषशास्त्रसे होता है। अतः ज्योतिषका प्रधान उपयोग मनुष्यको उसके अच्छे व बुरे दिनोंसे अवगत कराना है तथा भविष्य जानने का मुख्य उद्देश्य भी यही होना चाहिए। जिससे बुरे दिनोंमें सावधानी बरती जा सके तथा अच्छे दिनोंमें अनुकूल ग्रहोंकी प्रसन्नताका पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सके। दैनिक भविष्यमें कथित भविष्यफलकी अधिकाधिक सम्भावित सत्यता प्राप्त करनेके लिए, अपनी जन्मराशि से देखना चाहिए। जन्मराशिका पता न हो तब नामराशिसे मिलाना चाहिए, परन्तु धीरे-धीरे एकसे ही दिन व राशि विशेषमें बार-बार घटित होने वाले फल-विशेषके अनुभवके आधार पर जन्मराशि तथा अनुकूल दिनोंके जाननेका प्रयत्न करते रहना चाहिए।

यह बात ध्यानमें रखिए कि यदि किसी दिनका भविष्य फल आपके प्रतिकूल हो तो उसका मतलब यह न समझें कि वह दिन बिल्कुल हानिकारक रहेगा। इसे आप सामान्य मार्गदर्शकके रूपमें समझें, परन्तु इतना अवश्य ध्यानमें रखें कि प्रतिकूल दिनोंमें प्रत्येक काममें विशेष सावधानी बरती जाए। उदाहरणके तौर पर बुरे दिनोंमें कोई नया काम आरम्भ नहीं करना चाहिए, परन्तु अच्छे दिनोंमें प्रत्येक शुभ कार्यको उत्साहके साथ अग्रसर होकर करना चाहिए।

ज्योतिष्मती (रजतजयन्ती)

[पं० शंकरलाल गौड़ "शंभुकवि" दूरा (आगरा)]

सत्कीर्ति फैली रजत सम, संसार भारतवर्षमें।
विज्ञान की शुचि शुभ्र जलती, ज्योति "शंकर" हर्ष में ॥ १ ॥
आरोग्य, धन, सुख सौख्य दात्री, नाम गुण गुरु धर्म है।
हिमवान की औषधि परम, मेधामयी बुध मर्म है ॥ २ ॥
चमत्कारी स्तंभ ज्योतिष दैवज्ञ घटना चक्र है।
पाठक चकित स्तब्ध होते, सर्वत्र ज्योति जिक्र है ॥ ३ ॥
वाणिज्य का ग्रह वेध युति से, वस्तु भाव विचार है।
दुःखित क्लेशी प्राणियोंको शुभ रत्न कोषागार है ॥ ४ ॥
दैवज्ञ की विज्ञान दृष्टि, संसार घटना देख लो।
क्या हो क्या हो गया, यह सत्य का परिलेख लो ॥ ५ ॥

र्तमान दैवज्ञका परिचय—

निरक्षर ज्योतिहीन ज्योतिषी श्री किशनाजी जाट

[लेखक :—श्री रामनाथ शर्मा उपाध्याय, पोटलां जि० भीलवाड़ा—राजस्थान]

[गताङ्कमें सूचना दी गई थी कि—'रजतजयन्ती अङ्कमें' वर्तमान शताब्दीके एक दिवङ्गत दैवज्ञ और एक जीवित दैवज्ञका परिचय देंगे'। तदनुसार दिवंगत दैवज्ञ श्रीमीठालालजी व्यासका परिचय पहले पृष्ठ १७१-१७२ पर दिया है। वर्तमान दैवज्ञोंमें एक अनपढ़ आत्मशक्तिसम्पन्न अन्धदैवज्ञका आश्चर्यजनक परिचय यहां दे रहे हैं। अनपढ़ अन्ध होते हुए भी भविष्यकी जो महत्त्वपूर्ण गणित-गम्य बातें ये सहीरूपमें तत्काल बता देते हैं उस रूपमें कोई पढ़ा-लिखा दैवज्ञ तत्क्षण नहीं बता पाता। आगेके अधिकमास और ग्रहणोंकी बात उन्होंने जो बताई वे यथार्थ हैं। गुरुशुक्रके अस्तोदयमें एक-दो दिन मात्रका अन्तर है। ऐसे पुरुष वास्तवमें वन्दनीय हैं। वीरप्रसू मेवाड़ मेरी जन्मभूमि है मेरे जन्मस्थान रायपुर (भीलवाड़ा मण्डल) के समीप ही दैवज्ञप्रवर विद्यमान हैं। इनका परिचय कराने वाले बन्धुवर श्री रामनाथजी उपाध्यायका मैं आभारी हूं। उपाध्यायजीने निजी साधारण कैमरेसे लिया हुआ जो चित्र भेजा यह बहुत धुंधला होनेसे ब्लाक नहीं बन पाया। भारतमें कहीं भी इस प्रकारकी दिव्य विभूति विद्यमान हों उसका यथार्थ परिचय पाठक भेजेंगे तो उसे ज्योतिष्मतीमें प्रकाशित किया जायेगा। —सम्पादक]

यह संसार बड़ा विस्मयकारी है, जिधर देखो उधर कोई न कोई आश्चर्य है। इसका निर्माता कैसा आश्चर्यजनक होगा—यह निर्णय आजका नास्तिक भौतिकवादी नहीं कर सकता। इसका अनुभव तो आध्यात्मिक पुरुष ही कर पाते हैं।

मैं कई वर्षोंसे सुनता था कि ग्राम दामोदर-पुरा, तहसील रेलमगरा, जिला उदयपुर, राज-स्थानमें एक नेत्रहीन अनपढ़ वृद्ध काश्तकार जाट जातिके हैं जो मुहूर्त, विवाहलग्न, भविष्य-फल शास्त्रोक्त विधिसे बताते हैं। इसी वर्ष मई मासमें मुझे 'ज्योतिष्मती' के श्रद्धेय सम्पादक महोदयसे प्रेरणा प्राप्त हुई कि मैं इस विभूतिसे मिलूं, अत: मैं स्वयं दिनांक १० जुलाई १९८१ ई० को इस विभूतिके पास शाम ३ बजे पहुँचा। यह ग्राम कपासन कांकरोली बस मार्ग पर स्थित है। आने-जानेका साधन बसों द्वारा काफी सुलभ है।

मेरे साथ पं० श्री बंशीलालजी तिवारी, श्री वी० पी० सिंहजी कम्पाउण्डर, श्री मोहन-लालजी खुराणा ग्रामसेवक, श्री सतीशचन्द्रजी जोशी अध्यापक भी कोतूहलवश आये, ये सब सज्जन ग्राम धमाणा, तहसील कपासन, जिला चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में कार्यरत हैं।

टोलीके साथ मैं इस विभूतिके घर पहुंचा। क्षीणकाय, नेत्रविहीन, वृद्ध प्राणी खाट पर बैठा है। चद्दर ओढ़ रखी है, मुंह भी ढका हुआ है। हमारे पांवोंकी आहट सुनकर बोला

कौन हो भाई ?

मैंने उत्तर दिया पटेलजी ! हम आपसे मिलने आये हैं। वृद्धने मुँहसे चादर हटाई बोला-राम राम, हमने भी राम-राम कहा, वृद्ध हँस पड़ा।

हमसे पूछा कहां रहते हो ? कौन जातिके हो ? मैंने उत्तर दिया, पोटलां रहता हूं, ब्राह्मण हूँ, घमाणासे आया हूँ आपसे मिलने।

लकड़ीके सहारे वृद्ध खड़ा हुआ हाथ जोड़े और फिर राम-राम किया, हमने भी सबने राम-राम किया। वृद्ध फिर हँस पड़ा, बोला इस खाट पर मेरे सामने बैठो, हम सब बैठ गये, तब वृद्ध बोला--हां अब पूछो, क्या पूछना चाहते हो ?

मैंने प्रश्न किये,

प्रश्न—पटेलजी आपका नाम क्या है ?

उत्तर—मुझे किशना नामसे पुकारते हैं, मेरे पिता का नाम तोलाराम जाट था।

प्र०—आपका जन्म किस वर्षमें हुआ ? नेत्र-ज्योति कब लुप्त हुई ?

उ०—मेरा जन्म विक्रमी संवत् १९६० ज्येष्ठ कृष्णा ७ सप्तमीको सूर्यास्तसे २ घड़ी पूर्व हुआ था, मेरी आयु इस समय ७९ वर्ष है। नेत्र-ज्योति ३ वर्षकी अवस्थामें चेचक रोगसे लुप्त हो गई थी।

प्र०—आप विवाहित हैं या नहीं ?

उ०—नहीं, ब्रह्मचारी हूं।

प्र०—आपके माता-पिताका देहावसान कब हुआ ?

उ०—मेरी ३३ वर्षकी अवस्थामें माता तथा ४४ वर्षकी आयुमें पिताका स्वर्गवास हो गया था।

प्र०—आपकी सेवा कौन करता है ?

उ०—मेरा भतीजा करता है।

प्र०—आपको ज्योतिषका ज्ञान है, यह ज्ञान किस आयु वर्षमें किसके द्वारा प्राप्त हुआ है ?

उ०—मुझे कोई ज्ञान नहीं है। बहुत समझाने पर बताया कि मुझे यह ज्ञान स्वतः १८ वर्षकी आयुमें होने लगा तथा १९ वर्षकी आयुमें अच्छा ज्ञान हो गया, मुझे किसीने सिखाया नहीं है।

प्र०—ज्योतिषके सम्बन्धमें आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ ?

उ०—पूछो।

प्र०—अगले वर्ष सं० २०३९ में अधिक मास है या नहीं ?

उ०—अगले वर्ष २०३९ में फाल्गुन
२०४२ में श्रावण
२०४५ में ज्येष्ठ
२०४८ में वैशाख
२०५० में भाद्रपद
अधिक मास होंगे।

प्र०—२०३९ में तो आश्विन अधिक मास है ?

उ०—नहीं, आश्विन संक्रांतिहीन है पर, अधिक मास नहीं माना जायेगा, वैसे तो लोग आश्विनको अधिक मास कहेंगे। फिर बताया मैं भी आश्विनको अधिक मास मानता हूं।

प्र०—संवत २०३९ तथा २०४० में कितने ग्रहण होंगे ?

हँस पड़ा, बोला—

संवत् २०३९ मार्गशीर्ष कृष्णा ३० बुधवार सूर्यग्रहण खण्ड, संवत् २०३९ मार्गशीर्ष शुक्ला १५ गुरुवार चन्द्रग्रहण खग्रास। संवत् २०४० में कोई ग्रहण इस धरती पर नहीं दिखेगा। मार्गशीर्ष कृष्णा ३० रविवारको पराई धरतीमें समुद्र पार सूर्यग्रहण जरूर होगा संध्या समयमें।

प्र०—संवत् २०३९ तथा २०४० में गुरु-शुक्र कब उदय-अस्त होंगे पटेलजी ?

झुंझलाया, फिर बोला, सुनो ऊंगलियों पर गिनकर बोला—

२०३९ में गुरु कातिक कृष्णा ३ को अस्त होकर कातिक शुक्ला १४ मंगलवार को उदय होगा। शुक्र द्वि० आसौज कृष्णा ११ बुधवारको पूर्वमें अस्त होकर मार्गशीर्ष कृष्णा ३ शुक्रवारको पश्चिममें उदय होगा। २०४० में शुक्र श्रावण शुक्ला ८ सोमवारको पश्चिममें अस्त होकर भाद्रपद कृष्णा ८ बुधवारको पूर्वमें उदय होगा।

संवत् २०४० में गुरु मार्गशीर्ष कृष्णा १३ शुक्रवारको अस्त होकर पौष कृष्णा अष्टमी मंगलवारको उदय होगा।

प्र०—पटेलजी ! संवत् २०४० में मंगल बुध शनि कब-कब उदय-अस्त होंगे ?

उ०—बोला, बहुत लम्बे मत जाओ, रात होने आई है। नहीं मानते हो तो बताता हूं, मुझ अनपढ़ अंधे बूढ़ेको तंग मत करो, हाथमें कागज कलम पकड़ो मैं बताता हूं, आप गुणा भाग करो, सब मालूम हो जायेगा, साथी लोगोंके आग्रह पूर्वक मना करने पर मैंने इस वृद्ध पुरुषको ज्यादा परेशान करना उचित नहीं समझ कर कहा अच्छा बाबा रहने दो।

अच्छा पटेलजी, दो बातें और बताओ।

प्र०—(१) यह साल बरसातके लिये कैसा रहेगा ?

उ०—बोला १३ विश्वा पानी होगा, परंतु नुक्सान बरसकर भी होगा और नहीं बरसकर भी नुक्सान होगा। राजस्थान दुखी रहेगा। संवत् २०३९ में ५ विश्वा पानी है, अकाल पड़ेगा, संवत् २०४० में ११ विश्वा पानी है, अच्छा नहीं होगा। संवत् २०४१ में १७ विश्वा पानी है बाढ़ आवेंगे।

प्र०—(२) आने वाले वर्षोंमें क्या होने वाला है ?

उ०—राजस्थान शनिके प्रभावमें है, दुःख ही दुख है। अगले १० साल बहुत खराब हैं, राज दुराज हो जायेगा, संवत् २०४४ के बाद शनि अपना विकट प्रभाव दिखावेगा। लड़ाइयां चलेंगी, जनता दुखी हो जायगी, बहुत आदमी मरेंगे।

प्र०—पटेलजी ! बरसातके प्रमाण क्या हैं ?

उ०—शक संवत्को ३ से गुणा करो ७ का भाग दो शेष बचे उनको दुगुना करके पांच जोड़ो जो अंक बने उतने विश्वा पानी समझो ० बचे तो ५ विश्वा मानो।

प्र०—पटेलजी ! ग्रहणके प्रमाण और बता दो ?

उ०—काशी जाकर पढ़ो, सब सीख जाओगे। फिर बताया कि—चंद्र एवं सूर्यके ग्रहण राहुके आधार पर होते हैं। पृथ्वीकी छाया सूर्यसे छः राशिके अन्तर रहती है। पूर्णमासीको चन्द्रमाकी छाया सूर्यसे ६ राशि दूर रहती है। इसलिये पृथ्वी (राहु) की छाया चन्द्रमाके जितने भाग पर पड़ती है उतना ही चन्द्रग्रहण खंडग्रास खग्रासके रूपमें हो जाता है, लेकिन यह तब होता है जब पूर्णमासीको सूर्य-चन्द्रमा के एक राशि पर समान अंश-कला-विकला मिल जाये।

इसी प्रकार सूर्य, चन्द्रमा अपनी-अपनी जगह होते हुए भी प्रत्येक अमावस्याको एक राशि पर आ जाते हैं, परंतु जिस अमावस्या को सूर्य तथा चन्द्रमाके राशि, अंश, कला, विकला, एक समान हो जावे तभी सूर्य-ग्रहण हो जाता है इसका गिनतीका तरीका है, शास्त्रों को देखो सब मिल जायेगा, यह मैंने साधारण तरीका समझा दिया है।

मैं वृद्ध पुरुषके ज्ञानसे चकित रह गया।

आगे बोला, अब बंद करो। मैंने कहा अच्छा बाबा अब आपको तंग नहीं करूंगा। परंतु मुझे आपका फोटू खींचने दो। बोला नहीं, नहीं। मैंने आग्रह किया तो कहने लगा मुझे उजागर मत करो, जीवनका संध्याकाल है। दीपकमें तेल थोड़ा रह गया है, न मालूम कब बुझ जायगा। मुझे नामवरी नहीं चाहिये। फिर थोड़ा आग्रह करने पर इस दयालु वृद्धने स्वीकृति दे दी। साथियोंने क्लीक क्लिक करते हुए तस्वीर खींची।

मैंने कहा बाबा आपने यह विद्या कैसे जानी है ? बोला पूर्वजन्मके कर्मोंसे। मैंने फिर कहा आपने यह विद्या किसीको सिखाई क्यों नहीं ? बोला दो व्यक्ति एक चमार एक लुहारको सिखाई वे ब्रह्म-विद्याके अधिकारी नहीं थे, इसलिये मृत्युको प्राप्त हुए। एक ब्राह्मण देवता को सिखाई वे आचरणहीन हैं, सफलता नहीं मिली।

मैंने कहा बाबा मुझे सिखाओगे ? बोला नहीं मैं ब्राह्मणेत्तर व्यक्ति हूं। ब्राह्मणको सिखानेका अधिकारी नहीं हूं। पूर्वजन्ममें किये कर्मोंका प्रायश्चित्त करके यहां इस जन्म में भुगत रहा हूँ, फिर क्यों पाप कमाऊं।

बाबा, आपको पूर्व जन्मकी स्मृति है ? बोला जाने दो, सुनकर क्या करोगे, कोई फायदा नहीं है।

पटेलजीने इसके वाद बोलना बद कर दिया। मैं भी इस वृद्ध पुरुषको परेशान नहीं करना चाहता था। पटेलजीने सस्नेह भोजनका बहुत आग्रह किया। हमने क्षमा मांगी, उन्होंने भतीजेको पुकारा, भैंसका दूध निकलवाकर गरम करवाकर गिलासें भरी और हम पांचों साथियों के हाथमें आग्रह पूर्वक देते हुए बोला इसको पी लो। वृद्धका आग्रह टाल नहीं सके, हमने दूध पीया और बड़े हर्षके साथ घर पहुंचे।

घर पर पहुँच कर सूर्यसिद्धान्त पर्व-सम्भवाधिकारको देखा, चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण के जो प्रमाण बताये वे क्रमशः मिल गये।

वर्षा विश्वाके सिद्धान्त भी एक दूसरी पुस्तकमें इस प्रकार उपलब्ध हुए।

शाकं वह्निगुणं कृत्वा मुनिभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं नेत्रगुणं कृत्वा पच पंच नियोजयेत् ॥
लब्धं वह्निगुणं कृत्वा धान्यादि सप्तभागाः ।
शून्ये पंचेव विज्ञेया सर्वमेव निरूपयेत् ॥
वर्षा धान्यं तृणं शीतमुष्णो वायुश्च वृद्धयः ।
क्षयश्च विग्रहश्चैव ज्ञेयमिवं क्रमेण च ॥

मैं इस विभूतिसे बहुत प्रभावित हूं। ज्योतिर्विद् जो इस विषयके आचार्य एवं मर्मज्ञ हैं उन्हें इस विषय पर चिन्तन करना चाहिये। ऐसा व्यक्तित्व वंदनीय है।

मेरे पास सं० १९६० का पंचांग उपलब्ध नहीं होनेसे मैं कुण्डली नहीं दे पाया हूँ।

भारत रत्नोंकी खान है केवल खोज करने वाला चाहिये। धन्य है प्रभु तेरी लीला।

रजतजयन्ती पर—

शुभकामनाएं

र— जत जयन्ती अङ्क यह, 'ज्योतिष्मती' का देख।
बिविध विषय के हैं छपे, ज्ञानपूर्ण बहु लेख॥
ज— वसे यह जनमी करी, सेवा बहुत प्रकार।
तन्त्र योग ज्योतिष का, किन्हा खूब प्रचार॥
त— बसे प्रेरित कर रही, कर अन्वेषण कार्य।
लुप्त शास्त्र उद्धार हित, दृढ़ निश्चय कर आर्य॥
ज— गन्नाथ! फूले फले, ज्योतिष्मती की बेल।
प्रकट पूर्व ही कर रही, रचे विरञ्ची के खेल॥
य— ह व्यापारी वर्ग की, सेवामें अनुरक्त।
धन यश कीर्ति पावते, जो हैं इसके भक्त॥
न्— याय पथसे करा रही, हमें हिन्दुत्व का ज्ञान।
भारत "हिन्दुस्तान" ही, चाहती यह भगवान्!॥
ती— रथ यह ज्योतिष का, गुप्तज्ञान का घाट।
जो इस को अपनाय ले, हो परिपूर्ण ठाट॥
"सुन्दर" है ये कामना, "श्रीहर" दो वरदान।
ज्योतिष्मती का जगत में, बढ़े बहुत सम्मान॥

एडवोकेट श्याम कसेरा

अक्षय तृतीया, सं० २०३८ वि०
कटक—२.

प्र०—पटेलजी ! ग्रहणके प्रमाण और बता दो ?

उ०—काशी जाकर पढ़ो, सब सीख जाओगे। फिर बताया कि—चंद्र एवं सूर्यके ग्रहण राहुके आधार पर होते हैं। पृथ्वीकी छाया सूर्यसे छः राशिके अन्तर रहती है। पूर्णमासीको चन्द्रमाकी छाया सूर्यसे ६ राशि दूर रहती है। इसलिये पृथ्वी (राहु) की छाया चन्द्रमाके जितने भाग पर पड़ती है उतना ही चन्द्रग्रहण खंडग्रास खग्रासके रूपमें हो जाता है, लेकिन यह तब होता है जब पूर्णमासीको सूर्य-चन्द्रमा के एक राशि पर समान अंश-कला-विकला मिल जाये।

इसी प्रकार सूर्य, चन्द्रमा अपनी-अपनी जगह होते हुए भी प्रत्येक अमावस्याको एक राशि पर आ जाते हैं, परंतु जिस अमावस्या को सूर्य तथा चन्द्रमाके राशि, अंश, कला, विकला, एक समान हो जावे तभी सूर्य-ग्रहण हो जाता है इसका गिनतीका तरीका है, शास्त्रों को देखो सब मिल जायेगा, यह मैंने साधारण तरीका समझा दिया है।

मैं वृद्ध पुरुषके ज्ञानसे चकित रह गया।

आगे बोला, अब बंद करो। मैंने कहा अच्छा बाबा अब आपको तंग नहीं करूंगा। परंतु मुझे आपका फोटू खींचने दो। बोला नहीं, नहीं। मैंने आग्रह किया तो कहने लगा मुझे उजागर मत करो, जीवनका संध्याकाल है। दीपकमें तेल थोड़ा रह गया है, न मालूम कब बुझ जायगा। मुझे नामवरी नहीं चाहिये। फिर थोड़ा आग्रह करने पर इस दयालु वृद्धने स्वीकृति दे दी। साथियोंने क्लीक क्लिक करते हुए तस्वीर खींची।

मैंने कहा बाबा आपने यह विद्या कैसे जानी है ? बोला पूर्वजन्मके कर्मोंसे। मैंने फिर कहा आपने यह विद्या किसीको सिखाई क्यों नहीं ? बोला दो व्यक्ति एक चमार एक लुहारको सिखाई वे ब्रह्म-विद्याके अधिकारी नहीं थे, इसलिये मृत्युको प्राप्त हुए। एक ब्राह्मण देवता को सिखाई वे आचरणहीन हैं, सफलता नहीं मिली।

मैंने कहा बाबा मुझे सिखाओगे ? बोला नहीं मैं ब्राह्मणेत्तर व्यक्ति हूं। ब्राह्मणको सिखानेका अधिकारी नहीं हूं। पूर्वजन्ममें किये कर्मोंका प्रायश्चित्त करके यहां इस जन्म में भुगत रहा हूँ, फिर क्यों पाप कमाऊं।

बाबा, आपको पूर्व जन्मकी स्मृति है ? बोला जाने दो, सुनकर क्या करोगे, कोई फायदा नहीं है।

पटेलजीने इसके बाद बोलना बंद कर दिया। मैं भी इस वृद्ध पुरुषको परेशान नहीं करना चाहता था। पटेलजीने सस्नेह भोजनका बहुत आग्रह किया। हमने क्षमा मांगी, उन्होंने भतीजेको पुकारा, भैंसका दूध निकलवाकर गरम करवाकर गिलासें भरी और हम पांचों साथियों के हाथमें आग्रह पूर्वक देते हुए बोला इसको पी लो। वृद्धका आग्रह टाल नहीं सके, हमने दूध पीया और बड़े हर्षके साथ घर पहुंचे।

घर पर पहुँच कर सूर्यसिद्धान्त पर्व-सम्भवाधिकारको देखा, चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण के जो प्रमाण बताये वे क्रमशः मिल गये।

वर्षा विश्वाके सिद्धान्त भी एक दूसरी पुस्तकमें इस प्रकार उपलब्ध हुए।

शाकं वह्निगुणं कृत्वा मुनिभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं नेत्रगुणं कृत्वा पच पंच नियोजयेत् ॥
लब्धं वह्निगुणं कृत्वा धान्यादि सप्तभागाः ।
शून्ये पंचेव विज्ञेया सर्वमेव निरूपयेत् ॥
वर्षा धान्यं तृणं शीतमुष्णो वायुश्च वृद्धयः ।
क्षयश्च विग्रहश्चैव ज्ञेयमिदं क्रमेण च ॥

मैं इस विभूतिसे बहुत प्रभावित हूं। ज्योतिर्विद् जो इस विषयके आचार्य एवं मर्मज्ञ हैं उन्हें इस विषय पर चिन्तन करना चाहिये। ऐसा व्यक्तित्व वंदनीय है।

मेरे पास सं० १९६० का पंचांग उपलब्ध नहीं होनेसे मैं कुण्डली नहीं दे पाया हूँ।

भारत रत्नोंकी खान है केवल खोज करने वाला चाहिये। धन्य है प्रभु तेरी लीला।

रजतजयन्ती पर—

शुभकामनाएं

र— जत जयन्ती अङ्क यह, 'ज्योतिष्मती' का देख।
बिविध विषय के हैं छपे, ज्ञानपूर्ण बहु लेख ॥
ज— वसे यह जनमी करी, सेवा बहुत प्रकार।
तन्त्र योग ज्योतिष का, किन्हा खूब प्रचार ॥
त— बसे प्रेरित कर रही, कर अन्वेषण कार्य।
लुप्त शास्त्र उद्धार हित, दृढ़ निश्चय कर आर्य ॥
ज— गन्नाथ ! फूले फले, ज्योतिष्मती की बेल।
प्रकट पूर्व ही कर रही, रचे विरञ्ची के खेल ॥
य— ह व्यापारी वर्ग की, सेवामें अनुरक्त।
धन यश कीर्ति पावते, जो हैं इसके भक्त ॥
न्— याय पथसे करा रही, हमें हिन्दुत्व का ज्ञान।
भारत "हिन्दुस्तान" ही, चाहती यह भगवान् ! ॥
ती— रथ यह ज्योतिष का, गुप्तज्ञान का घाट।
जो इस को अपनाय ले, हो परिपूर्ण ठाट ॥
"सुन्दर" है ये कामना, "श्रीहर" दो वरदान।
ज्योतिष्मती का जगत में, बढ़े बहुत सम्मान ॥

एडवोकेट श्याम कसेरा

अक्षय तृतीया, सं० २०३८ वि०
कटक—२.

विश्व हिन्दू-परिषद का संक्षिप्त परिचय

विनम्र प्रार्थना

'हिन्दू' भारतके ५० करोड़ तथा दूसरे २७ देशोंमें रहने वाले २॥ करोड़ लोगोंका धर्म है। जैन बौद्ध शैव शाक्त सिक्ख आदि सभी इसी वटवृक्षकी शाखाएं हैं। संख्या और संस्कृतिमें सबसे महान् होते हुए भी आपसी मेलकी कमीके कारण यह जाति कमजोर पड़ गई, जिसके कारण हमें सदियों परतन्त्र भी रहना पड़ा। इसे पुनः उन्नत बनानेके लिये विश्व-हिन्दू परिषद्की स्थापनाका संकल्प लेकर देशके मनीषियोंने १९६४ में इसकी स्थापना की, तथा १९६६ में कुम्भके पर्व पर इसकी विस्तृत रचना बनाई।

परिषद्के मुख्य उद्देश्य ये हैं :—

१. भारत तथा भारतसे बाहर अलग-अलग सम्प्रदायोंमें बंटे हुए हिन्दुओंका संगठन और आपसी प्रेम।
२. हिन्दू धर्मके जीवन मूल्योंके प्रचारसे चेतना जागरण।
३, उपेक्षित दलित निर्धन बन्धुओंका जीवन उन्नत करना।
४. अन्य धर्मोंमें चले गए हिन्दुओंको अपने धर्ममें वापिस लाना।

पिछले १४ वर्षोंमें कार्यकी प्रगति इस प्रकार है।

१. २७ विदेशोंमें अढ़ाई करोड़ अपने लोगोंसे सम्पर्क तथा ८० स्थानों पर वेद-मन्दिरोंकी स्थापना।
२. भारतमें २५०० स्थानीय समितियोंका गठन।
३. ४०,००० व्यक्तियोंको पुनः अपने धर्ममें लाया गया।
४. १० बड़े हस्पताल, ४१ औषधालय, ५० चिकित्सा केन्द्र, २५ छात्रावास १६ विद्यालय, १४ विद्यार्थी आश्रम (अनाथालय) १५ सिलाई केन्द्र स्थापित किए गए।

बालकोंमें अच्छे संस्कार देनेके लिये बाल-संस्कार योजना, महापुरुषोंकी जयन्तियां मनाना तथा उपेक्षित वर्गके लिये अनेक सेवाकार्य चलाये जा रहे हैं। इन सभी तथा अनेक अन्य प्रस्तावित कार्यक्रमोंके लिये अपार धन राशिकी आवश्यकता है और प्रत्येक हिन्दूका पुनीत कर्तव्य है कि इसमें यथा-शक्ति सहयोग दें। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि अधिकाधिक धन देकर अपनी उदारता और हिन्दू धर्मके प्रति अपने प्रेमका परिचय दें।

निवेदक—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी
अध्यक्ष
हिमाचल प्रान्तीय विश्व-हिन्दू-परिषद
सोलन (हि०प्र०)

कपूरचन्द शास्त्री
संगठनमंत्री उ० क्षेत्रीय वि० हि०प०
इलायचीगिर मन्दिर, चौड़ाबाजार
लुधियाना (पंजाब)

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

१० जुलाई १९८२ को दुनियाँ समाप्त नहीं होगी

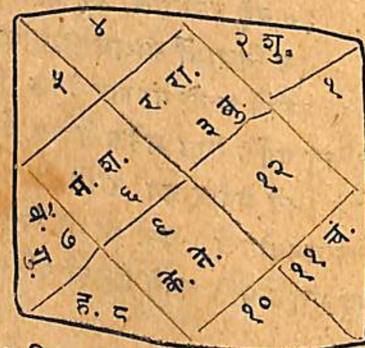
प्रलयका आतंक निराधार कपोलकल्पित है

शनि-मंगलयुतिका प्रभाव और गुजराती नये वर्षारम्भकी कुण्डली

—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी—

यूरोपके एक ज्योतिषी 'अर्नाल्ड हेलर, ने भविष्यवाणी की है कि—"१० जुलाई ८२ को परमाणु युद्ध प्रारम्भ होगा । यह युद्ध केवल १२ मिनट चलेगा । युद्धके बाद एशिया, अफ्रिका, यूरोप और आस्ट्रेलियामें कुल ७० हजार लोग जीवित बचे रह जायेंगे ।" उक्त ज्योतिषीने यह भी कहा है कि–'विश्वका विनाश —प्रलय—देखनेके लिए मैं जीवित नहीं रहूंगा, १९८१ में हृद्रोगके झटकेसे (हार्टफेलसे) मर जाऊंगा ।" कहा जाता है कि इनकी ८८% भविष्यवाणियां सत्य सिद्ध हुई हैं । इनकी यह भविष्यवाणी भारतकी अनेक पत्रिकाओंमें छपी हैं । अभी २४ सितम्बर ८१ के एक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्रने मुख पृष्ठ पर "१० जुलाई १९८२ :—क्या दुनियां उस दिन खतम हो जाएगी ?" शीर्षकसे प्रलयका चित्र देकर छापी और लिखा है—"ज्योतिषशास्त्र अगर सही है तो दुनियाँ का अन्त इतना करीब है कि शायद अभीसे आपका खानापीना और नींद हराम हो जानी चाहिए ।" इस भविष्यवाणीसे सर्वसाधारण जनतामें गम्भीर प्रतिक्रिया हुई है । अतः यहां कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक हो गया है। इसी प्रकारकी भविष्यवाणी कुछ तथाकथित ज्योतिषियों और तांत्रिकोंने भी गत वर्ष की थी कि—"सन् १९८२ में १५ नवम्बरको नौ ग्रहों के टकरावसे विश्वका विनाश हो जावेगा ।"

इस भयका निराकरण मैंने वर्तमान वर्ष सं० २०३८ वि० के 'श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग' और 'ज्योतिष्मती' के गताङ्क २४/३ में "प्रलय का आतंक निराधार है ।" शीर्षकसे किया है । मेरा यह स्पष्टीकरण कई गुजराती मराठीके पञ्चाङ्ग और पत्रिकाओं ने भी छापा है । अब मैं अपने पाठकोंको पुनः आश्वस्त करता हूं कि आगामी १० जुलाई १९८२ को ज्योतिश्शास्त्रीय दृष्टिसे प्रलयका कोई योग नहीं है । १० जुलाई ८२ को सूर्योदय कालीन ग्रहस्थिति यह है—



इस दिन संघट्टचक्र, कूर्मचक्र सुदर्शनचक्रमें कहीं भी विश्वविनाश जैसा कोई वेध नहीं है । मंगल शनिका युद्ध (अंश साम्ययोग) ७ जुलाई १९८२ को हो रहा है और मंगल ७॥ मास कन्या राशिमें शनिके साथ रहेगा, अतः १०

जुलाई ही नहीं अपितु इस लम्बी कालावधिमें कहीं भी भूकम्प ज्वालामुखी स्फोट झंझावात तूफान और पश्चिमी राष्ट्रमें कहीं गृहयुद्धसे हानि होगी। भारतमें पूर्वोत्तरीय सीमान्त प्रदेश और दक्षिणमें प्रकृतिप्रकोप एवं प्रज्ञापराधसे हानि होगी। इसीप्रकार १९८२ में ९ ग्रहोंकी युति या टकराव भी नहीं है। हां, १९८२ में मार्चसे नवम्बर तक सभी ग्रह सूर्यसे एक ओर ७० से ९५ अंशके कोणमें रहेंगे। गणितीय दृष्टिसे ऐसी ग्रहस्थिति लगभग १७९ वर्ष बाद आती रहती है। विगत सन् १८०२ ई० में भी ऐसी स्थिति आ चुकी थी। इतिहास में वहां किसी प्रलयका उल्लेख नहीं मिलता, अतः यहां प्रलयका भय निराधार है। "युद्धदौ शनिमाहेयौ" के अनुसार शनिमंगल यत्रतत्र छोटे-मोटे युद्ध उत्पात प्रकृतिप्रकोपकारक हैं। जो अभी भी यत्र-तत्र हो रहे हैं। हम भारतवासी आर्यजन महाशक्तिके उपासक हैं, यदि शुद्ध हृदयसे (छलकपट अनाचार छोड़कर) सर्वभूत हितेरत होकर मांकी उपासनामें लगें तो सभी प्रकारकी विघ्नबाधाओंसे पार होंगे, मांने अपने श्रीमुखसे स्वयं प्रतिज्ञा की है—

"तस्याऽहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्।" यह व्यर्थ नहीं है।

१० जुलाई ८२ की नवांश कुण्डली



'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' की भविष्यवाणियोंसे प्रभावित होकर विगत ४-५ वर्षोंसे गुजरातके प्रसिद्ध पञ्चाङ्गोंने भी मुझसे 'दैवज्ञकी दृष्टि' मँगवाकर छापना प्रारम्भ की है। गुजराती संवत् कार्तिक शुक्ला १ से प्रारम्भ होता है, और 'ज्योतिष्मती' का नया वर्ष भी १६ दिन पूर्व प्रारम्भ होता है, अतः गुजराती पञ्चाङ्गके लिए लिखी भविष्यवाणीका कुछ भाग यहां प्रस्तुत है—

गुजराती सं० २०३८ वि० का प्रारम्भ

मध्य व उत्तर पूर्वी भारतमें विक्रम संवत् का प्रारम्भ चैत्र शुक्ला १ प्रतिपदासे होता है और चैत्री अमावस्याको वर्ष समाप्त हो जाता है। पश्चिमी भारत गुजरातमें कार्तिकादि वर्ष माना जाता है। उत्तरमें पौर्णिमान्त और दक्षिण पश्चिमके पंचांगोंमें अमान्त मास गणना लिखी जाती है। गुजरातमें नया वर्ष सं० २०३८ वि० दिनांक २७/२८ अक्टूबरको अर्धरात्रोपरान्त भा. स्टे. टा. १—४३ पर प्रारम्भ होगा। उस समयकी निरयण वर्षलग्न कुण्डली यह है—



वर्षारम्भकी दीपमाला मंगलवारकी है। वर्षलग्नमें मंगल और लग्नेश सूर्य नीच राशि तुलामें व्ययेश चन्द्रमाके साथ तीसरे घरमें

बैठा है। तथा सभी ग्रह कालसर्पयोगमें (राहु केतुके मध्यमें) आगये हैं। यह योग विश्वके लिए सुख-शान्ति समृद्धिकारक नहीं है। पूर्वोत्तरीय भारतमें राजनैतिक गतिरोध, मन्त्रि-मण्डलोंमें उलटफेर, आर्थिक, सामाजिक साम्प्रदायिक असन्तोष और प्रकृतिप्रकोपसे वर्षभर प्रजा त्रस्त रहेगी। ३ महामानवोंका जीवन संकटग्रस्त होगा। दोको प्राणभय है। केन्द्र और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें उलटफेर होगा। पंजाबमें साम्प्रदायिक विष फैलेगा, मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा। असम, बंगाल, केरलमें राजनीतिक गतिरोध उग्र होगा। उ०प्र० हि०प्र० हरियाणा गुजरात राजस्थान मध्यप्रदेश महाराष्ट्रका मन्त्रिमण्डल संकटग्रस्त होगा। ३ दिसम्बर ८१ से २२ जुलाई ८२ तक कन्या राशिमें मंगल साढ़े सात मास तक शनिके साथ रहेगा। इसी कालावधिमें अमान्त मार्गशीर्ष मासमें (२७ नवम्बरसे २६ दिसम्बर तक) पांच शनिवार, पौष मासमें (२७ दिसम्बरसे २५ जनवरी ८२ तक) पांच रविवार और माघमासमें (२६ जनवरीसे २३ फरवरी ८२ तक) पांच मंगलवार हैं, ये विश्वमें (विशेषकर पश्चिमी एशिया और अमेरिका में) भूकम्प, दुर्भिक्ष, ज्वालामुखी स्फोट और ईशानकोण (पूर्वोत्तर) में किसी देशके पतनके द्योतक हैं। यथा—

"शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी:।
ईशानदेश भंगश्च वन्हिदाहो महार्घता ॥"

२१ फरवरीसे ११ मई ८२ तक कन्या राशिमें मंगल शनि दोनों ग्रह वक्री रहेंगे, ये संसारमें युद्ध विग्रह दुर्भिक्ष वा प्रकृति-प्रकोपसे जनधन हानिकारक शास्त्रकारोंने लिखा है—

"कन्यायां मीनसिंहे वृषधनुषि यदा वक्रगौ भौममन्दौ। पृथ्वीशा: क्रूररूपा बहुरिपुदलिता विग्रहश्चैव पीड़ा ॥"

इस अवधिमें भारतको पूर्ण सतर्क रहना आवश्यक है। विदेशी शक्तियोंके सङ्केत पर पड़ोसी पाकिस्तान भारतकी पश्चिमोत्तर सीमा को विपद्ग्रस्त करनेका दुःसाहस कर सकता है, पर 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि:' के अनुसार वह स्वयं पर कुठाराघात करेगा। अनार्य यवन देशोंके लिए यह वर्ष विशेष हानिका होगा। पाक-बंगलादेशमें राज्यक्रान्ति होगी।

इस वर्तमान दशकमें उत्तरोत्तर सन् २००० ई० तक विश्वकी खाद्यान्न समस्या विकट बनती जायेगी। इसका विवेचन 'श्रीविश्व-विजयपञ्चाङ्ग' और 'सन्देश प्रत्यक्ष पञ्चाङ्ग' (गुजराती) में किया है। स्थानाभावके कारण यहां प्रकाशित नहीं हो सका।

खग्रास चन्द्रग्रहण

पौष शुक्ल १५ शनिवार दिनाङ्क ९-१० जनवरी १९८२ ई० को अर्द्धरात्रिमें होगा। यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत, नेपाल, भूटान, ब्रह्मदेश, बंगलादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, अरब राष्ट्रमें खग्रास दिखाई देगा। इस खग्रास (पूर्ण ग्रस्त) चन्द्रग्रहणका भारतीय स्टेण्डर्ड टाइममें स्पर्शादिकाल इस प्रकार है—

स्पर्श (ग्रहण प्रारंभ)	घं. २३ मि. ४४, ९ जन.
सम्मीलन (खग्रास प्रारंभ)	घं. ० मि. ४८, १० "
ग्रहण मध्य	घं. १ मि. २७ " "
उन्मीलन (खग्रास) समाप्ति)	घं. २ मि. ६ " "

मोक्ष (ग्रहण समाप्ति) घं. ३ मि. ६।१० जन. पर्वकाल (ग्रहणका कुल समय) ३ घंटे २५ मिनट है

१० जनवरी ८२ को मध्यरात्रि १२ बज कर ४८ मिनटसे २ बजकर ६ मिनट तक (१ घंटा १८ मिनट) चन्द्रबिम्ब भूछायासे पूरा ढका रहेगा। इसे खग्रासस्थिति कहा जाता है।

ग्रहणका सूतक—इस ग्रहणका सूतक मध्याह्न बाद स्टे. टा. २।४४ पर लगेगा। सूतकमें भोजनादि करना निषिद्ध है। वाल, वृद्ध, रोगियोंके लिए सूतकमें भोजनाकिा दोष नहीं है।

ग्रहणका राशिफल—यह ग्रहण पुनर्वसु नक्षत्र और मिथुन राशिमें हो रहा है, अतः इस नक्षत्र-राशि वालोंके लिए विशेष नेष्ट है। कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालोंको अशुभ है। वृष, तुला, धनु, कुम्भ राशि वालोंको मध्यम है। मेष, सिंह, कन्या, मकर राशि वालोंको शुभ है।

ग्रहणका फल—पौष मासमें चन्द्रग्रहण होनेसे वर्षाकी कमी रहे। गेहूँ, चना आदिमें तेजी आवे। शनिवारका ग्रहण है अतः अलसी, सरसों, तेल, पीले व लाल वस्त्र, ज्वार, बाजरा आदि संग्रहसे दो मासमें लाभ हो। मिथुन राशिमें ग्रहण हानेसे व्यापारिक वस्तुओंमें तेजी होगी। पुनर्वसु नक्षत्रमें ग्रहण है अतः रुई, कपास, पाट, वारदाना, चावल, धान्य, गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहरका संग्रह तीन मासमें लाभ देगा।

"प्रधान-मन्त्रीको 'प'-वर्गसे खतरा"

आगामी दिसम्बर ८१ से जून ८३ तक प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधीको रोगेश एवं सप्तमेश शनिकी महादशामें व्ययेश चन्द्रमाका १ वर्ष ७ मासका अन्तर रहेगा जोकि सन्तानपक्षके लिए भी शुभ नहीं है। द्वितीयेशकी महादशामें अष्टमेशका अन्तर है। इस १ वर्ष ७ मासके समयमें शत्रु प्रबल होंगे। सन्तान पक्षसे कष्ट होगा। मानसिक चिन्ता बहुत बढ़ेगी। आकस्मिक शारीरिक कष्ट या देह सम्बन्धित दुर्घटनाका प्रबल संकेत भी इस चन्द्र अन्तरमें मिलता है। जिन व्यक्ति, समूह या पार्टी आदिके मारक-षडयन्त्रका शिकार होनेके संकेत ज्योतिषीय फलित सूत्रोंसे प्राप्त होते हैं, उनके नामका आदि यानि कि प्रथमाक्षर प-वर्गसे होना चाहिए एवं वे ही व्यक्ति या पार्टी भारतके भावी-शासक होंगे ऐसी पुष्ट सम्भावना प्रतीत होती है। अतः चन्द्र-अन्तरके उस कालमें विशेष सावधानी और सतर्कता अनिवार्य है।

वर्तमानमें श्रीमती गांधीके द्वितीय (प्रबल मारक) स्थानमें गुरु-चाण्डाल (शनि) की युति ब्राह्मण एवं अन्त्यज जातिके प्रबल शत्रुओं द्वारा मारक-षड्यन्त्रके मिश्रित (सम्मिलित) प्रयासकी सूचना देती है, तथा व्यय भावमें केतुसे पूर्ण दृष्ट राहुकी उपस्थिति निम्नकोटिके तान्त्रिक कर्म (अघोर साधन) द्वारा शरीर-व्ययार्थ (मारण) किये जा रहे निकृष्ट अघोर अनुष्ठानके आयोजनकी बात बताती है। इस प्रकारके विनाशकारी अनुष्ठान जोकि एक लम्बे समय तक चलता है का कुप्रभाव चन्द्रअन्तरके कालमें देखनेको मिलना सम्भव है।

[शेष पृष्ठ २०० पर]

आगामी वर्षके त्यौहारोंके सम्बन्धमें

भारतीय प्रसिद्ध पञ्चांगकारोंका निर्णय

सौभाग्य या दुर्भाग्यसे हमारे जीवनकालमें दो बार क्षयमास आ रहा है। पहला आजसे १८ वर्ष पूर्व सं० २००० वि० में आ चुका है। उस वर्ष प्राचीन सौर-पक्ष और नवीन दृक्पक्षसे गणित भेद था। अत: एक मत न हो सका। कुछ प्रान्तोंमें एक मास पहले दशहरा दीपमाला मनाई और कुछने एक मास बाद। दृक्पक्षीय सब पंचांगों और राष्ट्रीय पंचांगोंके अनुसार ही भारतसरकारके गज़टमें भी छुट्टियां छप गईं थीं। परन्तु, काशीके पंचांगों और धर्माचार्योंके मतानुसार राजधानी दिल्लीकी रामलीला आदि धार्मिक संस्थाओंके प्रतिनिधि जब तत्कालीन गृहमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्रीसे मिले, तब उन्होंने सरकारी छुट्टियां बदलकर एक मास आगेकी घोषणा करवा दी। इससे जनतामें पंचांगकारोंका भारी उपहास हुआ। कुछ स्थानोंमें एक मास पहले और कई जगह राजधानी तकमें एक मास बाद त्यौहार मनाये गये। १६ वर्ष बाद यही स्थिति अगले वर्ष सं० २०३६ में फिर आ रही है। सौभाग्यसे अब अगले वर्ष गणित भेद नहीं है। दृक्पक्ष सौरपक्षसे अधिक क्षयमास तो समान हैं। परंतु, धर्मशास्त्रीय मतभेदसे एक मासका अन्तर पड़ रहा है। क्षयमाससे पूर्व पड़ने वाले अधिकमासको सभी धर्मग्रन्थोंने 'संसर्प' और क्षयको 'अंहस्पति' लिखा है। क्षयसे पहले अधिकमास (संसर्प) को शुद्ध माननेका आदेश है। इसी शास्त्रीय मतानुसार मैंने वर्तमान वर्ष सं० २०३८ के पंचांगमें पृष्ठ २४ पर दशहरा दीपावली सं० २०३६ में मनानेकी सूचना दी थी। कुछ दश वर्षीय पंचवर्षीय पंचांगोंमें धर्मसिन्धु आदि कुछ ग्रन्थोंके 'व्यवहित' अव्यवहित भेदसे संसर्प को अधिक (मल) मास मानकर उसमें (प्रथम आश्विन शुक्लपक्षमें) २७ सितम्बरको विजयादशमी न लगाकर द्वितीय शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्षमें अक्टूबरमें नवरात्रपर्व और विजयादशमी तथा आगे दीपावली लगाई है।

आगामी वर्ष फिर पंचांगकारोंका उपहास न हो इस समस्याको सुलझानेके लिए अ०भा० ज्योतिषपरिषद् और अहमदाबाद-वेधशालाके संयुक्त प्रयत्नसे पंचांगकारों-धर्मशास्त्रियोंका सम्मेलन २१ जून ८१ को दिल्लीमें और २५ जुलाई ८१ को अहमदाबादमें बुलाया गया। अहमदाबादकी सभामें भारतभरके ८० पञ्चाङ्गकार, धर्मशास्त्री, वेदज्ञ-विद्वान् एकत्र हुए। इनका नामधाम वेधशालाके प्रपत्रमें प्रकाशित हो चुका है। उज्जैन काशी कलकत्ता जोधपुरके सहयोगी पंचांगकारों ने १५० वर्ष पुराने हस्तलिखित पंचांग और वहां पड़ने वाले क्षयमासके वर्षमें त्यौहारोंके सम्बन्धमें काशिराजका निर्णय प्रस्तुत करके सिद्ध किया कि आगामी वर्ष २०३६ में प्रथम अधिक आश्विनमें नवरात्र विजयादशमी न होकर दूसरे शुद्ध आश्विन शुक्लमें (अक्टूबरमें) दशहरा और आगे कार्तिक (नवम्बर) में दीपवली होगी। इसी पक्षमें सबके भाषण हुए। ७५ प्रतिनिधि इस मतके पक्षमें होनेसे पूर्ण बहुमत सिद्ध हुआ। पंजाबके केवल 'श्रीमार्त्तण्ड-पंचांग' के ३ प्रतिनिधि और कलकत्ताके श्री

वन्द्योपाध्याय तथा नैनीतालके श्री महतोलिया (कुल ५ प्रतिनिधि) विरोधमें थे।

'महाजनो येन गतः स पन्थाः'

स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी मैं इस विषम समस्याके समाधानमें सहयोग देनेके लिए मित्रोंके अनुरोध पर अहमदाबाद पहुंच तो गया, पर विषमस्थितिमें फँस गया। किसी भी पक्षको गलत नहीं कहा जा सकता, क्योंकि न्यूनाधिक प्रमाण, तर्क दोनों ओरके उपस्थित हो रहे थे। (स्थानाभावके कारण वे सब तर्क प्रमाण यहां नहीं दिये जा सके) प्राचीन आचार्योंके भी मत भिन्न हैं। ऐसी स्थितिमें धर्मशास्त्रका यह आदर्श वाक्य पथप्रदर्शक बना—

श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना नैकोमुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः॥

आशातीत बहुमत देखकर मैंने अपने पूर्वमतको त्यागकर सब सहयोगियोंके साथ होनेकी घोषणा अपने अन्तिम भाषणमें कर दी। मेरी प्रवृत्ति आरम्भसे ही समन्वय समझौतेकी रही है, विघटनकी नहीं। मैं यह जानता था कि कुछ लोग मत बदलनेके लिए मुझे बुरा भला कहेंगे, और मेरे निकट सहयोगियोंका कोपभाजन भी मुझे बनना पड़ेगा। 'मार्त्तण्डपंचांग' के कारण पंजाब विरोधमें जायगा। परन्तु, केवल एक पंजाब ही समस्त भारत नहीं है। जब समस्त गुजरात सौराष्ट्र महाराष्ट्र मध्यप्रदेश उत्तरप्रदेश बंगाल-बिहार राजस्थान उड़ीसा असम आंध्रका बहुमत वेधशाला मतके पक्षमें है तो मेरे विरोधका कोई लाभ नहीं, विघटनका दोषी माना जाऊंगा। इस विचारसे-मैंने भाई श्री प्रियव्रत शक्तिधरसे भी अनुरोध किया था कि 'यद्यपि हमारा मत गलत नहीं है, फिर भी एक वाक्यता और जनतामें ज्योतिषियोंका उपहास न हो इस दृष्टिसे आपको भी त्याग करना चाहिए। इस पर वहां उन्होंने इतना तो मान लिया था कि—"यहांके निर्णयको लेकर श्री वन्द्योपाध्यायजी शेष सब पंचांगकर्ताओंके पास मत लेनेको जावेंगे, उसमें जिस पक्षका बहुमत होगा वह हम मानेंगे।"

परन्तु, वन्द्योपाध्यायजी मत जाननेके लिए किसी पंचांगकर्ताके पास नहीं गये. कलकत्ता पहुंच कर उन्होंने 'नाटीकल' प्रकाशित करवा दिया और संसर्प शुद्ध पक्षमें एक मास पहलेकी छुट्टियां गवर्नमेण्टको दे दी। पंजाबमें अमृतसर, जालन्धर व दिल्लीके सभी पंचांगकर्ता जंत्री डायरी कलेण्डर प्रकाशकोंके पास वेधशाला निर्णयके विरोधी पंचांगकर्ताओंने पहुंचकर यह बताया कि—"अहमदाबाद में कोई सही निर्णय नहीं हुआ। हमारा मत सही है। २७ सितम्बरको दशहरा और १६ अक्टूबरको दिवाली लगावें।" इसके अनुसार पंजाबके कुछ पंचांग जंत्रियाँ डायरियाँ कलेण्डर छप चुके हैं। उधर वाराणसीमें काशीविद्वत्परिषदने जगद्गुरु शंकराचार्यके तत्वावधानमें सभा करके वेधशाला निर्णयके अनुसार त्योहारोंकी घोषणा कर दी। श्रीहृषिकेश उपाध्यायके 'श्रीकाशी विश्वनाथ-पञ्चाङ्ग'में पूरे तीसरे पृष्ठ पर सचित्र वह घोषणा छपी है। सुप्रसिद्ध "चिन्ताहरण-जन्त्री"ने भी इसी पक्षको मान्यता दी। एक पंचांगको छोड़कर काशीके सब पंचांग जंत्रियां वेधशालाके पक्षमें

आगामी वर्षके त्यौहारोंके सम्बन्धमें

भारतीय प्रसिद्ध पञ्चांगकारोंका निर्णय

सौभाग्य या दुर्भाग्यसे हमारे जीवनकालमें दो बार क्षयमास आ रहा है। पहला आजसे १८ वर्ष पूर्व सं० २००० वि० में आ चुका है। उस वर्ष प्राचीन सौर-पक्ष और नवीन दृक्पक्षसे गणित भेद था। अतः एक मत न हो सका। कुछ प्रान्तोंमें एक मास पहले दशहरा दीपमाला मनाई और कुछने एक मास बाद। दृक्पक्षीय सब पंचांगों और राष्ट्रीय पंचांगोंके अनुसार ही भारतसरकारके गजटमें भी छुट्टियां छप गईं थीं। परन्तु, काशीके पंचांगों और धर्माचार्योंके मतानुसार राजधानी दिल्लीकी रामलीला आदि धार्मिक संस्थाओंके प्रतिनिधि जब तत्कालीन गृहमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्रीसे मिले, तब उन्होंने सरकारी छुट्टियां बदलकर एक मास आगेकी घोषणा करवा दी। इससे जनतामें पंचांगकारोंका भारी उपहास हुआ। कुछ स्थानोंमें एक मास पहले और कई जगह राजधानी तकमें एक मास बाद त्यौहार मनाये गये। १९ वर्ष बाद यही स्थिति अगले वर्ष सं० २०३९ में फिर आ रही है। सौभाग्यसे अब अगले वर्ष गणित भेद नहीं है। दृक्पक्ष सौरपक्षसे अधिक क्षयमास तो समान हैं। परंतु, धर्मशास्त्रीय मतभेदसे एक मासका अन्तर पड़ रहा है। क्षयमाससे पूर्व पड़ने वाले अधिकमासको सभी धर्मग्रन्थोंने 'संसर्प' और क्षयको 'अंहस्पति' लिखा है। क्षयसे पहले अधिकमास (संसर्प) को शुद्ध माननेका आदेश है। इसी शास्त्रीय मतानुसार मैंने वर्तमान वर्ष सं० २०३८ के पंचांगमें पृष्ठ २४ पर दशहरा दीपावली सं० २०३९ में मनानेकी सूचना दी थी। कुछ दश वर्षीय पंचवर्षीय पंचांगोंमें धर्मसिन्धु आदि कुछ ग्रन्थोंके 'व्यवहित' अव्यवहित भेदसे संसर्प को अधिक (मल) मास मानकर उसमें (प्रथम आश्विन शुक्लपक्षमें) २७ सितम्बरको विजयादशमी न लगाकर द्वितीय शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्षमें अक्टूबरमें नवरात्रपर्व और विजयादशमी तथा आगे दीपावली लगाई है।

आगामी वर्ष फिर पंचांगकारोंका उपहास न हो इस समस्याको सुलझानेके लिए अ०भा० ज्योतिषपरिषद् और अहमदाबाद-वेधशालाके संयुक्त प्रयत्नसे पंचांगकारों-धर्मशास्त्रियोंका सम्मेलन २१ जून ८१ को दिल्लीमें और २५ जुलाई ८१ को अहमदाबादमें बुलाया गया। अहमदाबादकी सभामें भारतभरके ८० पञ्चाङ्गकार, धर्मशास्त्री, वेदज्ञ-विद्वान् एकत्र हुए। इनका नामधाम वेधशालाके प्रपत्रमें प्रकाशित हो चुका है। उज्जैन काशी कलकत्ता जोधपुरके सहयोगी पंचांगकारों ने १५० वर्ष पुराने हस्तलिखित पंचांग और वहां पड़ने वाले क्षयमासके वर्षमें त्यौहारोंके सम्बन्धमें काशिराजका निर्णय प्रस्तुत करके सिद्ध किया कि आगामी वर्ष २०३९ में प्रथम अधिक आश्विनमें नवरात्र विजयादशमी न होकर दूसरे शुद्ध आश्विन शुक्लमें (अक्टूबरमें) दशहरा और आगे कार्तिक (नवम्बर) में दीपवली होगी। इसी पक्षमें सबके भाषण हुए। ७५ प्रतिनिधि इस मतके पक्षमें होनेसे पूर्ण बहुमत सिद्ध हुआ। पंजाबके केवल 'श्रीमार्त्तण्ड-पंचांग' के ३ प्रतिनिधि और कलकत्ताके श्री

वन्द्योपाध्याय तथा नैनीतालके श्री महतोलिया (कुल ५ प्रतिनिधि) विरोधमें थे ।

'महाजनो येन गतः स पन्थाः'

स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी मैं इस विषम समस्याके समाधानमें सहयोग देनेके लिए मित्रों के अनुरोध पर अहमदाबाद पहुंच तो गया, पर विषमस्थितिमें फँस गया। किसी भी पक्षको गलत नहीं कहा जा सकता, क्योंकि न्यूनाधिक प्रमाण, तर्क दोनों ओरके उपस्थित हो रहे थे। (स्थानाभावके कारण वे सब तर्क प्रमाण यहां नहीं दिये जा सके) प्राचीन आचार्योंके भी मत भिन्न हैं। ऐसी स्थितिमें धर्मशास्त्रका यह आदर्श वाक्य पथप्रदर्शक बना—

श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना नैकोमुनिर्यस्य वचः प्रमाणम् ।
धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥

आशातीत बहुमत देखकर मैंने अपने पूर्वमतको त्यागकर सब सहयोगियोंके साथ होनेकी घोषणा अपने अन्तिम भाषणमें कर दी। मेरी प्रवृत्ति आरम्भसे ही समन्वय समझौतेकी रही है, विघटनकी नहीं। मैं यह जानता था कि कुछ लोग मत बदलनेके लिए मुझे बुरा भला कहेंगे, और मेरे निकट सहयोगियोंका कोपभाजन भी मुझे बनना पड़ेगा। 'मार्त्तण्डपंचांग' के कारण पंजाब विरोधमें जायगा। परन्तु, केवल एक पंजाब ही समस्त भारत नहीं है। जब समस्त गुजरात सौराष्ट्र महाराष्ट्र मध्यप्रदेश उत्तरप्रदेश बंगाल-बिहार राजस्थान उड़ीसा असम आंध्रका बहुमत वेधशाला मतके पक्षमें है तो मेरे विरोधका कोई लाभ नहीं, विघटनका दोषी माना जाऊंगा। इस विचारसे-मैंने भाई श्री प्रियव्रत शक्तिधरसे भी अनुरोध किया था कि 'यद्यपि हमारा मत गलत नहीं है, फिर भी एक वाक्यता और जनतामें ज्योतिषियोंका उपहास न हो इस दृष्टिसे आपको भी त्याग करना चाहिए। इस पर वहां उन्होंने इतना तो मान लिया था कि—"यहांके निर्णयको लेकर श्री वन्द्योपाध्यायजी शेष सब पंचांगकर्ताओंके पास मत लेनेको जावेंगे, उसमें जिस पक्षका बहुमत होगा वह हम मानेंगे।"

परन्तु, वन्द्योपाध्यायजी मत जाननेके लिए किसी पंचांगकर्ताके पास नहीं गये. कलकत्ता पहुंच कर उन्होंने 'नाटीकल' प्रकाशित करवा दिया और संसर्प शुद्ध पक्षमें एक मास पहलेकी छुट्टियां गवर्नमेण्टको दे दी। पंजाबमें अमृतसर, जालन्धर व दिल्लीके सभी पंचांगकर्ता जंत्री डायरी कलेण्डर प्रकाशकोंके पास वेधशाला निर्णयके विरोधी पंचांगकर्ताओंने पहुंचकर यह बताया कि—"अहमदाबाद में कोई सही निर्णय नहीं हुआ। हमारा मत सही है। २७ सितम्बरको दशहरा और १६ अक्टूबरको दिवाली लगावें।" इसके अनुसार पंजाबके कुछ पंचांग जंत्रियाँ डायरियाँ कलेण्डर छप चुके हैं। उधर वाराणसीमें काशीविद्वत्परिषद्ने जगद्गुरु शंकराचार्यके तत्वावधानमें सभा करके वेधशाला निर्णयके अनुसार त्यौहारोंकी घोषणा कर दी। श्रीहृषिकेश उपाध्यायके 'श्रीकाशी विश्वनाथ-पञ्चाङ्ग'में पूरे तीसरे पृष्ठ पर सचित्र वह घोषणा छपी है। सुप्रसिद्ध "चिन्ताहरण-जन्त्री"ने भी इसी पक्षको मान्यता दी। एक पंचांगको छोड़कर काशीके सब पंचांग जंत्रियां वेधशालाके पक्षमें

हैं। काशीका निर्णय सारे उत्तरप्रदेश और बंगालमें मान्य होगा। दिल्लीमें जगद्गुरु शंकराचार्यजी एवं परमपूज्य स्वामी करपात्रीजीके आदेशानुसार अक्टूबरमें ही नवरात्रमें रामलीलाएं व विजया-दशमी होगी। गुजरात महाराष्ट्र मध्यप्रदेशके सभी कार्तिकादि प्रसिद्ध पंचांग छप चुके हैं उनमें वेधशाला निर्णयानुसार त्यौहार छपे हैं। दिल्ली राजस्थान हरियाणामें भी बहुमत वेधशालाके पक्षमें ही है। केवल पंजाब अपनी डेढ़ चावलकी खिचड़ी अलग पकावेगा, इसमें उसकी शोभा नहीं है। बहुमतके साथ चलनेमें ही हित है। पंजाबमें भी सनातन-धर्म-प्रतिनिधि सभा पंजाब, सनातन-धर्म महावीरदल, विश्वहिन्दूपरिषद् वेधशाला (अहमदाबाद) निर्णयके पक्षमें है।

जहां दो मत हों (अलग-अलग आचार्योंके मत भिन्न हों) वहां कोई भी एक पक्ष तो मानना ही पड़ेगा। 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' के अनुसार बहुमतका ग्रहण ही श्रेयस्कर है। वयोवृद्ध-विद्वानों और धर्माचार्योंने जो निर्णय दिया वह व्यर्थ निराधार तो नहीं। संसर्पको शुद्ध मानने वालों को भी क्षयमाससे आगे-पीछे दो अधिक मास तो मानना ही पड़ेगा। असंक्रान्त मास होनेसे उसका अधिमासत्व तो समाप्त नहीं होता। जब संसर्पाधिमासमें व्रतबन्ध विवाह मुण्डनादि मांगलीक शुभ कर्म वर्ज्य हैं तो फिर संसर्पमें नवरात्र जैसे धार्मिक व्रतपर्व और दीपमाला जैसे मांगलीक पर्व मनानेमें कोई तुक नहीं। किसी भी धर्मग्रन्थमें यह स्पष्ट उल्लेख नहीं है कि विजयादशमी दीपावली अधिक संसर्पमें ही होनी चाहिए। कुछ मित्रोंने पूछा है कि अहमदाबाद निर्णयके अनुसार आगामी वर्ष महालयश्राद्ध पक्ष समाप्तिके एक मास बाद नवरात्र प्रारम्भ होगा, यह कुछ जंचेगा नहीं। इसका उत्तर यह है कि धर्मशास्त्रमें अधिकमासमें मासिक पर्व व्रतादिका निषेध है। जब आश्विन अधिक मास हो तो प्रथम शुद्ध आश्विन कृष्णपक्षमें (अमान्त भाद्रपदकृष्णमें) महालय श्राद्ध होंगे और उसके एक मास बाद द्वितीय शुद्ध आश्विन शुक्लपक्षमें ही नवरात्र विजयादशमी होगी। जैसे आगामी वर्ष सं० २०३९ में फाल्गुनमास अधिक हैं अतः प्रथम शुद्ध फाल्गुन कृष्णपक्षमें ११ फरवरी १९८३ को महाशिवरात्रि व्रत होगा और उसके अगले पक्षमें होलिकादहन न होकर डेढ मास बाद द्वि.शुद्ध फाल्गुन शुक्लपक्षमें २८ मार्च ८३ को होलिका पर्व माना जायेगा। इसी प्रकार अगले वर्ष महालयसे एक मास बाद नवरात्र प्रारम्भ होंगे।

गत १८ अगस्तको गुरुवायूर केरलमें कांचीमठके परमपूज्य जगद्गुरु शंकराचार्यजीके सान्निध्य में भी कुछ पंचांगकार एकत्र हुए थे, वहां भी सर्वसम्मत निर्णय नहीं हो पाया। अन्तिम दिन स्वामीजीको कहना पड़ा कि—"शास्त्रार्थ विषय बहुत जटिल होनेसे प्राचीनकालसे ऋषियोंके वचनों में भी मतमतान्तर मिलते हैं। भारत बड़ा विशाल देश होनेसे प्रादेशिक भिन्नता होना स्वाभाविक है।" यह कहकर स्वामीजीने उदाहरण दिया कि केरल और तमिलनाडूके सभी विद्वान् सिर्फ वैद्यनाथजीको प्रामाणिक मानते हैं, वे धर्मसिन्धु कालमाधवको भी नहीं मानते। इस सभाके १० दिन बाद स्वामीजीने अपने मठके लिए संसर्प शुद्धके पक्षमें निर्णय दिया, न कि समस्त भारतके लिए। ऐसा एक प्रत्यक्ष दर्शीने बताया है। मेरे पास न तो उक्त सभाका आमंत्रण आया और ना ही निर्णय।